प्रकाशक—
अ. भा. आदर्श हिन्दू संघ,
कानपुर ।

पुस्तक मिलने का पता—
श्री लक्ष्मीनारायण गुप्त, मंत्री आदर्श हिन्दू संघ
भुसावल (पूर्व खान्देश)
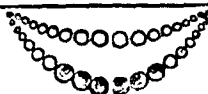
मुद्रक—
श्री हरवंशनारायण
वाणिज्य प्रेस, गया ।

वीर का विराट आन्दोलन
की
विषयानुक्रमणिका

...नारायण
प्रेस, गया।

* वन्देमातरम् *

नम्र निवेदन

असुरनिकन्दन, भक्तवत्सल भगवान् की कृपा का ही फल है कि 'दया' की वास्तविकता का परिचय कराने के लिये "वीर का विराट आन्दोलन" नामक प्रस्तुत ग्रंथ हिन्दूधर्म प्रेमी बंधुवर्ग के कर-कमलों मे मैं रख रहा हूँ। हमारे धर्म मन्दिरों एवं देव स्थानों में 'नर बलि, पशुबलि' सरीखी राक्षसी घृणाजनक पापपूर्ण कुप्रथाओं का एवं नरमेध, आप्तुर्याम आदि हिंसा वृत्ति प्रोत्साहक यज्ञों का 'अकांड तांडव' आजकल दिखाई दे रहा है। इतना ही नहीं इन्हीं परम पावन देव मंदिरों में गुप्त रूप से अनाचार, दुराचार एवं व्यभिचार वृत्ति का प्राबल्य भी यत्रतत्र दिखाई देने लगा है। इस प्रकार अधिकांश देवालयों का वास्तविक 'आदर्श' नष्ट हो जाने के कारण ही धार्मिक हिन्दूसमाज, दीन, हीन एवं पतित दृष्टिगोचर हो रहा है।

देव मंदिरों की और हिन्दू जाति की वर्त्तमान मृतप्राय अवस्था देख कर ही मर्यादा पुरुषोत्तम की, मर्यादा रखने वाली लीला भूमि भारतमाता के आदर्श 'हिन्दुत्व' को हिन्दुमात्र की रगरग में संचारित करने के लिये, स्वार्थ और सुख को लात मार कर तरुण तपस्वी, धर्मप्राण श्री पंडित रामचन्द्र जी शर्मा 'वीर' ने जो अविराम विराट आन्दोलन किया वही पुस्तक रूप में आपके कर-कमलों में प्रस्तुत है।

मांसाहार को महाप्रसाद मानने वाले मनुष्यों द्वारा देव मंदिरों में 'बलि' के नाम पर निरपराध जीवों की हत्या करना पराकाष्ठा की नीचता और घोर पाप है। इस पर भी उसे 'धर्म' बतलाना अंधविश्वास, दुराग्रह और दुस्साहस के अतिरिक्त क्या हो सकता है ? 'धर्म' में तो सर्वप्रथम अहिंसा को ही स्थान दिया गया है यथा—"अहिंसा सत्य मस्तेय, शौचमिन्द्रियनिग्रहः" फिर निरपराध पशु, पक्षी आदि की निर्दयतापूर्ण हत्या को धर्म कैसे कहा जा सकता है ? रामायण में संत तुलसीदास जी महाराज कहते हैं—'दया धर्म का मूल है' तथा निर्दयतापूर्ण हत्या धर्म कैसे कही जायगी ? मांसभोजियों की प्रकृति धर्म की उपरोक्त व्याख्या से सहमत नहीं होगी क्योंकि "ये चेत्र सात्विकाहारा" के विरुद्ध रहने से भगवान् श्री कृष्ण जी के आज्ञानुसार "अधोगच्छंति तामसाः" में उनका अवसान अवश्यम्भावी है। ऐसी स्थिति में 'बलि' द्वारा प्राप्त 'तामसी भोजन द्वारा प्रवृत्ति रेपा भूतानां' वालों में सम्मिलित होकर अन्ततोगत्वा इहलौकिकत्व पारलौकिक 'दुर्गति' को प्राप्त होते हैं, क्योंकि "स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभतेनरः"

इस प्रकार धार्मिक दृष्टि से विचार करने के पश्चात् अब सामाजिक दृष्टि से हम पशुबलि का महत्व ? जानने का यत्न करें। नीर क्षीर विवेक पूर्ण गम्भीर विचार के पश्चात् देव मंदिरों में बलि देने से हमारे देश, जाति या समाज को कौन लाभ है ? इस प्रश्न का उत्तर यही हो सकता है कि मांसाहार और पशु हत्या को प्रोत्साहन देकर समाज में आसुरी वृत्ति का प्रचार कर मंदिर सरीखे पवित्र धर्म धाम को कसाईखाने का रूप देकर व्यर्थ में

'शाश्वत हिन्दूधर्म को' देशी और विदेशियों द्वारा कलंकित करवाना है।

उपरोक्त विवेचना के पश्चात् पुस्तक की योग्यता के सम्बन्ध में आवश्यक बातें लिख देना अप्रासंगिक नहीं होगा। मैं हिन्दी साहित्य की लेखन शैली तो क्या, अच्छी तरह हिन्दी लिखना पढ़ना भी नहीं जानता। इस प्रकार जब एक छोटा सा साधारण लेख भी लिखने की मुझ में शक्ति नहीं है तो फिर " 'वीर' का विराट आन्दोलन " सर्वोत्तम सुन्दर ढंग से मैं किस प्रकार 'संग्रहित' कर सकता था? किन्तु धर्मप्राण "वीर" जी की "फाइलों का स्वाध्याय कर उनकी भूतपूर्व जीवनी पढ़ कर, आवश्यक प्रसंग पर स्वयं उनसे पूछ कर भी, जो कुछ और जिस प्रकार अपनी अल्प बुद्धि द्वारा संग्रह' कर सका वह हमारे गुणग्राही और परम दयालु पाठकों के कर-कमलों में प्रस्तुत है। To err is human" के अनुसार साहित्य विषयक, वैयाकरणीय या अन्य सभी प्रकार की अशुद्धियाँ संख्यातीत इसमें लब्ध हो सकती हैं; किन्तु मुझ अकिंचन की इस सर्वप्रथम सेवा को सुदामा के तंदुल की तरह दया व क्षमा भाव से स्वीकार कर के मुझे अनुगृहीत करेंगे।

अंत में, विज्ञ पाठकों से नम्र निवेदन है कि मेरी त्रुटियों के लिये क्षमा करते हुये **'वीर का विराट आन्दोलन'** को अवलोकन कर पशुबलि की राक्षसी प्रथा के मूलोच्छेदनार्थ प्रबल प्रचारक बनें। किमधिकम् विज्ञेषु।

निवेदक—

दिवाकर ज्योतिष कार्यालय,
खाम गाँव (बरार)

कालीचरण शर्मा 'मिश्र'
विजयादशमी सं० १९९७ वि.

उपहार
श्रीमान्

चित्र परिचय

समर्पण

आदर्श हिन्दू संघ कटिहार के कर्णधार
धर्मधुरन्धर, परम गोभक्त
श्रीमान् सेठ हरद्वारी मल जी झूझनूं वाला
प्रधान संचालक
कटिहार जूट मिल कटिहार
के
कर-कमलों में
सप्रेम
समर्पण.

卐

समर्पक—
लक्ष्मीनारायण गुप्त,
मंत्री आदर्श हिन्दू संघ शाखा भुसावल
(पू० खानदेश)

गोमाता के भक्त, उदार हृदय, धर्मधुरन्धर

श्रीमान् सेठ हरद्वारीमल जी झूंझनूंवाला

आदर्श हिन्दू संघ कटिहार के कर्णधार तथा प्रधान

संचालक कटिहार जूट मिल, कटिहार.

❀ परमात्मने नमः ❀

प्रार्थना

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः।
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि॥
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या।
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः।
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः॥
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा।
तां त्वां नतास्मि परिपालय देवि विश्वम्॥

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद।
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य॥
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं।
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य॥

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते॥
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः॥

या देवी सर्वभूतेषु दया रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तयै नमस्तस्यै नमोनमः॥
सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते॥

माँ काली की प्रार्थना

(रचयिता—धर्मप्राण श्री 'वीर' जी महाराज)

सब जग की मां तू काली है, तू भक्तों की प्रतिपाली है।
जब असुरों ने उधम मचाया, मातृ शक्ति का मान मिटाया॥
चक्र शूल भाले त्रिशाल ले, तू ने खड्ग सँभाली है॥ सब०॥
तूने शुंभ निशुंभ पछारे, महिपासुर से दानव मारे।
रक्तबीज का रक्त बहा कर, हुई निपट मतवाली है॥ सब०॥
बार बार भीषण प्रहार कर, दुष्ट जनों को मार मार कर।
चंड मुँड का रुण्ड फारकर, बनी महा बिकराली है॥ सब०॥
शांत रूप जब तुझे सुहाया, तब दिनों को गले लगाया।
मातृ-स्नेह के शीतल जल की, तूने धारा डाली है॥ सब०॥
तुझ को पुत्र सभी हैं प्यारे, बकरे भेड़े महिप विचारे।
उन अनाथ जीवों का बध कर, भरी खलों ने थाली है॥ सब०॥
माँ जगदम्बे क्या सोती है? तेरे यश की इति होती है।
तेरे मन्दिर में बहती है, हाय रुधिर की नाली है॥ सब०॥
धूर्त ठगों ने भ्रम फैलाया, तुझको हत्यारी ;बतलाया।
वेद शास्त्र का अनरथ करते बिछा कपट की जाली है॥ सब०॥
देवि कालिके क्यों सोती है, व्यर्थ समय अब क्यों खोती है।
'वीर' पुत्र की तेरे हित ही, आहुति होने वाली है।
सब जग की मां तू काली है॥

महाप्रलय

(रचयिता—श्री "वीर" जी)

पावन पूज्य देव मन्दिर भी, बने नरक के भीषण द्वार।
जहां दीन दुर्वल पशुओं पर, प्रतिदिन होता खड्ग प्रहार॥
अखिल विश्व की सभ्य जातियाँ, हैं सब ही हमसे प्रतिकूल।
मिस मेयो सी महिलाएँ भी लगी फैंकने हम पर धूल॥
पशुवलि के भीषण दृश्यों के फिल्म जगत को दिखा दिखा।
अंध भक्त पागल पतितों में दिया हमारा नाम लिखा॥
जग जननी जगदम्बा काली देख न सकी क्रूर व्यवहार।
ऋद्धि सिद्धि आदिक संग लेकर हिन्द देश से गई सिधार॥
रोग शोक भय फूट, कलह का फैल रहा भीषण आतंक।
बाढ़ भूख भूकम्प प्लेग भी तांडव करते हैं निश्शंक॥
पोंगा पंडे डटे हुए हैं फिर भी पशुवलि के हित आज।
गौतम कपिल कणाद व्यास की नहीं रही है इनको लाज॥
सुतल वितल पाताल तलातल मर्त्य स्वर्ग भी डोल उठे।
अग्नि पवन जल सूर्य रुद्र सब क्रोधित होकर बोल उठे॥
निर्वल पशुओं के शोणित से यदि यज्ञ स्थल सने रहे।
देवि देवताओं के मन्दिर भी हत्यागृह बने रहे॥
तो निश्चय ही वज्र गिरेंगे सर्वनाश हो जावेगा।
"वीर" प्रसवनी भारत भू में महाप्रलय हो जावेगा॥
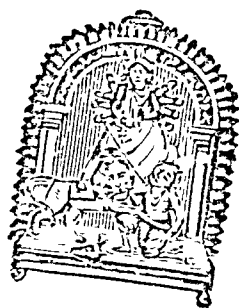
कसाई कौन है ?

(रचयिता—धर्मप्राण श्री "वीर" जी महाराज)

सन्तो किसको कहें कसाई,
वेद शास्त्र पढ़ पंडित वैठे तिलक त्रिपुण्ड लगाई।
यज्ञ बीच पशुओं को मारें यह कैसी अधमाई ॥ सन्तो० ॥
देवी के मंदिर में वैठे पंडे तोंद फुलाई।
पशुवध का संकल्प कराते शंख मृदंग बजाई ॥ सन्तो० ॥
माता के सन्मुख ही करते देखो मूढ़ ढिठाई।
निर्वल बकरों को कटवाते कुम्भकरण के भाई ॥ सन्तो० ॥
माँस निगलने के हित इनने अद्भुत रीत चलाई।
धर्म सनातन की फिर भी तो देते मूढ़ दुहाई ॥ सन्तो० ॥

बलिदान !

[रचयिता—श्री ब्रह्मदत्त दीक्षित 'ललाम' सुपरिन्टेन्डेन्ट एजुकेशन, मिर्जापुर]।

माँ माँ कह कर किसे पुकारा अरे मेमने निपट अजान।
माँ तो पाप पोप लीला लख कभी हो गई अन्तर्ध्यान ॥

धर्म-पीठ के वध्य-स्थल में जहाँ रुधिर की कींच मची।
वहाँ सर्वथा हुई तिरोहित धर्म-भावना बची खुची ॥

तेरा उष्ण रुधिर खप्पर में, माँ के-नहीं-नहीं-वह और।
वह जिनकी भीषण जिह्वाएँ कोमलाङ्ग तेरे हैं कौर ॥

वह जिन दानव क्रूर जनों का माँ ने किया समर-संहार।
वही आज मानव बन करते माँ पुत्रों का ही आहार ॥

मानवता पर दानवता ने विजय प्राप्त कर ली इस बार।
शक्ति धर्म के नाम असंख्यक मूक जीव कटते प्रति बार ॥

शक्ति, देवि दुर्गा की पूजा ? यही दानवी है उपचार ?
स्वार्थ वासना के कठपुतलों ? क्यों न हँसे तुम पर संसार।

तप तो तुम से हो न सकेगा, तुम निरीह पशु काटोगे।
माँ की छाती माँ पुत्रों के शव द्वारा ही पाटोगे ॥

सिद्धि अवश्य तुम्हारी होगी तुम अवश्य होगे सम्राट्।
देखो तो इस क्रूर कर्म के पापों का फल मूर्ख-विराट् ॥

आराधक को कैसा सुन्दर दिया देव ने है वरदान।
जैसा था बलिदान मिला है वैसा ही विचित्र वरदान ॥

यहीं कींच के शीर्ण घरौंदे कूकर, शूकर के आवास।
कूड़ा करकट देव तुम्हारे नन्दन वन हैं यहां सुवास॥
अति प्रसन्न माता वरदात्री मिला यही वरदान उन्हें।
जन्म जन्म कंगाल दुःखी हों मिले न धन सम्मान उन्हें॥
भंग तरंग न भंग कहीं हो यही सिद्ध अविकल्प समाधि
ज्ञान, प्रेम, सौजन्य पोप को यह सब तो हैं भारी व्याधि॥
ज्ञान और तुम, सूर्य और तम, निपट निरक्षर भट्टाचार्य।
अति अज्ञान कुगर्त अधोमुख, अबुधि अविद्या के आचार्य॥
देवि मूर्खता के उपासको! सचमुच तुम्हें मंत्र की सिद्धि।
आती हैं दौड़ो वरने को देखो तुम्हें विश्व की ऋद्धि॥
हृदय-हीनता की कुठार से तुमने किया धर्म-बलिदान।
सत्य, अहिंसा, दया प्रेम का कर डाला निष्ठुर अवसान॥
दुर्गा देवि हुई पाषाणी छिन्नासन, निष्प्रभ निष्प्रार
इन उपासकों ने ही कर दी आदिशक्ति प्रतिमा म्रियमाण
सदियाँ बीत चुकीं तुम बैठे करते शक्ति-साधना-दम्भ।
इतिश्री सब की होली किन्तु न हुआ तुम्हारा कार्यारम्भ॥
धूल न झोंको जो आते हैं लेने ज्ञान धर्म की स्फूर्त्ति।
उन उपासकों के नेत्रों में आवे माँ की करुणा मूर्त्ति॥
क्रूर कभी क्या शूर बनेंगे निर्दय क्या जानेंगे धर्म।
सत्य दया में ही तो सारा भरा हुआ है धार्मिक मर्म॥

—"ललाम"।

卐 ॐ वन्देमातरम् 卐

'वीर' का विराट आन्दोलन
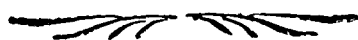
पूर्व इतिहास

संसार के सभी धर्मों में हिन्दू धर्म सर्वश्रेष्ठ और आदि धर्म सिद्ध हो चुका है और हिन्दू आदर्श भूमंडल में आज भी सर्वोपरि है।

गौतम कपिल कणाद वसिष्ठ भरद्वाजादि महर्षियों ने जिस धर्म की पताका को अखिल विश्व में फहराई हो भगवान राम भगवान कृष्ण भगवान बुद्ध की महानता योगमाया और दयालुता नें जिस धर्म को उच्च शिखर पर चढ़ा दिया हो। भगवाना नेमिनाथ पार्श्वनाथ तथा महावीर स्वामी ने अपनी वीतरागता से जिस धर्म को "विश्वधर्म" का रूप प्रदान किया हो। प्रात: स्मरणीय मत्स्येंद्रनाथ गोरक्षनाथ भर्तृहरि गोपीचंद तथा पूर्णचन्द्र प्रभृति महात्माओं के अलौकिक चमत्कारों से जो धर्म चमत्कृत हो चुका हो। सम्राट हर्षवर्द्धन चन्द्रगुप्त अशोक पृथ्वी राज एवं हिन्दू पति प्रणवीर महाराणा प्रताप प्रात:स्मरणीय छत्रपति महाराज शिवाजी के अतुल पराक्रम से जिस धर्म की ज्योति विश्व के कणकण में जगमगा चुकी हो महात्मा नानक गुरु गोविन्द सिंह वीर हकीकतराय धर्मवीर

महात्मा बंदा वैरागी महर्षि दयानन्द एवं स्वामी श्रद्धानंद के आत्मबलिदानों से जिस धर्म की सुगंधि तीनों लोकों में सुवासित हो चुकी हो जिस धर्म ने सती सवित्री जगज्जननी जानकी भगवती रुक्मिणी देवी द्रौपदी, महाराणा पद्मिनी दुर्गावती एवं लक्ष्मी बाई सदृश वीरांगनाओं को जन्म दिया वह धर्म हमारा आदर्श हिन्दूधर्म ही है किन्तु समय परिवर्तनशील है जिसका उत्थान होता है उसका पतन भी निश्चित है इसी सिद्धान्तानुसार जगत का सर्वोपरि धर्म आज हिंसा धर्म बन गया है।

जिन धर्म मंदिरों में मनुष्यों को शान्ति और संतोष का महाप्रसाद प्राप्त होता था और प्राणी मात्र को अभयदान मिलता था जहाँ आनंद की गंगा प्रवाहित होती थी वह पावन पवित्र स्थान आज अत्याचार अनाचार एवं अशान्ति के अखाड़े बन गये हैं जगत की जननी भगवती दुर्गा काली के समक्ष उसके अनाथ मूक निरपराध पशुपुत्रों को आराधना की ओट में धर्म के कल्पित विश्वास पर। काटे जाते हैं उन गुंगे बकरों भेड़ों और भैंसों के आर्त्तनाद तथा छटपटाहट के कुछ ही क्षणों के उपरांत वधिक की महा भयावनी खड्ग से रक्त की धारा प्रवाहित हो जाती है और हत्यागृह का दृश्य उपस्थित हो जाता है।

हमारा उद्देश देवी देवताओं के समक्ष होने वाले हत्याकांड के विरुद्ध किये गये "वीर" के विराट आन्दोलन का सिंहावलोकन कराना है।

'वीर' की आत्मप्रेरणा

भारतमाता के पुजारी देशभक्त पं० रामचन्द्र शर्मा 'वीर' मांगरोल मुस्लिम राज्य (काठियावाड़) के गोवध को अपने २३ दिन के उपवास से बन्द करा देने के उपरान्त भारत की महानगरी बम्बई की जनता को अपना अमृतोपदेश सुना रहे थे। बम्बई के उपनगर घाटकोपर में उनकी अमृतमयी ओजस्वी वाणी को सुनने के लिये अगणित नरनारी प्रति दिन उमत उमड़ कर एकत्रित होते थे।

चैत्र शुक्ला दशमी सन् १९३५ की बात है धर्मप्राण 'वीर' जी घाटकोपर के आनन्द भवन वंगले में प्रातःकाल अपने प्रेम जनों के बीच बैठे हुये थे। सहसा किसी व्यक्ति ने उनके समक्ष गुजराती भाषा के संवादपत्र 'नवभारत' की प्रति रख दी। 'वीर' जी उस पत्र को उलट उलट कर देखने लगे। पत्र के एक पृष्ठ में मोटे २ अक्षरों में लिखा था "तीसनी मातानु मंदिर, हजारों जीवोनों अपानारो भोग, पूर्णिमाना दिवसे धर्मनें नाम महाभयङ्कर हत्याकांड" इस शीर्षक के नीचे 'कल्याण' की तीसमाता के मंदिर में चैत्र की पूर्णिमा को होने वाले २५००० बकरों और मुर्गों के भयङ्कर हत्याकांड का विस्तृत वर्णन था 'वीर' जी ने 'नवभारत' को एक ओर रख दिया और वे हाथ पर मस्तक रख कर कर गम्भीर चिन्ता में मग्न हो गये। उन्होंने भली भांति विचारने के उपरान्त तीसमाता के हत्याकांड को रोकने के लिये दृढ़ संकल्प कर लिया और अपने प्रेमी जनों को स्पष्ट कह दिया कि "तीसमाता के हत्याकांड के

विरुद्ध मेरा आमरण अनशन इसी क्षण से प्रारम्भ हो गया, यह उपवास उसी दिन समाप्त होगा जिस दिन कल्याण की तीस की देवी के मंदिर की जीव हत्या बंद होगी। उपवास के मध्य में केवल जल पीऊंगा।

यह समाचार विद्युत गति से बम्बई महानगरी में फैल गया। रात्रि के ९ बजे आज़ाद मैदान में एक विराट सभा हुई जिसमें कई हज़ार स्त्री पुरुषों की उपस्थिति थी। पं० रामचन्द्र शर्मा 'वीर' ने अपने ओजस्वी भाषण में कहा--

"धर्मप्रेमी सज्जनों एवं माताओं और बहिनों! हमारे भारतवर्ष में मांसाहारियों की संख्या बढ़ती जा रही है और हमारे देश के पशुधन का भीषण रूप से संहार हो रहा है। जिस देश में घी, दूध की नदियां बहा करती थीं वहां आज निरपराध पशुओं का रक्त बह रहा है। धर्म के नाम पर वाममार्गी धूर्त्त, भोली जनता में अन्धविश्वास का प्रसार कर रहे हैं। इन अन्धविश्वासियों के विरुद्ध यदि आन्दोलन न होगा तो शनैः शनैः जो जनता मांसाहारी नहीं है वह भी अन्धविश्वास में फँस कर दुर्गा, काली के प्रसाद की ओट में मांसाहारी बन जायगी। यूरोप के लोग हमारे धर्म-मन्दिरों में पशुहत्या होती देख कर घृणा प्रगट करते हैं और हमारे समाज को जंगली, असभ्य और महा मूर्ख बतलाते हैं। कल्याण के पास तीसगाँव में दुर्गा के मन्दिर में चैत्र सुदी पूर्णिमा को पचीस हज़ार बकरों और मुर्गों की हत्या होने वाली है। हिन्दू समाज के घोर अज्ञान और अन्धविश्वास के परदे को चीरने के लिये मैं अनशन प्रारम्भ

ही हजारों की संख्या में आनन्द भवन के समक्ष एकत्रित हो गई। धर्मप्राण "वीर" जी ने जनता को कुछ देर उपदेश देकर कल्याण की ओर प्रस्थान किया। उन्हें स्टेशन पर विदा करते समय हजारों स्त्री-पुरुषों के नेत्रों से अश्रुविन्दु टपक रहे थे।

पण्डित जी के साथ घाटकोपर के १० युवक भी थे। उनके कल्याण पहुंचते ही गोशाला के विशाल भवन में विराट सभा हुई। कल्याण की जनता को सन्देश देकर "वीर" जी ने तीसगाँव की देवी के मन्दिर की ओर प्रस्थान किया। मध्याह्न की कड़कड़ाती हुई धूप में अपने साथियों के सहित "वीर" जी भूखे-प्यासे दुर्गा के मन्दिर की ओर अग्रसर हो रहे थे। मन्दिर के सामने एक विशाल आम के वृक्ष के नीचे उन्होंने अपना आसन जमा दिया। "वीर" जी के अनसन का समाचार सुन कर तीस माता के पण्डे घबड़ा गये और "वीर" जी को वहाँ से हटाने का प्रयत्न करने लगे; किन्तु पण्डों को सफलता नहीं मिली। धर्मप्राण "वीर" जी ने दो दिवस के लिये जल का भी त्याग कर दिया और वे निरंतर अपने ओजस्वी भाषण द्वारा पशुवलि के विरुद्ध प्रचार करते रहे उनके तीसरे दिन के भाषण का प्रभाव महाराष्ट्र प्रान्त के जंगली तथा सुशिक्षित स्त्री-पुरुषों पर अच्छा पड़ा और बहुत सी जनता पशुवलि के विरुद्ध हो गई। "वीर" जी ने समाचार पत्रों के प्रतिनिधियों को जो सन्देश दिया था उसका सारांश इस प्रकार था—

❦ ❦ ❦ ❦

चैत्री पूर्णिमा का दिन आ गया। धर्मप्राण तरुण तपस्वी पं० रामचन्द्र शर्मा 'वीर' के अनशन के तीन दिन समाप्त हो चुके थे। दिन रात भाषण करते करते उनका शरीर मुर्झा गया और उनके मुख से रक्त भी गिरने लग गया।

बम्बई की धर्मप्रेमी जनता उमड़ उमड़ कर 'वीर' जी के आन्दोलन में भाग लेने लगी। तीसमाता के मेले में लाखों मनुष्यों की भीड़ में सत्याग्रही देशभक्त युवक जीव हत्या के विरुद्ध घूम घूम कर प्रभावशाली प्रचार करने लगे। लाखों मनुष्यों में दो दल हो गये। एक दल कहता था कि हमलोग बल पूर्वक दुर्गा माता के समक्ष बकरों और मुर्गों की बलि देंगे और जो बलि को रोकेगा उसी को बलि दे देंगे। दूसरे पक्ष के लोगों ने भी पूर्ण निश्चय कर लिया कि अपना सिर भले ही कट जावें किन्तु बकरों व मुर्गों की हत्या नहीं होने देंगे।

जीव दया मंडली के उपदेशक स्वामी महानन्द जी भी मेले में आकर जीवदया का प्रचार कर रहे थे। शर्मा 'वीर' के सभी अनुयायी सैकड़ों की संख्या में "रघुपति राघव राजा राम" की मधुर ध्वनि से मेले के वातावरण को आनन्दमय बना रहे थे। आम के विशाल वृक्ष के नीचे एक ऊँची मिट्टी की दीवाल थी, जिसके ऊपर छत्रपति शिवाजी एवं श्री हनूमान जी के भव्य एवं विशाल, मनोहर, चित्र सुशोभित हो रहे थे। जिनके मध्य में एक सिंहासन था जिस पर 'वीर' जी हाथ पर शिर रखे हुये चिन्तामग्न बैठे थे। "वीर" जी के प्राणान्त अनशन और उनके बार बार किये गये उत्तेजनात्मक व्याख्यानों से मेले का

धर्मप्राण 'वीर' जी के इस उत्साह वर्द्धक भाषण का उपस्थित जनता पर जो प्रभाव पड़ा उसका वर्णन करना लेखनी की शक्ति के बाहर है। तीस माता के समक्ष एक एक बिलस्त के अन्तर पर दो बांसों के मध्य में बकरों के काटने का पैशाचिक आयोजन हो रहा था। प्रातःकाल के चार बजे थे पूर्णमासी के पवित्र पर्व पर तोसमाता के अंधभक्तों द्वारा रुधिरोत्सव मनाने की भीषण योजना हो गई। 'वीर' जी के सभी साथी उत्सुकतापूर्ण दृष्टि से 'वीर' जी की आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहे थे। अगणित नरनारियों की दृष्टि उनकी ओर लगी हुई थी। सहसा ॐ की पताका को हाथ में लेकर चार गज ऊंचे आसन से 'वीर' जी कूद पड़े और उग्र गति से दौड़ते हुये वधस्थल की ओर दौड़ पड़े। कल्याण के मजिस्ट्रेट मिस्टर पटेल ने स्वयं 'वीर' जी का पकड़ना चाहा, किन्तु मजिस्ट्रेट साहब का पैर फिसल गया और वे गिर पड़े। देखते देखते हजारों स्त्री पुरुष वधस्थल में जाकर बैठ गये। धर्मप्राण "वीर" जी ने "रघुपति राघव राजा राम" की मधुर ध्वनि से वधस्थल को गुंजा दिया। चारों ओर से "वन्देमातरम्" और भगवान राम की जयध्वनि गूंजने लगी। एक एक क्षण एक एक युग के समान प्रतीत होने लगा। प्रत्येक क्षण भयंकर संघर्ष होने की आशंका से अगणित नर नारियों का हृदय कम्पायमान होने लगा। इस प्रकार प्रातःकाल के पाँच बज गये। सहसा पंडित जी के पास एक व्यक्ति आकर खड़ा हो गया। प्रातःकाल के धुंधले प्रकाश में उस अपरिचित व्यक्ति की भयंकर मुखमुद्रा तथा लंबी दाढ़ी

अपना सिर झुका दिया। अपना सिर झुकाते हुये बकरे को अपने शरीर से ढक लिया और वे अत्यन्त उच्च स्वर में गरजते हुये बोले—"पहले मेरा सिर काटो। पहले मेरा वध करो तब बकरे की हत्या हो सकेगी।" कसाई कांप गया और उसने तलवार को पटक दी। सहसा समीप में खड़े हुये पुलिस के आठ सिपाहियों ने पण्डित जी को पकड़ लिया और बकरा काटने की फिर से योजना की गई। "वीर" जी ने बकरे का प्राण बचाने के लिये अपनी समस्त शक्ति लगा दी और लातों के प्रहार से तथा घूंसे के बल से पुलिस के सिपाहियों की मरम्मत कर डाली और उछल कर फिर बकरे के पास पहुंच गये। पुलिस के सिपाहियों ने दूसरी बार उन्हें फिर पकड़ लिया और बलपूर्वक घसीट कर ले चले। "वीर" जी ने पहले की भाँति सिपाहियों से युद्ध करने की ठान ली; किन्तु एक पत्थर की ठोकर खाकर गिर पड़े, उनके बाँये पैर का घुटना फूट गया दाहिने पैर की एक ऊँगली भी टूट गई और मूर्छित होकर गिर पड़े। इस परिस्थिति में पुलिस अधिकारियों ने "वीर" जी को घोड़ा गाड़ी में डाल कर कल्याण की गोशाला में भेज दिया। तीसमाता के मेले से हजारों स्त्री-पुरुष बकरों और मुर्गों को जीवित लौटा ले गये। बहुत से स्त्री-पुरुषों ने 'वीर' जी को मू[र्छित होते] हुये देख कर तीसमाता की पूजा भी नहीं की। कुछ लोग पशुबलि के विरुद्ध उत्तेजित होकर मार-पीट करने को तत्पर हो गये। जिसके फलस्वरूप मेले में भगदड़ मच गई।

पाँचवे दिन १२० ही रह गया। उनके पैर की टूटी हुई ऊँगली की पीड़ा असह्य हो गई। धर्मप्राण "वीर" जी की सदात्मा की शक्ति ने बम्बई के सुशिक्षित समाज में उथल पुथल मचा दी पशुबलि के विरोध में समग्र महाराष्ट्र में भीषण आन्दोलन होने लगा। दूर दूर के लोग हजारों की संख्या में "वीर" जी के पास आकर मांसाहार त्यागने की प्रतिज्ञा करने लगे। बम्बई से बहुत से भद्र पुरुष एवं युरोपियन महिलाएं 'वीर' जी के दर्शनों के लिये उमड़ उमड़ कर आने लगे। इस प्रकार "वीर" जी के उपवास के आठ दिन व्यतीत हो गये।

महान विजय

२२ अप्रील सोमवार सन् १९३५ श्री "वीर" शर्मा की "महान् विजय" का दिवस माना जायगा। तीसमाता मंदिर के चीफ ट्रस्टी (मुख्य व्यवस्थापक) श्री० बाबू साहेब ओक के बंगले पर "आग्री" जाति के नेताओं की एक महती सभा हुई जिसमें तीसमाता मंदिर के सभी ट्रस्टी उपस्थित थे इसके अतिरिक्त "वीर" जी के दल की ओर से सेठ चिमनलाल पोपट लाल शाह, यमुनादास उदाणी, नारायणदास जी लखपत वाला, केशवलाल जी रणछोड़ हरिलाल रामजी मेहता, छोटा लाल गिरधर लाल, मोहनलाल पुरुषोत्तमदास, गंगाराम जी राम जी रावल, डाक्टर वी. वी. कडके प्राणलाल वी, ठक्कर

भी उक्त सभा में उपस्थित थे। तीसमाता मंदिर के ट्रष्टियों ने निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत किया।

"तीसमाता दुर्गा के मन्दिर स्थान में प्रति वर्ष भरने वाले मेले के समय जो हजारों प्राणियों की हत्या होती है उसका यह सभा घोर विरोध करती है और निश्चय करती है कि यह पैशाचिक प्रथा सर्वदा के लिये बन्द हो और 'पण्डित श्री रामचन्द्र शर्मा "वीर" इस हत्या को बन्द कराने के लिये जो कठोर अनशन व्रत लिये हुये हैं उस व्रत को शीघ्रातिशिघ्र समाप्त कर देवें यह इस सभा का "वीर" जी के प्रति नम्र अनुरोध है।"

१. हस्ताक्षर—बापू साहब ओक
(तोसकी माता के मन्दिर के मुख्य ट्रष्टी)

२. बालाराम ज्ञानदेव ठाकुर (अध्यक्ष)
(आगरी हितवर्द्धक मण्डली)

३. हरिसदू महात्रे (उपप्रमुख आगरी हितवर्द्धक मण्डली)

४. धामन बाबा जी धाणगे
(सेक्रेटरी आगरी हितवर्द्धक मण्डली)

उपरोक्त प्रस्ताव लेकर बीस सज्जनों का दल "वीर" जी से मिलने को गया और आगामी वर्ष के मेले में पशुबलि नहीं होगी ऐसा "वीर" जी को विश्वास दिलाते हुये अनशन छोड़ने की प्रार्थना की। पण्डित जी ने आध घंटा तक अपनी शंकाओं का मन्दिर के ट्रष्टियों से समाधान किया और पशुबलि न होने के पूर्ण विश्वास पर विराट सभा के बीच में अपना अनशन व्रत समाप्त करने की स्वीकृति दी। रात्रि के आठ बजे सेठ छोटालाल

गिरधरदास की चाली के विशाल स्थल में कल्याण के नागरिकों की बहुत बड़ी सभा हुई। सभापति के आसन पर तीसमाता के मन्दिर के मुख्य ट्रस्टी श्री बापू साहब ओक सुशोभित थे। श्रीमान् बापू साहब ओक ने पं० रामचन्द्र शर्मा "वीर" को पुष्पमाला पहनाते हुये उपस्थित जनता को सम्बोधित करके कहा कि मैंने मन्दिर के ट्रस्टी के अधिकार से तथा दूसरे कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से तीस की माता के मन्दिर में अब पशुवध नहीं होगा ऐसा विश्वास पंडित जी को दिया है और उसके लिये मैं अपनी जाति को समझाने के लिये प्रबल प्रयत्न करते हुये शर्मा जी को व्रत समाप्त करने की प्रार्थना की है। बापू साहब ओक की सहृदयता एवं सौजन्य से प्रभावित होकर पंडित जी ने आठ दिन के उपवास की निर्बलता के होते हुये भी एक घंटा तक ओजस्वी भाषण दिया। उनके भाषण का सारांश निम्नांकित था।

नास्तिकता का कारण

धर्म प्रेमी सज्जनो, एवं माताओ और बहिनो!

आज का युग नास्तिकता का युग है जगत में, दैवीवृत्ति और आसुरी वृत्ति में भीषण संघर्ष हो रहा है। दैवी-वृत्ति वाला मानव-समुदाय ईश्वर के विश्वास पर निर्भय होकर अपना समस्त कार्य सम्पादन करता है, दूसरी ओर आसुरीवृत्ति वाले सम्प्रदाय का भी संसार में कोलाहल सुनाई दे रहा है। इस कोलाहल को स्पष्ट शब्दों में नास्तिकता कहना उचित होगा

और दूसरे शब्दों में इसे "अनीश्वरवाद" भी कह सकते हैं। प्रश्न यह होता है कि, इस अनीश्वरवाद का कारण क्या है ? जगन्नियंता, जगदीश्वर, परम पिता परमात्मा के विरुद्ध यह विद्रोह क्यों उठाया जा रहा है ? यह एक भयानक किन्तु महत्वपूर्ण प्रश्न है जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

नास्तिकों द्वारा समाज में अनीश्वरवाद की उछृङ्खलता जो आज फैलाई जा रही है उसका उत्तरदायित्व हम ईश्वर भक्तों पर ही है। ईश्वर भक्ति की ओट में अत्याचार, दुराचार, अनाचार एवं भ्रष्टाचार को प्रश्रय दिया जा रहा है। जहाँ भगवान के पवित्र मन्दिरों में छोटी-छोटी बालिकाएँ मूर्ख माता पिताओं द्वारा देवदासियाँ बना कर चढ़ा दी जाती हों और बाल्यावस्था के व्यतीत होते ही वे देवदासियाँ व्यभिचारिणी वेश्याएँ बन कर दर्शनार्थी यात्रियों को पथ भ्रष्ट करने का साधन बन जाती हों और दिव्य देवालय कामियों के क्रीडास्थल बन जाते हों एवं उपासना की ओट में "गुप्त व्यभिचार" का तांडव नृत्य होता हो। जगज्जननी जगदम्बा भगवती दुर्गा के पवित्र प्रांगण में उसके निरपराध निर्बल, निस्सहाय, मूक पशुपुत्रों का रक्त बहाया जाता हो और माता की प्रसन्नता के मिथ्या विश्वास पर अगणित प्राणियों की हत्या की जाती हो। आस्तिकता की ओट में महा भयंकर नारकीय लीलाएं जहां प्रति दिन की जा रही हों वहां यदि कुछ तामसी प्रकृति के मनुष्य ईश्वर के विरुद्ध विद्रोह का झंडा लेकर कोलाहल मचाने लगे तो आश्चर्य नहीं किया जा सकता।

इन्हीं कारणों से धार्मिक संसार इस समय नास्तिकों के उपहास का कारण बन गया है; जिससे समाजवाद एवं साम्यवाद ईश्वर के अस्तित्व को अस्वीकार करके नास्तिकता फैला रहे हैं। आज ईश्वर के नाम पर खिल्लियां उड़ाई जा रही हैं। ईश्वर के वास्तविक भक्तों को भी तिरस्कृत किया जा रहा है।

दयामयी जगदम्बा जिसके समस्त प्राणी पुत्र हैं और जो प्राणी मात्र पर प्रेमवृष्टि करती है उस माता के पवित्र नाम पर निर्दोष, निरपराध, बकरों, भैंसों का बलिदान किया जाता है। यह एक अक्षम्य अपराध है और हम ईश्वरवादियों के ऊपर अमिट कलंक है। मैं तो यह भी कहूँगा कि जो लोग धर्म की ओट में माता दुर्गा के पवित्र नाम पर पशुहत्या करते हैं वे नर नहीं हैं वरन् नराधम हैं। नर पिशाच हैं नीचातिनीच नर राक्षस हैं और जिन मंदिरों में रक्त की धाराएं बहाई जाती हैं वे मंदिर नहीं वे तो हत्यागृह हैं और ऐसे हत्यागृहों में दर्शन करने जाना, हत्याओं समर्थन करना है।

मैं तो भगवान का साक्षात दर्शन कर रहा हूँ। ये दर्शन नेत्रों से नहीं हो सकते, अंतरात्मा में ही हो सकते हैं। मांगरोल के नवाब को कौन शक्ति समझा सकती थी? किन्तु ईश्वरीय बल ने ही नवाब साहब का हृदय परिवर्तित कर दिया, और नवाब साहब को झुकना पड़ा। ये जंगली लोग मेरे व्याख्यान को भी नहीं समझ सकते। इन भोले भाइयों को मैं किस तरह समझाऊं? परन्तु भगवान आक

साहेब के हृदय में बसे हैं। इस महाराष्ट्र की वीर भूमि में सँत तुकाराम, समर्थ स्वामी रामदास और छत्रपति शिवाजी महाराज का प्रादुर्भाव हुआ था। इस पवित्र भूमि के ब्राह्मणों ने निर्णय किया है कि तीस देवा के स्थल में पशुहत्या नहीं होगी ऐसे धार्मिक पुरुष जब तक बैठे हैं तब तक हिन्दूधर्म का नाश नहीं हो सकता। मंदिर में अब से ऐसा अनाचार या हत्या नहीं होगी ऐसा मुझे विश्वास दिलाया गया है। मैं भगवान से प्रार्थना कर रहा हूँ कि ऐसी हत्याएं जहां जहां होती हों तहां तहां आत्म बलिदान करने की मुझे शक्ति प्रदान करो।

इसके उपरांत श्रीमती हीरा बहन के द्वारा निकाला हुआ मोसंबा का रस धर्मप्राण "वीर" जी ने हिन्दू धर्म की तुमुल जयध्वनि के बीच में बापू साहेब ओक के हांथों से पान किया। पंडित जी का डाक्टरों ने उपवास के प्रारम्भ में एक सौ छत्तीस पौंड तौल किया था किन्तु उपवास समाप्ति के समय ११९ पौंड ही रह गया। रात्रि के दस बजे अगणित स्त्री पुरुषों की भीड़ ने जयघोष के साथ प्रस्थान किया।

दूसरे दिन पं० रामचन्द्र शर्मा "वीर" को बम्बई ले जाने के लिये अनेक प्रेमी जन कल्याण में सेठ छोटालाल जी की चाली में उमड़ उठे। कल्याण से विदा होकर २६ अप्रील के प्रातःकाल की ट्रे. से पंडित जी घाटकोपर (बम्बई) को प्रस्थान किया। घाटकोपर की जनता रेलवे स्टेशन पर ८, १० हजार की संख्या में स्वागतार्थ उपस्थित थी।

अपूर्व स्वागत

प्रातःकाल के ८ बजे से ही गुजराती महिलायें अपने छोटे छोटे बच्चों को गोद में लिये हुए सैंकड़ों की संख्या में एकत्रित हो गई थी। हिन्दू महासभा का बैन्ड बज रहा था। हजारों मनुष्यों ने 'वीर' 'जी की जय' भारतमाता की जय' "हिन्दू धर्म की जय" के तुमुल घोष से स्टेशन के वातावरण को अत्यन्त उष्ण बना दिया। पंडित जी हँसते २ इलेक्ट्रिक ट्रेन से बाहर निकले। घाटकोपर की प्रमुख संस्थाओं ने पुष्प मालाओं तथा चर्खे के सूत की मालाओं से पंडित जी का "भाव भीना" स्वागत किया, फिर एक विराट जुलूस के रूप में पुष्पों से सुसज्जित मोटर में बिठा कर घाटकोपर की मुख्य मुख्य सड़कों से उन्हें घुमाया। स्थान स्थान पर स्वागत-द्वार अशोक पल्लवों तथा आम्र पत्रों से बनाये गये थे। घाटकोपर की जनता हजारों की संख्या में सड़कों, छतों, खिड़कियों पर खड़ी हुई मोटर पर पुष्प वर्षा कर रही थी।

दिन के ठीक १० बजे आगरा रोड में सेठ श्री जगजीवन-दयाल की वाडी में जुलूस ने विराट सभा का रूप धारण कर लिया। उक्त सभा में पण्डित जी का महत्वपूर्ण भाषण हुआ। घाटकोपर में पण्डित जी ३ दिन विश्राम करके खानदेश को प्रस्थान करने ही वाले थे, सहसा राजस्थान प्रांत के प्रसिद्ध राष्ट्रवादी श्री कन्हैयालाल जी कलयंत्री के अनुरोध से पंडित जी ने फलोदी (जोधपुर राज्य के) धार्मिक अत्याचार

के विरुद्ध होने वाली बम्बई के राजस्थानियों की विराट सभा का सभापतित्व स्वीकार किया। उक्त समुद्र तट पर (चौपाटि के प्रसिद्ध मैदान में) सायंकाल के ४ बजे २८ अप्रील सन ३५ को हुई थी। सभा में लाउडस्पीकरों को सुन्दर व्यवस्था की गई थी और १० हजार से भी अधिक राजस्थानियों की भीड़ एकत्रित हुयी थी।

रात को ८ बजे की ट्रेन से पंडित जी ने जलगांव (खानदेश) को प्रस्थान किया।

भीषण प्रतिज्ञा

जलगांव की जनता ने आपका उपदेश एक सप्ताह तक हजारों की संख्या में एकत्रित होकर सुना। जलगांव से आप भुसावल पधारे। सहसा समाचार पत्रों में बम्बई प्रान्त की वजेश्वरी देवी के मंदिर में होने वाले १२००० बकरों तथा मुर्गों की हत्या का समाचार जब "वीर" जी ने पढ़ा तो उनके हृदय में दुःख और क्षोभ की ज्वाला प्रज्वलित हो उठी और आप इस चिन्ता में पड़ गये कि मैं कहाँ कहाँ पर उपवास करके पशुवलि को बन्द कराऊँ। भारतवर्ष में तो सात लाख गाँव हैं और प्रत्येक गाँव में किसी न किसी देवता का एक मन्दिर होता ही है यदि इन मन्दिरों की संख्या सात लाख कम से कम मान ली जाय और इन सात लाख मन्दिरों में पशुवलि होने वाले मन्दिरों की संख्या कम से कम एक लाख ही मान ली जाय तो उन एक लाख मन्दिरों में दुर्गा देवी भैरव आदि देवताओं की

प्रसन्नता के मिथ्या विश्वास पर होने वाली पशु हत्या की संख्या कई करोड़ प्रति वर्ष हो जाती है और रक्त की नदियाँ हर समय बहती रहती हैं।

धर्मप्राण पं० रामचन्द्र शर्मा "वीर" कई दिनों तक विचार मग्न होकर सोचते रहे अंत में उन्होंने तेईस मई सन् १९३५ को भुसावल की विराट सभा में पवित्र यज्ञोपवीत को हाथ में लेकर पशुबलि के विरुद्ध भारत व्यापी आन्दोलन करने का दृढ़ निश्चय कर लिया इतना ही नहीं आपने उक्त सभा में प्रतिज्ञा करते हुये कहा—"जिन मन्दिरों में देवताओं के समक्ष पशु हत्या की जाती है उनमें सब से प्रसिद्ध और महत्व का स्थान कलकत्ते का श्री काली माता का मन्दिर है। यदि काली जी के मन्दिर से पशुबलि प्रथा का अन्त हो जावे तो भारतवर्ष के अगणित मन्दिरों का पशुवध आप ही बन्द हो जायगा। इसलिये मैं प्रतिज्ञा करता हूँ आगामी दुर्गापूजा के एक मास पूर्व से कलकत्ता में प्राणान्त उपवास करूँगा और जब तक उक्त मन्दिर का पशुवध सर्वथा बन्द न होगा तब तक मेरा उपवास बन्द न होगा, उपवास के समय जल के अतिरिक्त कोई भी पदार्थ मुँह में डालना मैं गोरक्त के समान समझूँगा।"

"वीर" जी की इस भीषण प्रतिज्ञा को सुनकर भुसावल के नागरिकों में खलबली मच गई। एक सप्ताह उपरान्त पूज्य महात्मा गांधी जी से पंडित जी का इस सम्बन्ध में वार्तालाप हुआ। महात्मा जी ने कहा कि "आप कालीघाट की पशुबलि के लिये अनशन न करें, आपको वहां सफलता नहीं [illegible]

पंडित जी ने उत्तर दिया कि मैं परिणामवादी नहीं हूँ। कर्म करना ही मेरा धर्म है फल मिले या न मिले। महात्मा जी चुप रहे। महात्मा जी से विदा होकर आप अमरावती, नागपुर, बिलासपुर, जबलपुर, इलाहाबाद आदि नगरों में कालीघाट की पशुबलि के विरुद्ध प्रबल आन्दोलन करते हुए बिहार प्रान्त में पधारे।

बिहार में प्रचार

बिहार प्रान्त की राजधानी पटना नगरी में प्रसिद्ध हिन्दू नेता, बिहार भूषण बाबू श्री जगतनारायण लाल जी ने पटना की हिन्दू सभा के विशाल स्थल में आपका स्वागत किया, पटना की जनता आपके भाषण को सुनकर मुग्ध हो गई।

बिहार प्रान्त के कई प्रसिद्ध नगरों में आपके भाषण हुए और पशुबलि के विरुद्ध स्थान स्थान पर आपने कार्यकर्त्ताओं का संगठन किया।

बेगूसराय के नवयुवक तो आपके व्याख्यानों से इतने प्रभावित हो गये कि नागपञ्चमी के अवसर पर स्थानीय काली स्थान के वधस्तम्भ को उखाड़ कर ही फेंक दिया।

बिहार के अनेक नगरों में प्रचार करने के उपरान्त पटना के सुप्रसिद्ध वकील साधुमना पं. शिवनन्दन राय जी एडवोकेट के अनुरोध से आप पुनः पटना पधारे। इस बार पटना की जनता ने आपका विशेष स्वागत किया था। बिहार की राजधानी
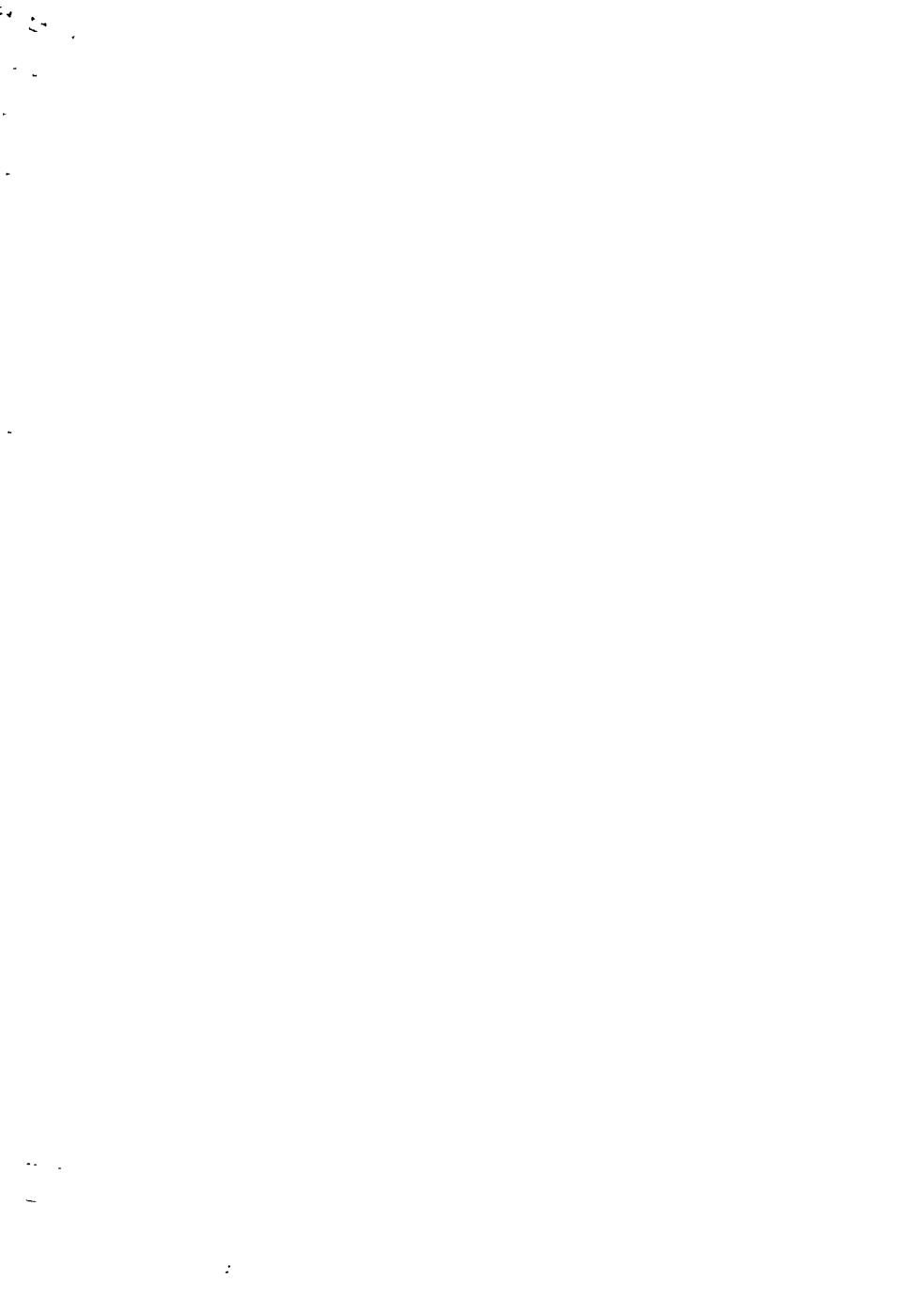
कर विराट सभाओं में गर्जना करते रहे। जन्माष्टमी के अवसर पर कलकत्ता की व्रजवासी सभा द्वारा आयोजित विराट सभा में पण्डित जी का प्रभाव-पूर्ण उपदेश सुनकर हज़ारों मनुष्य उनके अनुयायी हो गये।

अनशन का प्रारम्भ

बंगाल के महामान्य नेता श्री रामानन्द चटर्जी, संतोष-कुमार जी वसु, श्री स्वामी सत्यानन्द जी, श्री निर्मल-चन्द्र "चन्द्र" तथा श्रीमती सरला बाला सरकार, डा० सरसीलाल सरकार, श्री जे. सी. गुप्ता और राय बहादुर सखीचन्द जी आदि प्रतिष्ठित पुरुषों के विशेष उद्योग तथा प्रबल प्रयत्नों से "अलबर्ट हॉल" में एक महती सभा हुई। सभापति का आसन माननीय हीरेन्द्रनाथ दत्त महोदय ने ग्रहण किया था। आरम्भ से अन्त तक सभी वक्ताओं ने तथा सभापति महोदय ने अपने भाषणों द्वारा "वीर" जी से उपवास का निश्चय त्याग देने का अनुरोध किया किन्तु "वीर" जी अपने निश्चय पर अटल रहे और उन्होंने स्पष्ट घोषित कर दिया कि मैं ५ सितम्बर १९३५ से आमरण उपवास अवश्य प्रारम्भ कर दूंगा। मेरी मृत्यु से बंगाल में ही नहीं प्रत्युत भारतवर्ष के अगणित मन्दिरों की पशुबलि बन्द हो जायगी।

उक्त निश्चय के अनुसार "वीर" जी ने ५ सितम्बर से प्राणान्त अनशन आरम्भ कर दिया। उनके उपवास प्रारम्भ ... कवीन्द्र श्री रवीन्द्रनाथ जी ठाकुर महोदय ने

अपने कर-कमलों से लिखित पत्र श्री हीरेन्द्रनाथदत्त महोदय को भेजा जिसका आशय इस प्रकार था—

विश्वकवि की विचारधारा

"जो कार्य करने का शर्मा जी ने निश्चय किया है वह वास्तव में त्याग का उच्च आदर्श है। हमारा मस्तिष्क इतना विचारशील नहीं है जो निर्णय कर सके कि शर्मा जी के व्रत का क्या परिणाम होगा। इसमें संदेह नहीं कि शक्ति की उपासना के लिये बंगाल में होने वाली पशुबलि को रोकना बड़ा दुष्कर कार्य है। मुझे ज्ञात है कि इस महात्मा के बलिदान का उद्देश शीघ्र सफल नहीं होगा किन्तु आत्मबलिदान की महिमा असम है। उनके बलिदान से हमें कष्ट तो अवश्य होगा किन्तु इसी से हमें उनके कष्टों का मूल्य ज्ञात होगा। मैं नहीं कह सकता उनके कष्टों का क्या परिणाम होगा; किन्तु इतना निश्चय है कि यह भावी इतिहास की संचित निधि होगी। कुरुक्षेत्र युद्ध के पूर्व श्री कृष्ण ने अर्जुन को जो उपदेश दिया था उसका हमें स्मरण होता है। उन्होंने पार्थ के हृदय की निर्बलता की निन्दा की थी। ऐसी ही निर्बलता हम में भी पायी जाती है। पण्डित रामचन्द्र शर्मा को ज्ञात है कि इस विषय में उनका क्या कर्त्तव्य है; किन्तु हमें इसका कम ज्ञान है। उन्हें यह भी ज्ञात है कि 'स्वधर्मे निधनं श्रेयः'; किन्तु हमें कम ज्ञात है। अस्तु; मेरे हृदय ने उनके पास पत्र भेजने की आज्ञा नहीं दी।"

"वीर" जी के उपवास प्रारम्भ होते ही कलकत्ता के हिन्दू समाज में हलचल मच गई और कालीघाट की पशुहत्या के विरुद्ध विराट सभाएँ होने लगीं तथा बड़े बड़े जनप्रदर्शन निकलने लगे। नं० २०९ कार्नवालिस स्ट्रीट के विशाल भवन में आपके स्थान पर हजारों मनुष्यों की भीड़ लगने लगी।

भगवान कृष्ण पर कलंक

उपवास के तीन ही दिन व्यतीत हुए थे कि एक दुर्घटना हो गई। दिन के तीन बजे एक बंगाली जमीन्दार ने आकर "वीर" जी से कहा कि आप पशुबलि का विरोध क्यों कर रहे हैं? कृष्ण भी तो कई हजार बकरों को चबा गया था। इन शब्दों को सुन कर "वीर" जी उत्तेजित हो उठे और उन्होंने कहा कि मेरे सामने कृष्ण भगवान की निन्दा मत करो। जमीन्दार महाशय भाग खड़े हुए और "वीर" जी दुखित हृदय से कृष्ण भगवान के विरोध में जल का भी त्याग कर बैठे। जल का त्याग करने से आप के गले में भयंकर फोड़ा निकल आया और मुख से रक्त गिरने लगा। चार दिन तक "वीर" जी ने जल की एक बून्द भी मुख में नहीं डाली। कलकत्ता की हिन्दू जनता व्याकुल हो उठी। स्थान स्थान पर विराट सभाओं में प्रस्ताव पास किये जाने लगे।

व्यापक सहानुभूति

भारत के अनेक प्रान्तों, अगणित नगरों में "वीर" शर्मा के अनशन को सहानुभूति में सम्मिलित प्रार्थनाएँ और विराट सभाएँ होने लगीं। मद्रास प्रान्त के बंगलोर नगर से पशुबलि विरोधी संस्था के संचालक कलकत्ता आकर "वीर" जी से अनशन छोड़ने का अनुरोध करने लगे। दक्षिण हैदराबाद की 'जीवदया ज्ञान प्रचारक मण्डली' के मन्त्री श्रीलाल जी मेघ जी महोदय अपनी भजन मण्डली को लेकर "वीर" जी की सहायता के लिये कलकत्ता में आकर कालीघाट की पशुबलि के विरुद्ध घूम घूम कर प्रचार करने लगे। ४३६, मिनरी स्ट्रीट मद्रास की साउथ इण्डियन ह्यूमेनिटेरियन लीग ने कई हजार इङ्गलिश भाषा के विज्ञापन "वीर" जी के प्राण बचाने के लिये मद्रास प्रान्त में वितरित किये। आगरा की 'श्री जीवदया प्रचारिणी सभा' ने भी अपने प्रतिनिधि श्री बाबूलाल जी बजाज को "वीर" जी के पास भेज कर अनशन छोड़ देने का प्रबल अनुरोध किया।

पण्डित जी के परम भक्त श्री लक्ष्मण प्रसाद जी स्वर्णकार, जगन्नाथ जी स्वर्णकार, रामचन्द्र स्वर्णकार, बाबूलाल बिलैय्या सदृश उत्साही युवक मध्य प्रान्त के सागर नगर से कलकत्ता आ गये और रात रात भर जाग कर "वीर" जी की सेवा करने लगे।

बिहार-भूषण बाबू जगतनारायण लाल जी ने इसी बीच में कलकत्ता में दो बार आकर "वीर" जी को अनशन छोड़ने का बार बार अनुरोध किया। मुंगेर के प्रसिद्ध जमीन्दार बाबू दलीप-नारायण सिंह जी एम. एल. ए. ने एक बहुत बड़े पत्र द्वारा "वीर" जी को अनशन छोड़ने की प्रार्थना की।

तत्कालीन राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी ने भी तार देकर अनशन छोड़ने का अनुरोध किया।

माहेश्वरी भवन की सभा

अनशन के प्रारम्भ में धर्मप्राण "वीर" जी के शरीर का तौल १२४ पौंड था। प्रति दिन १ पौंड उनका तौल घटने लगा। जल के त्याग देने से उनके मुख से रक्त अधिक मात्रा में गिरने लगा। अनशन का पांचवां दिन था। पेट सिर तथा समस्त शरीर में पीड़ा होने लगी। हृदय की गति धीमी पड़ गई। ता. ११ सितम्बर भाद्रपद शुक्ला १४ को माहेश्वरी भवन में एक बहुत बड़ी सभा की गई। उपस्थिति दस हजार से भी अधिक थी। माहेश्वरी भवन के विशाल प्रांगण एवं विस्तीर्ण छतों पर भी जब बैठने को स्थान न मिला तो सभा में बहुत समय तक कोलाहल होता रहा। सभापति का आसन कलकत्ता के प्रसिद्ध धनकुबेर श्रीमान् सेठ रामकुमार जी बांगड़ ने सुशोभित किया था। इस सभा के लिये कलकत्ता के एक सौ पच्चीस प्रसिद्ध प्रसिद्ध व्यापारियों एवं प्रसिद्ध नेताओं की ओर से दस हजार विज्ञापन वितरित किये गये। यह सभा सभी दृष्टियों से महत्वपूर्ण थी।

किन्तु इस सभा में एक दुर्घटना हो गई। अनशन के होते हुए भी कलकत्ता की जनता को अपना अन्तिम संदेश सुनाने के लिये एक आरामकुर्सी पर लेटा कर "वीर" जी को सभा में लाया गया था। "वीर" जी ने अपना भाषण देते हुये जिस समय मूक पशुओं की हत्या का जब करुणापूर्ण दृश्य का वर्णन किया तो सैकड़ों व्यक्तियों के नेत्रों से आंसू टपक टपक गिरने लगे।

पंडित जी का भाषण—

"मैं गत ३ दिवस से मौन था, किन्तु आपलोगों की श्रद्धा एवं आशीर्वाद ने मुझे वाचाल बना दिया। मेरे पूर्व पुरुष महात्मा गोपालदास जी का बादशाह जहांगीर की राजसभा में बलिदान हुआ था। उन्होंने बादशाह से अपमानित होकर अपने ही हाथ से अपने हृदय में कृपाण का प्रहार करके स्वर्गारोहण किया था। यदि मैं भी उस महात्मा का वंशज होकर धर्म के लिये मर मिटूं तो आश्चर्य नहीं। आज ही मुझे पिता जी का बड़ा ही कारुणिक पत्र मिला है उन्होंने लिखा है—'तुम्हारा फोटो देख कर बड़ी आकुलता हुई। क्या मेरा वंशप्रदीप सर्वदा के लिये ही बुझ जायगा? तुम्हारी प्रतिज्ञा यद्यपि सराहनीय अवश्य है; किन्तु तुम्हारे इस उद्योग में मृत्यु हो गई तो मैं इस वृद्धावस्था में तड़फ तड़फ कर प्राण त्याग दूंगा। मैं शीघ्र ही कलकत्ता पहुंच रहा हूँ। काली के मन्दिर में सिर फोड़ फोड़ कर तुम्हारे साथ ही शरीर का अन्त कर दूंगा।' पत्र के उत्तर में मैंने लिखा है कि 'पिता जी आप ईश्वर के भक्त हैं उन पर विश्वास रखिये और गौओं की सेवा कीजिये आपके पत्र का विस्तृत उत्तर कलकत्ता के

पण्डित जी की मृत्यु से वह मृतक तुल्य हो जायगा। इसी बीच में पण्डित बालकृष्ण जी चतुर्वेदी ने प्रभावशाली कविता प्रस्ताव के पक्ष में सुनाई ज्वाला प्रसाद जी कानोडियाने कहा कि अहिंसा परमधर्म है। जिस स्थान में मूक पशुओं का वध होता है वह कसाई खाने से कम नहीं है।

(२) सेठ विलास राय जी डालमियां का प्रस्ताव—

स्थानीय कालाघाट में देवीके सम्मुख पशुओं की वलि वंद कराने के निमित्त पंडित रामचन्द्र जी शर्मा "वीर" ने आमरण उपवास आरम्भ कर दिया है। अतः बड़ा बाजार निवासियों का यह परम कर्तव्य है कि इस धर्म के नाम पर होने वाली घोर पशुबलि को बन्द करवा कर पण्डित जी के प्राणों की रक्षा करें। अपने प्रस्ताव के समर्थन में आपने बड़ी जोशीली वक्तृता दि। श्रीमती मीठीबेन ने प्रस्ताव का समर्थन करते हुए कहा—

"पण्डित जी का स्वास्थ्य गिरता जारहा है। सात दिन के अनशन में ही उनका तौल १४ पौंड घट गया है। आपलोग पशुबलि को रोक कर दुनिया को दिखादें कि अहिंसा में कितनी शक्ति है!" इसके उपरांत पंण्डित सुन्दरलाल जी तथा पण्डित चुन्नीलाल जी मालवीय के भाषण हुए। उक्त प्रस्ताव के उपरान्त श्री तुलसीराम जी सरावगी ने निम्नलिखित प्रस्ताव उपस्थित किया।

(३) बड़ा बाजार निवासियों की यह सभा काली मंदिर के पंडों से निवेदन करती है कि इस क्रूर प्रथा को बन्द कर लोक मत का आदर करें अन्यथा इसे बंद कराने के लिये हजारों

बंगाल की बहिनों से मेरी यह अपील है कि पंडित राम चन्द्र शर्मा "वीर" के प्राण बचाने का उपाय करें। पण्डित जी काली माता के नाम पर पशुबलि बंद कराने के लिये अपने प्राणों की आहुति दे रहे हैं। मैं हिन्दू परिवार की एक पुत्री होने के अधिकार से यह लिख रही हूँ मैं विश्वास करती हूं कि प्रत्येक सच्ची हिन्दू महिला मानवता के नाते मेरी इस अपील में योग देगी। काली माता जिन्हें मैं जगत माता समझती हूं। बकरे तथा मूक पशुओं की अपेक्षा आत्म बलि को पसंद करेगी माता के पुजारियों से मैं अपील करूंगा कि वही अपना मस्तक काट कर काली माता को चढ़ादें और बंगाली बहिनें निरपराध बकरी के बच्चों को कटवाने की अपेक्षा अपने बच्चों की बलि दे दें। तो बलि प्रथा का अंत हो जाय।

समाचार पत्रों का सहयोग

कलकत्ता के प्रायः सभी समाचार पत्रों में यथा अंग्रेजी के ऐडवान्स, स्टार ऑफ इण्डिया, फारवर्ड, स्टेट्समैन, अमृत बाजार पत्रिका, माडर्न रिव्यू और बंगाल के अवतार, वैतालिक, धरात्री, देश, बंगालारकथा, प्रवासी, आनंद बाजार पत्रिका, बसुमति, शक्तिपूजा, वन्देमातरम्, हिन्दू एवं हिन्दी के लोकमान्य, विश्वमित्र, मारवाड़ी ब्राह्मण, काव्य कलाधर जैन दर्शन चित्रपट, खण्डेलवाल जैन हितेच्छु, समाज सेवक, स्वतंत्र भारत, हिंदी बंगवासी, जैन बन्धु, हिन्दुस्तान, तूफान आदि

अनशन के विरुद्ध तथा कालीघाट की पशुवृत्ति के समर्थन में स्थान स्थान पर सभाएं कर के ऊधम मचाना प्रारम्भ कर दिया। एक ओर तो तरुण तपस्वी "वीर" जी के मुख से रक्त की बूंदें टपक टपक कर गिर रही थीं और उनके प्राण बचाने के लिये देश का अगणित जनसमुदाय व्याकुल होकर आन्दोलन कर रहा था। दूसरी ओर मुट्ठी भर कट्टरपंथी कूपमण्डूक, अपनी डेढ़ चावल की खिचड़ी अलग ही पका रहे थे और "वीर" जी के विरुद्ध भाँति भाँति के विज्ञापन विविध व्यंगचित्रों के साथ बंट रहे थे। उनलोगों ने काली घाट के पंडों के पैसों के बल पर "वीर" जी के विरुद्ध एक पुस्तक माला भी प्रकाशित कर डाली। उन पुस्तकों में मुख्य मुख्य निम्नलिखित थीं। 'राम शर्मा ओ रविन्द्रनाथ' 'राम शर्मा ओ पी. सी. राय' 'राम शर्मा ओ गिरलाबन्धु' 'राम शर्मा ओ चोट भिखारीगन'।

इन छोटी छोटी पुस्तिकाओं में पण्डित "वीर" शर्मा के साथ साथ बंगाल के प्रसिद्ध महापुरुषों को जिन्होंने "वीर" जी के आन्दोलन में सहानुभूति एवं सहयोग प्रदान किया था उन्हें गालियां दी गई थीं। और नीचता पूर्ण आक्षेप किये गये थे, एक पुस्तक जिसका नाम था 'राम शर्मा ओ रामानंद' उसमें पंडित जी तथा श्रीयुत रामानन्द जी चटोपाध्याय पर अनुचित आक्षेप किये गये थे। उक्त पुस्तक के मुख पृष्ठ पर धर्मप्राण "वीर" जी का व्यंग चित्र था। उक्त चित्र में "वीर" जी को प्राणायाम करते हुये प्रदर्शित किया गया था उनकी गोद में दो बकरे बैठे हुये दिखाये गये थे। दो बकरे उनके कानों में बात करते हुये

शुं वर्णाश्रम स्वराज्य संघ हिंसक छे

(क्या वर्णाश्रम स्वराज्य सङ्घ हिंसक है ?)

पण्डित रामचन्द्र शर्मा जी आज कई दिनों से कलकत्ता में काली के मन्दिर के आगे आमरणान्त उपवास प्रारम्भ किये हैं। कलकत्ता की इस कालिका के मन्दिर के आगे सदैव मूक निर्दोष पशुओं की हिन्दू धर्म के नाम पर भयङ्कर हत्या होती है। अहिंसा प्रेमी भाइयों ने तो कदाचित बात सुनी होगी; परन्तु ऐसे राक्षसी दृश्य जो दृष्टि में पड़ जायँ तो उनके रोम रोम काँप उठें और ऐसे हिन्दू धर्म के प्रति हृदय में क्रोध की अग्नि प्रज्वलित हो उठे। इस पशुवध को रोकने के लिये पण्डित जी को गत वर्ष से तिलमिलाहट उत्पन्न हुई। इस प्रकार कलकत्ता की काली के मन्दिर के ऊपर जाकर आमरणान्त उपवास प्रारम्भ किया। हिन्दू धर्म के नाम पर होनेवाली इस भीषण हत्या को अटकाना यदि जो न अटके तो ऐसे हिंसक हिन्दू धर्म में जीने की अपेक्षा अपने ही जीवन का अन्त कर देना श्रेयस्कर है। ऐसा निर्णय पूज्य पण्डित जी ने किया है कई दिनों से उनका उपवास चल रहा है और निकट भविष्य में ही उनकी क्या स्थिति होगी वह कहीं नहीं जा सकता। इस शीघ्रता के लिये कई महानुभाव पण्डित जी की भूल समझते हैं; परन्तु सच्ची भूल तो कलकत्ता के वर्णाश्रम स्वराज्य सङ्घ की शाखा की है। जिसने हिंसा रोकनेवाला आन्दोलन पण्डित रामचन्द्र शर्मा नहीं करें, ऐसा हिंसा को

उत्तेजना देने वाला प्रस्ताव स्वीकृत किया है। यह प्रस्ताव श्री गोकुलनाथ जी के आश्रय में निकलने वाले बम्बई के एक सम्वाद पत्र में ता० १७-७-३५ के रोज पृष्ठ ३ में प्रकाशित हुआ है और अखिल भारतीय वर्णाश्रम स्वराज्य सङ्घ के सभापति गोस्वामी जी महाराज स्वयं हैं तो इनको हम कल्याण के नागरिक भाइयों की तरफ से प्रार्थना की जाती है कि वर्णाश्रम स्वराज्य सङ्घ यदि अहिंसक संस्था हो तो कलकत्ता की शाखा के किये हुए प्रस्ताव को रद्द कर दें यदि संस्था हिंसक है तो गोस्वामी जी महाराज को चाहिये कि स्वयं वैष्णव धर्माचार्य होने के नाते हिंसक संस्था के सभापति पद को त्याग दें और जो श्री महाराज भी ऐसे दाम्भिक अखाड़ों को प्रोत्साहन देना चाहते हों और धर्म के नाम पर होने वाली हिंसा में श्रद्धा हो तो परमेश्वर ही गोस्वामी महाराज के शिष्यों का कल्याण कर सकते हैं।

१. गङ्गाराम शिवराम रावल।

२. प्राणभाई वी. ठक्कर।

३. ठाकुर द्वारकादास भभवानदास।

४. रणछोड़ भाई प्रागजी भाई पटेल।

५. ठाकुर छोटालाल गिरधरलाल।

जिन वर्णाश्रमी विभूतियों ने "वीर" जी के विरुद्ध विषैला वायुमंडल उत्पन्न करने का असफल प्रयत्न किया था उनका नाम लिखते हुये इन पंक्तियों के लेखक को घोर घृणा हो रही है। परन्तु बलि विरोधी आन्दोलन के इतिहास में इन मांस भक्षी

महापुरुषों को बिना स्मरण किये ही ग्रंथ की रचना मेजिस्ट्रेट के इकतरफा फैसले की भाँति ही मानी जायेगी। अस्तु हमारे दयाप्रेमी पाठकों निम्नलिखित नामावलि अंकित की जा रही है यथा—

(१) महामाहोपाध्याय श्री पं. दुर्गाचरण सांख्य वेदान्त तीर्थ।

(२) महामाहोपाध्याय हरिदास सिद्धान्त बागीश।

(३) जीवन्यायतीर्थ एम ए.

(४) वसंतकुमार चटर्जी एम. ए.

(५) सत्येन्द्रनाथ सेन एम. एफ.

(६) नरेन्द्रनाथ सेठ एडवोकेट

(७) हरेन्द्रनाथ भट्टाचार्य एडवोकेट

इन महानुभावों के अतिरिक्त कलकत्ता के प्रसिद्ध कूपमण्डूक पत्र "हिन्दी बंगवासी" ने भी "वीर" के विराट आन्दोलन का मूलोच्छेद करने की मिथ्या अभिलाषा के आवेग में आकर धर्मप्राण "वीर" जी पर कीचड़ उछालने में कोई कोर कसर नहीं रखी। बंगवासी का अनुकरण करके काशी का 'पंडितपत्र' भी कार्यक्षेत्र में कूद पड़ा और अपनी सम्पादकीय कॉलम कुल्हाड़ी लेकर बलिविरोधी आन्दोलन की जड़ों को काट डालने का दुःसाहस कर दिखाया। अनाथ पशुओं की हत्या को धार्मिक अनुष्ठान बतलाने वाली इस मुट्ठी भर पण्डित मंडली ने अन्त में निराश होकर घुटने टेक दिये।

महात्मा जी की मनोवृत्ति

पंडित रामचन्द्र जी शर्मा "वीर" के अनशन का आठवाँ दिन था। उनके शरीर का तौल १०८ पौण्ड ही रह गया और रक्त की मात्रा अधिक गिरने लग गई। ऐसी परिस्थिति में डाक्टर अंकलेश्वरिया के तारका उत्तर देते हुए महात्मा जी ने तार द्वारा ही अपना संदेश भेज दिया जो इस प्रकार था।

"दुःख है पण्डित जी को उपवास तोड़ कर वहां धर्म प्रचार करना चाहिये क्योंकि मैंने पूर्व ही कहा था कि इस प्रकार के उपवास से कुछ असर नहीं पड़ सकता। पंडित जी का अनशन असामयिक है। उन्हें अनशन के पूर्व योग्यता प्राप्त करनी चाहिये।" महात्मा जी के तार के उपरान्त राष्ट्रपति श्री बाबू राजेन्द्रप्रसाद ने भी डाक्टर अंकलेश्वरिया के पास तार द्वारा निम्न सूचना भेजी थी।

"पण्डित रामचन्द्र शर्मा जिस सुधार का आदर्श समाज के सामने रखना चाहते हैं उसकी सफलता के लिये कट्टर पंथी हिन्दू जनता में शांति एवं गंभीरता पूर्वक प्रबल आन्दोलन करने की आवश्यकता है अनशन के समान कठोर कार्यों को करने के लिये अभी देश बिलकुल ही तैयार नहीं है। पण्डित जी से अनुरोध कीजिये कि वे आमरण अनशन की भीष्म प्रतिज्ञा छोड़ दे और सहृदयता एवं तार्किकता के नाम पर बंगाल से पशु बलि बंद करने की अपील करें।"

इन तारों के सम्बन्ध में "लोकमान्य" का प्रतिनिधि पण्डित
जी से मिला था। उन्होंने प्रतिनिधि को कहा कि आत्म बलि-
दान के बिना किसी भी देश में किसी भी समय ढाल तैयार
नहीं हुये मैक्स्विनी के बलिदान ने आयर्लैन्ड का स्वतंत्रता का क्षेत्र
तैयार किया और महात्मा ईसा के बलिदान ने ही संसार भर
मे ईसाई धर्म का प्रचार किया। इसी प्रकार मेरा बलिदान
भी पशुबलि के विरुद्ध ढाल तैयार कर देगा।

श्रीमती मोहिनी देवी के सभापतित्व में श्रद्धानंदपार्क मे १३
सितम्बर को सायंकाल के ६ बजे १ विराट सार्वजनिक सभा हुई।
जिसमें अनेक महिलाओं के 'वीर' जी की प्राण रक्षा के लिये
ओजस्वी भाषण हुये।

इसी प्रकार कालीघाट के निकट 'हाजरा पार्क' में भी ए
विराट सभा हुई। श्री गिरिजाकान्त गोस्वामी, श्री पन्नालाल दे,
लक्ष्मीचन्द्र मुकर्जी और डाक्टर माणिक जी अंकलेश्वरिया के
प्रभावशाली भाषण हुए। इस सभा को भङ्ग करने के लिये
यद्यपि कालीघाट के पण्डों ने उपद्रव करने मे कुछ कमी नहीं
रक्खी फिर भी उनकी उपस्थिति में ही कालीघाट के मन्दिर के
बहिष्कार का प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत होगया।

'लोकमान्य' के प्रतिनिधि ने पत्र में प्रकाशनार्थ जब पण्डित
जी से वक्तव्य माँगा तब उन्होंने निम्नलिखित विचार प्रकट
किये। भारतवर्ष ब्रह्मर्षि दधीचि, महाराज शिवि और भगवान
बुद्ध की जन्म-भूमि है। यहाँ सदा से ही अहिंसा की गङ्गा
प्रवाहित होती रही है। महाभारत के संग्राम में १८ अक्षौहिणी

सेना का रक्त बहाया गया था। किन्तु इस महायुद्ध का उद्देश
अहिंसा की रक्षा करना ही था। क्योंकि काँटे को काँटे से ही
निकाला जाता है और विष से ही विष का दमन होता
है इसी सिद्धान्त को सामने रख कर भगवान कृष्ण
ने कुरुक्षेत्र में महायुद्ध का भीषण आयोजन किया था। यदि
महाभारत का युद्ध न होता तो सारा भारतवर्ष हिंसा के दावानल
में भस्म हो जाता। आर्य्य सभ्यता जर्जरित हो जाती। सनातन
वैदिक धर्म की पवित्र मर्यादा नष्ट-भ्रष्ट हो जाती। जरासंध,
शिशुपाल, दुष्ट दुर्योधन, स्त्रियों का सतित्व लूट रहे थे। भगवान
कृष्ण ने यद्यपि नरपिशाचों को पहले शान्ति से ही समझाने का
प्रयास किया; किन्तु परिणाम विपरीत होने के कारण अन्त में
रक्त की धाराएँ बहानी पड़ीं; परन्तु उन रक्त की धाराओं के
बहाने का उद्देश हिंसा नहीं था। प्रत्युत अहिंसा ही था।
अत्याचारियों को मारने में मैं हिंसा नहीं मानता। निर्बल
निरपराध मूक पशुओं को मारना ही राक्षसी कृत्य है और हिंसा
को बन्द कराने के लिये यदि मेरी जीवन लीला समाप्त हो जायगी
तो मुझ से बढ़ कर संसार में भाग्यवान कौन होगा? आज
हमारे मन्दिरों को 'मिस मेयो' सदृश अमेरिकन महिलाएँ मदर
इण्डिया नामक पुस्तक में 'कसाईखाना' बतलाती हैं। क्या
मिस मेयो का यह आक्षेप निराधार है? विदेशों में "इण्डिया
स्पीक्स" और "बङ्गाली लान्सर" नामक फ़िल्म दिखा कर हमारी
सभ्यता अपमानित की जा रही है। क्या विदेशियों के धिक्कारने
पर भी हमारी आँखें नहीं खुलेंगी? क्या हिन्दू धर्म भ्रष्टाचारी

ही बना रहेगा? मैंने
वाममार्गियों की वासनापूर्त्ति का साधन ही बना रहेगा? मैंने
शास्त्रों का अध्ययन किया है और मैं अनेक श्लोकों और वेद के
मन्त्रों का प्रमाण देकर पशुबलि प्रथा का खण्डन कर सकता हूँ;
किन्तु खण्डन-मण्डन के वितण्डावाद में पड़ कर मैं अनाथ पशु-
पक्षियों का कल्याण नहीं कर सकूँगा, आज हमारा हिन्दू समाज
नष्टप्राय हो चुका है। हिन्दू धर्म में सहस्रों सम्प्रदाय हो गये हैं,
सभी सम्प्रदाय एक दूसरे के विरुद्ध घृणा और द्वेष की सृष्टि
कर रहे हैं। आज काश्मीर से कन्याकुमारी अन्तरीप तक
प्रतिदिन लगभग सत्तर हजार गौओं का संहार हो रहा है;
किन्तु किसी भी धर्मध्वजी के हृदय में चोट नहीं लगती।
भारतवर्ष के हिन्दू भी अब तो किसी न किसी रूप में गो-हत्या
के भागी हो रहे हैं। मैंने जो मन्दिरों की पशु-हत्या के विरुद्ध
प्राणान्त उपवास आरम्भ किया है इसका प्रधान हेतु गो-रक्षा
ही है। केवल विधर्मियों को अपशब्द बकने से ही गो-रक्षा
नहीं होगी। मेरा तो विश्वास है कि जब तक हिन्दू मांस भक्षण
न छोड़ेंगे तब तक गो-रक्षा असम्भव है। भारतवर्ष में २८ करोड़
हिन्दू हैं जिनमें २० करोड़ हिन्दू मांसाहारी हैं और विधर्मियों
की संख्या केवल आठ करोड़ है। विधर्मियों का मांसाहार
छुड़ाना अभी कठिन ही नहीं असम्भव है। उनका मांस के
बिना चैन ही नहीं पड़ता। बकरे का मांस आठ आने
सेर है जबकि गो-मांस तीन आने सेर है। विधर्मियों
में ईसाई तो मुट्ठी भर हैं। आठ करोड़ के लगभग दुराग्रही
मुसलमान हैं जो निर्धन हैं। बकरे का मांस या अन्य

मृत्यु यदि इस महान यज्ञ में हो जायगी तो भारतवर्ष के मन्दिरों से निरपराध पशुओं का हत्याकाण्ड सर्वथा बन्द हो जायेगा।

मेरे पास मेरे अनुयायियों के अनेक पत्र आये हैं जिन में मेरे पास ही अनशन करने की मुझ से आज्ञा मांगी है उन .भा प्रेमियों से मेरा हार्दिक अनुरोध है कि वे मेरे पास न आकर अपने अपने नगरों की पशुबलि विजयादशमी के पूर्व ही बन्द कराने का प्रबल आन्दोलन करें।

इतना लम्बा चौड़ा वक्तव्य देने के कारण पण्डित जी शिथिल हो गये और "लोकमान्य" के प्रतिनिधि के चले जाने पर वे बहुत देर तक अर्धमूर्छित से हुये पड़े रहे। अधिक बोलने के कारण उनके कान के नीचे कण्ठ के दाहिनी ओर जो ग्रन्थि निकल आई थी उसकी पीड़ा भी अत्यधिक बढ़ गयी।

वीर जी की भीषण अवस्था को देख कर रामपुर राज्य निवासी पं० राधामोहन चतुर्वेदी का कविहृदय आन्दोलित हो उठा और उन्होंने हृदयस्पर्शी कविताएँ रचकर वीर जी को सुनाई जो निम्नांकित हैं।

॥ सोरठा ॥

अब मति करें विलम्ब दे अवलम्ब सुवीरवर।
जो पै तू जगदम्ब तो अब पशुबलि बन्द कर॥

॥ कवित्त ॥

(१)

वीरो ! ब्रजवासियो ! विचार बुद्धि से लो काम,
नाम हो तुम्हारा और काम हो भलाई का।

ब्राह्मण के वध का लगा जो पाप शाप तुम्हें,
भाल पै बङ्गाल के लगेगा दाग स्याही का ॥
पशुवलि बन्द कर 'वीर' का बचाओ प्राण,
परम प्रसन्न मन होगा महामाई का।
देव मन्दिरों में मत रक्त की बहाओ धार,
बनके पुजारी काम छोड़ दो कमाई का ॥

(२)

अबल अरक्षण की रक्ष पक्ष पाली मातु,
बलि है तिहारी शत्रु शोणित बहान की।
चण्ड मुण्ड हिंसक, विध्वंसक तिहारी तेग,
आई है सो तासु जौहर जतान की ॥
तृण के चरैया मूक जीव जो तिहारे मैया,
हिंसा होत दैया तेरे द्वारे पशु प्राण की।
हे हे जगदम्ब अवलम्ब दे विलम्ब त्याज,
लाज राख वीर ने लगाई बाजी जान की ॥

(३)

ला देगी अवश्य खोई हुई शक्ति भारत की,
एक बार सोते हुये सिंह को जगा देगी।
गा देगी बहादुरी के वीर रस भरे राग,
हठी हिंसावादियों के होश को भुला देगी ॥
दे देगी अमर वरदान 'वीर' वर जू को,
गोद में बिठा के भवताप विलगा देगी।
गा देगी अहिंसा के मधुर मनहर गीत,
'वीर' की प्रतिज्ञा ब्रह्माण्ड को हिला देगी ॥

मृत्यु यदि इस महान यज्ञ में हो जायगी तो भारतवर्ष के मन्दिरों से निरपराध पशुओं का हत्याकाण्ड सर्वथा बन्द हो जायेगा।

मेरे पास मेरे अनुयायियों के अनेक पत्र आये हैं जिन में मेरे पास ही अनशन करने की मुझ से आज्ञा मांगी है उन प्रेमियों से मेरा हार्दिक अनुरोध है कि वे मेरे पास न आकर अपने अपने नगरों की पशुबलि विजयादशमी के पूर्व ही बन्द कराने का प्रबल आन्दोलन करें।

इतना लम्बा चौड़ा वक्तव्य देने के कारण पण्डित जी शिथिल हो गये और "लोकमान्य" के प्रतिनिधि के चले जाने पर वे बहुत देर तक अर्धमूर्छित से हुये पड़े रहे। अधिक बोलने के कारण उनके कान के नीचे कण्ठ के दाहिनी ओर जो ग्रन्थि निकल आई थी उसकी पीड़ा भी अत्यधिक बढ़ गयी।

वीर जी की भीषण अवस्था को देख कर रामपुर राज्य निवासी पं० राधामोहन चतुर्वेदी का कविहृदय आन्दोलित हो उठा और उन्होंने हृदयस्पर्शी कविताएँ रचकर वीर जी को सुनाई जो निम्नांकित हैं।

॥ सोरठा ॥

अब मति करै विलम्ब दै अवलम्ब सुवीरवर।
जो पै तू जगदम्ब तो अब पशुवलि बन्द कर॥

॥ कवित्त ॥

(१)

वीरो ! बङ्गवासियो ! विचार बुद्धि से लो काम,
नाम हो तुम्हारा और काम हो भलाई का।

ब्राह्मण के वध का लगा जो पाप शाप तुम्हें,
भाल पै बङ्गाल के लगेगा दाग स्याही का॥
पशुबलि बन्द कर 'वीर' का बचाओ प्राण,
परम प्रसन्न मन होगा महामाई का।
देव मन्दिरों में मत रक्त की बहाओ धार,
बनके पुजारी काम छोड़ दो कमाई का॥

(२)

अबल अरक्षण की रक्ष पक्ष पाली मातु,
बलि है तिहारी शत्रु शोणित बहान की।
चण्ड मुण्ड हिंसक, विध्वंसक तिहारी तेग,
आई है सो तासु जौहर जतान की॥
तृण के चरैया मूक जीव जो तिहारे मैया,
हिंसा होत दैया तेरे द्वारे पशु प्राण की।
हे हे जगदम्ब अवलम्ब दे विलम्ब त्याज,
लाज राख वीर ने लगाई बाजी जान की॥

(३)

ला देगी अवश्य खोई हुई शक्ति भारत की,
एक बार सोते हुये सिंह को जगा देगी।
गा देगी बहादुरी के वीर रस भरे राग,
हठी हिंसावादियों के होश को भुला देगी॥
देवेगी अमर वरदान 'वीर' वर जू को,
गोद में विठा के भवताप बिलगा देगी।
गा देगी अहिंसा के मधुर मनहर गीत,
'वीर' की प्रतिज्ञा ब्रह्माण्ड को हिला देगी॥

मातृ स्नेह

धर्मप्राण पण्डित रामचन्द्र शर्मा "वीर" की शारिरीक स्थिति शनैः शनैः शिथिल होती जा रही थी। उनके हाथ पैर सूने होते जा रहे थे। पेट, कमर, और पीठ की पीड़ा बढ़ने लगी थी ऐसी भीषण स्थिति में कलकत्ता की सुशिक्षित महिलाओं का हृदय आन्दोलित हो उठा। गुजराती, बंगाली, बिहारी और मारवाड़ी महिलायें अपनी उच्च अट्टालिकाओं से निकल निकल कर "वीर" शर्मा जी के दर्शनों के लिये उमड़ २ कर आने लगीं। देखने से यही प्रतीत होता था मानो मातृ शक्ति ने स्वयं अपने "वीर" पुत्र के प्राण बचाने के लिये करुणा की धारा प्रवाहित कर दी है। श्रीमती माता इकबालदेवी ने तो "वीर" जी के अनशन गृह का दृश्य ही परिवर्त्तित कर दिया था। जब स्त्रियों और पुरुषों की भीड़ हजारों की संख्या में बढ़ने लगी और स्वयंसेवकों से प्रबन्ध न बन सका तब वयोवृद्धा माता इकबाल देवी गरज कर भीड़ को हटा देती थी। और उनकी एक दृष्टि ही में शान्ति का वातावरण बन जाता था। यह वीर माता आठ आठ घंटा तक खड़े रह रह कर अथक परिश्रम के साथ उमड़ती हुई भीड़ पर नियंत्रण करती रही। यद्यपि माताजी की सहायता के लिये पचीस, तीस सुशिक्षित स्वयंसेविकाएँ भी रहती थीं और उन स्वयं-सेविकाओं पर श्रीमती शकुन्तला देवी एम. ए. प्रधानाध्यापिका आर्य्य कन्या महाविद्यालय का नेतृत्व रहता था। तथापि माता

इकबाल देवी का प्रभाव महिलामण्डल पर अत्यधिक था। कलकत्ता की महिलाएँ हजारों की संख्या में प्रचण्ड जुलूस बना बना कर नगर के भिन्न भिन्न बाजारों में पशुबलि के विरुद्ध प्रबल आन्दोलन करने लगीं। कलकत्ता के अतिरिक्त भारत के विभिन्न नगरों से अनेक महिला संस्थाओं ने "वीर" जी की दीर्घायु के लिये तार और पत्र भेज कर अपनी शुभ कामनाएं प्रकट की थीं।

बम्बई के घाटकोपर उपनगर म्युनिस्पल बोर्ड की आदरणीया सदस्या श्रीमती हीरा बहन ने बम्बई के प्रसिद्ध गुजराती पत्र "सांझ वर्त्तमान" में अपनी करुणा पूर्ण कविता प्रकाशित कराई थी। इस आदरणीया बहिन ने धर्मप्राण "वीर" जी के प्रति उक्त कविता किस भक्ति भाव पूर्वक अर्पित की हैं और कविता की प्रत्येक पंक्ति में शुद्ध राष्ट्रीयता की उच्च भावनाएँ कितने सुन्दर शब्दों में व्यक्त की गई हैं उन्हें गुजराती भाषा में अक्षरशः अंकित करना उचित प्रतीत होता है।

❀ गुजराती गान ❀

अमारा देशनो दीवो प्रभू बुझावशो नाहीं।
अमारा हिन्द नो हीरो, प्रभू झुटावशो नाहीं॥
अहिंसा सत्य नीतीना, अमूल्या दानजे दीधां।
दिधेलां दानना वृक्षो, प्रभू करमावशो नाहीं॥
करी सेवा छे जीवन भर, अमारा मन हरी लीधां।
हरेलां ए हमारा मन, प्रभू सन्तापशो नाहीं॥

अमारी मातृ भूमीनां, पनोता 'राम' ए प्यारा।
अमारा नावना नाविक, प्रभू डुभावशो नाहीं॥
करोड़ों राकड़ी गायो, अमारा हिन्दू भूमीना।
अहिंसा धर्म उद्धारक, प्रभू विशारसो नाहीं॥
करी परवा न जीवन नी, प्रतिज्ञा भीष्म छे लीधा।
लिधेली ए प्रतिज्ञा थी, प्रभू मुभावशो नाहीं॥
अमारा राष्ट्रना वीरा, अमारा भाग्य बांधाना।
दरिद्री देशन माटे, अमर हो आश मारो छे॥

आदरणीया बहिन श्रीमती कमलादेवी ने मुजफ्फरपुर में रहते हुये शर्मा जी के अनशन के समाप्त न होने तक उपवास करने की ठान ली और अपने दुध मुँहें शिशु की प्राण रक्षा क लिये केवल आध सेर दूध प्रतिदिन पीकर ही धर्मप्राण "वीर" जी की प्राण रक्षा के लिये निरंतर ईश्वराधना में तल्लीन रहने लगी। उनके पति श्रीबंशीधर जी वर्मा ने भी "वीर" जी की दीर्घायु के लिये दो तीन दिन उपवास किये थे।

आलोचकों को प्रबल उत्तर

चौदह सितम्बर रविवार आश्विन कृष्णा तृतीया सम्वत १९९२ वि., को पण्डित जी के उपवास का १०वां दिवस था। उनके कंठ के दाहिनी ओर की सूजन और भी बढ़ गई और कंठ की पीड़ा के कारण ज्वर भी हो गया। डाक्टरों ने उनके दाँतों में पायरिया महारोग के भी लक्षण बतलाये। अनशन के पूर्व पिछले वर्ष में भारत के कई स्थानों में "वीर".

जी के कई अनशन हो चुके थे। यही कारण हुआ कि दश ही दिन में उनका शरीर क्षीण हो गया।

"लोकमान्य" के प्रतिनिधि ने आज भी 'वीर' जी को वक्तव्य देने की प्रार्थना की। आप हँसते हुये बोले—मैं जब तक जीवित रहूंगा वक्तव्य देता ही रहूंगा। मैं लगातार चार महीनों से काली जी के मन्दिर के हत्याकाण्ड के विरोध में आन्दोलन कर रहा था। यदि कलकत्ते के समाचार पत्रों ने मेरा साथ न दिया तो इसमें मेरा क्या अपराध? चार महीनों से मैंने कई आपत्तियां उठाई और अब दश दिनों से मेरे शरीर का १६ पौ. वजन घट गया है। अब, जबकि मैं मृत्यु की ओर तीव्रगति से दौड़ा जा रहा हूँ और मैंने अपने कर्त्तव्य की वेदी पर अपनी आहुति देने का पवित्र व्रत धारण कर रखा है। ऐसे समय में कुछ समाचार पत्र और भारत के महापुरुष मुझ से व्रतभंग करने की प्रेरणा करते हैं उन सभी महापुरुषों से मुझे विवाद नहीं करना है। प्रश्न यह है कि मेरा अनशन सामयिक है या असामयिक? मैं कहता हूँ अनशन के अनुकूल किसी विशेष प्रकार की हवा नहीं चला करती है, न अनशन करने की कोई ऋतु ही आया करती है। परिस्थितियों को तो मनुष्य ही बनाया करते हैं। महात्मा गान्धीजी स्वयं तो अनशन करते हैं किन्तु दूसरों को अनशन करने के लिये अयोग्य बतलाते हैं। मैं महात्मा जी से पूछता हूँ कि उन्होंने जब दिल्ली में हिन्दू मुस्लिम दंगे के समय सन् १९२३ में मुसलमानों को शान्त करने के लिये इक्कीस दिनों का अनशन किया था। क्या वह अनशन

सामयिक था ? और अनशन से क्या गौभक्षक मुसलमानों का मस्तिष्क शान्त हो गया ? ईसा की मृत्यु के पूर्व, कौन जानता था कि भविष्य में इसके आत्म-बलिदान का क्या प्रभाव होगा ? और सुकरात की मृत्यु के पूर्व कौन जानता था कि इसकी मृत्यु क्या रंग लायेगी ? इसी प्रकार सम्मतबरेज और मनसूर के बलिदानों का भी उज्ज्वल इतिहास है। विदेशों की बात छोड़ दीजिये, हमारे ही देश के राष्ट्रीय इतिहास बाल्मीकीय रामायण को गम्भीरता पूर्वक पढ़िये इस महाग्रन्थ में स्थान स्थान पर अनशनव्रत प्रायोपवेशन उपवास आदि का वर्णन मिलता है। विशेष उदाहरण न देकर मैं केवल एक ही घटना का स्मरण करा देना उचित समझता हूं। यथा--

कपिराज सुग्रीव की आज्ञा से अगणित वानरों के समूह भगवती सीता को खोजने के हित समस्त भूमण्डल में पर्यटन कर जब थक गये हैं और कहीं भी सीता जी का पता नहीं लगा, तब महारथी अंगद ने प्रतिज्ञा की—कि जगजननी सीता जी की सुधि लिये बिना मैं अब सुग्रीव जी को मुख न दिखाऊँगा और इसी समुद्र तट पर प्राणान्त अनशन करके जीवन को समाप्त कर दूंगा।

अंगदजी की प्रतिज्ञा को सुन कर सहस्रों वानरों ने भी समुद्र तट पर उपवास प्रारम्भ कर दिया उसी उपवास की अवस्था में गृद्धराज सम्पाती का आगमन हुआ और उसने वानरों को सीता जी के मिलने का उपाय बता कर प्रस्थान किया। रामायण में अनशन के अनेक वर्णन मिलते हैं, तब यह कैसे कहा जा सकता

है कि अनशन के आविष्कारक तथा सर्वाधिकारी महात्माजी ही हैं। मैं महात्माजी से नम्रता पूर्वक भिक्षा मांगता हूं कि यदि मुझ अभागे की वे कुछ सहायता नहीं कर सकते तो कम से कम इतनी ही कृपा करें कि मेरी आलोचना न करके उपेक्षावृत्ति धारण कर लें। उनकी उपेक्षा से इस आन्दोलन की गति शिथिल नहीं होगी किन्तु उनके द्वारा मेरे उपवास की आलोचना से पशुहत्या करने वालों का साहस बढ़ जायगा। मान लिया जाय कि मेरा उपवास असामयिक ही हो और उसके फलस्वरूप मेरी मृत्यु ही हो जाय तो इससे भी आन्दोलन को बल ही प्राप्त होगा—विशुद्ध बलिदान व्यर्थ नहीं जायगा।

गुरु अर्जुन को तेल की जलती हुई कड़ाही में छोड़ दिया गया। गुरु तेग बहादुर अपनी इच्छा से सिर कटाने के लिये, अत्याचारी मुगल सत्ता के सम्मुख उपस्थित हो गये। और हंसते २ सिर कटवा दिया। गुरु तेगबहादुर के लाडले लाल प्रातः-स्मरणीय गुरु गोविन्द सिह जी महाराज के छोटे छोटे बच्चों ने मुसलमानों की मदान्ध सत्ता का मूलोच्छेद करने के लिये अपने आपको दीवारों में चुनवा दिया था। आठ वर्ष के बालक हकीकत राय को जब मुसलमानों ने प्राणदण्ड की आज्ञा दी तो वह बालक हँसते हँसते उछल कर सूली पर चढ़ गया। उन नरसिंहो के बलिदान का ही तो परिणाम है कि आज पंजाब के चालीस लाख सिक्ख वीरों में जीवन और जागृति की ज्योति जगमगा रही है। यदि पशुबलि की कुप्रथा के मूलोच्छेद के लिये मेरे प्राण पखेरू उड़ जायेंगे तो क्या वाम मार्गी पण्डे और

इनके अंधभक्त इसी प्रकार रक्त बहाते रहेंगे? और भोली जनता के धन का भ्रष्टाचार में दुरुपयोग होता रहेगा? मेरा तो विश्वास है कि सत्य की ही विजय होगी। अंत में मैं भारत के सभी नेताओं से प्रार्थना करता हूँ कि वे मेरे आन्दोलन में सहायता न दे सकें तो कृपा कर मौनव्रत ही धारण कर लें। व्यर्थ में मेरे अनशन की आलोचना कर के काली घाट के पण्डों को प्रोत्साहन न दें।

महात्मा जी के तार का विषैला परिणाम

जब से महात्मा जी ने अपने तार द्वारा "वीर" जी के अनशन को असामयिक बतलाया और "वीर" जी को अनशन के अयोग्य बतलाया तभी से पशुबलि प्रथा के समर्थकों का दुस्साहस बढ़ गया। "वीर" जी के विरोधी और कालीघाट के पण्डे महात्मा जी के तार का प्रमाण दे देकर "वीर" जी पर अनुचित आक्षेप करने लगे और कलकत्ते के हजारों स्त्री पुरुष बार बार आकर "वीर" जी को अनशन छोड़ देने का आग्रह करने लगे। देशबन्धु पार्क में १४ सितम्बर को श्रीमती सरला बाला सरकार के सभापतित्व में एक सभा हुई जिसमें डा० अंकलेसरिया डा० सरसीलाल सरकार लक्ष्मीकान्त "शील" प्रभृति सज्जनों के भाषण हुये। इस सभा का उद्देश शर्मा जी के अनशन को समाप्त करा देने का था। सभा में [illegible] वक्ताओं ने अपने भाषणों में अनशन को समाप्त करा देने

का पक्ष लिया और इस आशय का एक प्रस्ताव भी सर्वसम्मति से पास किया।

दूसरे दिन जब तारा सुन्दरी पार्क में एक विराट सभा की जा रही थी तब श्री पन्नालाल दे ने "वीर" जी का संदेश जनता को सुनाया जो इस प्रकार था।

"कल देश बन्धु पार्क की सभा में श्रीमती माता सरला वाला सरकार ने सभापति पद से अपनी जो वक्तृता दी थी उसका आशय यह था कि रामचन्द्र शर्मा को अनशन छोड़ने को मनाया जाय। इसी आशय का प्रस्ताव भी पास किया गया। यदि इसी प्रकार भविष्य को सभाओं में प्रस्ताव पास किये जायेंगे तो मेरे आन्दोलन की महान् हानि होगी। अब जब कि मैं मृत्यु के मुख में जा चुका हूं और अंत्येष्टि संस्कार के थोड़े ही दिन रह गये हैं। ऐसे समय में उपवास भंग कराने की चेष्टा करना मेरे प्रति महान् विद्रोह करना है।

अंत में मैं हिन्दू मात्र से अत्यन्त नम्रतापूर्वक प्रार्थना करता हूँ कि मेरे अनशन को तुड़ाने के लिये कोई प्रयत्न न करें।"

उक्त सभा में श्री सखीनाथ जी शील ने कालीघाट के वहिष्कार का प्रस्ताव रखा और उत्साह वर्द्धक भाषण दिया प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हुआ।

बंगला भाषा के प्रसिद्ध पत्र "वसुमति" ने महात्मा जी के तार के आशय को लेकर "वीर" जी के विरुद्ध अपने सम्पादकीय स्तम्भ में विद्वेषपूर्ण लेख प्रकाशित करना प्रारम्भ कर दिया। ऐसे ही समय में बंगाल के महारथी श्री शरच्चन्द्र बोस

महाशय कब चूकने वाले थे। उन्होंने भी महात्मा जी के तार का अनुकरण करते हुये अपना लम्बा वक्तव्य प्रकाशित कर ही दिया।

प्रान्तीयता के पुजारी इस बंगीय नेता ने मृत्यु के मुख में पड़े हुये ब्राह्मण पर कीचड़ उछालने में कोई कसर नहीं रक्खी और स्पष्ट शब्दों में लिख दिया कि राजस्थान के राम शर्मा को बंगाल में आन्दोलन करने का क्या अधिकार है।

महात्मा गान्धी की आलोचना करते हुये दिल्ली के प्रसिद्ध पत्र "अर्जुन" ने ता० १८ सितम्बर के अंक में निम्नलिखित टिप्पणी अपने सम्पादकीय स्तम्भ में प्रकाशित की थी।

अनशन पर महात्मा जी का मत

दिल्ली के प्रसिद्ध पत्र 'अर्जुन' ने टिप्पणी की

"पण्डित रामचन्द्र शर्मा "वीर" कलकत्ते के कालीघाट मन्दिर के बकरों के बलिदान के विरुद्ध अनशन कर रहे हैं। उनके सम्बन्ध में महात्मा जी ने वर्धा से जो तार भेजा है उसमें पण्डित जी को व्रत भंग करने का मत दिया है। अनशन तोड़ने के लिये महात्मा जी ने यह युक्ति दी है कि अनशन असामयिक है। हमारा महात्मा जी से निवेदन है कि ये उपवास की प्रथा ही अनावश्यक है और महात्मा जी जब कभी किसी प्रथा के विरुद्ध उपवास करते हैं तब देश भर से यही आवाज उठती है कि महात्मा जी का अनशन असामयिक है। [ह]मारा महात्मा जी से पुनः निवेदन है कि जिस प्रकार दूसरों

के अनशनों को वे देखना नहीं चाहते उसी प्रकार वे अपना उपवास भी भविष्य में न होने दें।"

वायसराय को तार

सतरह सितम्बर का दिन था। "वीर" जी की प्राण रक्षा और बलि विरोधी आन्दोलन को शक्तिशाली बनाने के लिये कलकत्ता सहायक समिति की ओर से एक विराट जुलूस सिंघी बागान से सेन्ट्रल एवेन्यू चितपुर रोड, हरिसन रोड, मल्लिक स्ट्रीट, अरमनि स्ट्रीट, पांचागली, सूतापट्टी, सोनापट्टी, बड़तल्ला, ढाकापट्टी, जगन्नाथघाट रोड से होकर निकाला गया। जो गिरीश पार्क में समाप्त हुआ और वहाँ विराट सभा के रूप में परिणत हो गया।

ब्रजलाल जी जानी के सभापतित्व में श्री दयाराम जी बेरी ने प्रस्ताव रक्खा कि यह सभा "वीर" जी से अनुरोध करती है कि वे महात्मा जी के आदेश को मान लें और अनशन त्याग दें। श्री विश्वनाथ जी कपूर ने प्रस्ताव का समर्थन किया और लक्ष्मीकान्त जी शील ने विरोध किया। इस विषय को लेकर सभा में अत्यन्त उग्र वातावरण हो गया और आपस में मार-पीट की योजना हो गई।

बहुत देर तक हुल्लड़ मचने के उपरान्त जनता ने सभापति और प्रस्तावक को सभा से निकल जाने को बाध्य कर दिया और शिवरतन लाल बिन्नानी की अध्यक्षता में सभा की कार्यवाही पुनः प्रारम्भ हो गई और सर्वसम्मति से कालीघाट के बहिष्कार का प्रस्ताव पास कर दिया।

यह दिन "वीर" शर्मा जी के अनशन का तेरहवाँ दिवस था। उनके कण्ठ की पीड़ा प्रचण्ड रूप धारण कर गई। चन्द्रवंशीय क्षत्रिय सभा ने "वीर" जी के आन्दोलन को अत्यन्त उग्र रूप देने के लिये प्रतिदिन कैनिङ्ग स्ट्रीट, क्लाइव स्ट्रीट, शोभाराम वैशाख स्ट्रीट, शिकन्दर पाड़ा, चितपुर रोड, विवेकानन्द रोड होकर २०९ नम्बर कार्नवालिस स्ट्रीट होकर "वीर" जी के अनशन भवन तक प्रचण्ड जुलूस निकालने का महान आयोजन प्रारम्भ कर दिया।

पंडित रामचन्द्र जी शर्मा 'वीर' की भीषण अवस्था को देख कर कलकत्ता महानगर डगमगाने लगा। प्रति दिन बीस-पचीस हजार स्त्री पुरुष 'वीर' जी के स्थान पर आने लगे। वैसे तो इस महा आन्दोलन में अनेक महानुभाव दत्तचित्त होकर कार्य कर रहे थे और अनेक माताओं बहिनों ने एक समय का भोजन भी त्याग दिया था तथा सनातनी, जैनी, आर्य्यसमाजी, सिक्ख अपने साम्प्रदायिक मतभेदों को भुला कर प्राणी रक्षा के पावन यज्ञ में 'वीर' जी को सहयोग दे रहे थे। किन्तु बम्बई प्रान्त के पारसी सम्प्रदाय के आदर्श वीर डॉ. माणिक जी अंकलेसरिया M. A. P. H. D. (न्यूयार्क अमेरिका) ने तो अपने प्रिय मित्र 'वीर' जी के प्राण बचाने के लिये दिन रात एक कर दिया था।

माननीय डा. अंकलेसरिया महोदय ने प्रति दिन विद्युत सदृश वक्तृताओं तथा प्रभावशाली लेखों द्वारा कलकत्ता के युरोपियन समाज में अपूर्व हलचल मचा दी। प्रति दिन 'वीर' जी के दर्शनों के लिये अनेक अंगरेज, आयरिश, जर्मन, यहूदी और

अमेरिकन सज्जन तथा महिलाएं आने लगीं। कई युरोपियन अनशन की भीषण अवस्था के चित्र (Photto) खींचने लगे और अंग्रेजी पत्रों में उन्हें प्रकाशित करने लगे।

डॉ. अंकलेश्वरिया ने वायसराय लॉर्ड विलिंगडन को भी एक महत्वपूर्ण तार दिया जो इस प्रकार था—

तार का सारांश

काली मंदिर के पशुवध को रोकने के लिये पंडित रामचन्द्र शर्मा 'वीर' आमरण अनशन कर रहे हैं। आपको अनशन करते चौदह दिन हो गये। इस कुत्सित प्रथा ने मिस मेयो की 'मदर इंडिया' और 'इंडिया स्पीक्स' तथा 'बंगाली लॉन्सर' नामक फिल्मों से भारत को संसार की दृष्टि में एकदम से नीचे गिरा दिया है। अतः इस दूषित प्रथा को अवश्य ही अविलम्ब उठा देना चाहिये। जो हिन्दूधर्म के एक मात्र सिद्धान्त 'अहिंसा परमोधर्मः' का कलंक रूप है। कोई भी दयालु एवं विवेकशील सरकार ने इसे जमाने पहले क़ानूनी अपराध क़रार दी होती कारण टर्की, रूस और जापान ने भी अपने देशों से ऐसी कुप्रथाओं को उठा दिया है। मैं पंडित रामचन्द्र शर्मा का जीवन बचाने के लिये सरकार का सहयोग चाहता हूं। जैसा कि मांगरोल स्टेट में सरकार ने दिया था।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचन्द्र जी की लीलाभूमि पुण्य पुरी अयोध्या ही 'वीर' के विराट आन्दोलन से वंचित क्यों रहती? वहां भी श्री श्रीराम नाम मंदिर, रायगंज में एक विराट सभा हुई जिसमें अनेक वैष्णव साधु महात्माओं तथा

पंडितों ने कलकत्ता की पशुवलि का घोर विरोध किया और 'वीर' शर्मा के प्राण बचाने के लिये भगवान से प्रार्थना की गई। यह संदेश पं० भगवद्दास जी द्वारा 'वीर' को पहुँचाया गया।

१८ सितम्बर को विश्वकवि सम्राट कवीन्द्र सर रवीन्द्रनाथ ठाकुर महोदय ने एक अत्यन्त महत्वपूर्ण रोमांचकारी कविता रच कर 'वीर' जी के पास अपने मंत्री द्वारा भेज कर बंगाल की तथा समस्त भारत की सुषुप्त आत्मा में पशुवलि प्रथा के विरुद्ध हलचल मचा दी। प्रेमी पाठकों के अवलोकनार्थ उक्त बंगला कविता का वास्तविक चित्र यहां दिया जा रहा है विश्वकवि के अक्षर कितने सुन्दर हैं ध्यान से देखना चाहिये।

कविन्द्र रवीन्द्र की हस्तलिखित कविता

धर्मप्राण पण्डित रामचन्द्र जी शर्मा "वीर" के प्रति
पूज्य विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर महोदय की
हस्तलिखित बंगला कविता।

ওঁ

শান্তিনিকেতন
[illegible] পৌষ
১৩৩২

শ্রীযুক্ত রামচন্দ্র শর্ম্মা —

প্রাণঘাতকের খড়্গে করিতে ধিক্কার
হে মহাত্মা, প্রাণ দিতে চাও আপনার,
তোমারে জানাই নমস্কার।
হিংসারে ভক্তির বেশে দেবালয়ে আনে,
রক্তাক্ত করিছে পূজা শঙ্কিত না মানে।
সঁপিয়া পবিত্র প্রাণ, অপবিত্রতার
ক্ষালন করিবে তুমি সঙ্কল্প তোমার,
তোমারে জানাই নমস্কার।

মাতৃস্তনচ্যুত ভীত পশুর ক্রন্দন
মুখরিত করে মাতৃ-মন্দির প্রাঙ্গণ।
অবলের হত্যা-অর্ঘ্যে পূজা উপচার
এ লজ্জা ঘুচাইতে সংকল্প আপনার,
তোমারে জানাই নমস্কার ॥

নিঃশব্দে, আত্মত্যাগ অক্ষয় যে বাণী
নিষ্ঠুর মূঢ়ের কানে সে দিবে হানি
তারি তুমি প্রাণমূল্য দিলে আপনার
[illegible] হতে হবে করিতে উদ্ধার —
তোমারে জানাই নমস্কার ॥

রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

बङ्गला हस्तलिपि का पद्यानुवाद—

"वीर" स्तवन

[रचयिता—विश्ववंदनीय विश्वकवि कवीन्द्र श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर]
[अनुवादक—श्रीयुत 'अविनाशी']

नमस्कार है तुमको।

उन निर्मम हत्यारों की खड्गों को शतधिक्कार।
देने को, तुम चले छोड़ने यह अनन्त संसार॥
नमस्कार है तुमको॥१॥

भक्ति आवरण में 'हिंसा' हा! देवालय में अत्याचार।
निर्बल पशुओं के शोणित से पूजा का झूठा उपचार॥
पापमयी इन लीलाओं का करने को तुम अन्त।
निज पवित्र प्राणों ही की बलि धन्य धन्य तुम सन्त॥
नमस्कार है तुमको॥२॥

मातृ-स्तन-च्युत भीत पशु का करुणामय चित्कार।
मातृ-सदन के शुचि प्रांगण में हाय! रक्त की धार॥
मातृ भूमि के इस कलंक को धो देने को "वीर"।
वीर प्रतिज्ञा हुई तुम्हारी यह दुष्कर गम्भीर॥
नमस्कार है तुमको॥३॥

निःसहाय आत्म रक्षा में अक्षम पशुओं का बलिदान।
निष्ठुर पुण्याशा में कितने पाप पूर्ण अविधान॥
प्राण मूल्य पर उन पशुओं का करने को उद्धार।
चले "वीर" कर वीर गर्जना हो कर के तैय्यार॥
नमस्कार है तुमको॥४॥

यद्यपि रवीन्द्रनाथ ठाकुर महोदय के "वीर" जी के प्रति प्रकट किये गये उत्कृष्ट उद्गारों से सुशिक्षित समाज में हलचल अवश्य मच गई तथापि सर्व साधारण बङ्गाली जनता "वीर" जी के सम्बन्ध में भ्रम में ही पड़ी रही और बङ्गाली हिन्दुओं ने "वीर" जी के आन्दोलन में किसी प्रकार की क्रियात्मक सहानुभूति नहीं दिखलाई। बङ्गाली जनता न तो "वीर" जी के आन्दोलन में किसी प्रकार सहायता ही पहुंचाई और न खुल्लमखुल्ला विरोध ही किया।

"वीर" जी के विराट आन्दोलन में बंगाली जनता की उपेक्षा घातक सिद्ध हो रही थी और इस महान आन्दोलन की पूर्ण सफलता के मार्ग में यह सब से बड़ी बाधा थी।

कुछ बंगाली महानुभाव "वीर" जी को मानसिक सहायता पहुंचा रहे थे। कलकत्ते के प्रसिद्ध पंडित श्री नकुलेश्वर विद्याभूषण ने पंडित जी के पास निम्नाशय का पत्र भेजा था—

श्रद्धेय पंडित जी,

आपने जो आन्दोलन चलाया है उसका प्रभाव दिखाई पड़ने लग गया है। जिस प्रकार ईश्वरचन्द्र विद्यासागर बहुविवाह निवारण का क़ानून पास नहीं करा सके फिर भी वास्तव में बहुविवाह बंद हो गया और उनकी नैतिक विजय हुई थी उसी प्रकार आपका उद्देश्य भी सिद्ध हो गया है। भगवान् आपका कल्याण करे। वृद्धावस्था के कारण आपके पास आकर दर्शन करने में असमर्थ हूं।

भवदीय—
नकुलेश्वर विद्याभूषण।

"मेरा संदेश यही है कि मैं भली भांति जानता हूं कि कोई भी कार्य दवाब से किया जाय तो वह सात्विक नहीं होता, किन्तु भारत की वर्तमान स्थिति इतनी दूषित हो गई है कि साधारण सुधार से सदियों में भी किसी कुप्रथा को मिटाने के लिये सफलता कठिन है। इसके लिये तो दो ही मार्ग हैं। या तो शस्त्र के द्वारा या आत्म बलिदान के द्वारा। शस्त्र तो मेरे हाथ की चीज नहीं है, किन्तु अपना शरीर मेरे वश का है। इसीलिये अपने शरीर को कष्ट दे रहा हूँ। कुछ लोग अनशन को भी आत्महत्या का ही रूप बतलाते हैं किन्तु आत्महत्या तो चुपचाप ही होती है उसके लिये जनता में कि.ी प्रकार की घोषणा नहीं की जाती। आत्म हत्यारा जीवन की कोई आशा नहीं रखता। परन्तु अनशनकारी अपने उद्देश्य के सफल होने पर जीवन रक्षार्थ भोजन करने लगता है। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि मेरा अनशन असामयिक है चाहे इनलोगों में भारतवर्ष के बड़े से बड़े महापुरुष ही क्यों न हों! इस संसार के इतिहास को उलट कर देखिये। समय के बनाने वाले व्यक्ति ही हुये हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि मैंने बंगाल में पशुबलि के विरोध में वक्तव्य द्वारा कुछ समय प्रचार क्यों न किया इसका उत्तर स्पष्ट है यदि मैं अनशन घोषणा न करके केवल प्रचार ही के लिये आता तो यहाँ के लोग दो चार दिन व्याख्यान सुनकर ऊब जाते। कलकत्ता के बाहर गाँव में हिन्दी भाषा का सर्वथा अभाव है, फिर मैं किस प्रकार प्रचार कर सकता था। मुझे तो अपनी अंतर्ध्वनि को भारत के कोने कोने में गुंजाने के लिये अनशन

रूपी "महाशंख" ही उपयुक्त प्रतीत हुआ है और मैं
अपनी आत्मा की आज्ञा से ही यह यज्ञ कर रहा हूँ।
इसमें तो संदेह होना ही नहीं चाहिये कि बिना भगवान की
प्रेरणा के मेरी आत्मा इतना भीषण व्रत धारण करने की
शक्ति कदापि प्राप्त नहीं कर सकती थी। इक्किसवीं
सितम्बर रात के ८ बजे श्री बालमुकुन्द जी डागा की
अध्यक्षता में पशुबलि के विरोध में माहेश्वरी भवन के विशाल
प्रांगण में विराट सभा हुई। सभा में कई हजार स्त्री पुरुष थे।
इसी सभा में आगामी सत्ताइस सितम्बर को समस्त कलकत्ता
और भारतवर्ष में 'पशुबलि विरोध दिवस' मनाने तथा पूर्ण हड़ताल
रखने का प्रस्ताव पास किया गया। पन्नालाल जी दे ने कई
प्रमुख बंगाली भद्रपुरुषों के नाम बतलाये जो 'वीर' जी के भक्त
बन गये थे। शिवरत्नलाल जी विन्नानी के भाषणोपरान्त डाक्टर
अंकलेश्वरिया ने अपने भाषण में कालीघाट की गंदगी का वर्णन
करते हुये कहा कि आज मैं कालीघाट गया था। वहां मन्दिर
के बाहर बहुत से भिक्षुकों को देखा जो अनेक रोगों से ग्रस्त
होकर सड़ रहे थे। आज हमारे धर्म स्थान रोग पैदा करने
वाले हो गये हैं। मन्दिर में मेरे ही सामने एक बकरा काटा गया।
मन्दिर के पण्डों ने मुझे भी बकरा चढ़ाने का उपदेश दिया।
ये कितनी लज्जा की बात है?

बाइस सितम्बर को चार बजे दिन में घुसड़ी (हवड़ा) में
पोस्ट ऑफिस के पास श्री हनुमान विद्यालय के मैदान में
घुसड़ी सेवा समिति के तत्वाधान में एक विराट सभा हुई

और घुसड़ी के दुर्गा मन्दिर की बलि बन्द करने का प्रस्ताव स्वीकृत करके उसी दिन कार्यान्वित कर दिया। श्री दूधनाथ सिंह जी ने उक्त मन्दिर की पशुबलि बन्द कराने में प्रबल प्रयत्न करके आदर्श उपस्थित कर दिखाया। हवड़ा म्युनिसिपैलिटी के वायस चेयरमैन श्री योगेन्द्रनाथजी चटर्जी के सभापतित्व में हजारों बंगालियों की उपस्थिति में एक विराट सभा हुई जिसमें सत्ताइस सितम्बर को कालीघाट की पशुबलि के विरुद्ध हड़ताल का प्रस्ताव पास हुआ।

इसी प्रकार २४८ बहूबाजार के काली मन्दिर में अकस्मात ही पशुबलि बंद कर दी गई। कुछ बंगालियों का दल उक्त मंदिर में एक बकरे की हत्या करने के लिये जब आया तो मन्दिर की पुजारिन श्रीमती मोपला सुन्दरी ने उन्हें इसकी आज्ञा नहीं दी। बंगालियों ने जब बहुत आग्रह किया और पुजारिन को लालच दिलाया कि यदि बकरा काटने की आज्ञा दे तो उसे उपहार में काफी रुपये दिये जायेंगे किन्तु पुजारिन बारम्बार इनकार करती रही। इसपर हर किस्म के लोग वहाँ एकत्रित हो गये। पुजारिन से जब पूछा गया कि मन्दिर की बलि क्यों बन्द करती हो? तब उसने उत्तर दिया कि यहाँ रामचन्द्र शर्मा आया हुआ है। अन्त में बकरे को साथ लेकर बंगाली निराश हो लौट गये।

आर्य्य कन्या विद्यालय की पचासों कन्याएँ 'वीर' जी के दर्शनों के लिये जब गईं तब शर्मा जी ने उन कन्याओं को देश सेवा करने और वीरांगना बनने का उपदेश दिया।

भाषण में कहा कि देवस्थानों में यदि रक्त की नदियाँ बहाई जायँ तो उन्हें देवस्थान नहीं वरन् कसाईखाने कहना चाहिये।

श्री पन्नालाल दे ने एक प्रस्ताव रक्खा जिसके समर्थन में भाषण देते हुये ब्रिटिश सरकार से अनुरोध किया की जिस प्रकार उसने सती, नरबलि आदि अन्य कुप्रथाओं को बंद कर दिया है, उसी तरह इसका भी अंत कर दे। उक्त प्रस्ताव लक्ष्मीकान्त जी शील तथा माता मीठी बहन के समर्थन अनुमोदन के उपरान्त हज़ारों तालियों की गड़गड़ाहट में सर्वसम्मति से स्वीकृत हो गया।

युक्त प्रांत के सुलतानपुर की आर्यसमाज ने एक सभा कर के 'वीर' जी की दीर्घायु के लिये सम्मिलित प्रार्थना की तथा बलिविरोधी प्रस्ताव पास किये गये। उक्त प्रस्ताव आर्यसमाज सुलतानपुर अवध के मंत्री श्री महादेव प्रसाद जी ने 'वीर' जी के पास पहुँचाये थे।

श्रीमती मोहिनी देवी के सभापतित्व में माहेश्वरी भवन में कलकत्ता की हिन्दू महिलाओं की विराट सभा हुई। 'वीर' जी के अनशन के रोमांचकारी वर्णन को सुनकर हजारों महिलाएं रो पड़ी।

बालीगंज के रासबिहारी पार्क में पण्डित गिरिजाकान्त गोस्वामी काव्य साहित्य स्मृति तीर्थ के सभापतित्व में एक विराट सभा हुई। जिसमें धर्मप्राण 'वीर' जी की प्राणरक्षा के लिये अनेक वक्ताओं के भाषण हुये।

विहार प्रान्त के प्रसिद्ध व्यापारिक नगर भागलपुर में श्री

कर व्याकुल हो रही थी। पूर्णिमा, खड़गिया भागलपुर, मुंगेर पटना, गया, दरभंगा, समस्तीपुर आदि नगरों में "वीर" जी की दीर्घायु के लिये सभाएं और प्रचण्ड जुलूसों का आयोजन किया गया। बेगूसराय के बाबू नंदकुमार जी अग्रवाल, बाबू झाड़खंडी प्रसाद वकील गांव गांव में जाकर सभाएं कर के 'वीर' जी का सन्देश सुना रहे थे। कस्बा पूर्णिया के उत्साही पुरुष पं० मुकुन्दनाथ जी मिश्र ने कस्बा के दुर्गास्थान में होने वाले सैंकड़ों बकरों और भैंसों के बलिदान को नवरात्र के अवसर पर बंद कराने के लिये कई युवकों को साथ लेकर सत्याग्रह करने की ठान ली थी। मुकामा के धर्मधुरंधर सेठ श्री मुरलीधर जी मारवाड़ी 'वीर' जी के प्राण रक्षार्थ कलकत्ता जाने को तत्पर हो गये और उन्होंने श्रीमान् बाबू जगतनारायण लाल जी को "वीर" जी के सहायतार्थ पटना से कलकत्ता दूसरी बार जाने के लिये अनुरोध किया। श्री० जगत बाबू ने पुनः कलकत्ता पधार कर बंगाली नेताओं को कालीघाट के आन्दोलन में अग्रसर होने की प्रेरणा की। मुकामा (पटना) के प्रसिद्ध कॉंग्रेसवादी नेता श्री० पंडित केशव सिंह जी शर्मा बलि विरोधी आन्दोलन में अत्यन्त उग्रता से अग्रसर हो गये और उन्होंने मुकामा के प्रसिद्ध दुर्गास्थान में नवरात्र के अवसर पर होने वाली भीषण पशुहत्या को बन्द कराने का प्रण ठान लिया। पशुबलि के ठीक दिन अनेक लट्ठधारी आदरणीय पंडित केशव प्रसाद सिंह जी पर आक्रमण करने को उद्यत हो गये, किन्तु उनके दृढ़ निश्चय और पवित्र संकल्प की ही विजय हुई और मुकामा से पशुबलि प्रथा का मूलोच्छेद हो गया।

चौआलिस धारा लगवा दी। मजिस्ट्रेट ने जोड़ासाकू की पुलिस को तहकीक़ात की आज्ञा दे दी। उक्त धारा का उद्देश यह था कि प्रतिवादियों पर नोटिस तामील करके उनसे कैफियत तलब की जाय कि जिस मकान में "वीर" जी रह रहे हैं उस मकान के भीतर प्रदर्शन करना अथवा सत्याग्रह के उद्देश से वहां लोगों का जाना क्यों न रोक दिया जाय।

विश्वकवि श्री रवीन्द्रनाथ जी ठाकुर ने देशवासियों के नाम एक और अपील निकाली जिसमें लिखा था कि "मैं जानता हूं कि उनलोगों पर मेरे कहने का कुछ असर नहीं हो सकता जिन्होंने अहिंसा के सन्देश को ठुकराने का प्रयत्न किया है; किन्तु अभी देशवासियों से मैं एक बार और प्रार्थना करूंगा कि यदि अपने प्रयत्न में लगे हुये पंडित रामचन्द्र शर्मा का प्राणान्त हो गया तो यह अमिट कलंक का टीका हमारे ऊपर लग जायगा। अतः देशवासियों से अपील है कि वे उनके प्राणों की रक्षा का प्रयत्न करें।

गामनगर, मुंगेपाड़ा के दुर्गा स्थान में निषाद भाइयों की एक बृहत सभा हुई। सब लोगों ने पंडित रामचंद्र शर्मा 'वीर' के चिरंजीवी होने के लिये भगवान से प्रार्थना की और प्रतिज्ञा की कि हमलोग किसी भी देवस्थान में जीव-बलिदान नहीं करेंगे। २५ सितम्बर को पं. जगन्नाथ पांडेय ने ४ दिन के अनशन के उपरांत आकर "वीर" जी के दर्शन किये। 'वीर' जी ने पूछा कि आप अनशन क्यों कर रहे हैं? पांडेय जी ने उत्तर दिया 'आपकी प्राणरक्षा के लिये मैं अनशन कर रहा हूं।" इस पर

मारवाड़ी एसोसियेशन

कलकत्ता की सुप्रसिद्ध व्यापारिक संस्था मारवाड़ी एसोसियेशन ने एक विशेष अधिवेशन कर के धर्मप्राण 'वीर' जी के महान आन्दोलन के प्रति पूर्ण सहानुभूति प्रदर्शित की और कालीघाट मंदिर की पशु हत्या के प्रति घृणा प्रकट करते हुये, 'वीर' जी को शीघ्र से शीघ्र अनशन छोड़ देने का प्रबल अनुरोध किया।

'वीर' जन्मोत्सव की धूम

सताइस सितम्बर शुक्रवार आश्विन कृष्णा अमावस्या को तरुण तपस्वी 'वीर' जी का २६वां जन्म दिवस था उक्त दिवस के उपलक्ष्य में समस्त कलकत्ता महानगर में हड़ताल रही। यह दिन 'वीर' जी के अनशन का तेईसवां दिवस था। दिन के २॥ बजे २०९ नम्बर कार्नवालिश स्ट्रीट से निकल कर एक विराट जुलूस जिसमें पचीस हजार मनुष्यों से भी अधिक की भीड़ थी विवेकानंद रोड, चित्तपुर रोड, हरिसन रोड, क्लाईव स्ट्रीट होता हुआ टाऊन हॉल की ओर अग्रसर हुआ। जुलूस में अनशनव्रती 'वीर' जी के एक विशाल सुन्दर सुसज्जित चित्र को कई युवक लिये हुये थे और जुलूस के बीच बीच में बड़े बड़े बोर्डों पर देव मन्दिरों में रक्त मत बहाओ माता काली रक्त की प्यासी नहीं है, पवित्र मंदिरों को कसाईखाने मत बनाओ ीघाट मंदिर में जाना देशद्रोह है आदि उत्तेजनात्मक वाक्य

४. राय बहादुर मखी चंद जी।

५. श्रीमती मोहिनी देवी ६ श्रीमती मीठी बहन।

७. डाक्टर अंकलेशरिया M.A.P.H.D.

३ – हिन्दू नागरिकों की यह विराट सभा "पण्डित रामचन्द्र शर्मा 'वीर' के उस उद्देश के प्रति पूर्ण सहानुभूति प्रकट करती है जिसके लिये वे अपने अमूल्य जीवन की आहुति दे रहे हैं, साथ ही यह सभा "पण्डित रामचन्द्र शर्मा "वीर" से जोरदार अनुरोध करती है कि वे अपना अनशन तत्काल स्थगित कर दें और पशुवलि की प्रथा को वंद कर देने के लिये प्रचार कार्य करें। सभा यह विश्वास प्रकट करती है कि ऐसा करने से उनका महान् उद्देश पूर्ण हो सकेगा। यह सभा वचन देती है कि यह उद्देश पूरा करने में वह महाप्राण "वीर" जी को पूर्ण सहायता देगी।

यद्यपि सभा के प्रारम्भ में ही हल्लागुल्ला हो रहा था और अगणित भीड़ के कारण टाऊन हाल में तिल धरने को भी जगह नहीं थी और हड़बड़ी जैसी हालत में ही सभा का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया था। तथापि जनता ने पहले दो प्रस्तावों को करतलध्वनि के साथ स्वीकार कर लिया किन्तु तीसरा प्रस्ताव जिस समय पढ़ा जा रहा था उस समय जब उसमें प्रार्थना के रूप में श्री शर्मा जी से अनशन छोड़ देने की बात आई तब उपस्थित जनता ने चारो ओर से "शेम "शेम" की ध्वनि से टाऊन हाल को गुंजा दिया। जनता का ये भाव प्रस्ताव की रचना करने वालों ने ताड़ लिया और हल्ले गुल्ले तथा विरोध

और शेम शेम के नारों के बीच सभी प्रस्ताव स्वीकार होने की बात कह कर सभा का कार्य समाप्त होने की सूचना दे दी। जनता को यह पसंद नहीं आया। अतः चारो ओर से उपद्रव और हल्ला होने लगा। इसी समय प्रेसिडेन्ट श्री प्रफुलचन्द राय वहां से उठ कर चले गये। उनके चले जाने पर उपस्थित लोगों में बड़ा क्षोभ और असंतोष फैल गया। इसी बीच में कुछ व्यक्ति आपस में मारपीट करने लगे। श्री विश्वनाथ जी कपूर तथा दयाराम जी बेरी पर अनशन तोड़ने के विरोधियों ने आक्रमण करा दिया। आध घंटा तक टाऊन हाल में अत्यन्त उत्तेजना पूर्ण दृश्य रहा। किन्तु किसी प्रकार की हानि नहीं हुई। सब लोग वहां से १ जुलूस बना कर मैदान में मनूमेंट के नीचे पहुँचे। वहां श्रीमती सीता देवी की अध्यक्षता मे एक विराट सभा हुई और कई वक्ताओं के भाषण के पश्चात निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

"यह सभा टाउन हाल की मीटिंग के तीसरे प्रस्ताव को जिसमें पंडित रामचन्द्र शर्मा से अनशन तोड़ने की प्रार्थना की गई है, अस्वीकार करती है और निर्णय करती है कि पशुबलि तुरन्त बंद की जाय। यह सभा पूज्य शर्मा जी के अनशन को सामयिक और उचित मानती है। इस सभा में श्री० बालकृष्ण जी चतुर्वेदी, श्री सभापति राय, श्री रामगोपाल शर्मा आचार्य आदि वक्ताओं ने अपने भाषणों द्वारा पंडित "वीर" शर्मा के अनशन की महत्ता का ओजपूर्ण वर्णन किया। सभा समाप्त होने के समय पचीस हजार मनुष्यों ने अपने हाथ ऊंचे करके

कालीघाट मंदिर में न जाने के लिये प्रतिज्ञा की। सभा समाप्त होने के बाद फिर प्रचण्ड जुलूस बन गया और श्री० रामचन्द्र शर्मा के चित्र को साथ लेकर पशुबलि बंद होने के नारे लगाता हुआ ८॥ बजे २०९ कार्नवालिस स्ट्रीट के अनशन गृह में समाप्त हुआ। आरम्भ से अन्त तक इस प्रदर्शन में पचीस हजार से भी अधिक मनुष्यों ने भाग लिया। समस्त कलकत्ता में बड़ा उत्साहप्रद वातावरण था।

जिस समय समस्त कलकत्ता में "वीर दिवस" की धूम मच रही थी और बाजारों में हड़ताल हो रही थी, समस्त नगर का वातावरण अशान्त था। ऐसे समय में हमारी मातृशक्ति ही अपने घरों में शान्त होकर कैसे बैठी रह सकती थी। माहेश्वरी भवन में श्रीमती मोहिनीदेवी के सभानेतृत्त्व में महिलाओं की विराट सभा हुई। प्रार्थना के उपरान्त श्रीमती पार्वती देवी (श्री भोलानाथ जी वर्मन की धर्मपत्नी) ने प्रस्ताव रखते हुये सारगर्भित भाषण दिया। माता इकबाल देवी ने प्रस्ताव का अनुमोदन करते हुये पंडित रामचन्द्र शर्मा के प्राण बचाने के लिये प्रार्थना करने की अपील की। श्रीमती पार्वती देवी (अध्यापिका) ने प्रस्ताव के अनुमोदन में कहा कि आज पंडित जी को अनशन करते हुये २३ दिवस हो गये परन्तु हमने अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं किया। अब आपलोग संकल्प करें कि जब तक काली मंदिर की पशुबलि बंद न होगी तब तक उक्त मंदिर में नहीं जायेंगी।

(प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हो गया।)

दो महत्वपूर्ण प्रस्ताव और पास किये गये जो इस प्रकार थे—

१—महिलाओं की यह सभा सब बहिनों से प्रार्थना करती है कि वे जिस प्रकार अपने पति, पुत्रों की हित कामना के लिये माता काली से प्रार्थना करती हैं, उसी प्रकार अपने 'वीर' भ्राता पण्डित रामचन्द्र जी की सफलता के लिये भी श्री काली जी की प्रार्थना करें।

२—महिलाओं की यह सभा पशुबलि प्रथा को राक्षसी प्रथा समझती हुई घोषणा करती है कि हम बहिनें इस प्रथा को बंद करने के लिये पण्डित जी के प्रयत्नों को सफल बनाने में अपनी पूरी शक्ति लगाकर काम करेंगी।

सभा स्थल से हजारों महिलाओं का विशाल जुलूस जोड़ासाकू, अपर चितपुर रोड, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट होकर २०९ कार्नवालिस स्ट्रीट पहुंचा, वहां पण्डित जी ने अपने दिन में देखे हुये स्वप्न का वर्णन किया।

आज पण्डित जी दिन भर पेट की पीड़ा से व्याकुल थे। और उनके हाथों में सनसनाहट प्रतीत होती थी।

'स्टेट्समैन' की विचारधारा

भारतवर्ष के प्रसिद्ध अंग्रेजी संवादपत्र "स्टेट्समैन" ने २७ सितम्बर के अंक के सम्पादकीय स्तम्भ में 'वीर' जी की कठिन तपस्या का इस प्रकार वर्णन किया।

कालीघाट में होने वाली डरावनी पशुबलि के विरोध में पंडित रामचन्द्र शर्मा "वीर" आमरण अनशन कर रहे हैं। राजपुताने

के इस शूर-वीर समाज सुधारक ने कल्याण, मांगरोल तथा देश के कुछ अन्य केन्द्रों में बहुतायत से होने वाले पशुवद्ध के विरुद्ध भयानक टक्कर लेकर सफलता प्राप्त की है। कुछ दिन पूर्व उन्होंने कलकत्ता में पत्र भेज कर अपने कालीघाट में मोर्चा लेने के लिये प्रयाण कर देने की सूचना दी थी। यह देख कर कि मन्दिर के अधिकारियों के हृदयों पर उनकी प्रार्थना का कोई असर नहीं पड़ा और कलकत्ता नगरी में उनके विचारों का प्रचार भी नहीं के बराबर हो रहा है, उन्होंने अपनी भीष्म प्रतिज्ञा को कार्यरूप में परिणत कर दिखाया। तेईस दिवस के अनशन से वे अत्यधिक निर्बल हो गये हैं। जिस देश में विभिन्न प्रकार की रीतियां प्रचलित हों और सर्वत्र ही हिन्दू एक जानवर का बलि देना धर्म का आवश्यक अंग समझते हों, मुस्लिम गाय बैलों की बलि देते हों और हम यूरोपियन पशुओं की बलि के घोर विरोधी होते हुये भी खाने के लिये पशुहत्या करते हों ऐसे विचित्र देश में इस समस्या पर समालोचना करना ही दुरूह कार्य है। जो व्यक्ति एक पवित्र ध्येय की पूर्ति के लिये जीवन का अंत कर देने को तैयार बैठा हो उसको बहादुरी की सभी प्रशंसा कर सकते हैं। अनेक व्यक्ति यह भी कहेंगे कि जिस कार्य के लिये पण्डित जी ने प्राण दे देने की भीष्म प्रतिज्ञा की है, जीवित रहते हुये इस कुप्रथा के विरुद्ध विद्रोह कर के काफी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

हमारा विचार है कि कलकत्ता का लोकमत उनके विचारों के [illegible]प बहुत कम अंशों में हो सका है। फिर भी यदि विद्यार्थी

वर्ग इस ओर आकर्षित हो जाय यही नहीं वरन् आन्दोलन की बागडोर भी संभाल लें तो बहुत शीघ्र ही भीषण परिवर्त्तन दिखाई दे सकता है।

'विश्वमित्र' के विमल विचार

कलकत्ता के प्रसिद्ध हिन्दी पत्र 'विश्वमित्र' में २८ सितम्बर के अंक में अत्यन्त महत्वपूर्ण सम्पादकीय अग्रलेख निकला था, जिसे यहां अक्षरशः दिया जा रहा है।

स्थानीय काली मंदिर में धर्म के नाम पर होनेवाले मूकपशुओं के बलिदान को बंद कराने के लिये जब से पंडित रामचन्द्र शर्मा ने आमरण अनशन का निश्चय किया है। यहां खासी हलचल पैदा हो गई है। अनशन सम्बन्धी वह अध्याय तो समाप्त हुआ ही मान लेना चाहिये जिसका सम्बन्ध अनशन भंग करने के अनुरोध से है। क्योंकि शर्मा जी ने स्पष्ट कह दिया है कि जो मुझ से अनशन भंग करने का अनुरोध करते हैं वे मेरे मित्र और हितैषी नहीं प्रत्युत मेरे उद्देश्य मे बाधक सिद्ध होते हैं इस घोषणा के उपरान्त किसी व्यक्ति या संस्था को अनशन भंग करने का अनुरोध करने की गुंजाइश नहीं रही और शर्मा जी के वर्तमान दुर्बल स्वास्थ्य में अब किसी को इस प्रकार का अनुरोध या प्रार्थना ही न करना चाहिये। अब तो प्रश्न यही सामने आता है कि जिस उद्देश्य के लिये एक सदाशय पुरुष ने भीषण निश्चय कर डाला है, उसकी पूर्ति किस प्रकार हो। यह तो प्रत्येक विवेकी मनुष्य स्वीकार करेगा कि धर्म

के नाम पर मूक पशुओं का बलिदान ऐसी बर्बरतापूर्ण कुप्रथा है कि किसी भी धर्मशास्त्र का नामोल्लेख इसके सम्बन्ध में न करना ही उत्तम है। धर्म में यदि बलिदान के लिये स्थान है तो वह केवल आत्मबलिदान के लिये ही है। आत्मबलिदान के स्थान में मूक पशुओं का बलिदान किसी दशा में समर्थन करने योग्य नहीं। आत्मबलिदान का यह अर्थ नहीं है कि कोई मनुष्य धर्म के नाम पर अपना गला काट डाले। उसका तो अर्थ यही है कि धर्म रक्षा के लिये प्राण विसर्जन करने में भी कभी संकोच नहीं करना होगा।

हिन्दुओं का प्राचीन इतिहास इस प्रकार के बलिदानों से भरा हुआ है परन्तु मूक पशुओं के बलिदान से कभी धर्मरक्षा नहीं मानी गई। जो धर्मशास्त्री इस अनर्थकर व्याख्या में लीन हैं वे धर्म का अनादर तो कर ही रहे हैं साथ ही अपने को संसार में हास्यास्पद भी बना रहे हैं। धर्म के नाम पर मूक पशुओं का बलिदान अत्यन्त घृणित है और भारत से इस कुभावना का जितना शीघ्र बहिष्कार हो सके हिन्दूधर्म और हिन्दू जाति के लिये शुभ है। यही कारण है कि महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भी मूक पशुओं के बलिदान पर अश्रुपात करते हुये, इस कुप्रथा के नाश के लिये भगवान से प्रार्थना की है।

कोई महान् कार्य एक दिन में नहीं हुआ करता परन्तु उसका सूत्रपात अवश्य किसी शुभ मुहूर्त में हो जाया करता है। इसलिये यह तो स्वीकार कर लेना पड़ेगा कि एक "वीर" युवक

के बलिदान की पवित्र भावना ने उस अनर्थकारी कुप्रथा के नाश का सूत्रपात तो कर दिया और वह समय दूर नहीं जब कि हिन्दूधर्म पर लगा हुआ यह कलंक अवश्य दूर होगा। अभी बड़े बड़े शिक्षित महापुरुष भी इस कलंक का कलंक नहीं समझ सके हैं परन्तु सत्य को विजय सदा हुई है और होगी एक दिन इस प्रत्यक्ष सत्य को भी सब को स्वीकार करना पड़ेगा। मूक पशुओं के बलिदान के विरोध में आज जनता में काफी प्रचार हुआ है और प्राणों की बाजी लगाने का यह कार्य इतना प्रभावोत्पादक है कि वर्षों के आन्दोलन से जितनी चर्चा न होती उतनी, इन दो तीन सप्ताहों में हो गई। देश और समाज के दुर्भाग्य से आज क्षेत्र में वायुमंडल की पवित्रता उतनी दृष्टिगोचर नहीं होती जितनी दिखाई देनी चाहिये, इसी लिये शुभ संकल्पों का प्रभाव स्थायी नहीं होता। एक युवक ने आमरण अनशन का निश्चय कर लिया है और वह अपने निश्चय से डिगने वाला नहीं जब तक कि उद्देश्य सिद्धि न हो। इस बात को सुन कर आज बहुत सी कोमल हृदया माताएँ अश्रुपात कर रही हैं। बहुत से युवक अपनी वक्तृत्व शक्ति इस कुप्रथा के मूलोच्छेद में लगा रहे हैं; परन्तु ऐसे लक्षण सामने नहीं कि अनशनव्रती "वीर" की इच्छानुसार धर्म के नाम पर पशुओं का बलिदान बन्द हो जायगा। इसका मुख्य कारण हमारे हृदयों की कलुषता ही है। ऐसा कौन सा कार्य है जिसे बन्द करने से धर्म रसातल को चला जायगा या धर्मानुयायियों का अकल्याण हुये बिना न रहेगा।

यदि जरा भी गम्भीर विचार किया जायगा तो इस सरल कार्य
में सब से बड़ी बाधा स्वार्थ बुद्धि के कारण उपस्थित हो रही है
और यही स्वार्थ बुद्धि प्रत्येक सत्कार्य को नहीं होने देती।

उस दिन बङ्गाल के एक प्रभावशाली सज्जन श्री रामतनु बनर्जी
ने रात के ग्यारह बजे तक कालीघाट के पण्डों को समझाया:
परन्तु वे टस से मस नहीं हुये और यही कहते रहे कि जो आदि
सनातन धर्म है उसमें हस्तक्षेप क्यों? इस तर्क में पण्डों का
दोष नहीं क्योंकि वे भलीभाँति जानते हैं कि उन्हें अपने दुराग्रह
में अभी हिन्दू समाज से समर्थन और प्रोत्साहन प्राप्त हो
रहा है।

जब यह परिस्थिति है तब अनशनव्रती युवक का प्राणत्याग
निश्चित ही है। प्राण-त्याग के उपरान्त क्या परिस्थिति उत्पन्न
हो सकती है इसका भी क्या किसी ने विचार या अनुमान किया
है? यदि नहीं तो अभी समय है कि उस पर विचार कर लिया
जाय। इस बात की काफी चर्चा है कि इस प्रश्न को लेकर दो
स्पष्ट दल हैं—एक हिन्दी भाषा भाषियों का दूसरा बङ्गालियों का:
परन्तु हमें तो दो दल नहीं जान पड़ते क्योंकि बड़े बड़े प्रभावशाली
बङ्गाली नेताओं ने स्पष्ट रूप से कहा है कि देवी के सामने पशुओं
का बलिदान समर्थन करने योग्य नहीं। इनमें आचार्य प्रफुल्लचन्द्र
राय, महाकवि श्री रवीन्द्रनाथ जी ठाकुर, राजनीतिक नेता
श्री शरच्चन्द्र बसु का नाम सरलता से लिया जा सकता है तो यह
स्वीकार करना पड़ेगा कि जहाँ तक पशु-बलिदान के विरोध का
... है सभी नेता एक मत हैं। उसे बन्द कराने के समय औ

"वीर" जी की प्रणाली के सम्बन्ध में ही शरच्चन्द्र बोस मतभेद रखते हैं। हम आरम्भ से ही कह रहे हैं कि इस महान प्रश्न को हल करने के लिये गम्भीर परामर्श की आवश्यकता है और जो लोग इस उद्देश से सच्ची सहानुभूति रखते हैं वे यह न समझ लें कि विराट जन सभाओं और बड़े बड़े जुलूसों से इष्ट सिद्धि हो जायगी। इस समय प्रभावशाली सज्जनों के एकत्र होकर गम्भीर विचार करने की आवश्यकता है। यदि बड़ा बाजार निवासी प्रभावशाली सज्जन योग दान देने के लिये सच्चे मन से तैय्यार हों तो कार्य बहुत कुछ सरल हो सकता है।

यदि सर बद्रीदास जी गोयनका रायबहादुर रामदेव जी चौखानी, सेठ मगनीराम जी बांगड़, श्री युगलकिशोर जी बिड़ला श्री दामोदर जी खन्ना, श्री हनुमान प्रसाद जी पोद्दार, श्री नरोत्तम शास्त्री गांगेय, श्री नंदलाल जी पुरी, श्री भागीरथ जी कानोड़िया श्री प्रभुदयाल जी हिम्मत सिंहका, श्री हजारीमल जी दुधवेवाला तथा रायबहादुर सखीचन्द जी, प्रभृति वास्तव में सचेष्ट हो तो कोई कारण नहीं कि कार्य आगे न बढ़े।

इस प्रकार की परस्थिति उत्पन्न हो सकती है कि कलकत्ते के सभी प्रमुख नागरिक एक स्थान पर एकत्रित होकर गम्भीर परामर्श करें और सब बातों पर भली भांति प्रकाश डालें। सभी समझदार आदमी अपने सहयोग और उचित परामर्श से कोई मार्ग निश्चित कर सकते हैं। अभी तो स्थिति अत्यन्त अनिश्चित है और ज्ञात होता है कि ऊपरी शोरगुल से कोई वास्तविक कार्य नहीं हो सकेगा। किसी महान् कार्य के लिये

जिन आवश्यक साधनों को जुटाना पड़ता है वे सामने नहीं दिखाई दे रहे हैं और जनता की हलचल शीघ्र ही शांत हो जायगी। एक ओर लोकमत जागृत किया जाय और दूसरी ओर ठोस उपाय सोचे जायँ तभी कार्य सिद्धि हो सकती है। जो लोग अपना समय और शक्ति लगा रहे हैं वे स्थिति पर गम्भीर विचार-कर समयानुकूल कार्य करें।

यदि बड़े बाजार के ही प्रभावशाली सज्जन सच्चा सहयोग देने को तैय्यार नहीं तो कार्य किस प्रकार हो सकेगा? इसमें संदेह नहीं कठिनाइयां अनेक हैं परन्तु कठिनाइयों पर मनुष्य ही तो विजय प्राप्त किया करते हैं और सिद्धान्त की दृष्टि से इसे सभी मानते हैं कि धर्म के नाम पर बेचारे मूक पशुओं का बलिदान नहीं होना चाहिये। जब सिद्धान्त के सम्बन्ध में मतैक्य है तो कोई मार्ग निकाल कर कार्य आगे बढ़ाया जा सकता है और वीर के प्राण बचाये जा सकते हैं। यदि मनुष्य अपनी थोड़ी चेष्टा और सहानुभूति से किसी महान् कार्य में सहायक हो सके तो इसे अपना सौभाग्य ही समझना चाहिये। संसार में सभी जगह तर्क से काम नहीं चल सकता और बड़े बड़े तार्किक अपने खास कामों में तर्क से पराजित दिखाई दिया करते हैं। मनुष्यता के नाम पर एक प्रश्न सामने आ गया है तो सहृदयता से उस पर गंभीर विचार करना चाहिये। उदासीनता बड़ों के अनुकूल नहीं समाज के शुभचिन्तकों पर अनेक प्रकार की जिम्मेदारियां आया करती हैं। इस समय ... एक जिम्मेदारी आई है। उसके सम्बन्ध में उनकी उदा-

'वीर' जी के अनशन का सोलहवां दिवस

'वीर' जी के अनशन का चौबीसवां दिवस

सीनता चिन्तनीय है। सफलता और विफलता की ओर ध्यान न दे तो मनुष्यता की दृष्टि से यथा शीघ्र विचार करना चाहिये।

आन्दोलन की उग्रता

धर्मप्राण 'वीर' जी के अनशन के २४ दिन हो गये। उनका शरीर अत्यन्त कृश और दुर्बल हो गया। यहां तक कि उठने बैठने से भी तकलीफ होने लगी। कर्णमूल की सूजन अभी भी कुछ कुछ थी और दर्द भी बना हुआ था। दोनों हाथों में दर्द होने लगा और हृदय में धड़कन बढ़ गई निद्रा भी आने से रह गई। उन्होंने तीन दिन के लिये मौनव्रत भी धारण कर लिया।

झरिया में 'वीर' शर्मा जी की दीर्घायु के लिये एक सार्वजनिक सभा हुई। सभा में झरिया के बड़े बड़े व्यक्तियों ने भाग लिया था। बड़ा बाजार और कलकत्ता के सभी अंचलों में लाखों की संख्या में कालीघाट के मन्दिर की पशु हत्या के विरुद्ध सैकड़ों प्रकार के विज्ञापन बांटे जाने लगे। चीफ प्रिन्टिङ्ग वर्क्स के संचालक पं. मेवालाल जी मिश्र ने 'वीर' जी का संक्षिप्त जीवन चरित्र और उनके उपदेश को पुस्तिका के रूप में 'वीर' का वचनामृत के नाम से हिन्दी और बंगला में दस हजार की संख्या में छपवा कर कलकत्ता की गली गली में प्रचारित कर दिया। श्रीमान् बाबू दुलीचन्द जी सेठी तथा महाउद्योगी बाबू छोटेलाल जी जैन एवं बंगबिहार अहिंसाधर्म परिषद् के सभी संचालकों और

जैन युवकों ने दश हजार की संख्या में पूज्य 'वीर' जी का संक्षिप्त जीवन चरित्र बंगला और उड़िया भाषा में छपवा कर बिना मूल्य वितरित करने का महान् आयोजन कर डाला।

आगरा के "आर्य्यमित्र" की

एक महत्वपूर्ण टिप्पणी इस प्रकार थी—

"कलकत्ते का काली मन्दिर असंख्य बकरों की हत्या होने के कारण भारत के सिर पर एक महान पाप है। भारत को विदेशों में अपमानित करने वाली वस्तुओं में एक यह भी है। उसको मिटाने के लिये एक ब्राह्मण युवक अपने प्राणों की आहुति दे रहा है। पण्डित रामचन्द्र शर्मा "वीर" को अनशन करते हुये तीन सप्ताह से अधिक हो गये पर अभी तक काली देवी का आसन नहीं डिगा। क्या काली माता बकरों का रक्तपान करते करते इतनी कठोर हो गई है कि वह अब नरबलि चाहती है। क्या मन्दिर के अधिकारियों की आँखें नहीं खुलेंगी? सुना है कि शर्मा जी के कार्य में सहयोग देने के लिये भारत के कई अन्य वीर आगे आने वाले हैं तो क्या यह पाप दस-बीस-पचीस नर-रत्नों की भेंट लेकर दूर होगी? यह सचमुच एक भयङ्कर प्रश्न है। यह नृशंस प्रथा दूर तो अवश्य होगी पर यदि भारत माता के होनहार लालों के प्राण लेकर दूर हुई तो क्या हुई? क्या काली के उपासक एक क्षण के लिये विचार करेंगे।

कलकत्ते के विद्यार्थियों के नाम डा० मणिक जी अंकलेसरिया, जे. सी. गुप्ता और सुधीर विश्वास ने जो अपील निकाली थी। उक्त अपील के अनुसार सोमवार ३० सितम्बर सायंकाल के

६ बजे अलबर्ट हॉल में पशुबलि विरोध के सम्बन्ध में विद्यार्थियों की एक विराट सभा सर प्रफुल्लचन्द्र राय के सभापतित्व में हुई। डा० अंकलेसरिया और अमेरिका से लौटे हुये स्वामी योगानन्दजी के उत्साह वर्द्धक भाषण हुये। कालीघाट के पण्डों ने उक्त सभा में स्वामी जी पर आक्रमण करने की तैयारी कर ली. और कई बंगाली युवक भी बकने लगे। स्वामी योगानन्द बंगाली होकर भी कालीघाट का विरोध करता है, मारो मारो! इतने ही में एक बिहारी युवक ने एक बंगाली विद्यार्थी के नाक पर कस करके तमाचा मार दिया। सभा में हुल्लड़ मच गया। कुर्सियों को उठा उठा कर विद्यार्थी मार पीट करने पर तैयार हो गये किन्तु डा० अंकलेसरिया ने अपनी भावपूर्ण वाणी से हुल्लड़ को शान्त कर दिया और उन्होंने उत्कृष्ट अंग्रेजी भाषा में धाराप्रवाह भाषण देते हुये प्रतिज्ञा की—

"यदि मेरे प्यारे भाई "वीर" शर्मा की मृत्यु हो जायगी तो बंगाल का काला मुंह हो जायगा और मैं उसी क्षण से भारतवर्ष के अन्न और जल का त्याग करके शीघ्र से शीघ्र अमेरिका को चला जाऊंगा। इतना ही नहीं मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि इस जीवन में फिर कभी इस अभागे देश भारत का मुंह नहीं देखूंगा।"

एक पारसी नेता के मुख से इतनी उच्च भावनाओं से ओतपोत हृदय के उद्‌गार सुन कर प्रान्तीयता के पुजारी, बङ्गाली विद्यार्थी, युवक लज्जा के मारे नतमस्तक हो गये और सभा का काम शान्ति पूर्वक समाप्त हो गया।

कलकत्ता के सभी प्रकार के ब्राह्मणों ने हज़ारों की संख्या में एकत्रित हो कर माहेश्वरी भवन में धर्मप्राण 'वीर' जी की रक्षा के लिये विराट सभा का आयोजन किया। कलकत्ता के मोनार के पास ठाकुर श्रीकृष्ण सिंह के सभापतित्व में कलकत्ता की कई सार्वजनिक संस्थाओं की एक सम्मिलित विराट सभा हुई, जिसमें पण्डितों को कालीघाट मन्दिर में न जाने का अनुरोध किया गया और इस आशय का प्रस्ताव भी पास किया गया।

कलकत्ता के प्रसिद्ध हिन्दू राष्ट्रवादी पत्र

"लोकमान्य" ने अपनी सम्पादकीय टिप्पणी में कहा है—

"पशुवलि विरोध के लिये परसों कलकत्ता में करारी हड़ताल रही। कई विराट सभाएँ हुईं और कई जुलूस निकले। पचास हज़ार की संख्या में हिन्दू जनता ने जुलूस में भाग लिया। इतनी भीड़ तो इधर बहुत दिनों से कलकत्ते में नहीं हुई और न धार्मिक तथा सामाजिक सुधारों के लिये इतनी संख्या में एकत्र होकर जनता ने दिलचस्पी ही दिखाई। इससे प्रकट है कि पशुवलि ऐसे जघन्य पाप और असभ्यता सूचक प्रथा को बन्द करने के लिये हिन्दू जनता व्यग्र हो उठी है। केवल मुष्टीमेय वाममार्गी ही दुराग्रह कर रहे हैं।"

पण्डित रामचन्द्र शर्मा को धन्य है कि उनके प्रयत्न से यह तो अतिशीघ्र विदित हो गया कि हिन्दू जनता का रुख क्या है। शर्मा जी का प्रयत्न तो इतने से ही सफल हो गया। ईश्वर करे उन्हें शीघ्र पूर्ण सफलता प्राप्त हो और वह वाममार्गियों को सुबुद्धि दे जिससे मन्दिर में पशु-हिंसा बन्द हो और शर्मा जी के प्राण बचे।

बिहार भूषण बाबू जगतनारायण लाल जी पण्डित सरयू-प्रसाद मिश्र के साथ "वीर दिवस" की पहली रात्रि में ही पटना से कलकत्ता आ गये थे और टाऊनहाल वाली विराट सभा के उपरान्त हड़ताल की रात्रि में सर सी. पी. राय, श्रीयुत् शरच्चन्द्र बोस, श्री जे. सी. गुप्ता, श्री सतीशचन्द्रदास गुप्त, कलकत्ता कारपोरेशन के डिप्टी मेयर श्री सनत्कुमार राय चौधरी, बाबू प्रभुदयाल हिम्मत सिंहका, बाबू मदनमोहन बर्मन आदि प्रमुख व्यक्तियों से मिले। उन्होंने पण्डित रामचन्द्र शर्मा जी से भी बातचीत की; किन्तु समस्या के सुलझाने के प्रयत्न में सफल नहीं हुये। 'लोकमान्य' के प्रतिनिधि के पूछने पर जगत बाबू ने निम्न लिखित वक्तव्य दिया—

हिन्दुओं में से एक ऐसे साहसी और युवक वीर के प्राण यों चला जाय यह बड़े दुःख और खेद की बात होगी और ऐसे समय में जबकि हिन्दुओं को ऐसे वीरों की विशेष आवश्यकता है, 'वीर' जी की मृत्यु से महान हानि होगी। यह सोच कर ही मैं यह चाहता था और चाहता हूं कि कोई ऐसा मार्ग निकल आये जिससे समस्या सुलझ जाय और जिसके साथ सभी पक्ष के लोग सहमत हो सकें। इसके लिये मैंने थोड़ा प्रयत्न भी किया। बङ्गाल के अधिकांश लोगों में यह भावना उत्पन्न हो गई है कि इस पुरानी प्रथा को हठात् बन्द करने के लिये हम पर बाहर से आकर कोई व्यक्ति अनशन कर के क्यों दबाव डाल रहा है। ऐसी भावना का प्रसार प्रान्तीयता का प्रचार है। शर्मा जी को समझाने के लिये अनेक चेष्टाएँ की और अनेक महापुरुषों के

से प्रभावित हो कर पाँच दिन तक अनशन कर डाला। यह बात किसी प्रकार "वीर" जी तक पहुंच गई और उन्होंने उक्त बालक को बुला कर उसके सिर पर हाथ रखते हुये मधुर शब्दों में अनशन छोड़ने की आज्ञा दी। बालक ने "वीर" जी के पैर पकड़ कर रोते हुये कहा—

मैं आपको अपनी आँखों के सामने मरते हुये कैसे देख सकूंगा? प्रभु! पहले मुझे ही मरने दीजिये। बालक की बातें सुन कर कई स्त्रियाँ रोने लग गईं "वीर" जी की आज्ञा से बालक ने अनशन छोड़ दिया।

बम्बई की ह्यूमेनिटेरियन लीग ने कलकत्ता के मेयर के नाम पर तथा बंगाल के गवर्नर और महामना मालवीय जी के पास कई तार भेज कर "वीर" जी के प्राण बचाने का अनुरोध किया। माहेश्वरी भवन में महिलाओं की एक और विराट सभा हुई जिसमें हजारों देवियों ने कालीघाट के पण्डों का नाश हो के गगनभेदी नारे लगाये। हम पहले ही लिख आये हैं कि "वीर" जी की सहायता के लिये हैदराबाद से जीव रक्षा मंडली कलकत्ता आई थी। उक्त समिति के प्रचारक दल ने कलकत्ता की गली गली में घूम घूम कर पशुबलि के विरुद्ध प्रचार किया।

जामखंबालिया (काठियावाड़) से "वीर" जी द्वारा स्थापित संस्था 'भीमदल' के मंत्री श्री गिरधर लाल जी सोनी तथा नटवर लाल जी व्यास ने तार भेज कर पण्डित जी की दीर्घायु तथा सफलता की कामना की। पण्डित रामचन्द्र शर्मा की जन्मभूमि "वैराठ" में भी भीमदल की एक शाखा है। वहां से भी १ लंबा

पत्र आया था। जिसमें लिखा था कि आपको गौएं और बछड़े तथा वृद्ध पिता जी एवं समस्त बेराठ के नरनारी आपके लिये व्याकुल हो रहे हैं। भगवान आपको दीर्घायु करें।

तहसील किरावली (आगरा) कांग्रेस कमिटी के प्रेसिडेन्ट श्री शान्ति स्वरूप जी श्रीवास्तव ने पण्डित को पत्र भेज कर शुभ कामना प्रकट की।

माहेश्वरी भवन में रामेश्वर जी भट्टड़ के सभापतित्व में एक विराट सभा फिर हुई जिसमें कई आर्यसमाजी विद्वानों के भाषण हुये। श्री अम्बिका प्रसाद सिंह जी ने अपने भाषण में कहा कि आर्य समाजियों को यह नहीं कहना चाहिये कि "वीर" जी तो सनातनधर्मी पण्डित हैं। हम तो काली जी का अस्तित्व ही नहीं मानते और 'वीर' जी तो काली जी की पूजा के विरोधी नहीं हैं। मेरा तो यह निश्चित मत है कि 'वीर' जी जैसे सच्चे सनातनधर्मी पण्डित से जैन, सिक्ख, आर्य, समाजी, कबीरपन्थी और ब्रह्मसमाजी आदि हिन्दूधर्म के सभी संप्रदायवादी सदा सहमत रहेंगे। आर्यसमाज भी तो वैदिक सनातनधर्म ही की एक प्रगतिशील संस्था है फिर हम 'वीर' जी के प्राणरक्षार्थ आगे क्यों न बढ़ें। उक्त सभा में स्वामी निर्विकारानन्द जी (बाल सन्यासी) का बड़ा जोशीला भाषण हुआ उन्होंने कहा—

मुझे 'वीर' जी महाराज एक महीने से रोक रहे हैं। उनके बारबार समझाने से मैंने अपना अनशन अब तक प्रारम्भ नहीं किया। किन्तु मैं उनके पास दिनरात रहते हुए उनकी असह्य

वेदना को अधिक दिन देख नहीं सकता। चाहे जो हो मैं ३० दिसम्बर से अवश्य ही अनशन प्रारम्भ कर दूंगा। अपने निश्चय के अनुसार अपना अनशन कल सवेरे प्रारम्भ कर दूंगा। सभा में कालीघाट के द्वार पर सत्याग्रह के प्रश्न को लेकर बहुत देर तक गरमागरम बहस हुई। अंत में जमादार समिति की ओर से नवरात्र पर कालीघाट के समस्त पिकेटिङ्ग करने के निश्चय के साथ सभा विसर्जित हुई।

'वीर' जी की अवस्था भीषण होती देख कर हवड़ा में छात्रों का १ विराट जुलूस बाबू शालिग्राम जी चौधरी मैनेजर हनुमान ज्यूट मिल्स के तत्वाधान में हनुमान विद्यालय से प्रातःकाल ६ बजे निकाला गया। जिसमें स्थानीय हिन्दी की फ्री प्राइमरी स्कूल तथा सरकारी पाठशाला गोसांईघाट के समस्त छात्र सम्मिलित थे और असंख्य हिन्दू जनता भी साथ में थी। यह जुलूस घुसड़ी की प्रधान सड़कों और गलियों में श्री शर्मा जी को जय बोलता हुआ और पशुहत्या विरोधी भजन गाता हुआ अंत में १० बजे जान साहब के बाढ़े में पहुँचा और वहां जाकर विराट सभा के रूप में परिणित हो गया। सभा में कई वक्ताओं के भाषणोपरान्त समस्त जनता ने खड़े होकर ५ मिनिट तक 'वीर' जी की दीर्घायु के लिये सम्मिलित प्रार्थना की। इसी सभा में हावड़ा के काली स्थान के पंडों ने पशुबलि प्रथा को सर्वथा बंद कर देने की प्रतिज्ञा कर डाली। हवड़ा घुसड़ी में सेवा समिति के मन्त्री श्री दूधनाथ सिंह जी ने घूम घूम कर 'वीर' जी का संदेश घर घर पहुँचा दिया।

हबड़ा की आर्य्यसमाज और उसके प्रधान श्री मिहिरचन्द्र जी श्रीमान 'कुसुमाकर' ने मलकिया तथा हबड़ा के अन्य मजदूर अंचलों में घूम घूम कर कालीघाट मन्दिर की पशु हत्या के विरुद्ध प्रबल जनमत तैयार कर लिया।

२९ दिसम्बर सन् १९३५, रामचन्द्र जी शर्मा 'वीर' के अनशन का पचीसवां दिन था। उनकी शारीरिक दुर्बलता अत्यधिक बढ़ गई। पेट का दर्द हर समय रहने लगा। नीचे के दाँत हिलने लग गये। "वीर" जी के परम स्नेही राय बहादुर डाक्टर श्री गोपालचन्द्र मित्र और उनके सहायक डाक्टर भट्टाचार्य ने श्री शर्मा जी के स्वास्थ्य की परीक्षा की। उनकी रिपोर्ट में बतलाया गया कि श्री शर्मा जी की नाड़ी गति प्रति मिनट अठत्तर है। उसकी चाल नियमित किन्तु दुर्बल है। स्वांस की गति भी प्रति मिनट २० है। कर्णमूल की शिकायत अभी तक है; किन्तु सूजन कम हो गई है। मूत्र में एसिटोन और डाइमिटिक एसिड की प्रबलता पाई जाती है। हृदय की धड़कन में कमजोरी है। यद्यपि शरीर अत्यन्त क्षीण है और मसूड़ों के फूल जाने से थूक में रक्त भी आता है। कभी कभी उनके हाथ-पैर शिथिल हो जाते हैं; किन्तु मृत्यु की सम्भावना दो-चार दिन नहीं है। उपवास के प्रारम्भ में उनके शरीर का तौल १२४ पौंड था जो क्रमशः घटते घटते ९९ पौंड ही रह गया है।

युक्त प्रान्त के प्रसिद्ध हिन्दी कवि श्रीयुत "रसिकेन्द्र" जी ने जो कविता अखबारों में प्रकाशित कराई थी उसे हम नीचे दे रहे हैं।

ठानी टेक तूने बलिदान बनने की "वीर",

मूक दीन जीवों पर दया भाव भर के।

रसिकेन्द्र क्या न कभी पिघलेंगे पत्थर भी,

आत्मत्यागी तप के प्रभाव से सिहर के।

बनेगी कराली महाकाली दयावाली मूर्त्ति,

देगी ज्ञान दुष्टों के मदान्ध वृत्ति हर के।

होना न हताश आमरण उपवास तेरा,

बनेगा अमर पशुबलि अन्त कर के।
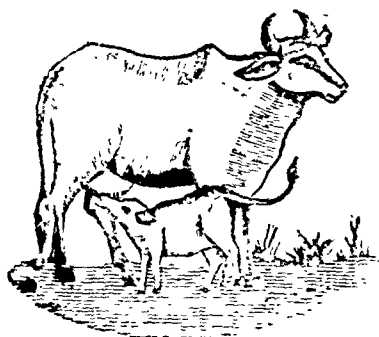
श्री 'वीर' स्तुति

[रचयिता--पं० कामताप्रसाद जी वाजपेयी 'प्रमोद', कलकत्ता]

हे हिन्दू कुल सूर्य श्रेष्ठ द्विज वंश उजागर।
कै भारत के रत्न बुद्ध, गौतम गुण आगार॥
कै शिवि के अवतार दया के सुन्दर सागर।
हम सब के आदर्श नागरी के वर नागर॥
पर हित साधन हेत हठ यह तेरा अविराम है।
सेवा में हे "वीर" वर कोटिन बार प्रणाम है॥

(२)

हे अवतारी पुरुष धन्य तेरी बलिहारी।
पावन पथ के पथिक अहिंसा के व्रतधारी॥
सुनकर तव संकल्प कांप उठते नरनारी।
भर दी तुमने अंग अंग में वह चिनगारी॥
यदि हिन्दू कल्याण हित सबका सम अनुराग हो।
जले अवनि अम्बर सभी ऐसी प्रज्ज्वलित आग हो॥

(३)

दृढ़ प्रतिज्ञ है कौन ? करे जो तेरी समता।
बिन स्वारथ के तजे अरे जीवन की ममता॥
नेता नीतिनिधान न अब तक कुछ करते हैं।
नेतापन का नित्य व्यर्थ ही दम भरते हैं॥
जान-बूझकर क्यों भला हिन्दू-गण अब सो रहे।
असमय ही में रत्न यह भारत का क्यों खो रहे॥

कट्टरपंथियों को महाकवि का संदेश

कलकत्ता की ब्रजवासी सभा के मन्त्री पण्डित शिव-नारायण जी शर्मा आंखों की पीड़ा के होते हुये भी "वीर" के विराट आन्दोलन में चारों ओर दौड़धूप करते रहते थे। उनके साथी भी श्री पद्मसिंह जी वर्मा, श्री रामसहाय जी शर्मा, श्री कृष्ण सिंह जी और श्री अम्बिका सिंह जी ने कालीघाट को जाने वाले अन्य भक्तों को समझाना प्रारम्भ कर दिया और अनेक बकरों को छुड़ा छुड़ा कर "वीर" जी के स्थान पर लाने लगे।

अनशन-भवन में दो-चार बकरों की हर समय उपस्थिति रहने लगी। जब अधिक बकरे इकट्ठे हो जाते थे तब पण्डित जी के मन्त्री तारणीप्रसाद जी चौधरी उन्हें पिंजरापोल गौशाला में भिजवा देते थे।

अमरेली (काठियावाड़) के निवासी तथा श्री जीवदया प्रचारक समिति के संचालक श्रीमान् वनमाली रवजी पारेख "वीर" जी के कलकत्ता में प्रवेश करने के समय से ही गंगाघाट तथा काली-घाट के निकट घूम घूम कर बलि विरोधी आंदोलन को अग्रसर कर रहे थे। वृद्धावस्था के होते हुये भी वे प्रति दिन सोलह सोलह घंटा तक ट्रामगाड़ियों में घूम घूम कर लाखों की संख्या में नोटिस बांटते थे श्रीमान् वनमाली रवजी पारेख की प्रशंसा करना समुद्र को जल पिलाने के समान ही माना जायगा। उनके साथी श्री बच्चू जी पाठक एक हाथ और एक पैर से हीन

होते हुये भी "वीर" जी की सेवा में दिन रात डटे रहते थे। यदि वनमाली रवजी सदृश सच्ची लगन के निःस्वार्थ कार्यकर्ता इस अभागे देश की विसर्जित भूमि में भी दो सौ उत्पन्न हो जाते तो "वीर" जी जैसे धर्मप्राण को प्राणों की बाजी न लगानी पड़ती। कालीघाट मंदिर के पशुवध के विरोध में धर्मप्राण "वीर" जी के विराट आंदोलन में जितना महत्वपूर्ण कार्य इस वृद्ध सज्जन ने किया था उसे स्मरण कर श्रद्धा से हमारा मस्तक झुक जाता है।

'वीर' जी को मृत्यु के मुख में जाते देख कर महाकवि रवीन्द्र-नाथ जी ठाकुर ने अपनी अमर लेखनी को ५वीं बार फिर उठाई और उन्होंने बंगाल की साम्प्रदायिकता तथा प्रान्तीयता के पुजारियों को फिर अपना दिव्य सन्देश भेजा।

शान्ति-निकेतन
आश्विन उत्तरायण
बोलपुर (बंगाल)

"मैं जानता हूं कि जिन बहरे कानों पर रामचन्द्र शर्मा जैसे महात्मा के भावी मरण का संदेश नहीं पहुँचा उन पर मेरी प्रार्थनाओं का कुछ प्रभाव नहीं होगा तो भी एक बार अपने देश-वासियों से मैं फिर प्रार्थना करना चाहता हूँ कि वे इस श्रेष्ठ आत्मा की पुकार को ठुकरा कर मातृभूमि के इतिहास में अमिट कलंक की स्मृति न छोड़ दें।

अभी तक इस दयालु हृदय महात्मा ने पशुबलि को रोकने के लिये जब जब जीवन को खतरे में डाला है। तब तब तत्संबंधित

देवपूजकों ने उनको मरने नहीं दिया। यदि अब की बार बंगाल पशुबली की क्रूर प्रवृत्ति पर चिपटा रह कर श्री रामचन्द्र शर्मा को मर जाने देगा तो इस मनुष्यताहीन कार्य के लिये सम्पूर्ण राष्ट्र को पछताना पड़ेगा। मैं और कुछ न कह कर केवल सर्व शक्तिमान् भगवान से विनय करूंगा कि वह ऐसी व्यवस्था करें जिससे इस भीषण दुःखान्त घटना को रोकने के लिये एकदम द्वार बन्द ही हो जाय।"

सूरत के "जैन मित्र" नामक सुप्रसिद्ध सप्ताहिक में श्री कपूरचन्द जी जैन नागपुर निवासी की एक उत्कृष्ट कविता प्रकाशित हुई थी जिसको हम यहां उद्धृत कर रहे हैं। आशा है पशुबलि की राक्षसी प्रथा के विरोधियों का यह कविता उत्साह बढ़ावेगी।

कलकत्ता की काली और 'वीर' शर्मा जी

जब से सुनी "वीर" शर्मा की प्रतिभापूर्ण कहानी है।
हृदय पिघलकर आंखों से वह निकला पानी पानी है॥
अति सुन्दर मुखमण्डल जिसका एक अनोखा त्यागी है।
तथा 'अहिंसा परमोधर्मः' का अनुपम अनुरागी है॥
सब धर्मों से सत्य अहिंसा का जिसने है ज्ञान लिया।
सदा आत्मवत् सर्वभूत का अविरल अनुसंधान किया॥
दीन मूक पशुओं की बलि कर बने अधम दीवाने हैं।
हरे! हरे!! मठ-मंदिर भी बन गये कसाईखाने हैं॥
दीन हीन निर्बल पशुओं पर ही वे छुरी चलाते हैं।

सिंह तेंदुवे चीतों को वे नहीं पकड़ने जाते हैं ॥
शुद्ध आर्य्य जनता भी जिससे अति असभ्य कहलाती है ।
यह पशु हत्याकाण्ड प्रथा जिसका प्रमाण बन जाती है ॥
कहा "वीर" ने हे काली ! तू कहलाती जगमाता है ।
फिर क्यों भक्षक हो सकती है जब तू ही जगमाता है ॥
ऐसे ही कितने दिन तक जनता को भी उपदेश दिया ।
हृदय चीर कर दिखा दुष्ट पण्डों से भी अनुरोध किया ॥
फिर दृढ़ निश्चय कर मन में उत्कट अनशन व्रत ठाना है ।
या पशुवलि मिट जानी है या मुझको ही मिट जाना है ॥
समझाया जिन नेताओं ने उनको उत्तर मिला यही ॥
सभी एक दिन मर जावेंगे बात यही है सही सही ।
तो फिर निज कर्त्तव्यक्षेत्र में क्यों नहीं कदम बढ़ाऊँ मैं ॥
निर्भय जीवन सुमन जीवरक्षा पर क्यों न चढ़ाऊं मैं ।
हे भगवन् ! ऐसे वीरों की आशाएं फलवती करो ॥
अमित कुप्रथाओं से पीड़ित जनता का संताप हरो ।

पिता जी का मोह

'वीर' जी के महाव्रत ने कलकत्ता महानगर में जब महा क्रान्ति का शंख फूंक दिया तब दर्शकों की संख्या हजारों से लाखों हो गई । प्रातःकाल के ५ बजे ही गंगा स्नान से लौटनेवाली महिलाएं अनशन भवन में आकर धर्मप्राण 'वीर' जी के दर्शनों के लिये एकत्रित हो जाती थीं । सूर्योदय से

पूर्व आने वाली सभी महिलाएँ मारवाड़ी समाज की ही होती थीं। ये सभी माँ बहिने 'वीर' जी से बिना कुछ कहे सुने दर्शन कर के चुपचाप लौट जाती थीं। 'वीर' जी का आसन लकड़ी की चौकी पर लगा हुआ था। यह चौकी दो आदमी सो सकें इतनी चौड़ी थी। सुर्योदय होते ही लक्ष्मण प्रसाद जी जगन्नाथ जी तथा सागर के चारों युवक उन्हें धीरे धीरे बैठाते थे और एक कोने में लेजा कर धीरे धीरे दंतधावन और स्नान कराया जाता था। इतने में सैकड़ों स्त्री पुरुष एकत्रित हो जाते थे। स्नान करने तथा उठने बैठने से उन्हें परिश्रम होता था जिसके फलस्वरूप कुछ देर तक नींद आ जाती थी। आठ बजे के लगभग वे पड़े पड़े ही नेत्र मूंद कर संध्या प्रार्थनादि किया करते थे। नौ बजे से ग्यारह बजे तक देश के अनेक नगरों से आये हुये पत्रों के उत्तर लिखाते थे। ग्यारह बजते बजते असंख्य नरनारियों की भीड़ उमड़ने लगती थी। जिस भवन में अनशन हो रहा था उसमें चार सौ मनुष्यों का स्थान था। उमड़ती हुई भीड़ को काबू में रखने के लिये आठ दस स्वयंसेवक हर समय खड़े रहते थे। आगत महिलाओं की भीड़ का प्रबन्ध करने के लिये आर्य कन्या विद्यालय की स्वयंसेविकाएं बारह बजे दिन से रात के सात बजे तक खड़ी रहती थीं।

रात के ७ बजे के उपरान्त महिलाओं का आना बंद कर दिया जाता था फिर भी कई प्रतिष्ठित बंगाली महिलाएं रात के १० बजे तक आती रहती थीं। स्वयंसेवक गण एक बार तीन चार सौ महिलाओं को भीतर जाने देते थे। ये महिलाएं दो

मिनिट के उपरान्त "वीर" जी के दर्शन कर के लौट जाती थीं। दूसरी वार पुरुषों की भीड़ का प्रवेश होता था। इस प्रकार दर्शनार्थियों की संख्या रात के १२ बजे तक एक लाख तक हो जाती थी।

कलकत्ता महानगर की जन संख्या यदि सोलह लाख मान ली जाय तो "वीर" जी के दर्शकों की संख्या सोलहवें हिस्से की मानी जानी चाहिये। हो सकता है उस भीड़ में कुछ विरोधी भी आते हों और कुछ तमाशा देखने वाले भी; कुछ भी हो अनशन भवन के सामने मोटरों का भीड़ इतनी हो जाती थी कि भाड़े पर चलने वाली बस गाड़ियों का मार्ग नहीं मिलता था। अनशन भवन के सामने आर्य्यसमाज मंदिर में टेलिफोन था जिससे श्री तारणी प्रसाद जी चौधरी दिन भर समाचारों का आदान प्रदान करते रहते थे। कहारों की सभा ने श्री भोला-नाथ जी वर्मन की अध्यक्षता में दिगम्बर जैन भवन में विराट सभा कर के प्रतिज्ञा कर ली कि जब तक कालीघाट की पशुहत्या बंद न होगी तब तक कालीघाट मन्दिर नहीं जायेंगे। जो ब्राह्मण कालीघाट में पूजा करने जायगा उसे दान दक्षिणा नहीं देंगे।

आर्य्यसमाज पीलीभीत ने एक लंबा पत्र लिख कर विश्वास दिलाया कि हम 'वीर' जी के साथ हैं।

३० सितम्बर को अनशन का २६वां दिन था। "वीर" जी का वजन घट कर ९६ पौंड हो रह गया। प्रातःकाल पण्डित जी के पूज्य पिता श्री स्वामी भूर जी महाराज अपने ग्राम वैराट (जयपुर) से कलकत्ता आ गये। उन्होंने भी आमरण अनशन

का निश्चय किया किन्तु पण्डित रामचन्द्र जी के विशेष अनुरोध से पण्डित जी के जीवित रहने तक अनशन का विचार त्याग दिया।

राजस्थान प्रान्त की कांग्रेस के प्रेसिडेन्ट तथा सस्ता साहित्य मण्डल के संचालक भारत के सुप्रसिद्ध हिन्दी साहित्यिक नेता पं० हरिभाऊ जी उपाध्याय ने धर्मप्राण 'वीर' जी को एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पत्र प्रेषित किया था जिसको अक्षरशः नीचे दिया जाता है--

सस्ता साहित्य मण्डल
नया बाजार, दिल्ली।

प्रियवर शर्मा जी

सस्नेह वन्दे!

इधर 'गान्धी थैली' के सम्बन्ध में बराबर भ्रमण कर रहा हूं पर तब भी आपके उपवास की प्रगति का बड़ी दिलचस्पी से अध्ययन करता रहता हूँ। आपके उपवास के सम्बन्ध में मेरी वही राय है जो मांगरोल उपवास के समय मैंने आपको दी थी और मेरा विश्वास है कि आप जिस आशय को लेकर चले हैं वह स्तुत्य है। यदि आपके बलिदान से यह पशुवलि बन्द हो जावे तो आपका उपवास सफल हो जावेगा मुझे विश्वास है कि भावुक बंगाली जनता आपके प्राणों की परीक्षा न करेगी। 'यदि ऐसा हुआ भी तो आप शान्ति के साथ अपने प्राणों को इस क्रूर धार्मिक प्रथा के ऊपर हंसते २ बलिदान कर दीजियेगा' मुझे विश्वास है कि इस बलिदान से सारे बंगाल की आत्मा

जाग उठेगी और वह इस निर्दय प्रथा को एक बारगी बन्द कर देगी। आत्म निरीक्षण बराबर करते रहियेगा और जिस क्षण आपको यह बोध हो कि उपवास में जल्दी से काम लिया है और पहले इसमें बड़ी तैयारी कर लेनी चाहिये थी उसी क्षण आप उसे छोड़ दीजियेगा बिना परिणाम की चिन्ता किये। (कर्मयोगी लाक निन्दा से नहीं डरते) उससे आपका तेज बढ़ेगा ही घटेगा नहीं क्योंकि यही सत्य मार्ग है।

Olive जैतुन के तेल का बराबर मालिश करवाते रहियेगा और पानी अधिक मात्रा में पीते रहियेगा। यदि आपके स्वास्थ्य के सम्बन्ध में कोई रोजाना बुलेटिन निकलती हो तो यहां भेजवाने का प्रबन्ध कर दें। मैं यहां एक महीने तक रहूंगा। इति

शुभैषी—

हरिभाऊ।

३० सितम्बर को माहेश्वरी भवन में महिलाओं की एक और विराट सभा हुई। सभाध्यक्षा का आसन श्रीमती शकुन्तला देवी B. A. ने सुशोभित किया था।

कुछ देवियों के भाषणोपरांत एक कमिटी बनाई गई जिसकी सदस्या निम्न लिखित महिलाएं नियुक्त हुईं—

(१) श्रीमती पुष्पमयी घोष M. A. (२) श्रीमती शकुन्तला देवी B. A. (३) श्रीमती प्रियम्वदा देवी (४) श्रीमती लक्ष्मी देवी पंजाबी (५) श्रीमती सीतादेवी (६) श्रीमती मीठी बेन (७) माता इकबाल देवी (८) श्रीमती पार्वती देवी बर्म्मन (९) श्रीमती सुशीला देवी (१०) श्रीमती पद्मादेवी (११) श्रीमती पन्नादेवी आदि इस

सभा मे डेढ़ हजार महिलाएं थीं। सभा विसर्जित होकर प्रचंड जुलूस के रूप में परिणित हो गई। जुलूस उठ कर सोनापट्टी, सूतापट्टी, हरिसन रोड होता हुआ अनशन गृह की ओर जा रहा था। बंगाल-बिहार-आसाम सिक्ख अकाली दल के सेक्रेटरी श्री सरदार दिलावर सिंह जी डुगुल कई सिक्ख वीरों को साथ लेकर अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित होकर माताओं बहिनों की रक्षा के लिये जुलूस के साथ जा रहे थे।

ब्राह्मणों की एक विराट सभा "वीर" जी को प्राणरक्षा के लिये होने वाली थी जिसके लिये "वीर" जी ने अपना संदेश लिखवा कर इस प्रकार भेजा था—

"भारतवर्ष के ही नहीं वरन् अखिल विश्व के, ब्राह्मण गुरु थे। आज हमारे प्रमाद से संसार हमे गालियां दे रहा है और हम अपमानित हो रहे हैं। यदि मन्दिरों की पशुबलि के विरोध में मेरी मृत्यु हो जायगी तो संसार को ज्ञान हो जायगा कि ब्राह्मणों में तप की ज्योति अब भी जगमगा रही है। गौतम, कणाद, वशिष्ट, भारद्वाज के वंशज अब भी धर्म के लिये हंसते हंसते मर मिटने की शक्ति रखते हैं। मृत्यु शय्या पर पड़ा हुआ मैं ब्राह्मणों की ओर टकटकी लगाये हुये हूँ। भूदेवो! मुझे आशीर्वाद दो।"

आपके चरणों का पुजारी—
रामचन्द्र शर्मा "वीर"

"वीर" जी के पूज्य पिता जी से 'मारवाड़ी ब्राह्मण" के सम्पादक श्री पं० हनुमानदत्त जी जोशी ने भेट करते हुये कहा—

पण्डित जी ! आप धीरज रखिये। इतना सुनकर उनके नेत्रों से आंसू टपकने लगे और वे कहने लगे—धीरज कैसे धारण करूं आज यह २६ दिन से भूखा है। मैं आज अपने नेत्रों के सम्मुख इसकी यह दशा देख रहा हूँ। मेरा तो यही एक सहारा था। मैं तो सोचता था कि मुझे अन्त समय में इसके हाथ से अग्नि मिलेगी किन्तु आज मैं उल्टा दृश्य देख रहा हूं इतना कहते कहते पिता जी के नेत्रों से अश्रुधारा बह निकली। उस समय का कारुणिक दृश्य जिन लोगों ने देखा उनके भी नेत्रों में आंसू भर आये।

वैतूल (मध्य प्रान्त) से स्वामी नर्मदानन्द जी परिव्राजक ने एक पत्र लिख कर शर्मा जी के अनशन के प्रति सहानुभूति दिखलाते हुये कलकत्ता आकर अनशन करने का विश्वास दिलाया था।

आर्य्यसमाज आज़मगढ़ के मन्त्री ने पण्डित जी के पास निम्नांकित आशय का एक लम्बा चौड़ा पत्र प्रेषित किया था:—

'आर्य्यसमाज आज़मगढ़ के साप्ताहिक अधिवेशन में त्यागवीर शर्मा जी के अनशन की भीषणता के समय देश के महान् नेताओं के चुपचाप बैठे रहने की तीव्रनिन्दा की गई। स्थानीय D.A.V हाई स्कूल के हेड मास्टर श्री० हरिशङ्कर जी गर्ग B. Sc. L. T ने पण्डित जी के अनशन एवं उनके निस्वार्थ देश प्रेम से प्रेरित होकर उनकी सहानुभूति में चार दिन का अनशन किया है।

इसी प्रकार मुकामा (पटना) बेगूसराय मुंगेर में फिर बड़ी बड़ी सभाएं हुईं।
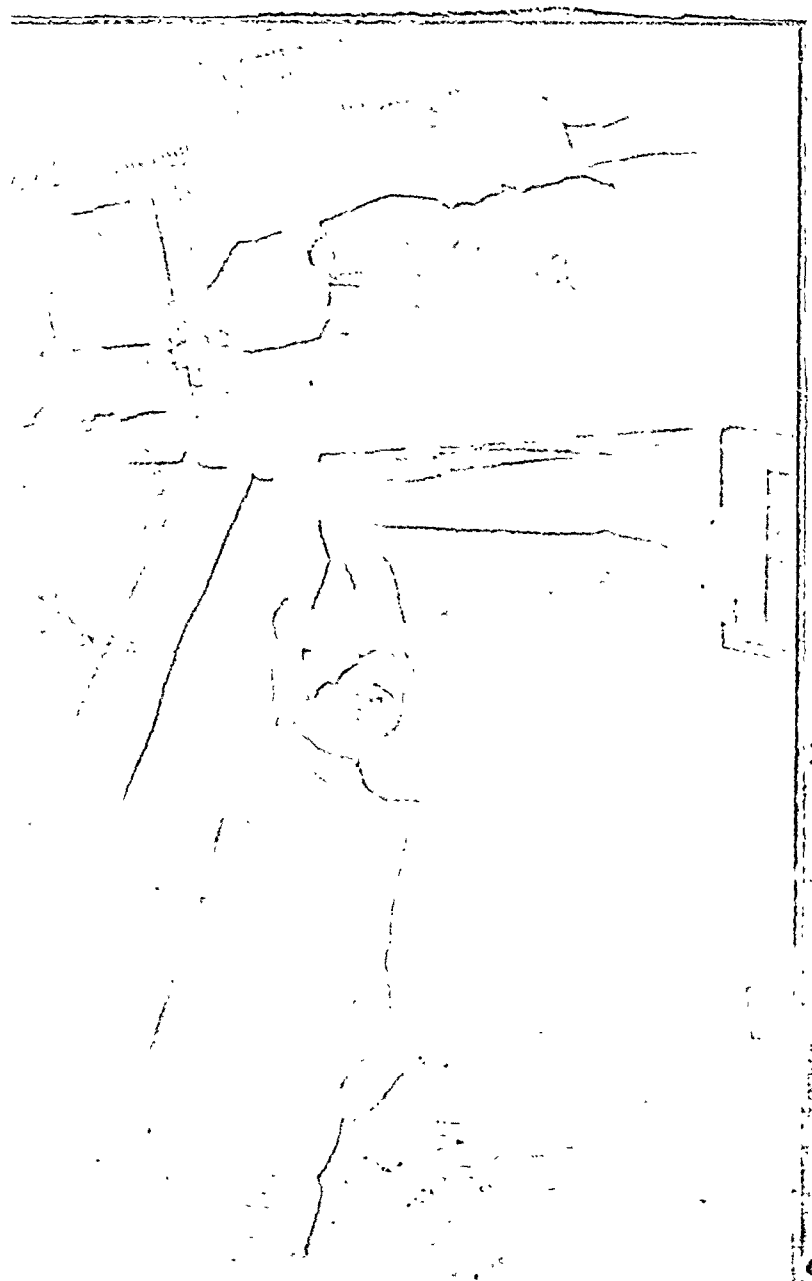
अनशन का सत्ताइसवां दिन बड़ा भयंकर सिद्ध हुआ। इस रोज 'वीर' शर्मा जी मूर्च्छितावस्था में पड़े थे। उनके पूज्य पिता श्री भूरजी स्वामी यह दृश्य देख नहीं सके और धड़ाम से पृथ्वी पर गिर पड़े। दर्शकों में से किसी ने यह समझ लिया कि "वीर" जी की मृत्यु पर ही पिताजी मूर्च्छित हुये हैं और बिना अनुसंधान किये ही नगर में 'वीर' जी के मरने की सूचना दे दी। जिसका परिणाम यह हुआ कि कलकत्ता के अगणित स्त्री-पुरुष उमड़ उमड़ कर अनशन गृह में आने लगे। यह खबर बिजली की तरह सारे शहर में पहुंच चुकी थी। इसी से टेलिफोन द्वारा, अनेक प्रमुख पुरुष समाचार पूछने लगे। अखबारों के प्रतिनिधि भी दौड़े हुये आने लगे रात के आठ बजे तक बड़ी अशान्ति रही। भीड़ को काबू में रखना स्वयंसेवकों की शक्ति के बाहर हो गया। इसी बीच में कुछ लोगों ने "वीर" जी के दर्शनार्थ भीतर जाने के लिये स्वयंसेवकों को पीट डाला। किन्तु जब कमिटी ने धर्म-प्राण "वीर" जी को कुर्सी पर लेटा कर सड़क पर एकत्रित भीड़ को दर्शन करा दिया और स्वयं "वीर" जी ने हाथ जोड़ कर उमड़ी हुई भीड़ को प्रणाम किया तब जनता के आनन्द की सीमा न रही। इसी समय स्वयंसेवकों ने अनशन गृह के किवाड़ बंद कर लिये। जनता भी हर्षित हृदय से धीरे धीरे लौट गई।

पशुबलि निरोध समिति के प्रमुख सदस्यों ने कालीघाट मंदिर के पंडों और मंदिर के ट्रस्टी श्री फणिलाल मुकर्जी से मंदिर की बलि बंद करने का प्रबल अनुरोध किया जिसका उत्तर अभिमान भरे शब्दों में दिया गया।

"वीर" जी के अनशन गृह से ढाई सौ गज की दूरी पर ठनठनिया का काली मंदिर था। उक्त मंदिर के पंडों ने कलकत्ते के चीफ प्रेसिडेन्सी मजिस्ट्रेट रायबहादुर के. मैत्र की अदालत में दरख्वास्त दी कि पंडित रामचन्द्र शर्मा और उनके अनुयायियों पर फौजदारी की १४४ धारा लगाई जाय। मिस्टर घोष का अभियोग था कि काली का मंदिर कार्नवालिस स्ट्रीट और मुक्तारामरोड के मोड़पर है। 'वीर' शर्मा के अनुयायी कलकत्ते में पशुबलि के विरुद्ध प्रचार कर रहे हैं और उनके दल के पांच सौ मनुष्य लाठियां लेकर चढ़ आये और उपद्रव करने लगे। मजिस्ट्रेट ने प्रार्थी के अभियोग पर विचार करके इस प्रकार का आदेश दिया कि विरोधी दल को ताकीद की जाती है कि मंदिर के आसपास दो सौ गज की दूरी में प्रवेश न करें और विरोधी दल ३ अक्टूबर १९३५ ई. को अपनी हरकतों का कारण पेश करे।

उक्त अभियोग पर अधिक हम न लिख कर आगे बढ़ते हैं। तारों और चिट्ठियों से ज्ञात हुआ कि "वीर" जी के अनशन की भीषण अवस्था के समाचार पढ़ कर मद्रास प्रान्त के अनेक मंदिरों की पशुहत्या बंद हो गई। विंदवासी तालुका के तय्यार गांव निवासी श्री. चीनैय्या गोंडार महोदय ने एक तामिल भाषा में लम्बा चौड़ा पत्र "वीर" जी के पास भेजा। उक्त पत्र का हिन्दी अनुवाद कराने पर ज्ञात हुआ कि उन्होंने लिखा था--हमने अपने गांव की दुर्गा के मंदिर में होने वाले भीषण हत्याकांड को बंद कर दिया है। अब आपके अनशन की विजय ही समझिये और हमारे अनुरोध से अनशन छोड़ देने की कृपा कीजिये। इसी पत्र में निवेदक के स्थान पर एक सौ चालीस स्त्री पुरुषों के हस्ताक्षर थे।

दिल्ली प्रान्त के रोहतक शहर में २९ सितम्बर को जैन युवक मण्डल और सभी सम्प्रदायों के हिन्दुओं की एक विराट सभा हुई। अध्यक्ष का आसन बाबू जगन्नाथ साहब एडवोकेट ने ग्रहण किया था। उक्त सभा में पशु बलिदान और "वीर" जी की प्राणरक्षा के लिये कई प्रस्ताव पास किये गये। सभा में सैकड़ों की संख्या में उपस्थिति थी।

ईसरदी (पवना) में २९ सितम्बर को मारवाड़ी संघ पुस्तकालय के सामने श्री योगेशचन्द्र चक्रवर्ती काव्यतीर्थ के सभापतित्व में एक सार्वजनिक सभा हुई। जिसमें श्रीराम जी झुंझुनुवाला गजानन्द जी केड़िया आदि ने भाषणों के उपरान्त यह प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत किया कि स्थानीय मोहवाडिया वाली श्री दुर्गासाला के सामने पशुबलि रोकने का शान्त सत्याग्रह किया जाय और यदि मंदिर के अधिकारी बाधा डालें तो मंदिर का बायकाट कर दिया जाय।

गया के वर्णाश्रम स्वराज्य संघ ने कलकत्ता के वर्णाश्रम स्वराज्य संघ का मानमर्दन करते हुये कालीघाट के हत्याकांड के विरुद्ध विराट सभा कर के "वीर" जी के प्रति श्रद्धा भक्ति प्रकट करते हुये पशुबलि विरोधी कई प्रस्ताव स्वीकृत किये और गया शहर के मन्दिरों की पशुबलि के विरुद्ध आन्दोलन करने का निश्चय किया।

"वीर" जी के अनशन का २८वां दिन था। काशीपुर कलकत्ता की सिद्धेश्वरी माता के सुप्रसिद्ध मन्दिर के ट्रस्टी श्रीयुत भूपेश्वर जी घोष ने "वीर" जी को आकर प्रणाम किया और अत्यन्त प्रेम भरे शब्दों में कहा कि पण्डित जी आपने केवल

एक मन्दिर कालीघाट की पशुवलि बंद कराने के लिये अनशन प्रारम्भ किया था। किन्तु आपके अनशन से अनेक मन्दिरों की बलि बन्द हो चुकी है। ऐसी स्थिति में आपको अब अनशन छोड़ देना चाहिये। चित्तेश्वरी माता के मन्दिर की पशुवलि मैं आज से ही सदा के लिये बंद कर देता हूँ। अब आपको मेरे हाथ से दूध पीना होगा। आपकी मृत्यु से समस्त बंगाल के मस्तक पर अमिट कलंक का टीका लग जायगा। मेरी प्रार्थना को स्वीकार कीजिये और मेरे हाथ से दूध पीजिये। पण्डित जी खिलखिला कर हँस पड़े। आज बहुत दिनों के उपरान्त दर्शकों ने उन्हें हंसते देखा।

श्रीमाली ब्राह्मण नवयुवक मण्डल ने कालीघाट के वहिष्कार का प्रस्ताव स्वीकृत कर कार्यान्वित किया।

जबलपुर में भी बहुत से युवकों ने खैर माई मन्दिर की बलि के विरुद्ध प्रबल सत्याग्रह छेड़ दिया। माहेश्वरी नवयुवक समिति कलकत्ता ने पन्नालाल जी कोठारी के सभापतित्व में कालीघाट के वहिष्कार का प्रस्ताव स्वीकृत किया।

हाजीनगर से श्री छविनाथ जी गुप्त ने खबर भेजी की यहां शर्मा जी की दीर्घायु के लिये अनेक स्त्री पुरुषों ने एक दिन का उपवास किया है।

शाम नगर हिन्दू सभा की एक बैठक मुरलीमनोहर के मंदिर में हुई जिसमें स्थानीय काली के मन्दिर में पशुवलि न होने देने का निश्चय करते हुये 'वीर' जी की दीर्घायु के लिये प्रार्थना की गई।

जलपाईगुडी में मारवाड़ी संघ की ओर से एक विराट सभा हुई जिसमें "वीर" जी की दीर्घायु के लिये प्रार्थना की गई।

२ अक्टूबर को "वीर" शर्मा के अनशन का २८ वां दिन था। ले दिन की अपेक्षा उनके कर्णमूल की सूजन फिर वढ़ गई और निर्वलता इतनी अधिक वढ़ गई कि उन्हें वोलने में भी कष्ट होने लगा। मुख से रक्त की मात्रा पहले से भी अधिक गिरने लगी। रायबहादुर डा. गोपालचन्द्र मित्र की परीक्षा से ज्ञात हुआ कि उस रोज अनशनव्रती 'वीर' की नाड़ी की गति प्रति मिनिट ६२ और श्वांस की गति २५ थी (साधारण अवस्था में नाड़ी की गति ७२ और श्वांस की गति १८ होती है) उपवास के पूर्व उनका तौल १२४ पौंड था जो २८ वें दिन केवल ९४ पौंड ही रह गया। उनका यह दशा देख कर पूज्य पिता जी वार वार एकान्त में छुप कर रुदन करते थे और रोते रोते मूर्च्छित हो जाते थे। वह समय कितना भयङ्कर था जवकि पिता जी को रोते देख कर सैकड़ों महिलाएँ और छोटे छोटे वच्चे रोने लगते थे।

मालवीय जी का ममता

चार अक्तूवर प्रातःकाल ८॥ वजे पण्डित रामचन्द्र शर्मा 'वीर शिथिल हुये अर्द्ध निद्रावस्था में पड़े थे। सहसा उनके मन्त्री ने धीरे से कहा—पण्डित जी! उठिये, मालवीय जी महाराज आ गये हैं। पूज्य मालवीय जी का नाम सुनते ही धर्मप्राण 'वीर' जी के रोम रोम में नवजीवन का सञ्चार हो गया और वे पूर्ण स्वस्थ वलवान मनुष्य की तरह विना किसी की सहायता के ही उठ बैठे। मालवीय जी महाराज के साथ श्री दीपचन्द जी पोद्दार तथा श्रीयुत् नारायणदास जी वाजोरिया भी थे 'वीर' जी की प्रसन्नता की सीमा नहीं रही; उन्होंने पूज्य

मालवीय जी को श्रद्धा-भक्ति पूर्वक प्रणाम किया। 'वीर' जी ने मालवीय जी के हाथों को पकड़ कर अपने मस्तक पर रखते हुये कहा कि मैं कल से मौनव्रत में था; किन्तु आप सदृश जगत पूज्य महापुरुष के सामने उस पर दृढ़ रहना उचित नहीं जान पड़ा। भगवन्! मुझे आर्शीर्वाद दीजिये। एक प्रार्थना यह भी है कि आप मुझ से व्रत भङ्ग करने के लिये कुछ भी न कहें। महामना मालवीय जी ने 'वीर' जी को आशिर्वाद देते हुये गङ्गा-जल मँगा कर अपने हाथों से 'वीर' जी का मुंह धोया तथा श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ सुनाया। शर्मा जी की क्षीण दशा देख कर मालवीय जी का हृदय करुणा से द्रविभूत हो गया और उनके नेत्रों से अश्रु-बिन्दु टपक पड़े। इसके उपरान्त मालवीय जी महाराज कालीघाट गये और काली जी का दर्शन करने के उपरान्त सेवायतों से बन्द कमरे में बातचीत की। सेवायतों ने मालवीय जी को कहा कि कालीघाट में किसी प्रकार का बलिदान अनिवार्य नहीं है, जो चाहते हैं वे जीव बलि देते हैं और जो नहीं चाहते वे अपनी इच्छा के अनुसार पुष्प फलादि से ही देवी जी की पूजा करते हैं। सेवायतों ने यह भी कहा कि हमारी संख्या चार सौ है; किन्तु साल भर में एक बार से अधिक हमलोग अपने घर से पशुबलि नहीं देते।

इसके बाद मालवीय जी महाराज बिड़ला पार्क में गये जहाँ आप ठहरे हुये थे। मालवीय जी महाराज ने इससे पचास वर्ष पूर्व काली जी के दर्शन किये थे और वहाँ पर होने वाले पशुवध को देख कर उन्होंने जीवन भर वहाँ पुनः न आने की प्रतिज्ञा की थी; किन्तु 'वीर' जी के प्राण बचाने के लिये उन्होंने कालीघाट

के पण्डों के पास जाना अत्यावश्यक समझा। इस सम्बन्ध में मालवीय जी ने कई हिन्दू नेताओं से बातचीत की।

काशीपुर (कलकत्ता) में सर्वमंगला देवी का मन्दिर है। इस मन्दिर के सेवायत सतीशचन्द्र सोमलाय ने "वीर" जी को सूचित किया था कि उनकी पारी में सप्तमी, अष्टमी और नवमी को सर्वमङ्गला देवी के सम्मुख पशुबलि नहीं होगी। किन्तु दूसरे पण्डों ने यह बात नहीं मानी और बन्द घोड़ा गाड़ी में पहुंचा कर वहाँ गुप्त रूप से बकरे कटवा दिये। इसी दिन 'वीर' जी के दल के ६ व्यक्ति कालीघाट में पिकेटिङ्ग करते हुये पकड़े गये और पुलिस में ले जा कर छोड़ दिये गये।

नवलगढ़ (राजपूताना) से सेठ मोतीलाल जी चोखानी और इन्दौर से सेठ मुरलीधर जी मथुरा वालों ने 'वीर' जी के पास सहानुभूति सूचक तार भेज कर कालीघाट के पण्डों के प्रति रोष प्रगट किया। डाक्टर माणिक जी अंकलेश्वरिया ने कलकत्ता की महिला कमिटी की ओर से लॉर्ड विलिङ्गडन की धर्मपत्नी के पास पुनः तार भेजा था।

माननीय मालवीय जी ने कालीघाट के पण्डों से बातचीत कर रात को आठ बजे २०९, कार्नवालिस स्ट्रीट में "वीर" जी के पास पहुँच कर दो घंटा तक वार्तालाप किया। वहां से फिर काली मन्दिर के पण्डों के पास जाकर वार्तालाप किया।

यह सब करने के उपरान्त माननीय मालवीय जी आधीरात को लगभग साढ़े बारह बजे बिड़ला पार्क लौटे।

खरगोन (नीमाड़ प्रान्त) से श्रीयुत हीरालाल जी आये और श्रीमती कमलादेवी ने "वीर" जी के पास पत्र भेजा था कि

हम आपके साथ आमरण अनशन करने के लिये १० अक्टूबर को कलकत्ते के लिये प्रस्थान करेंगे। इसके उत्तर में "वीर" जी ने अत्यन्त नम्रतापूर्ण पत्र भेज कर उन्हें ऐसा करने से रोक दिया।

हवड़ा, शालदह, बेलियाहट्टा तथा घुसड़ी में कालीघाट पर कटने के लिये जाने वाले सैकड़ों बकरों को पिकेटिंग करने वाले स्वयं सेवकों ने बचा लिये।

अनशन का ३२वा दिन

छः अक्टूबर रविवार आश्विन शुक्ल ९ को धर्मप्राण पण्डित रामचन्द्र शर्मा "वीर" के अनशन का ३२वां दिन था। मध्याह्न के समय "वीर" जी के निकट सहस्रों स्त्री पुरुषों की भीड़ एकत्रित थी उस समय विश्वभारती शान्ति निकेतन बोलपुर (बंगाल) से विश्व वन्दनीय कवीन्द्र श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर के प्राइवेट सेक्रेटरी ने आकर "वीर" जी के हाथ में एक महत्वपूर्ण पत्र दिया जिसका हिन्दी अनुवाद निम्नांकित है।

"उत्तरायण"
शान्ति निकेतन, बंगाल
ताः ३री अक्टूबर १९३५ ई.

प्रिय मित्र

मैं आपको आपके आमरण अनशन को छोड़ने के लिये नम्रता पूर्वक अनुरोध करता हूँ। आपके महान प्रयत्न का प्रभाव पड़ चुका है। यदि आप इस महान उद्देश्य के लिये जीवित रहेंगे तो मुझे विश्वास है कि और भी अधिक सफलता प्राप्त होगी।

विश्व कवि श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर
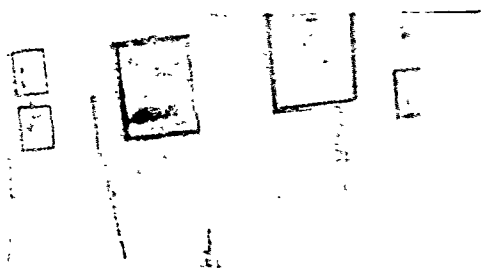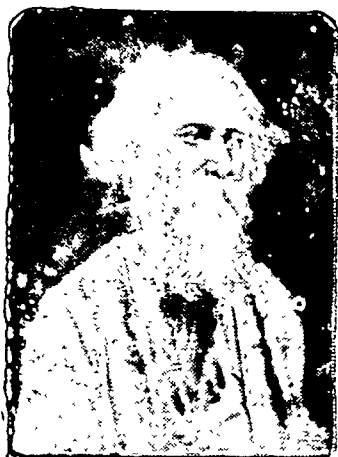
आपके इस महान् कार्य की सफलता के लिये मैं अपने प्रभाव को कार्यान्वित करता हुआ जितना अधिक हो सकेगा उतना प्रयत्न करूंगा।

आपके इस प्रकार से प्राणोत्सर्ग करने की अपेक्षा आपका जीवित रहना अधिक मूल्यवान है। मैं आप से विशेष आशा रखता हूं।

जिस प्रकार की महान् प्रयत्नशीलता आपने प्रदर्शित की है यदि आप उसी प्रकार अपने कार्य्य को अग्रसर करते रहेंगे तो आपकी विजय अवश्य होगी।

मैं आप से अनशन छोड़ने का पुनः अनुरोध करता हूं।

आपका स्नेही—

रवीन्द्रनाथ ठाकुर।

उक्त पत्र को पढ़ कर "वीर" जी ने मस्तक से लगा कर रख दिया और वे गम्भीर विचार में मग्न हो गये। वस्तुस्थिति अत्यन्त भीषण हो चली थी। नवरात्र के समाप्ति के होने तक कालीघाट के पंडों ने जब अपनी जिद्द नहीं छोड़ी तब कलकत्ते का वातावरण अत्यन्त क्षुब्ध हो उठा और किसी भी क्षण में बंगालियों और हिन्दी भाषियों में संघर्ष हो जाने की प्रबल संभावना हो गई। विहार प्रान्त के पचासों नवयुवक और मटियाबुर्ज के सैकड़ों मजदूर कालीघाट मंदिर में जाकर पशुवलि का खूंटा उखाड़ने का निश्चय कर चुके। परिस्थिति के क्षण क्षण में भीषण होने का कारण पं. रामचन्द्र जी शर्मा "वीर" की मरणासन्न अवस्था थी। ऐसी स्थिति में भीषण दंगा हो जाने की सम्भावना को देख कर माहेश्वरी भवन में रात के ६

बजे एक विराट सभा की गई। जनता कई हजार की संख्या में उपस्थित थी। महामना मालवीय जी महाराज जब सभा में पधारे तो सब ने खड़े होकर उनका स्वागत किया। अध्यक्ष के आसन से माननीय मालवीय जी ने विलम्ब से पहुंचने के लिये क्षमा मांगी और अपना भाषण प्रारम्भ करते हुये बोले—

"मैं श्रीकाली जी के सेवायतों से दो बार मिला हूं तथा दो बार श्री० "वीर" जी से मिला हूँ। मुझे आशा है कि मैं शर्मा जी का अनशन स्थगित कराने में सफल हो सकूंगा। मैं अनशन का अनुमोदन नहीं करता हूं फिर भी मैं उनकी प्रशंसा करता हूँ। फल-फूल नैवेद्य से सात्विकी पूजा होती है और मद्य मांस से तामसी पूजा होती है। पं० रामचन्द्र शर्मा ने धर्म बुद्धि से जो अनशन किया है उससे हिन्दू समाज का बड़ा लाभ हुआ है। कई मन्दिरों में बलि बन्द हो गई अनेक पशुओं के प्राण बच गये। इस प्रश्न की ओर सब का ध्यान आकर्षित हो गया। इसलिये "वीर" जी ने जो किया अच्छा किया। जो काम वर्षों में नहीं होता वह ३२ दिनों में ही हो गया। अब हमें अपना काम करना चाहिये। लोगों को हिंसा करने से रोकना चाहिये। जो लोग नहीं मानें उनसे कहना चाहिये कि जहाँ निरामिष भोजी जाते हों वहाँ तो हिंसा न करो। कम से कम मन्दिरों को तो पवित्र रखो। षोडषोपचार पूजा में कहीं बलि का नाम नहीं है। भगवान ने स्वयं 'पत्रं पुष्पं फलं तोयं योमेभक्त्या प्रयच्छति' का उपदेश गीता में किया है। सुनते हैं मक्का में मसजिद पर बैठे हुये कबूतरों को नहीं मारा जाता। दुर्गासप्तशती में भगवती का मातृरूप और

दयारूप से वर्णन किया है। भगवती जगदम्बा है और इसीसे पशु भी उनके पुत्र हैं। 'सर्वस्यार्ति हरे देवी' के सामने जब उसी की संतान बकरों का बलिदान करेंगे तब क्या माता को दुःख न होगा। बंगाल तो गौरांग महाप्रभु और महात्मा रामकृष्ण परमहंस का देश है। यहाँ दया के भाव का क्या कहना है? केवल उद्योग करने की आवश्यकता है। जगदम्बा हमारी सहायता करेंगी।"

माननीय मालवीय जी के भाषणोपरान्त श्रीमती सीतादेवी ने कहा कि माननीय मालवीय जी ने एक शर्मा जी की जान बचा कर लाखों जीवों की रक्षा का दायित्व कलकत्ते पर डाल दिया है। कलकत्ते को यह दायित्व पूरा करने के लिये मनुष्यता का परिचय देना चाहिये।

माहेश्वरी भवन की सभा को समाप्त करके रात्रि के आठ बजे पूज्य मालवीय जी महाराज, पं० रामचन्द्र शर्मा "वीर" के स्थान पर पधारे। जिस समय मालवीय जी ने अनशन गृह में पदार्पण किया उपस्थित भीड़ को तत्काल ही हटा दी गई और पर्दा डालकर मालवीय जी महाराज दो घंटा तक धर्मप्राण "वीर" जी को कुछ कहते रहे। फिर भी विश्वस्तसूत्र से जो बातें ज्ञात हुईं उनका सारांश यहां दिया जा रहा है। मालवीय महाराज बोले—

"देखिये, रामचन्द्र जी! आपकी विजय तो हो चुकी है। आपके उपवास से पशुबलि अधिकांश में बन्द भी हो चुकी है और मैं आपको व्रत से विचलित भी नहीं कर रहा हूँ एवं धर्म विरुद्ध कोई कार्य नहीं होने दूंगा। आप अपने व्रत को

भंग मत कीजिये किन्तु एक वर्ष के लिये स्थगित कर दीजिये। हमने एक अखिल भारतीय संस्था की स्थापना कर दी है जो समस्त भारतवर्ष में पशुबलि के विरुद्ध आन्दोलन करेगी और मैं आपको कलकत्ता के प्रतिष्ठित पुरुषों का लिखा हुआ यह प्रार्थना-पत्र दे रहा हूँ। इसको आप पढ़ लीजिये यदि आप गंभीरता-पूर्वक ध्यान देंगे तो आपको विश्वास हो जायगा कि आप उपवास स्थगित करके धर्म की अधिक सेवा कर रहे हैं और मैं आपको अपना यह व्यवस्थापत्र देता हूं।

महामना मालवीय जी का व्यवस्थापत्र–

नैतिक और धार्मिक सभी दृष्टियों से पण्डित रामचन्द्र शर्मा "वीर" के उपवास का स्थगित किया जाना वस्तु स्थिति की दृष्टि से पूर्णतः उचित है। यह मेरा निश्चित मत है।

ताः ६ अक्टूबर १९३५.] मदनमोहन मालवीय।

कलकत्ते के नागरिकों का प्रार्थनापत्र

धर्मप्राण "वीर" जी!

हम कलकत्ता के नागरिक आपको विश्वास दिलाते हैं कि आपने जो ३२ दिन तक उपवास किया है उसके फलस्वरूप अनेक मन्दिरों की पशुबलि सर्वथा बन्द हो चुकी है। कालीघाट के मन्दिर में बहुतेरे लोग जो पशुबलि दिया करते थे उन लोगों ने भी इस साल पशुबलि नहीं दी है। इतने कम समय में इतना प्रचार नहीं हो सका कि कालीघाट की पशुबलि सर्वदा के लिये बन्द हो जाती। हमलोगों की सम्मति है कि इसमें

पूर्णरूप से सफलता पाने के लिये नियमानुसार कम से कम एक वर्ष तक वलि विरोधी साहित्य का प्रचार किया जाय और शिक्षा-पद प्रचार किया जाय। इसलिये हम आप से प्रार्थना करते हैं कि आप एक वर्ष के लिये उपवास स्थगित कर दें और प्रचार कार्य में हमें सहायता प्रदान करें। पूज्यपाद पं० मदनमोहन मालवीय जी, जिनको समस्त भारत के हिन्दू बड़ा सम्मान करते हैं, हिन्दू जाति के सामने जो यह विकट समस्या उपस्थित है, इसको सुलझाने के लिये वे भी कलकत्ता आये हैं और उन्होंने निश्चितरूप से यह मत प्रकट किया है कि नैतिक और धार्मिक सभी दृष्टियों से आपका उपवास स्थगित किया जाना न्यायपूर्ण है। हम आपको फिर विश्वास दिलाते हैं कि मूक पशुओं की रक्षा के इस ऐतिहासिक आन्दोलन में हम पूर्ण सहयोग देंगे।

निवेदक—

१. श्री डा० राधाकुमुद जी मुकर्जी
(हिन्दू महासभा के मुख्य सदस्य)।
२. ,, मृणालकान्त घोष।
३. ,, स्वामी सत्यानन्द।
४. ,, किरणचन्द्र दत्त।
५. ,, प्रमथनाथ बनर्जी।
६. ,, रमाकान्त झा त्रिपाठी "प्रकाश"।
७. ,, डा० गोपालचन्द्र मित्र रायबहादुर।
८. ,, नगेन्द्रनाथ दत्त रायबहादुर।
९. ,, डा० सरसीलाल सरकार (M. A., M. L. S.)

१०. श्री सरलाबाला सरकार ।

११. ,, मोहनी देवी ।

१२. ,, सखीचन्द्र रायबहादुर ।

१३. ,, पन्नालाल जी दे ।

१४. डा० मानिक जी अंकलेश्वरिया (M.A.,P.H.D.)

१५. श्री सरदार दिलावर सिंह डुगुल ।

(मन्त्री बंग-विहार-आसाम अकालीदल) ।

१६. श्री विलासराय जी डालमिया ।

१७. ,, हनुमानदत्त जी जोशी ।

१८. श्रीमती शकुन्तला देवी B. A.

१९. इकबाल देवी ।

२०. सीता देवी ।

२१ प्रियम्वदा देवी ।

२२. मीठी बेन ।

उक्त पत्र को पढ़ लेने के उपरान्त "वीर" जी चिन्ता में पड़ गये । महामना मालवीय जी महाराज ने "वीर" जी के मस्तक पर हाथ धर कर कहा—

आप निश्चिन्त रहिये । इसमें आपकी प्रतिज्ञा नहीं टूट रही है । यह एक वर्ष का समय आपके आन्दोलन को अत्यन्त महत्वपूर्ण बना देगा और मैं क्या धर्म विरुद्ध सम्मति दे सकता हूँ ? मैं आपको फिर निश्चितरूप से कहता हूं कि आप एक वर्ष के लिये अपने उपवास को स्थगित करके प्रचार करेंगे तो धर्म की अधिक रक्षा होगी और आप अगणित प्राणियों के प्राण बचा सकेंगे ।

"वीर" जी ने उत्तर दिया—भगवन्! आपकी आज्ञा तो शिरोधार्य कर लेता हूँ किन्तु मैं आपको स्पष्ट कह देना चाहता हूं कि अगामी वर्ष तक यदि मेरे संकल्प के अनुसार काली मन्दिर का पशुवध सर्वथा बन्द नहीं होगा तो मैं उपवास अवश्य करूंगा।

महामना मालवीय जी बोले—"तो आप अब यह रस पीजिये।" मालवीय जी ने आध घंटा तक "वीर" जी को गुरुमंत्र का बार बार अर्थ समझाया जिसे "वीर" जी बड़ी उत्सुकता से सुन रहे थे। सहसा एक चमत्कारपूर्ण घटना हो गई। "वीर" जी के आसन के निकट जिस पात्र में दिन रात धूप जला करती थी वह अकस्मात् ही प्रदीप्त हो उठी और वह ज्योति एक हाथ ऊँची उठ गई। दर्शक स्त्री-पुरुष प्रचण्ड प्रकाश को देख कर खड़े होकर परदे के निकट आ गये। "वीर" जी ने इस प्रचण्ड प्रकाश के मध्य मालवीय जी के हाथ से गायत्री मन्त्र जपते हुये मोसंवी का रस हाथ में लेकर कहा—भद्र पुरुषो! तथा महिलाओ! महामना मालवीय जी महाराज हिन्दू जाति के आधार स्तम्भ हैं। इनकी आज्ञा के अनुसार मैं अपने महायज्ञ को एक वर्ष के लिये स्थगित कर रहा हूं। इसके उपरान्त "वीर" जी ने भगवान कृष्ण के चित्र की ओर देख कर कुछ वेद मन्त्र पढ़े और धीरे धीरे रस को पान किया। इसके उपरांत मालवीय जी महाराज बहुत देर तक पशुबलि निषेध आन्दोलन के सम्बन्ध में "वीर" जी से वार्तालाप करते रहे और जाते समय उनका बड़ा लाड़ किया तथा उनके गालों को थपथपा कर कहा—

मेरा परिश्रम आपने सफल कर दिया है। मैं कल फिर मिलने आऊंगा। उपवास की समाप्ति होने के अनन्तर रात्रि के १ बजे कालीघाट के वयोवृद्ध पण्डा श्री उपेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय सार्वभौम ने "वीर" जी को आकर कहा कि आप तपस्वी हैं। मैं आपके दर्शन करने आया हूँ। नवरात्र की समाप्ति पर मैंने पशुबलि नहीं दी है और माता कालीका को कुष्मांड की ही बलि दी है। मैंने प्रतिज्ञा की है कि मैं अपनी ओर से कभी भी पशुबलि नहीं दूंगा और अब मुझे इससे पूर्ण घृणा हो गई है। यदि मेरा वश चले तो मैं कालीघाट मन्दिर की पशुबलि का सर्वथा मूलोच्छेद करवा दूं किन्तु मन्दिर मेरा अकेले का नहीं है। मैं आपके लिये कालीमाता का प्रसाद और पुष्प माला लाया हूं इसे स्वीकार कीजिये। आपने उपवास समाप्त करके बड़ी कृपा की है। आपके जीवित रहने से करोड़ों प्राणियों के प्राण बचेंगे। भगवन् की कृपा हुई तो आपको कालीघाट में भी शीघ्र ही सफलता मिलेगी। रात के १॥ डेढ़ बजे पण्डा जी विदा हुये। पण्डा जी की बातों से स्पष्ट हो जाता है कि "वीर" जी की विजय हो गई और वे अपने महान् उद्देश्य में सफल हो गये। उनके उपवास से कलकत्ते में ही नहीं वरन् समस्त भारतवर्ष में पशुबलि के विरुद्ध एक ऐतिहासिक क्रान्ति हो गई।

कलकत्ता के प्रसिद्ध फिल्म प्रकाशक पत्र "तूफान" में एक बड़ी ही मार्मिक टिप्पणी प्रकाशित हुई थी जिसमें हम प्रकाशित करने का लोभ संवरण नहीं कर सकते।

शक्ति की सच्ची उपासना

नवरात्र बीत गये विजयादशमी आ गई और चली भी गई। हमारे पूर्व पुरुषों और शास्त्रों ने शक्ति की महिमा सहस्र मुख्य से गाई है। आज भी लाखों हिन्दू उपवास और चण्डीपाठ करते हैं। आज भी न मालूम कितना नैवेद्य चढ़ाया जाता है। मनों फूल पत्तियां चढ़ कर सूख जाते हैं; न मालूम कितना चन्दन, अक्षत और धूप मां के नाम पर चढ़ाया जाता है। लाखों कण्ठ पूर्व से लेकर पश्चिम तक उत्तर से दक्षिण तक शक्ति शक्ति चिल्लाते हैं और मां अपार निद्रा में सो रही है। शक्ति जागती नहीं, हमारी पूजा अर्चना श्रद्धा-भक्ति फूल-फल भेंट नैवेद्य आरती सब बेकार जाता है। हम गला फाड़ फाड़ कर मां मां चिल्ला रहे हैं पर मां कहां !!! क्या हमारी श्रद्धा का यही प्रतिफल है ? क्या हमारी धार्मिक भावना का यही परिणाम है ? क्या हमारी मां इतनी निष्ठुर है कि हमारी पुकार सुन कर भी चुप है ? शास्त्रों में लिखा है कि "कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति" तब हमारे पतन का क्या कारण है ? और मां क्यों नहीं आती ? क्यों नहीं भारत के बच्चों की रगों में शक्ति का तूफान आता ? आज हम परतंत्र, पतित, पंगु, कायर होते हुये भी क्रूर क्यों हैं ? कोई हमें बतलाये तो सही कि मां की नीन्द क्यों नहीं टूटती ! रोते रोते आंखें सूज गईं, सिसकते सिसकते कंठ रुंध गया, मां मां कहते कहते सांस रुकने लगा फिर भी मां क्यों नहीं आती ? हमारा पाप क्या है ? कोई तो बतलाये कि मां काली हम से रुष्ट क्यों हो गई ? सब चुप हैं।

कोई नहीं बोलता किन्तु माता काली के प्रांगण में बँधा हुआ दीन मूक बकरी का बच्चा मां मां करके हमारा ध्यान आकर्षित करना चाहता है। वह अपनी मूक भाषा में मां का नाम ले रहा है और हमें बता रहा है कि मां काली हम से क्यों रुष्ट हैं। बकरी का बच्चा मिमिया कर कह रहा है कि मेरी हत्या से मां संतुष्ट नहीं हो सकती, वह कहता है कि निर्बल पर बल प्रयोग करना शक्ति की पूजा नहीं कायरता का प्रदर्शन है। वह मूक निरीह पशु बतलाता है कि शक्ति की पूजा आत्म बलिदान ही है पशु हत्या नहीं। आज भारतवर्ष भर में एक ही माई का लाल है जो माता की पूजा का सच्चा मार्ग बतला रहा है। आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों या महीने, वर्ष, दस वर्ष में ही सही सब उसी "वीर" के प्रकाशपूर्ण मार्ग पर चलेंगे। तभी मां की सच्ची पूजा होगी। तभी विजय होगी। जब रामचन्द्र शर्मा की तरह भारत का बच्चा बच्चा धर्म रक्षा के लिये मर मिटने को तत्पर हो जायगा। उसी दिन मां दौड़ी चली आयेगी।

आज एक मास से ज्यादा हो गया हमारी नगरी में एक तरुण तपस्वी "वीर" आत्मयज्ञ कर रहा था। वह क्षण प्रतिक्षण क्षीण होता जा रहा था। उसकी शारीरिक शक्ति नष्ट होती जा रही थी उसके आत्म बलिदान से परम दयालु महामना मालवीय जी तक को बीमार होते हुये भी काशी से कलकत्ता आना पड़ा। जिसके नाम से साप्ताहिक वर्तमान पत्र दैनिक हो गये? जिसके बहाने लग्गू-भग्गू तक लीडरी का शौक पूरा

कर चुके। वह अहिंसा का सच्चा पुजारी चुपचाप बिस्तर पर पड़ा हुआ आशापूर्ण नेत्रों से जनता की ओर ताक रहा था। लेकिन यह सौभाग्य की बात है कि इस मौके पर टका धर्म मानने वाले लीडरों और वर्तमान पत्रों से जनता परिचित हो गई। अब देश, जाति, समाज और धर्म के नाम पर हिन्दू समाज का कर्त्तव्य है कि इस त्यागी "वीर" के प्राण बच जाने के उपरान्त उसकी प्रतिज्ञा की रक्षा का ध्यान रखे।

महामना महर्षि मदनमोहन मालवीय जी महाराज अनशन समाप्ति के दूसरे दिन की रात्रि में "वीर" जी को सम्भालने आये। उस समय "वीर" जी के पेट में असह्य वेदना हो रही थी उनका पेट वायु से फूल रहा था और वे देशव्यापी आन्दोलन करने की चिन्ता में डूबे हुये पड़े थे। किन्तु श्रीमान् मालवीय जी महाराज की ममता के वशीभूत होकर वे भलीभाँति बैठ गये और कालीघाट मन्दिर तथा देश की पशुबलि की समस्या पर तीन घन्टा तक मालवीय जी महाराज से विचार विमर्ष करते रहे। पूज्य मालवीय जी के विदा होते समय धर्मप्राण "वीर" जी के नेत्रों से आंसुओं की धाराएँ बह चलीं। मालवीय जी ने फिर कहा—प्रिय रामचन्द्र जी! तुम वीर होकर मेरी ममता में मत फसो। तुम्हारे अमूल्य जीवन की रक्षा से करोड़ों जीवों की रक्षा होगी। मालवीय जी महाराज के चले जाने के उपरान्त "वीर" जी का शरीर शिथिल हो गया। उनके शिष्य श्री जगन्नाथ प्रसाद जी स्वर्णकार (सागर निवासी) रात भर "वीर" जी की सेवा करते रहे।

विजय मन्दिर की ओर

"वीर" जी के अनशन के समाप्त होते ही देश के प्रान्त प्रान्त नगर नगर से बधाई के तार और पत्र आने लगे। उनके अनशन काल में जिन मन्दिरों से पशुबलि की राक्षसी प्रथा का मूलोच्छेद हो गया था उसकी विस्तृत सूची हम इस ग्रंथ के "विजय खण्ड" में देंगे। अनशन के उपरान्त "पशुबलि निरोध समिति" ने कलकत्ता के उपनगरों में विराट सभाएँ करना प्रारम्भ कर दिया। आलम बाजार, बांधाघाट सलकिया आदि में बड़ी बड़ी सभाएं हुई। कलकत्ता की क्षत्रिय सभा ने ठाकुर श्रीकृष्ण सिंह के सभापतित्व में क्लाइवस्ट्रीट नं० १०० के विस्तृत स्थान में एक विराट सभा का आयोजन किया, जिसमें कुर्सी पर बैठा कर "वीर" जी को ले जाया गया। सभा में हजारों की संख्या में हिन्दू जनता एकत्रित हुई थी। अनेक अंग्रेज भी खड़े खड़े भाषण सुन रहे थे।

ताः २१ अक्टूबर दिन के २ दो बजे दिगम्बर जैन भवन में कलकत्ता की महिलाओं की एक सभा हुई उक्त सभा में पूज्य शर्मा जी ने एक घन्टा तक पशुबलि के विरोध में ओजस्वी भाषण दिया, जिसे सुनकर माताओं-बहिनों के कोमल हृदय द्रवित हो गये। इसी प्रकार २० अक्टूबर रविवार को ४॥ बजे गनफाउन्ड्री रोड (काशीपुर) में सुखदेव बाबू की खटाल में श्री० १०८ श्री बाबा भोला गिरी जी महाराज के सभापतित्व में एक बहुत बड़ी सभा हुई थी, जिसमें चार पांच हजार मजदूरों की भीड़ एकत्रित थी। उक्त सभा में आर्य्यसमाजी

और सनातनधर्मी संस्थाओं के प्रमुख नेता पधारे थे। धर्मप्राण "वीर" जी के भाषणों से मजदूर मण्डल में हलचल मच गई थी।

ता: २७ अक्टूबर दिन के चार बजे गिरीश पार्क में चन्द्रवंशी क्षत्रिय सभा की ओर से "वीर" जी के भाषण का विराट आयोजन किया गया। इसी प्रकार बेलूड़ शिवतल्ला में तथा कालीघाट के निकट हाजरापार्क में और ब्रह्म सेवक पुस्तकालय की ओर से जानबाजार में प्रभावशाली बड़ी बड़ी सभाओं में "वीर" जी के भाषण हुये।

दीपावली का दिन था। दिन के दस बजे काशीपुर की सुप्रसिद्ध चित्तेश्वरी देवी के मन्दिर के अधिकारियों का निमन्त्रण पाकर पं० रामचन्द्र शर्मा "वीर" पशुबलि करने के स्तम्भ (खूंटे) को उखाड़ने के उद्देश्य से पधारे। मन्दिर में आपके पहुंचते ही काशीपुर की जनता उमड़ पड़ी। बाल, वृद्ध, स्त्री-पुरुष सैकड़ों की संख्या में एकत्रित हो गये। पण्डित जी एक घन्टे तक प्रार्थना-आराधना करते रहे। इसके उपरान्त उन्होंने वध-स्तम्भ को उखाड़ने से पहले माता चित्तेश्वरी की पूजा तथा आरती उतारी। ठीक बारह बजे श्रीमती बिल्वराणी देवी तथा श्रीमान् भूपेश्वर जी घोष के अनुरोध से खूंटा उखाड़ने की योजना की। सहसा श्रीमती बिल्वराणी देवी के पति मन्दिर के मुख्य सेवायत पंचानन बाबा ने पण्डित जी से आकर प्रार्थना की कि आप ठहर जाइये। शताब्दियों की रूढ़ि को तोड़ने के पूर्व मैं भगवती की आराधना कर लूं। इसके उपरान्त पंचानन बाबा बहुत देर तक भगवती की आराधना करते रहे। तदन्तर

उन्होंने कहा—पण्डित जी देर मत कीजिये, खूंटा उखाड़ दीजिये मुहुर्त्त आ गया। पण्डित जी ने उत्साहित होकर अपने दोनो हाथों से सैकड़ों वर्षों से गड़े हुये वध-स्तम्भ को हिला डाला और निर्बल होते हुये भी विजय के आवेग में एक ही मिनट में उखाड़ कर पत्थर पर दे मारा। जनता के उत्साह की सीमा न रही उस समय का दृश्य विचित्र था। सभी स्त्री-पुरुष बूढ़े और जवान पं० रामचन्द्र शर्मा की जय बोल रहे थे।

ताः १-११-३५ को ११३ बी. श्रीरामवृक्ष बजरंग स्कूल प्रिंसेप स्ट्रीट में श्रीमान पं० जगदीश नारायण जी तिवारी के सभापतित्व में "वीर" जी का अत्यन्त ओजस्वी भाषण हुआ था। जिसमें चीन, बरमा, सिलोन तथा जापान के अनेक बौद्ध साधू सम्मिलित हुये थे। "वीर" जी के भाषण को सुनने के लिये बौद्ध सन्यासी बहुत समय पहले से ही एकत्रित हो गये थे। सभा में बौद्ध साधुओं के पीत वस्त्रों की मनोहर छटा प्रदर्शित हो रही थी।

ताः २-११-३५ ई. शनिवार को साढ़े छः बजे संध्या को युनिवर्सिटी इन्स्टीट्यूट (कॉलेज स्कायर) के विशाल हॉल में कलकत्ता की अनेक सार्वजनिक संस्थाओं की ओर से 'माडर्नरिव्यू' के सम्पादक हिन्दू महासभा के भूतपूर्व सभापति बंगाल के वयोवृद्ध नेता श्री० रामानन्द जी चट्टोपाध्याय महोदय के सभापतित्व में धर्मप्राण "वीर" जी का अभिनन्दन करने के लिये कई हजार स्त्री-पुरुषों की उपस्थिति में विराट सभा हुई।

उक्त सभा में विज्ञानाचार्य सर प्रफुल्लचन्द्रराय महोदय के भाषणोपरान्त कलकत्ता की अठारह सार्वजनिक संस्थाओं की ओर से धर्मप्राण "वीर" जी को एक अत्यन्त महत्वपूर्ण मानपत्र

समर्पित किया गया। मानपत्र को हिन्दू शिल्प विद्यालय के संचालक प्रसिद्ध हिन्दू राष्ट्रवादी श्री० भोलानाथ जी वर्म्मन ने उच्च ध्वनि में पढ़ कर सुनाया तदन्तर पूज्य रामानन्द जी चट्टोपाध्याय महोदय ने धर्मप्राण श्री० पण्डित रामचन्द्र जी शर्मा "वीर" के कर-कमलों में समर्पित किया।

ॐ

अभिनन्दन पत्र

तरुण तपस्वी धर्मप्राण,

पं० श्री रामचन्द्र जी शर्मा 'वीर' के कर-कमलों में

महानुभाव,

आज आपका अभिनन्दन करते हुये हम जिस आनन्द का अनुभव कर रहे हैं वह वर्णनातीत है।

अहिंसा के अद्वितीय पुजारी!

आपने अपने अमूल्य जीवन को मूक पशुओं की रक्षा के जिस महदादर्श की ओर लगाया है वह स्तुत्य ही नहीं वरन् आचरणीय भी है। जब कि मानव समाज अपनी स्वार्थ परायणता के वशीभूत होकर मानव रक्त शोषण में तल्लीन है ऐसे भीषण समय में मूक पशुओं की करुण पुकार सुनने वाले आप सरीखे ही माता के सुपुत्र हो सकते हैं।

भगवान बुद्ध की करुणा के उपासक!

आपने पशुबलि रोकने के लिये जो प्राणों की बाजी लगा दी है वह भारत के इतिहास में स्वर्णमयी अक्षरों में अंकित होगी।

आज तक तो हमें ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिला। की दया शिक्षा के साथ सभी महा पुरुषों ने मानव हित चिन्तन में ही अपना जीवन यापन किया है। एक आप ही ऐसे निकले जो तृण चरने वाले पशुओं की निर्मम हत्या के विरुद्ध आन्दोलन करने के लिये अटल हैं।

कलियुग के शिवि !

हम आपका किन शब्दों में अभिनन्दन करें ! शिवि महाराज ने एक कबूत्तर के लिये अपने शरीर का मांस काट काट कर देकर उसकी रक्षा की तो आपने भी संसार के समालोचकों की परवाह न करके कोटि कोटि जीवों की रक्षा के लिये घुलघुल कर मरने के लिये प्राणोत्सर्ग करने की ठान ली।

भारत के सच्चे कवि !

आपके दृढ़ और स्तुत्य संकल्प से विश्वकवि रवीन्द्रनाथ जी का भावुक हृदय हिल उठा। उन्होंने काव्यमय स्तवन से आपकी अभ्यर्थना की। समस्त भारत में हलचल मच गयी। महामना महर्षि मालवीय जी महाराज की ममता ने आप पर आशीर्वाद की सुधा वर्षा कर आपको अमर कर दिया।

भगवान् महावीर की अहिंसा की जैसी रक्षा आपने की है वह आप ही जैसे वीरों का काम है। स्वार्थ में निरत मानव-समाज की आपने आंखें खोल दीं।

हे धर्मप्राण !

आपने महर्षि मालवीय जी, विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर तथा विज्ञानाचार्य सर प्रफुल्लचन्द्र राय प्रभृति महा पुरुषों के अनुरोध को स्वीकार कर हमलोगों को भी कर्त्तव्य पालन का ज

शुभ अवसर प्रदान किया है उसके लिये हम आपके चिर आभारी रहते हुये आशा दिलाते हैं कि आपकी प्रतिज्ञा की हमलोग पशुवलि वंद कराकर अवश्य रक्षा करेंगे। हम कलकत्ते के नागरिकों की संस्थाएं विश्वास दिलाती हैं कि आपके कलकत्ता से प्रस्थान करने पर भी आपने जो व्रत लिया है उसे तन-मन से पूर्ण करेंगे। ईश्वर आपको चिरायु कर इस शुभ अवसर को दिखाने की अनुकम्पा करे।

हम हैं आपके अनुगामी सदस्यगण—

(१) अखिल भारतीय पशुवलि निरोध समिति।
(२) कलकत्ता व्रजवासी सभा।
(३) क्षत्रिय सभा कलकत्ता।
(४) श्री ब्रह्मसेवक हिन्दी पुस्तकालय।
(५) चन्द्रवंशी क्षत्रिय सभा।
(६) श्रीमाली ब्राह्मण नवयुवक मण्डल।
(७) श्री हरिजन पुस्तकालय, काशीपुर।
(८) काशीपुर पशुवलि निरोध समिति।
(९) वंगीय किशोर समिति।
(१०) भारत गोशाला समिति वेहाला।
(११) श्री जीवदया प्रचारक समिति।
(१२) नवयुवक साहित्य मण्डल।
(१३) वंगविहार अहिंसाधर्म परिषद्।
(१४) श्रीकृष्ण पुस्तकालय।
(१५) श्री जमादार समिति।
(१६) श्रीकृष्ण सेवक समिति।

(१७) भारती सम्मेलनी समिति खिदिरपुर।

(१८) श्री श्रमजीवी समिति। ॐ शान्तिः ३

इसी समय अखिल भारतीय पशुबलि निरोध समिति के प्रधान मन्त्री श्रीमान् पन्नालाल दे ने बंगला भाषा में 'वीर' जी को समिति की ओर से निम्नलिखित अभिनन्दन पत्र भेंट किया।

ॐ

परम तपस्वी श्रीमान् पं० रामचन्द्र शर्मार

* अभिनन्दन पत्र *

हे महाप्रान !

दयारूपिनी जगदम्बार समक्षे ताँहार तृप्तिरजन्य ताँहारइ दुर्बल मूक संतान के बलिदान देउयार कुप्रथार उच्छेद कल्पे अलौकिक तपस्यारजन्य आमरा आपना के सश्रद्ध अभिवादन करितेछि।

पवित्रदेवतार मन्दिर भ्रान्त स्वार्थ पर मानवे हित साधनेर उद्देश्ये निरीहेर रक्ते कलुषित ना होय। यहाते कलंकहीन शुचि ओ शान्तिमय थाके तदुद्देश्ये अनवरत प्रचेष्टारजन्य आमरा अपना के साधुवाद दितेछि।

निरामिष नैवेद्य द्वाराइ सात्त्विक पूजा सम्पन्न हय, पक्षान्तरे बलिदानेर अपराधे अर्चनाकारिगन कोटि-कल्प पर्यन्त नरके बास करे।

पुरानेर एइ महावानी शिष्ट ओ शोभन भावे प्रचारेर इये व्रत आमरा ग्रहण करियाछि ताहाते अपनाके पदाभिषिक्त करिया आमरा धन्य हइयाछि।

कलिकाता नगरीर ओ तत् पारिपार्श्विक स्थानेर कतिपय देवी मन्दिरे इतिमध्ये पशुवलि निषिद्ध हौयाय आपनार जय यात्रा विघोषित हइते छे।

आपनि समितिर महा प्रचारकेर पदे व्रतीत थाकिया समग्र भारते आमादेर पवित्र संकल्प साधन करिते थाकून। भगवान् आपना के दीर्घजीवी करून। हे वीर अपनाके नमस्कार करि।

कलिकाता दोरा नवम्बर १९३५.	आपनार गुणमुग्ध सहकर्मी— निखिल भारतीय पशुवलि निरोध- समितिर सदस्यगन।

रात्रि के साढ़े दस वजे "वीर" जी के जयघोष के साथ सभा विसर्जित हुई।

महाप्रभु जगद्वन्धु स्वामी के श्रीधाम फरीदपुर (वंगाल) के महन्त महाराज महेन्द्र जी ने धर्मप्राण "वीर" जी के नाम काव्यमय वंगला भाषा में, महत्वपूर्ण पत्र प्रेषित किया। जो निम्नांकित है—

॥ जय जगद्-वंधु हरि ॥
॥ जय महानामयज्ञ ॥

श्री श्री धाम अङ्गणं
फरिदपुर।

भाई "राम"!

अहिंसार सिंहासने आसिन
प्राणा राम वन्धु रूपे रम।
हरि अन्तरात्मा तुमि सखे
लह प्रीति आलिंगन मम॥

आपनार—

महेन्द्र।

ता: ३ नवम्बर को कलकत्ता से "वीर" जी विदा होने को तत्पर हो रहे थे। उन्हें विदा करने के लिये कई संस्थाएं दौड़ धूप कर रही थीं। कलकत्ता के महिला-मण्डल ने भी दिन के २ बजे माहेश्वरी भवन में "वीर" जी के स्वागत का विराट आयोजन किया था। जिसमें निम्नांकित कविता बहन चन्द्र-किशोरी देवी ने प्रारम्भ में सुनाई थी।

वीर कन्याओं का उपहार !

अंगीकार करो अपनाओ करो देश उद्धार।
रहे प्रतिज्ञा में सदियों तक हटा न पशुबलि भार॥
आज हुई अभिलाषा पूरी हे करुणा अवतार।
इतनी दया प्रेम इतना भारत मां का सत्कार॥
परम अकिंचन कुटी यहां हो, क्या सेवा सत्कार।
"वीर" कन्याओं का उपहार॥

कविता पाठ के अनंतर श्रीमती माता इकबाल देवी के सभापतित्व में सभा की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। श्रीमती सीता देवी के भाषणोपरान्त महिलाओं ने निम्न लिखित अभिनन्दन पत्र भेंट किया।

हिन्दू कुल भूषण, परम तेजस्वी एवं दृढ़ प्रतिज्ञ,

पं० रामचन्द्र जी शर्मा "वीर" के कृपालु
कर-कमलों में

अभिनन्दन पत्र

प्यारे भाई !

कलकत्ते से सकुशल प्रयाण के इस शुभ अवसर पर आपको हार्दिक अभिनन्दन प्रदान करने में हम बहिनें कितनी हर्षित हो

रही है यह शब्दों द्वारा नहीं प्रकट किया जा सकता। कालीघाट के मन्दिर में मूक पशुओं के वलिदान को वन्द करने के लिये आपने जो भीषण संकल्प किया था उसे स्मरण करके आपके चरणों में श्रद्धा से हमारा शिर झुक जाता है।

आप सचमुच ही माता के सच्चे पुजारी हैं। आदि शक्ति जगन्माता महाकाली के पवित्र मन्दिर में निरीह पशुओं पर जिस अमानुषिक अत्याचार को प्रश्रय देकर हम धर्म के नाम पर जो महाभयंकर अधर्म कर रहे थे उस ओर हमारा ध्यान आकर्षित कर के आपने हिन्दू जाति का महान् कल्याण किया है। उफ्! हमारे कलंक को धोने के लिये आपने अपने प्राणों की बाजी लगा कर आमरण अनशन प्रारम्भ कर के तथा ३२ दिनों तक भूख की भीषण ज्वाला में छटपटा कर अपने हृदय के शुद्ध रक्त से मां का जो तर्पण किया है वह अद्वितीय है। संसार का प्रत्येक अणुपरमाणु उसी महामाया की महिमा की दिव्य विभूति है। अपनी विभूति का प्रत्येक जीव मात्र मां को समान प्रिय है। अपने स्वार्थ के लिये मां के नाम पर उसी की संतान का रक्तपात करना कितना भीषण व्यापार है। उन्नति के इस आधुनिक युग में अपनी अनुपम तपस्या से हमारी पाशविकता को नष्ट भ्रष्ट कर के आपने अहिंसा और दया का हमें जो आदर्श मार्ग दिखलाया है उसके लिये हम आपकी चिर ऋणी रहेंगी।

आपकी भीषण प्रतिज्ञा से हम बहुत ही चिंतित हो उठी थीं। जैसे जैसे उपवास के दिन एक एक करके व्यतीत होते जा रहे थे हमारा धैर्य भी अधीरता में परिणत होते जा रहा था। आज

प्रान्तीय समितियों की स्थापना

पशुबलि की राक्षसी प्रथा का अन्त करने के लिये पण्डित रामचन्द्र शर्मा "वीर" चार नवम्बर को भागलपुर पधारे। आपका भाषण उसी दिन गोशाला में हुआ। आपने गौरक्षा पर व्याख्यान दिया तथा दूसरे दिन लाजपतपार्क में पशुबलि विरोध में भाषण दिया। इसी प्रकार इसी दिन रात्रि के ८ बजे राय बहादुर देवीप्रसाद जी ढ़ाढ़निया की धर्मशाला में पशुबलि विरोधी भाषण हुआ। सभा में कई प्रस्ताव पास हुये। एक प्रस्ताव द्वारा कालीघाट कलकत्ता के पण्डों से निवेदन किया गया कि वे काली मन्दिर में पशुबलि न होने दें। दूसरे प्रस्ताव द्वारा भागलपुर निवासियों से प्रार्थना की गई कि वे स्थानीय मन्दिरों में कहीं भी पशुबलि न होने दें।

उपरोक्त धर्मशाला में ही ताः ७ नवम्बर को श्रीमती सरस्वती देवी के नेतृत्व में महिलाओं की विराट सभा हुई। जिसमें भाषण देते हुये "वीर" जी ने कहा कि महारानी सीता, दमयन्ती पद्मिनी तथा लक्ष्मीबाई आदि पतिव्रता और वीरांगनाओं के आदर्श आचरण का अनुगमन करते हुये धर्म के नाम पर पशुबलि दिये जानेवाले मन्दिरों में आर्य महिलाओं को नहीं जाना चाहिये।

भागलपुर के गंगाबाग में रात को ९॥ बजे अखिल भारतीय पशुबलि निरोध समिति की बिहार प्रान्तीय "शाखा" स्थापित की गई जिसके श्रीमान् खेमचन्द्र जी चौधरी, प्रधान मन्त्री एवं श्रीमान् चम्पालाल जी बड़जात्या, उपमन्त्री सर्व सम्मति से निर्वाचित हुये।

मुंगेर में पण्डित नाथविहारी जी शर्मा, हरिमोहन जी झुंझुनुवाला, महावीर प्रसाद जी राजगढ़िया, बजरंग जी खेतान तथा सीताराम जी खेमका आदि उत्साही पुरुषों के नेतृत्व में 'वीर' जी के स्वागत समारोह के उपलक्ष में एक प्रचण्ड जुलूस निकला। मुंगेर में स्थान स्थान पर सभाएं हुई। तीन दिन तक पूज्य "वीर" जी ने दस सभाओं में व्याख्यान दिये। कभी पुरुषों की सभा तो कभी महिलाओं की सभा होती थी। मुंगेर क्लब थिएटर हाल में मुंगेर के राजा साहब आनरेबुल सर रघुनन्दन प्रसाद सिंह जी महोदय K. T. ने कई हजार मनुष्यों की उपस्थिति में "वीर" जी का स्वागत किया था। इसी सभा में राजा साहब ने मुंगेर के चण्डीस्थान की पशुहत्या बंद कराने के आन्दोलन के सहायतार्थ १०००) एक हजार रुपये प्रदान करने की घोषणा की थी। सभा में ही मुंगेर में पशुबलि निरोध समिति की शाखा का संगठन किया गया और बिहार प्रान्तीय पशुबलि निरोध समिति के सभापति पद का भार राजा साहब को सौंपा गया।

इन सब हलचलों में पण्डित नाथविहारी जी शर्मा की शक्ति काम कर रही थी। पण्डित नाथविहारी जी शर्मा "वीर" के विराट आन्दोलन के विशाल भवन के एक स्तम्भ मान लिये जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी पण्डित नाथविहारी जी शर्मा अपने समस्त परिवार को साथ लेकर मुंगेर के चंडीस्थान की पशुबलि का मूलोच्छेद करने के लिये कार्य क्षेत्र में कूद पड़े।

कार्तिकी पूर्णिमा को सुलतानगंज जिला भागलपुर में अंधविश्वासी लोगों द्वारा जीवित बकरों को गंगा जी की भेंट के निमित्त पैर पकड़ पकड़ कर अथाह जल में फेंक दिया जाता था और जल में ही कई नीच मनुष्य उन बकरों को पकड़ने के लिये छीना-झपटी किया करते थे। इसी छीना-झपटी के बीच में यदि एक बकरे के दो पैर दो नीच नर-पिशाचों के हाथ में पड़ जाते तो जल में ही खींचा-तान करते करते बकरा मर जाया करता था। या अधमरा हो जाता था। फिर जिस नर-पिशाच में अधिक शक्ति होती थी वही उसका अधिकारी बन जाता था जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली लोकोक्ति अक्षरशः चरितार्थ की जाती थी। लूटे हुये बकरों को घर में लेजा कर नर-राक्षस काट कर खा जाते थे।

इस प्रकार सैकड़ों अनाथ बकरों भेड़ों की हत्याएँ हो जाती थीं। सुलतानगंज के नागरिकों के अनुरोध से पूर्णमासी की पहिली रात्रि में ही धर्मप्राण "वीर" जी सुलतानगंज पहुँच गये और प्रातःकाल से दिन के १० बजे तक वे गंगा तट पर अंधविश्वासी मूर्खों को उपदेश देते रहे। जिसके फलस्वरूप सैकड़ों जीवों के प्राण बच गये। मध्याह्न में कई हजार मनुष्यों की सभा में इस राक्षसी प्रथा के विरोध में "वीर" जी का रोमांचकारी भाषण हुआ और पशुबलि निरोध समिति की शाखा स्थापित की गई। श्री आशाराम जी केसान ने अत्यन्त उत्साह से समस्त प्रबन्ध किया था। उक्त सभा के समाप्त होते ही महिलाओं की महती सभा में उनका प्रभावशाली भाषण हुआ। सुलतानगंज से वीर जी ने मुकामा को प्रस्थान कर दिया।

रात्रि के ८ बजे मुकामा स्टेशन पर बाबू केशव प्रसाद सिंह जी के नेतृत्व में "वीर" जी के स्वागतार्थ सैंकड़ो मनुष्यों की भीड़ एकत्रित हो रही थी। "वीर" जी के आते ही गगन-भेदी जय ध्वनि से जनता ने स्वागत किया। मुकामा में और मोर में दो दिन तक सभाओं की धूम रही।

बेगूसराय में बाबू यमुना प्रसाद जी जमींदार के आनन्द भवन में २ दिन विश्राम कर के करबा पूर्णियां को 'वीर' जी पधारे और वहां पर उन्होंने जाते ही अनशनव्रत ले लिया। 'वीर' जी के चार घण्टा के ही अनशन से कसबा के आठ मन्दिरों के वधस्तम्भ उखाड़ कर जनता ने जला दिये। पण्डित मुकुंदनाथ जी मिश्र और उनका समस्त परिवार 'वीर' जी से मंत्रोपदेश लेकर शिष्य हो गया और इस परिवार के सभी स्त्री पुरुषों में आस पास के मन्दिरों से पशुबलि प्रथा के मूलोच्छेद करने का व्रत ले लिया। कसबा की ७ संस्थाओं ने धर्मप्राण "वीर" जी को एक सम्मिलित मानपत्र समर्पित कर के समस्त नगर में उन्हें हाथी पर बैठा कर प्रचण्ड जुलूस निकाला था। वीर जी ने कसबा, फारबिसगंज, कटिहार, पूर्णियां सिटी, किशनगंज, खगड़िया, तेतरी, नोगछिया, रोसड़ाघाट आदि उत्तरी बिहार के विख्यात नगरों में कई मन्दिरों को पशुबलि बंद करा कर पशुबलि निरोध समिति की शाखाएं स्थापित कर दीं। पूर्णियां जिला के किशनगंज की एक उल्लेखनीय घटना है जिसे इस ग्रंथ में हम विस्तार भय से नहीं लिख सके जो अत्यन्त महत्व पूर्ण थी। पूज्य "वीर" जी के किशनगंज पधारते ही उनके एक ही भाषण को सुन कर सात मन्दिरों के वधस्तंभ उखाड़

कर जलाये गये थे, जिनमें सब से प्रसिद्ध देवी प्रसाद जी भक्त का दुर्गा मन्दिर था जहां पर प्रति वर्ष सैकड़ों बकरे कट जाया करते थे। उक्त मन्दिर का वधस्तम्भ स्वयं "वीर" जी के हाथों से जलाया गया था और मन्दिर के मालिक देवी भक्त जी ने "वीर" जी की आज्ञा मान कर मांसाहार का भी त्याग करा दिया था।

बेगूसराय में आते ही भावुक भक्तों की भीड़ "वीर" जी के पास उमड़ उमड़ कर आने लगी। यमुना बाबू के आनन्द भवन में "वीर" जी के दर्शनार्थियों की दिन रात भीड़ रहने लगी। बाबू वंशीधर जी मारवाड़ी, सेठ भोलाराम जी मसकरा नंदकुमार जी अग्रवाल, बाबू झारखंडी प्रसाद जी वकील, के सदस्यत्व में पशुबलि निरोध समिति का संगठन किया गया। रायबहादुर बाबू खड्गनारायण जी ने वीर जी की कथा से प्रभावित होकर पशुबलि विरोधी आन्दोलन में भाग लेने का निश्चय किया।

रायबहादुर काशीनाथ सिंह जी के सभापतित्व में सम्मेलन
का कार्य ठीक २ बजे प्रारम्भ हुआ। पण्डित गोवर्द्धन जी
मिश्र एडवोकेट तथा पण्डित भानुञ्जय सहाय जी M. A. ने
सम्मेलन के अधिवेशन का उद्घाटन लाते हुये पण्डित राम-
रामचन्द्र जी शर्मा "वीर" का जनता को परिचय दिया।
दर्शकों की संख्या ३ हजार से अधिक थी, धर्मप्राण "वीर" जी
ने दो घण्टा तक पशुबलियों की दुर्दशा का रोमांचकारी वर्णन
करते हुए देव मन्दिरों की पशुबलि का प्रबल प्रमाणों और
अकाट्य युक्तियों से बड़े ही मधुर शब्दों में भाषण दिया।

उनके भाषण के बीच में कई बार तालियों की गड़गड़ाहट
हुई और उसी समय पांच सौ से भी अधिक स्त्री पुरुषों ने
मांसाहार त्यागने की प्रतिज्ञा कर डाली। "वीर" जी के
भाषण से वर्णाश्रमी विद्वानों में खलबली मच गयी। वर्णाश्रम
स्वराज्य संघ के अखिल भारतीय मंत्री आदरणीय पण्डित
देवनायकाचार्य जी रामानुज सम्प्रदाय के परम वैष्णव होते
हुये भी वर्णाश्रमी प्रतिनिधियों के उत्पात को बैठे बैठे देख रहे
थे और काशी की पण्डित मण्डली "वीर" जी के विरुद्ध अनाप
शनाप बक रही थी। सहसा महात्मा गांधी को काले झण्डे
दिखाने वाले स्वामी लालनाथ खड़े हो गये और उन्होंने
सभापति की बिना आज्ञा के ही सभा मंच पर चढ़ कर "वीर"
जी को गालियां देना प्रारम्भ कर दिया। गया की धार्मिक
जनता अपने आदरणीय अतिथि पूज्य "वीर" जी का अपमान
होते देख कर उत्तेजित हो उठा। सभापति और सभा के
संचालकों के बार बार समझाने पर भी जब लालनाथ जी

सभा मंच से न उतरे तो एक बार ही सैंकड़ों मनुष्य उन पर टूट पड़े और घसीट कर फल्गु नदी में फेंक दिया। सभा में हुल्लड़ मच गया। वर्णाश्रम विद्वान भाग गये स्वयं सभापति भी चुपचाप मोटर में बैठकर प्राण बचाकर भागे। भीड़ के शान्त होने पर पं० भानुञ्जय सहाय जी M. A. के सभापतित्व में जीवदया सम्मेलन का कार्य पुनः आरम्भ हुआ और गया के प्रतिष्ठित नागरिकों की ओर से "वीर" जी से क्षमा याचना की गई। रात के आठ बजे तुमुल जय ध्वनि के साथ सम्मेलन दूसरे दिन के लिये स्थगित हुआ।

१ जनवरी १९३६ को दिन के १ बजे से ही सम्मेलन का कार्य प्रारम्भ हो गया। सम्मेलन की समाप्ति के पूर्व जीव रक्षा और देव मन्दिरों की पशुबलि के सम्बन्ध में ७ प्रस्ताव स्वीकृत किये गये और सम्मेलन में ही "वीर" जी के नेतृत्व में गया जिला के मन्दिरों की पशुबलि के विरुद्ध प्रबल आन्दोलन करने के लिये पशुबलि निरोध समिति स्थापित की गई।

सम्मेलन की सफलता से प्रभावित होकर गया जिला के अनेक प्रतिष्ठित पुरुष अपने नगरों में "वीर" जी को निमंत्रित करने लगे। जहानाबाद में "वीर" जी के स्वागत का विराट आयोजन हुआ था।

वीर वन्दना

[ले०—पं० रामरक्षा मिश्र आचार्य संस्कृत विद्यालय जहानाबाद]

अहो महा भूषित भूसुरोयं, प्राज्ञः प्रभा भारत भारते वै
पराक्रमोत्साह दृढ़ मनस्वी, विभाति "वीर" प्रिय रामचंद्रः ॥१॥

योयं जगन्मंडल मंगलोऽस्ति, सन्मंगलानन्दनमाशुकर्त्ता:
सत्वात्म कृत्या कृति सर्व जीव, रक्षाविदक्षोऽद्यविहारहीर: ॥२
अस्याधरण्या धरणीय कृत्ये, हिंसात्मपापा वहने समर्था
तेषां मनोभ्यस्तसमोऽभिहिंसा, पापस्यदूरीकरणोऽपि सूर्य्य: ॥३॥
विधीयतेऽस्मिन भुवनेहि "वीर:" भेद दया 'वीर' इतिप्रवीर:
श्रीरामचन्द्र: करुणावतारो, विभुर्भवान् भारत दुःखहार: ॥४॥

जहानाबाद, नवादा, टिकारो, औरंगाबाद, शेरघाटी, रानीगंज, ईमामगंज, हँसवा, कादिरगञ्ज आदि गया जिला के अनेक नगरों में पशुवलि निरोध समिति की शाखाएं स्थापित करते हुये और हजारों मनुष्यों का मांसभक्षण मदिरापान त्याग करा कर उन्होंने हजारीबाग को प्रस्थान किया। हजारीबाग जिले में भाषण देकर पचंवा के दुर्गा स्थान पर जहां प्रति मंगलवार और शनिवार को पचासों बकरे काटे जाते थे। पूज्य "वीर" जी ने अनशन व्रत ठान लिया। ६ घंटा के ही अनशन के फलस्वरूप हजारों स्त्री पुरुषों ने मिल कर बकरे भैंसे काटने के खूटे उखाड़ कर जला दिये। श्रीमान् बाबू रामेश्वर लाल जी छपारिया ने "वीर" जी का भक्ति भाव पूर्वक सोत्साह स्वागत किया और उन्होंने वीर जी की हजारों विज्ञप्तिया छपवा कर बांटी। गिरिडिह और मधुपुर में पशुवलि निरोध समिति की शाखाओं का संगठन कर के पशुवलि के प्रधान केंद्र वैद्यनाथधाम में पूज्य पण्डित जी पधारे आपके स्वागत के लिये सनातनी तथा आर्यसमाजी जनता ने स्टेशन पर बड़ा प्रभाव पूर्ण स्वागत किया था गुरुकुल की ओर से वीर जी का स्वागत करते हुए निम्नांकित कविता पाठ हुआ था।

वीर गुणगान

[रचयिता—श्री पं० जगन्नाथ जी शर्मा 'मुकुल' काव्यतीर्थ
गुरुकुल महाविद्यालय, वैद्यनाथधाम]

स्वागत करते हम हे कृपाल, हे भारत मां के 'वीर' बाल।
ज्यों अभयङ्कर शंकर कराल, त्यों धारत हो तुम जटा जाल॥
हो पशुओं के हित प्राणपाल, स्वागत करते हम हे कृपाल।
हो तपस्तेज से दीप्तिमान, हे देव! आप गौतम समान॥
तज करके सुख साधन महान, पशुओं का करते संतत त्राण।
हे महाप्राण! हे धर्मप्राण!!, हे अनशन व्रतधारी महान॥
शिवि नृप सम करते देह-दान, जग गाता है तव सुयश गान।

२५ जनवरी को दो हजार मनुष्यों की उपस्थिति में जब वे भाषण दे रहे थे तब वैद्यनाथधाम के सैकड़ों पण्डे सभा में आकर उपद्रव करने लगे किन्तु जनता का बहुमत "वीर" जी के पक्ष में देख कर सभा से चले गये। इसी सभा में वैद्यनाथधाम मन्दिर की पशुहत्या रोकने के लिये सेठ ठाकुर मल जी नेवर, सेठ झुनझुनमल जी जालान, लक्ष्मीनारायण जी अदर्सी, शिवप्रसाद जी शाह आदि की एक कमिटी बनाई गई।

जमुई, लक्खीसराय में भी पशुबलि निरोध समिति की शाखाएं स्थापित कर के पण्डित जी बरहीया पधारे और पशुबलि निरोध समितियों की स्थापना कर दी गई। शेखपुरा आदि नगरों में उनके स्वागत के उपलक्ष में जुलूस निकाले गये। ता: १ फरवरी रविवार को पशुबलि निरोध समिति के आग्रह से पण्डित जी का सभा में पुनरागमन हुआ। ता: २ फरवरी को

दिन के २ दो बजे हीटी पार्क में चार हजार मनुष्यों की सभा में मांसाहार के विरुद्ध अभूतपूर्व भाषण हुआ। "वीर" जी का यह भाषण इतना प्रभावशाली था कि सभा में ९० प्रतिशत मनुष्यों ने मांसाहार त्यागने का प्रण कर लिया। इसी सभा में आदर्श हिन्दू संघ गया शाखा की भी पूज्य "वीर" जी ने स्थापना की थी। जिसके मन्त्री रामप्रीत राम जी कन्धवे चुने गये।

ताः ३ फरवरी को गया के प्रसिद्ध तमाकू के व्यापारी श्रीमान् चमारी साहु जी के भव्य मन्दिर में श्रीमती एम. एन. चौधरानी के सभापतित्व में महिलाओं की एक विराट सभा हुई। जिसमें स्त्रियों के कर्त्तव्य और पतिव्रता धर्म के विषय पर "वीर" जी का ओजस्वी भाषण हुआ। इस सभा का सभी प्रबन्ध डॉ० केदारनाथ जी पालित की धर्मपत्नी श्रीमती जानकी देवी जी ने किया था।

ताः ४ फरवरी मंगलवार को बांकीपुर पटना में बाबू जगत-नारायण लाल जी के सभापतित्व में "वीर" जी का प्रभावशाली भाषण हुआ और पण्डित शिवनन्दनराय जी एडवोकेट के नेतृत्व में पशुबलि निरोध समिति की स्थापना हुई।

हाजीपुर, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, लहेरियासराय, मधुबनी, कमतौल, सीतामढ़ी, बरगनिया, रक्सोल, मोतीहारी, बेतिया, गोपालगंज, छपरा, आरा, बक्सर आदि उत्तरी बिहार के विशिष्ट नगरों में पशुबलि निरोध समिति की शाखाएं स्थापित करते हुये पण्डित रामचन्द्र शर्मा "वीर" मिर्जापुर पधारे।

फाल्गुण का महीना था। मिर्जापुर नगर में "वीर" जी के व्याख्यान हो रहे थे। गंगाघाट पर उनका भाषण समाप्त होने

के उपरान्त "मतवाला" के सम्पादक श्रीमान् महादेव प्रसाद जी सेठ ने "वीर" जी के समर्थन में छोटा सा भाषण दिया। बाबू गिरधारीलाल जी मिठाई वाले तथा सेठ बिहारीलाल जी जैन ने "वीर" जी को आग्रह पूर्वक कहा—यहां भी पांच हजार बकरे विंध्याचल तीर्थ में विंध्यावासिनी देवी के समक्ष प्रति वर्ष काटे जाते हैं। हमलोग आपकी प्रतिभा से अब तक परिचित नहीं थे किन्तु आपके इस अन्तिम भाषण ने हमारी आंखें खोल दी हैं। अब आपके बतलाये हुये मार्ग पर हमलोग चलेंगे और विंध्याचल की पशुबलि के विरुद्ध प्रबल आन्दोलन करेंगे, किन्तु आप एक सप्ताह नहीं ठहरेंगे तो हमलोग कुछ भी नहीं कर सकेंगे।

दूसरे ही दिन उपरोक्त सज्जनों ने सभा कर के मिर्जापुर में युक्त प्रान्तीय पशुबलि निरोध समिति की स्थापना कर दी। प्रतिदिन स्थान स्थान पर "वीर" जी के भाषण होने लगे और हजारों की संख्या में जनता एकत्रित होने लगी। घण्टा घर की सभा तो इतनी महत्वपूर्ण हुई थी कि पशुबलि निरोध समिति के तत्काल दो सौ मेम्बर बन गये। सेठ बिहारी लाल जी की हवेली में महिलाओं की सभा लगातार तीन दिन तक हुई।

युक्त प्रान्तीय पशुबलि निरोध समिति का कार्यालय घुन्धी-कटरा में खोल दिया गया। ऑफिस का सामान जाजिम, फर्श, साइनबोर्ड, अनेक चित्र और कुर्सी, सन्दूक आदि की व्यवस्था तत्काल हो गई। ता० ५-३-३६ को एक विराट सभा में "वीर" जी का अन्तिम भाषण हुआ और उन्होंने जबलपुर को प्रस्थान कर दिया। जबलपुर से "वीर" जी बम्बई पधारे

ता० २८-३-३६ को बम्बई के माधवबाग में ह्यूमेनिटेरियन लीग की ओर से 'वीर' जी के अन्तिम भाषण का आयोजन किया गया था। कई हजार गुजराती, मारवाड़ी स्त्री-पुरुषों के समुदाय में धाराप्रवाह भाषण हो रहा था, सहसा ह्यूमेनिटेरियन लीग के सेक्रेटरी श्री जयन्तीलाल जी भानकर महोदय ने दक्षिण महाराष्ट्र के सांगली नगर का आया हुआ एक तार पढ़ कर सुनाया। उक्त तार में लिखा था कि वासुदेव शास्त्री नातू और शङ्कर शास्त्री नातू अपने दुराग्रह पर अड़े हुये हैं और आप्तुर्याम यज्ञ में ११ बकरों को जलाया जायगा, सहायता कीजिये। इस तार को सुनते ही "वीर" जी का मुख-मण्डल चमक उठा और वे व्याख्यान मञ्च पर गरजते हुये बोले—माताओ, बहिनो और मेरे आदरणीय बन्धुओ! सांगली के राक्षसी यज्ञ का समाचार सुन कर चुपचाप हो जाना मेरी प्रकृति और स्वभाव के विरुद्ध है। मेरी अन्तर आत्मा को तभी शान्ति मिल सकती है जब मैं सांगली के राक्षसी यज्ञ में कूद कर अपने-आपको जला दूं। मैं आज रात्रि में ही सांगली चला जाऊँगा। इस घोषणा से सभा में शोक सा छा गया।

पशु-यज्ञ विध्वंस

ता: २९-३-३६ रविवार रात्रि के ११॥ बजे घाटकोपर स्टेशन पर धर्मप्राण "वीर" जी को विदा करने के लिये सैकड़ों पुरुष और महिलाएँ एकत्रित थीं।

पण्डित जी दूसरे दिन चार बजे सांगली पहुँच गये। यह खबर पहले से ही सांगली पहुँच गई थी जिससे सांगली के हजारों

नागरिक पण्डित जी का स्वागत करने के लिये पहले से ही एकत्रित हो गये थे। ट्रेन से उतरते ही "वीर" जी को पुष्पों से सुसज्जित मोटर में बैठा कर प्रचण्ड जुलूस के साथ समस्त नगर में घुमाया गया। सांगली के सुप्रसिद्ध मारुती मन्दिर में एक बहुत बड़ी सभा में "वीर" जी ने अपने आने का कारण बतलाया और उक्त मन्दिर में ही उन्होंने अपना आसन जमा दिया। सांगली की जनता आश्चर्य के साथ इस आन्दोलन के भविष्य का चिन्तन करने लगी। पण्डित जी के अनशन के पूर्व घाटकोपर में उनके शरीर का तोल १३८ पौण्ड था। किन्तु सांगली में आते ही निर्जल अनशन के कारण २४ घंटे में ही वे १३३ पौंड रह गये। यह जल न पीने का परिणाम था। डा. शेट्टी, डा. देसाई, डा. श्रोत्रिय, डॉ. नायक, परांजपे वैद्य और श्रीमती जमनाबाई नर्स आदि ने पंडित जी के हृदय की गति और नाड़ी का परीक्षण किया। अनशन की दूसरी रात्रि में ही जल न पीने के कारण मुख से रक्त गिरने लग गया। ता. ३१-३-३६ को प्रातःकाल ही स्नान संध्या के उपरान्त भारत की हिन्दू जनता के नाम 'वीर' जी ने एक विज्ञप्ति निकाली और उसी दिन ४ बजे आपका भाषण सुनने के लिये एक हजार महाराष्ट्रीय लोक समुदाय जमा हुआ था। सांगली का बाजार हड़ताल के कारण बन्द था। इससे अनेक प्रतिष्ठित व्यापारी भी भीड़ में थे। परन्तु पंडित जी एकाएक अपने आसन से उछल कर एक दीवार पर जा चढ़े। एक स्वयंसेवक ने उनको रोकना चाहा, किन्तु उन्होंने ध्यान नहीं दिया। जब स्वयंसेवक ने उनका हाथ पकड़ लिया तो वे लगभग ६ फीट नीचे सड़क पर कूद पड़े। स्वयंसेवक नाली में गिर

पण्डित जी ने उत्तेजित हो कर कहा—"हाँ मैं वैदिक धर्मी हूँ और क्या तुम वाममार्गी हो ?

शास्त्री—भीतर आने की चेष्टा क्यों कर रहे हो ?

"वीर" जी—तुम्हारे राक्षसी-यज्ञ-कुण्ड में कूद कर प्राणों की आहुति देने के लिये।

शास्त्री—चुप हो गया।

सड़क पर खड़े हुये मनुष्यों की संख्या बढ़ती जा रही थी। कुछ लोग दिवाल को तोड़ कर भीतर घुस कर यज्ञ विध्वंस करने को सोच रहे थे। कुछ लोगों का विचार था कि कुल्हाड़ा मंगा कर किवाड़ों को काट डाले जावें और "वीर" जी का बचा लिया जाय।

कुछ लोग कहते थे कि कुल्हाड़े के प्रहार से किवाड़ों की टक्कर "वीर" जी के कंठ में लगेगी और उनका प्राणान्त हो जायगा इसी वाद-विवाद में आध घण्ट व्यतीत हो गया और "वीर" जी किवाड़ों के बीच में मूर्च्छित होकर गिर पड़े ऐसे समय में मूसलाधार महावृष्टि होने लगी, पानी बहने लगा हजारों मनुष्य खड़े खड़े भींगने लगे। यज्ञ कुंड के ऊपर जो डोरे का पाल तना हुआ था वह भीषण मेह वृष्टि से फट कर गिर पड़ा। यज्ञ स्थल में पानी ही पानी भर गया और जिस राक्षसी यज्ञ को धर्मप्राण "वीर" जी विध्वंस नहीं कर सके वह प्रकृति के प्रकोप से विध्वंस हो गया। ऐसे भीषण समय में जब कुछ भी उपाय न बन पड़ा तब कुछ युवकों ने मूर्च्छितावस्था में ही बलपूर्वक "वीर" जी को बाहर निकाल लिया और आठ दस मनुष्यों ने अपने हथेलियों पर उठा कर मारुति मन्दिर में ले गये।

रात के सात बजे "वीर" जी ने नेत्र खोल कर "मौनव्रत" धारण कर लिया और शान्त होकर अनशन करते रहे। ता: २-४-३६ को वे निर्बल हो गये थे और किवाड़ों के बीच में से जिस समय उनको निकाला था उस समय उनका बांया कान किवाड़ से कुचल गया था। जिससे कान के ऊपर सूजन आ गई थी और वें असह्य दना होने लगी थी।

अनशन का चौथा दिवस और पाचवां दिवस शान्ति पूर्वक व्यतीत हो गया क्योंकि पिछले यज्ञ विध्वंस की घटना से भय-भीत होकर शास्त्री और पण्डितों ने बकरों की आहुति देना बंद कर दिया था। पशुहत्या को बंद कर के शास्त्री समुदाय यज्ञ-सम्पन्न कर रहा था। रस्सी जल जाया करती है किन्तु उसका बल नहीं जाता। इसी सिद्धान्त के अनुसार पशुयज्ञ के प्रवर्तक पशुहत्या बन्द कर के भी अपनी कुटिल मनोवृत्ति से मुक्त नहीं हो सके। पण्डित वासुदेव शास्त्री नातू और शंकर शास्त्री नातू के प्रबल पक्षपाती डाक्टर लिमये "वीर" जी के विरुद्ध उनके आसन के समीप आकर व्याख्यान देने लगे।

रात के ८ बजे का समय था। लगभग दो सौ महिलाएं और तीन हजार पुरुषों की भीड़ "वीर" जी के दर्शनों के लिये एकत्रित थी। ऐसे समय में डाक्टर लिमये ने अदूरदर्शिता पूर्ण भाषण देकर जनता की क्रोधाग्नि को प्रज्ज्वलित कर दी सहसा एक मराठे युवक ने डाक्टर लिमये को गर्दन मरोड़ दी और उनके पेट में कस कर के घूंसा जमाया जिससे डाक्टर साहब भाग खड़े हुये। उसी समय मजिस्ट्रेट की आज्ञा से सशस्त्र पुलिस कान्स्टेबिल "वीर" जी की रक्षा के लिये नियुक्त करा दिये गये।

गांजी में '...' जी के अनशन का

वां दिवस

ता: ४ अप्रैल को संध्या के ६ बजे मेडिकल बोर्ड सांगली द्वारा डाक्टर सेट्टी, डा० देसाई, डा० श्रोत्रिय, डा० नाइक, परांजपे वैद्य, जमुनाबाई मर्चेन्टनर्स आदि ने पण्डित जी के स्वास्थ्य की जांच कर के निम्नांकित बुलेटिन प्रकाशित की—

पशुयज्ञ विरोधी पण्डित रामचन्द्र जी शर्मा "वीर" यांचे प्रकृतिमान—

ता० २९-३-३६ रोजीं वजन पौण्ड १३८।

ता० ४-४-३६ वेल सायंकाली ६-३० P. M.—

टेम्प्रेचर ९७, नाड़ी ७५, रेस्पिरेशन २४, वजन पौण्ड १०८, लघवी औंस ५।

ता० ५-४-३६ रात्री १०-४५ वजतां—

विशेष थकवाफार आला असून उष्णुतामान, फारच कमी होत आहे। कालजी घ्यावी बोलूं देऊँ नये।

ता: ७ अप्रैल को यज्ञ की समाप्ति हो चुकी थी और पण्डित जी का निश्चय था कि मैं अपने २१ दिन के अनशन में जब तक यज्ञ होता रहेगा तबतक जल भी नहीं पीऊंगा। इसी दृढ़ संकल्प के अनुसार उन्होंने ता: ७ के प्रातःकाल मारुती [मन्दिर के विस्तृत प्रांगण में कृष्ण नदी का पवित्र जल पान करने के लिये तत्पर हुये। श्रीमान् शंभुराव जी इमानदार महोदय स्नान करके ताम्र कलश में कृष्ण नदी का जल "वीर" शर्मा जी के लिये बड़े भक्ति भाव से लाये। शर्मा जी के जलपान समारोह को देखने के लिये प्रातः ८ बजे अगणित जन समुदाय एकत्रित हो गया था, तब 'वीर' जी ने उपस्थित स्त्री-पुरुषों को प्रणाम करके कहा कि मेरा उपवास अभी १२ दिवस तक और होगा किन्तु

अपने संकल्प के अनुसार पशु यज्ञ समाप्ति के अनन्तर जलपान कर रहा हूँ। उन्हें जल पीते देख कर चारों ओर से तुमुल जयध्वनि होने लगी।

पूज्य "वीर" जी के जीवन चरित्र को इन पंक्तियों के लेखक ने वार वार पढ़ा। डायरियां भी देखीं और फायलें भी देखीं। जिनके वार वार अध्ययन और मनन से यह ज्ञात हुआ कि उनके प्रत्येक अनशन में एक पौंड वजन घटता था। सांगली के अनशन में प्रति दिन पाँच पौंड तौल घटता रहा। पाठकगण इस पर आश्चर्य न करें। क्योंकि पहले के सभी उपवासों में वे जल पीते रहे थे किन्तु सांगली के इस महाव्रत ने ८ दिन तक जल की एक बून्द भी न पीने के कारण उनका ३७ पौंड वजन घट गया।

मनुष्य के शरीर में जल का अंश ही अधिक रहता है और निर्जल उपवास में उस जलांश के अधिक व्यय होने से अनशन-कारी मृत्यु की ओर तीव्रगति से दौड़ता है। साधारण मनुष्य की शक्ति नहीं है कि वह कभी २३ दिन कभी ३२ दिन के एक ही वर्ष में कई उपवास कर डाले और इतने उपवासों के उपरान्त ग्रीष्म ऋतु में आठ आठ दिन तक निर्जल उपवास कर सके। इससे हमें "वीर" जी के योगिक शक्ति का परिचय मिलता है।

ताः १४ अप्रेल को पशु यज्ञ की भस्म को नदी में प्रवाहित करने का संस्कार बकराखाऊ भटों ने निश्चित किया था यज्ञ के प्रारम्भ में एक बहुत बड़े कछुए को जो लगभग २० सेर का रहा होगा उसे पृथ्वी को खोद कर एक पीतल की परात में बैठा दही में डुबा दिया था और उसी कछुए पर एक पीतल की

परात और रख दी गई थी और उस परात पर आठ अंगुल मिट्टी डालकर उसपर यज्ञ कुण्ड की रचना की गई थी। इसी कछुए की पीठ पर नरपिशाच शास्त्रियों ने आम, पीपल, वट, पलाश, गूलर आदि वृक्षों की पवित्र समिधाएं सुसज्जित करके उनपर अग्नि प्रज्ज्वलित की थी। अग्नि संस्कार के समय कुछ ब्राह्मणियों ने भयभीत होकर पूछा कि कछुए की पीठ पर ही यज्ञ करोगे? तब शास्त्री जी ने बड़े गर्व से कहा—हाँ! यज्ञ शान्ति अनन्तर जब भस्म हटाई जायगी तब कछुआ जीता हुआ निकलेगा। अस्तु।

विधि विधान के उपरान्त जब पीतल की परात हटाई गई तो ज्ञात हुआ कि दही सूख गया है पीतल की परातें टेढ़ी बांकी होकर मुड़ गई हैं और कछुए के हाथ पैरों का अवशेष भी नहीं है। ढाल पृथक हो गई थी और कछुए के मांस का भरता हो चुका था। इस मांस को शास्त्री महानुभावों ने तेल में भून कर सह कुटुम्ब यज्ञनारायण के महाप्रसाद का भक्ति भाव-पूर्वक भोग लगाया।

ता: २० अप्रेल रविवार को सायंकाल के ५ बजते ही पं० रामचन्द्र शर्मा के २१वें दिन के उपवास की समाप्ति का समारोह हुआ। निश्चित समय के पूर्व ही श्री मारुती मन्दिर के विशाल प्रांगण और सामने के विस्तीर्ण मैदान तथा सड़क पर कई हजार स्त्री पुरुषों की भीड़ एकत्रित हो गई। सर्व प्रथम कोल्हापुर के श्रीमान् कृष्ण राव वागणीकर के मनोहर भजन हुये इसके उपरान्त "वीर" जी की दीर्घायु के लिये सम्मिलित प्रार्थना हुयी और सांगली के सुप्रसिद्ध यशस्वी

फोटोग्राफर श्रीपद राव जी तात्या साहब चिवटे ने 'वीर' जी की हड्डियों के कई चित्र उतारे। सांगली के प्रतिष्ठित पुरुषों में श्रीमान् धावते साहब, माननीय सेठ बापू भाई रतनचंद श्रीयुत नेमचद जी डाह्या, भाई सेठ श्री राम जी, सांवल राम, श्री दीपचन्द जी वकील, डा. शेट्टी M.B. B.S. और सांगलो के अनेक प्रतिष्ठित व्यापारियों ने तरुण तपस्वी धर्मप्राण पं. रामचन्द्र जी शर्मा 'वीर' को पुष्प मालाएं पहनाईं। श्रीमती माता कृष्णबाई सदाशिव कुलकर्णी ने पूज्य 'वीर' जो को अपने हाथों काते हुये शुद्ध सूत के वस्त्र तथा यज्ञोपवीत समर्पित किये। इसके उपरान्त उपरोक्त महानुभावों ने 'वीर' जी से अनशन समाप्त करने का अनुरोध किया। सायंकाल के ६ बज चुके थे; पूज्य पंडित जी ने अपने कई दिनों के मौनव्रत को समाप्त करते हुये कुछ देर हिन्दी भाषा में भाषण देकर उपवास समाप्त किया। जिस समय वे मोसंबी का रस पी रहे थे उस समय चारों ओर से हजारों कंठों से हिन्दूधर्म की, गौमाता की और तरुण तपस्वी 'वीर' की गगन-भेदी जयध्वनि हो रही थी। घड़ीघंट, शङ्ख और नगारों को घन-घनाहट से मारुती मन्दिर का वातावरण अत्यन्त उत्साह जनक हो गया। चार पाँच सज्जनों ने "वीर" जी को मोटर में बैठाया। मोटर के आगे ढोल मृदंग बैंड आदि पचासों बाजे बज रहे थे। मारुती मन्दिर से २१ दिन के अनन्तर विदा होकर "वीर' जी महाराज कई हजार मनुष्यों के प्रचण्ड जुलूस के साथ सांगली के बाजार में पधारे। मारवाड़ पेठ, सराफ हट्टा, गणपति पेठ आदि मार्गों से होते हुये जुलूस नई पेठ के जैन बोर्डिङ्ग में पहुंचा वहां शर्मा जी ने पाँच मिनट भाषण दिया। इसके उपरान्त

रहूं भूखा मरूं प्यासा, मैं मर जाऊं यह गम टूटे
बली मेरी बला से हो, बलीको [illegible] रसम टूटे
सांगली में 'वीर' जी के अनशन की भीषण स्थिति
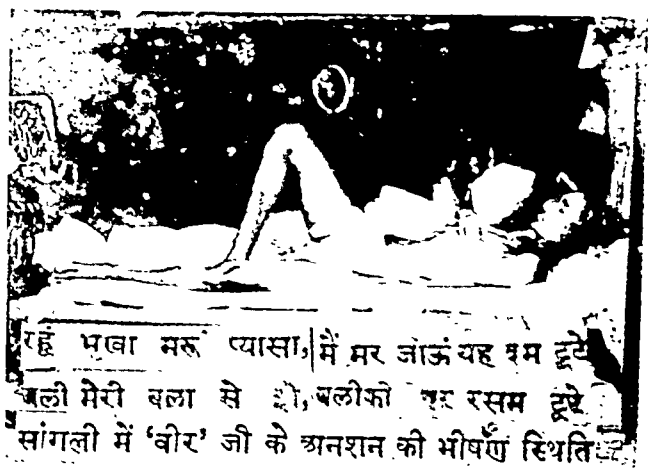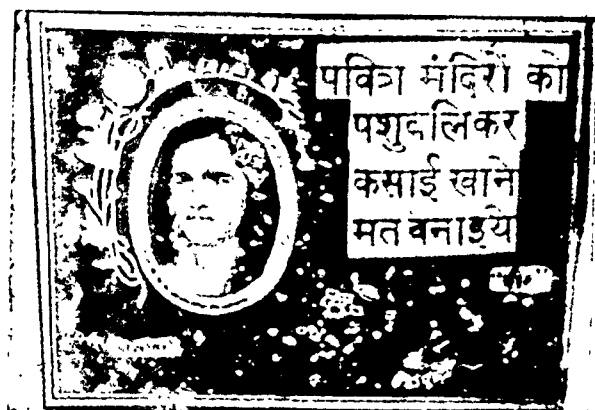
शिरालकर देसाई के विशाल भवन के समक्ष जुलूस रात के आठ बजे समाप्त हुआ।

शिरालकर देसाई के विशाल भवन में एक सप्ताह तक विश्राम करके तासगांव, नेपाणी, जयसिंगपुर आदि नगरों में पशुबलि निरोध समिति की शाखाएं स्थापित करके आप छत्रपति शिवाजी महराज की राजधानी कोल्हापुर पधारे। कोल्हापुर के राज मन्दिर में शाहुपुरी मर्चेन्टस एशोसियशन को ओर से आपका स्वागत किया गया और पशुबलि निरोध समिति की स्थापना की गई।

ता: १८ मई को दक्षिण महाराष्ट्र का दौरा समाप्त करने के उपरान्त पूज्य पं० रामचन्द्र जी शर्मा "वीर" का सांगली के गान्धी चौक नये पेठ में अन्तिम भाषण था। सभापति का आसन श्री पं० विट्ठलराव जोशी ने ग्रहण किया था। उक्त सभा में आपको सांगली के नागरिकों की ओर से एक अत्यन्त महत्वपूर्ण "सम्मान पत्र" समर्पित किया गया था। उक्त सम्मान पत्र मराठी भाषा में था जिसका हिन्दी अनुवाद निम्नांकित है:—

ॐ

महान-स्वार्थत्यागी तत्वनिष्ट, धर्मभास्कर, महाप्राण,

पं० श्री रामचन्द्र शर्मा 'वीर' जी की सेवा में

सम्मान पत्र

पूज्य महाशय!

आज आपको विदा करते हुये हम सांगली के नागरिकों को आपके प्रति जो नितान्त आदर और प्रेम का अनुभव हो रहा है उसे व्यक्त करना हम अपना पवित्र कर्तव्य समझते हैं।

एक कल्याण-कारकतत्त्व के लिये निष्काम भाव से प्रेरित होकर, और सब प्रकार के स्वार्थ का त्याग कर अपने ध्येय का साध्य कोटि में परिणत कर लेने वाले आपके सरीखे श्रेष्ठ व्यक्ति कचित् ही दृष्टिगोचर होते हैं।

आपने, जीव कोटी संरक्षणार्थ, धर्म के नाम पर भारतवर्ष में होने वाले हत्याकांड अवरोधार्थ जो आत्म बलिदान किया, और अब तक के अल्प समय में ही पांच छः बार में लगभग ११५ दिवस का कठोर उपोषण जो आपने किय वैसा हमारे देश के इतिहास में दूसरा नहीं है।

भूत दया से प्रेरित होकर, आपने मांगरोल राज्य के गोवध बन्दी के लिये २३ दिन का कठोर उपोषण किया जिसके फलस्वरूप वहां सर्वदा के लिये गोवध बन्द करा कर विधर्मी सत्ताधारियों पर भी आपने नैतिक विजय संपादित की।

प्राणी बलिदान निरोध का जो दयामय संकल्प आपने किया है और उसी एक जीवित कार्य के लिये आप अहर्निश महान् प्रयत्न कर रहे हैं, उसी श्रेष्ठ कार्य में आपको सुयश प्राप्त हो और ईश्वर आपको चिरायु करे, यह शुभेच्छा प्रकट करके आपको पूज्य भावनाओं के साथ यह मानपत्र समर्पण करते हैं।

सांगली ता: १८-५-३६ ई. सांगली के नागरिक, बालाप्पा चंदाप्पा धावते, श्री रामरतन मालू, भाई रतनचंद, छगन लाल मावजी, नेमचन्द डाह्या, भाई दत्तात्रय, बलवंत हिंगमिरे, अण्णा शांताप्पा कर्वे, पण्डित राव दंडेकर, सुरजकरण देवकरण मारुती बालसिंह परदेशी, अप्पा जी विड़ेश ईमानदार, गंगाराम

लखुचंद, वल्लभदास माधव जी चंदन, शिवजी पुंजाकोठारी मणिलाल केशव जी, सी. डी. मेहता आदि।

इसके अनन्तर कई वक्ताओं के भाषणोपरांत सभा विसर्जित हुई और "वीर" जी ने रात के ९ बजे की ट्रेन से पूना को प्रस्थान किया। विदाई का दृश्य अत्यन्त करुण पूर्ण था।

कलकत्ता की ओर

देशभक्त पोपटलाल शाह के प्रयत्न से पूना के सुप्रसिद्ध सोमेश्वर मन्दिर में पण्डित रामचन्द्र शर्मा "वीर" का प्रभावशाली भाषण हुआ, उक्त सभा में "वीर" जी के उपदेश सुनने के लिये पूना की सुशिक्षित जनता अधिक संख्या में आई थी।

खान देश के जलगांव धोदघड़ आदि नगरों में पशुबलि निरोध समिति का संगठन कर भुसावल में आपके कई व्याख्यान हुये। सेठ पृथ्वीचन्द जी जैन, श्री नारायणदास जी वैद्य तथा लक्ष्मीनारायण जी गुप्त आदि प्रेमियों ने बड़े उत्साह से 'वीर' जी के सत्कार का आयोजन किया था।

ता० २७-५-२६ को मध्यप्रान्त के प्रसिद्ध नगर सागर में "वीर" जी का अपूर्व स्वागत हुआ और चकाघाट के निर्दिष्ट स्थल में कई हजार हिन्दुओं की उपस्थिति में आपका भाषण हुआ। सागर की जनता के अगाध अनुराग और विशेष आग्रह से प्रभावित होकर "वीर" जी के एक सप्ताह तक भाषण हुये। आपके भाषणों से सागर के नवयुवकों में जीवन जागृति का संचार हो गया और सागर के अनेक प्रतिष्ठित

पुरुषों के सहयोग से मध्य प्रान्तीय पशुवलि निरोध समिति की स्थापना कर के आपने कलकत्ता की ओर प्रस्थान किया।

विहार के कई नगरों में सङ्गठन करने के उपरांत ता: ११ जून को आप वैद्यनाथधाम पधारे। स्टेशन पर उतरते ही वैद्यनाथधाम की पशुवलि निरोध समिति के सभापति सेठ ठाकुर मल जी नेवर तथा श्रीमान् जुहारमल जी जालान आदि महानुभावों ने स्वागत किया। प्लेटफार्म से निकलते ही वैद्यनाथधाम की जनता उमड़ पड़ी और जुलूस के रूप में परिणत हो गई। यह जुलूस वैद्यनाथधाम के पण्डों के विरोध की परवाह न कर के नगर के बाजारों में दो घण्टा तक घूमता हुआ सेठ जुहार मल जी जालान के आनन्द भवन में जाकर समाप्त हुआ। उसी दिन सायंकाल के ५ बजे दो हजार जनता की उपस्थिति में एक विराट सभा हुई जिसमें "वीर" जी ने शास्त्रोक्त प्रमाणों द्वारा सिद्ध किया कि देवताओं के समक्ष निरपराध पशुओं की हत्या करना राक्षसी कृत्य है। वर्त्तमान समय में तो इस कलङ्क पूर्ण प्रथा ने राष्ट्र की अवनति का भीषण रूप धारण कर लिया है।

यदि हम इस आध्यात्मिक स्वाधीनता का आन्दोलन न करेंगे तो देश की महान् हानि होगी और स्वराज्य मिलने के उपरान्त यदि कानून के द्वारा अन्धविश्वासों का प्रतिकार करेंगे तो हमारी दशा भी अफगान के "अमीर अमानुल्ला" जैसी होगी। इसलिये साम्राज्यवाद को मिटाने के साथ साथ हमें पण्डावाद और पाखण्डवाद का भी अस्तित्व मिटाना होगा।

दूसरे दिन केसरवानी आश्रम में पाँच सौ महिलाओं की महती सभा में "वीर" जी ने पशुवलि और मांसाहार के विरुद्ध ओजस्वी

वीर का विराट आन्दोलन

भाषण दिया। आपके भाषण से प्रभावित होकर सभी महिलाओं ने वैद्यनाथधाम में पशुबलि न देने की प्रतिज्ञा की।

१४ जून को बङ्गाल के प्रसिद्ध नगर बर्दमान के टाउन हाल में एक विराट सभा हुई जिसमें स्थानीय बङ्गालीजन साधारण विपुल संख्या में उपस्थित थे।

बर्दमान में प्रबल प्रचार कर के ता० १७ जून की रात्रि को ८ बजे "वीर" जी हवड़ा स्टेशन पर पधारे। उनके स्वागतार्थ कलकत्ता के अनेक प्रतिष्ठित पुरुष और महिलाएँ उपस्थित थीं। पण्डित जी को अ० भा० पशुबलि निरोध समिति के कार्यालय १५९/५ हरिशन रोड, सुराणा कटरा के तीनतल्ले पर ठहराया गया।

"वीर" जी के कलकत्ता पहुंचते ही कालीघाट के पण्डों में खलबली मच गई और उनकी सभाओं में पण्डों की ओर से विघ्न उपस्थित किये जाने लगे।

की थैली भी भेंट की गई। किन्तु पण्डित जी ने मान-पत्र को शिरोधार्य करते हुये नम्रता पूर्वक रुपयों की थैली को लौटा दी। पण्डित रामकृष्ण जी शर्मा, पं० जगदीशनारायण जी शर्मा तथा रामप्रताप जी शर्मा आदि महानुभावों ने उक्त थैली पशुबलि निरोध समिति को देने का निश्चय किया। तदन्तर मानपत्र का उत्तर देते हुये पूज्य "वीर" जी ने करुणापूर्ण भाषण दिया जिसको सुन कर मजदूरों के नेत्रों से अश्रु-धारा वह चली और लगभग साढ़े तीन हजार मजदूरों ने कालीघाट के वहिष्कार का दृढ़ निश्चय किया।

कालीघाट मन्दिर के निकट ही सिक्खों का सुप्रसिद्ध गुरु-द्वारा है वहां भी रविवार २६ जून को कलकत्ता के सिक्खों की ओर से "वीर" जी का स्वागत किया गया था। गुरु सिंह सभा द्वारा "वीर" जी के स्वागत किये जाने के उपरान्त गुरु नानक महाराज की वन्दना तथा धार्मिक भजनों के उपरान्त सरदार जमैयत सिंह जी ने उपस्थित सिक्ख सरदारों को सम्बोधन कर कहा—

मैं "वीर" से बहुत समय से परिचित हूँ। माँगरोल राज्य की गो-हत्या बन्द कराने के लिये "वीर" जी ने जो बहादुरी दिखलाई थी उसे बतलाने में मैं असमर्थ हूँ। ऐसे सन्त:पुरुष के यहाँ पधारने पर हम सभी को हृदय से स्वागत करना चाहिये।

पण्डित रामचन्द्र जी शर्मा "वीर" ने अपना भाषण प्रारम्भ करते हुये कहा कि सिक्ख और हिन्दू एक ही हैं। हिन्दू धर्म रक्षा के लिये ही सिक्ख सम्प्रदाय का प्रादुर्भाव हुआ था। मैं सिक्ख वीरों से प्राण दान लेने आया हूं। कालीघाट मन्दिर

की पशु-हत्या के विरुद्ध मेरा अनशन कुछ ही दिनों में प्रारम्भ होने वाला है। गुरु नानक महाराज के पवित्र मन्दिर में मैं आपका निमन्त्रण पाकर आया हूं। जब आपने मुझे आदर पूर्वक बुलाया है तो कुछ दान भी दीजिये और वह दान धन का नहीं तन, मन का होना चाहिये।

"वीर" जी के भाषणोपरान्त निम्न लिखित प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

"कालीघाट स्थित गुरु सिंह सभा का यह दरबार घोषणा करता है कि भारतवर्ष के देव मन्दिरों में खास कर काली माता के मन्दिर में जो बेगुनाहों का खून बहाया जाता है उसे यह घृणा की दृष्टि से देखता है तथा पण्डों से अनुरोध करता है कि इस हत्याकाण्ड को शीघ्र ही बन्द कर दें। साथ ही पण्डित रामचन्द्र जी शर्मा "वीर" के अनशन के प्रति हमदर्दी जाहिर करता है।" रात्रि में सभा विसर्जित हुई।

कलकत्ता और उसके नगरों की १० सभाओं में पण्डित जी के प्रभावशाली भाषण हुये। ४ जुलाई को आपने ३५ अनुयायियों के साथ शर्मा जी आलम बाजार पधारे। आपके स्वागत के लिये वैष्णव मन्दिर पत्र-पुष्पों से सुसज्जित किया गया था। आपके एक ही घण्टा के भाषण से सैकड़ों मनुष्य पशुबलि प्रथा के विरोधी बन गये। आलम बाजार से विदा होकर आप टीटागढ़, फारिकपुर आदि नगरों में सभाएँ कर के नवाबगञ्ज पहुंचे। सभी नगरों की बङ्गाली जनता बड़े प्रेम से भाषण सुनती थी। नवाबगञ्ज में आपके पहुंचते ही गङ्गा तट पर बङ्गाली भद्र पुरुषों का समुदाय एकत्रित हो गया।

की थैली भी भेंट की गई। किन्तु पण्डित जी ने मान-पत्र को शिरोधार्य करते हुये नम्रता पूर्वक रुपयों की थैली को लौटा दी। पण्डित रामकृष्ण जी शर्मा, पं० जगदीशनारायण जी शर्मा तथा रामप्रताप जी शर्मा आदि महानुभावों ने उक्त थैली पशुबलि निरोध समिति को देने का निश्चय किया। तदन्तर मानपत्र का उत्तर देते हुये पूज्य "वीर" जी ने करुणापूर्ण भाषण दिया जिसको सुन कर मजदूरों के नेत्रों से अश्रु-धारा बह चली और लगभग साढ़े तीन हजार मजदूरों ने कालीघाट के बहिष्कार का दृढ़ निश्चय किया।

कालीघाट मन्दिर के निकट ही सिक्खों का सुप्रसिद्ध गुरुद्वारा है वहां भी रविवार २६ जून को कलकत्ता के सिक्खों की ओर से "वीर" जी का स्वागत किया गया था। गुरु सिंह सभा द्वारा "वीर" जी के स्वागत किये जाने के उपरान्त गुरु नानक महाराज की वन्दना तथा धार्मिक भजनों के उपरान्त सरदार जमैयत सिंह जी ने उपस्थित सिक्ख सरदारों को सम्बोधन कर कहा—

मैं "वीर" से बहुत समय से परिचित हूँ। माँगरोल राज्य की गो-हत्या बन्द कराने के लिये "वीर" जी ने जो बहादुरी दिखलाई थी उसे बतलाने में मैं असमर्थ हूँ। ऐसे सन्तःपुरुष के यहाँ पधारने पर हम सभी को हृदय से स्वागत करना चाहिये।

पण्डित रामचन्द्र जी शर्मा "वीर" ने अपना भाषण प्रारम्भ करते हुये कहा कि सिक्ख और हिन्दू एक ही हैं। हिन्दू धर्म रक्षा के लिये ही सिक्ख सम्प्रदाय का प्रादुर्भाव हुआ था। मैं सिक्ख वीरों से प्राण दान लेने आया हूं। कालीघाट मन्दिर

की पशु-हत्या के विरुद्ध मेरा अनशन कुछ ही दिनों में प्रारम्भ होने वाला है। गुरु नानक महाराज के पवित्र मन्दिर में मैं आपका निमन्त्रण पाकर आया हूं। जब आपने मुझे आदर पूर्वक बुलाया है तो कुछ दान भी दीजिये और वह दान धन का नहीं तन, मन का होना चाहिये।

"वीर" जी के भाषणोपरान्त निम्न लिखित प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

"कालीघाट स्थित गुरु सिंह सभा का यह दरबार घोषणा करता है कि भारतवर्ष के देव मन्दिरों में खास कर काली माता के मन्दिर में जो वेगुनाहों का खून वहाया जाता है उसे यह घृणा की दृष्टि से देखता है तथा पण्डों से अनुरोध करता है कि इस हत्याकाण्ड को शीघ्र ही वन्द कर दें। साथ ही पण्डित रामचन्द्र जी शर्मा "वीर" के अनशन के प्रति हमदर्दी जाहिर करता है।" रात्रि में सभा विसर्जित हुई।

कलकत्ता और उसके नगरों की १० सभाओं में पण्डित जी के प्रभावशाली भाषण हुये। ५ जुलाई को अपने ३५ अनुयायियों के साथ शर्मा जी आलम वाजार पधारे। आपके स्वागत के लिये वैष्णव मन्दिर पत्र-पुष्पों से सुसज्जित किया गया था। आपके एक ही घण्टा के भाषण से सैकड़ों मनुष्य पशुवलि प्रथा के विरोधी वन गये। आलम वाजार से विदा हो कर आप टीटागढ़, वारिकपुर आदि नगरों में सभाएँ कर के नवावगञ्ज पहुंचे। सभी नगरों की वङ्गाली जनता वड़े प्रेम से भाषण सुनती थी। नवावगञ्ज में आपके पहुँचते ही गङ्गा तट पर वङ्गाली भद्र पुरुषों का समुदाय एकत्रित हो गया।

पशु हत्या के विरुद्ध श्रीमती सुखदा देवी और कई युवक सत्याग्रह कर रहे थे। इन सत्याग्रहियों और बहन सुखदा देवी को बूढ़ानाथ मन्दिर के महन्त द्वारा अपमानित किया गया और सत्याग्रह से सम्बन्ध रखने वाले व्यक्तियों पर महन्त के नौकरों ने घातक आक्रमण किये। गया जिला में टिकारी की पशुबलि निरोध समिति के संचालक पं० विजयप्रकाश जी वाजपेयी, पं० राजकुमार जी शुक्ल तथा सेठ कनैयालाल जी बड़जात्या के प्रबल प्रयत्न से केसपा की तारादेवी के सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक मन्दिर में होने वाली हजारों बकरों और भैंसों की हत्या सदा के लिये बन्द हो गई। उधर दक्षिण महाराष्ट्र में तासगांव, नेपाणी, जयसिंगपुर की समितियों ने प्रभावशाली आन्दोलन करके हजारों जीवों के प्राण बचाये। जयसिंगपुर में श्रीमान् परशुराम जी मालू आदि उत्साही पुरुषों ने प्रबल जनमत संगठित करके उदगांव की देवी के मन्दिर में होने वाली पांच सौ बकरों की हत्या सदा के लिये अन्त कर दिया।

मध्य प्रान्तीय पशुबलि निरोध समिति सागर ने भी अत्यन्त उग्रगति से सागर जिला में आन्दोलन की धूम मचा दी। श्रीमान् नारायण प्रसाद जी रायजादा के नेतृत्व में सागर की पशुबलि निरोध समिति उन्नति के पथ पर अग्रसर हो रही थी। श्री लक्ष्मण प्रसाद जी जगन्नाथ प्रसाद जी स्वर्णकार और गया प्रसाद जी गोकुल प्रसाद जी आदि रणबांकुरे नवयुवकों ने सागर के काकागंज में कथवारी देवी के मन्दिर में और कई मन्दिरों में पशुबलि प्रथा का अन्त कर दिया। सागर के सदर बाजार की केशरवानी, लस्करिया बनियों ने ग्यारह बकरों को

मन्दिर के पुजारियों और पशुवलि में विश्वास रखने वालों की धार्मिक भावनाओं में अघात् पहुँच रहा है। अतः कलकत्ते में आप तथा आपके अनुयायी भी किसी प्रकार की मीटिङ्ग नहीं कर सकते हैं। इस प्रकार धर्मप्राण "वीर" जी ने अपने प्रचार के मार्ग में १४४ धारा का प्रतिबन्ध देख कर अपनी विद्युतमयी लेखनी उठाई और पशुवलि के विरोध में नित नये निबन्ध लिख लिख कर प्रकाशित कराने लगे। उनमें से महत्वपूर्ण लेख हम यहां उद्धृत करते हैं —

मा काली तू कहां है ?

माता कालिके तू कहां है? बता बता, तू कहां गई? मेरा बावली मां! तेरा दर्शन हम अभागे भारतवासी क्या अब न कर सकेंगे? जननि! क्या हम पतितों को तू मुँह दिखलाना भी नहीं चाहती?

दुष्टदल संहारकारिणी शक्ति!

आज तू कहां विलीन हो गई? भगवती! चंडमुंड की राक्षसी लीला को तू देख! और तू देख शुंभनिशुंभ की निष्ठुरता! तू देख रक्त बीज और महिषासुर की मांस लोलुपता! तू तो इनको मार चुकी थी न?

मेरी भोली मां! तू कहां चली गई? तेरा त्रिशूल कहां है? तेरा चक्र और खड्ग कहां है? और कहां है विद्युत सदृश चमत्कृत भाला? बता, बता! मेरी मां! तू ही आकर बता तू ने राक्षसों से हार तो नहीं मान ली? क्या राक्षसों के मुंडों की माला धारण करने का युग चला गया? लोग कहते हैं कि काली-

हत्यारों की खड्गों से काट डाले जावें और तेरे पवित्र मन्दिरों में रक्त का धाराएँ बहाई जावें, हड्डियां और मांस के टुकड़ों का ढेर लगा दिया जावे क्या यह तेरा स्पष्टतया अपमान नहीं है ? 'या देवी सर्व भूतेषु मातृरूपेण संस्थिता' यह मन्त्र व्यर्थ ही लिखा गया है ? तेरे मूक बच्चे छटपटा छटपटा कर म्यां म्यां की करुण ध्वनि से प्राणों की भिक्षा मांगे और धर्म कसाई उनके टुकड़े टुकड़े कर दें। क्या यह तुझे सहन हो सकता है ? मेरी मां ! यह राक्षसी पूजा की पद्धति आज हिन्दू धर्म को कलंकित कर रही है। तेरे पवित्र मन्दिर कालीघाट को मिस्मेयो धर्म का कसाईखाना बताती है। क्या इस अपमान की कड़वी घूँट को मैं चुपचाप पी जाऊं ? नहीं नहीं मेरी दयामयी माता ! तेरा अपमान मैं सहन नहीं कर सकता। मैं प्रतिज्ञा कर चुका हूँ कि तेरे मन्दिर का हत्याकांड बन्द कराने के लिये मैं अपने शरीर का एक एक रक्त बिन्दु उपवास की अग्नि में जला दूंगा।

मेरी प्यारी माता ! देख, देख, वे माँसलोलुप पण्डे मेरी ओर लाल लाल आँखें निकाल रहे हैं। उनके षड्यन्त्र ने मेरी जिह्वा पर ताला लगा दिया है। १४४ धारा के मुख पर पण्डों द्वारा कई बार प्रहार किये गये। अब मैं तेरे मूक बच्चों की वकालत कैसे करूं ? माँ काली तू कहाँ है ?

ताः १९ अगस्त १९३६ ई. के विश्वमित्र ने अपने सम्पादकीय स्तम्भ में मोटे मोटे अक्षरों यह में लिखा है—

वीर का निश्चय

यह पढ़ कर रुलाई आ गई कि पं० रामचन्द्र शर्मा "वीर" ने ३० अगस्त से फिर अनशन का निश्चय कर डाला है। देशमान्य नेताओं और आलोचकों का आग्रह स्वीकार कर आपने लगभग एक वर्ष पूर्व पूर्णप्रचार कार्य किया और कलकत्ते में भी बड़ी शान्ति और सफलता के साथ प्रचार कर रहे थे। परन्तु अधिकारियों ने दफा १४४ जारी कर प्रचार कार्य रोक दिया। पं० रामचन्द्र सरीखे स्वाभिमानी "वीर" के लिये यह सम्भव न था कि वे किसी प्रकार के अनुनय विनय से काम लेते जिसने प्राणों की बाजी ही लगा रखी है। वह अनुनय विनय करे भी क्यों? हिन्दू नेताओं और हिन्दू संस्थाओं का कर्त्तव्य था कि वे इस ओर शीघ्र ध्यान देते परन्तु सभी उदासीन ही रहे और अन्त में "वीर" जी को गतवर्ष की भाँति इस बार भी आमरण अनशन का निश्चय करना पड़ा। इसमें तो तनिक भी संदेह नहीं कि इस बार का निश्चय आसानी से नहीं बदला जा सकेगा इसलिये उस निश्चय के कार्य में परिणत होने के पूर्व ही कुछ कर डालना परम आवश्यक है। हिन्दू समाज पीछे जागा करता है। पं० रामचन्द्र शर्मा दृढ़ निश्चयी "वीर" हैं और उन्होंने अपने जीवन को कष्ट सहिष्णुता की कड़ी चट्टान से इतना अधिक रगड़ लिया है कि वे बड़े भारी साधक बन गये हैं। ऐसे वीरों से हिन्दू समाज का बड़ा भारी गौरव है। क्या हम उनसे हाथ धोकर अपना गौरव कम करना चाहते हैं? हिन्दू समाज को समय रहते शीघ्र जाग कर "वीर" जी के प्राणों

की रक्षा करनी चाहिये। इस प्रकार धर्म के नाम पर मूक पशुओं का बलिदान सरलता से रोका जाता है।

पूर्व प्रतिज्ञानुसार पं० रामचन्द्र शर्मा "वीर" ने ३० अगस्त १९३६ से कालीघाट की पशुबलि के विरोध में अपना आमरण अनशन प्रारम्भ कर दिया। अनशन के प्रातःकाल की प्रार्थना के उपरान्त "वीर" जी ने निम्नलिखित आशय का वक्तव्य दिया।

"आज मुझे अत्यन्त हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि मैं गत वर्ष की अपनी प्रतिज्ञानुसार अपने कर्त्तव्य पथ पर दृढ़ होकर एक वर्ष के उपरान्त फिर उसी कर्मक्षेत्र में उतरा हूँ। जगन्माता काली के नाम पर सहस्रों मूक प्राणियों का रक्त बहता देख कर मैं इस कुप्रथा को मिटाने के लिये अपने आपको मिटा देना ही श्रेयस्कर समझता हूं।"

अनशन के एक सप्ताह पूर्व पशुबलि निरोध समिति और कलकत्ता के प्रतिष्ठित पुरुषों के आलस्य और उपेक्षा भाव को देख कर "वीर" जी ने कलकत्ता में अपने विश्वस्त भद्रपुरुषों के सहयोग से अखिल भारतीय आदर्श हिन्दू संघ का संगठन कर डाला था। उनके अनशन के प्रारम्भ होते ही "सङ्घ" के मंत्री पण्डित रामेश्वर प्रसाद जी शर्मा ने निम्नलिखित विज्ञप्ति प्रकाशित की थी।

धर्मप्राण पं० रामचन्द्र शर्मा "वीर" का पूर्व निश्चित अनशन प्रारम्भ हो गया है। पण्डित जी ने उपवास के आरम्भ में बहुत देर तक भगवान की प्रार्थना की। उस समय कलकत्ता के कई प्रतिष्ठित सज्जन और अमेठी राज्य के राजा श्री भगवानबक्स

"वीर" जी के अनशन के लिये लिया जा रहा है, तो वे स्पष्ट उत्तर दे देते थे कि हम अनशन के लिये मकान नहीं देंगे। ऐसी डावांडोल स्थिति में "वीर" जी ने छोटे से कमरे में ही तीन दिन तक उपवास किया। तीन दिवस समाप्त होने के उपरान्त 'वीर' जी के अभिन्न हृदय भाई रामेश्वर प्रसाद जी वैद्य ने अपने किराये के मकान १०० नम्बर हरिसन रोड में 'वीर' जी के अनशन की व्यवस्था कर दी और 'वीर' जी उक्त मकान में आकर अनशन करने लगे। यह मकान विशुद्धानन्द विद्यालय का था और एक संकीर्ण गली में डामर से पुता हुआ काले रंग का महा भयावना चिलचट्टों और मकोड़ों से परिपूर्ण साक्षात् नर्क के तुल्य था। कलकत्ता के नेताओं, पूंजीपतियों, सेठों और धर्म के ठेकदारों को धन्य है जिन्होंने मृत्यु मुख में जाते हुये वीर ब्राह्मण युवक के लिये एक मकान की भी व्यवस्था नहीं की। उन्होंने 'वीर' जी को पिछले अनशन में कैसी कैसी आशाएं दिलाई थीं कैसे कैसे विश्वास दिलाये थे। 'वीर' जी के महासंकट के समय उन पूंजीपतियों और कलकत्ता के कर्णधारों ने मुंह तक नहीं दिखलाया।

रायज़ादा साहब का तार

'वीर' जी के अनशन के १० दिवस बीत गये कलकत्ता की जनता केवल 'वीर' जी के दर्शन कर के ही सन्तोष कर लेती थी। किसी प्रकार का रचनात्मक काम नहीं होता था। ऐसी भीषण स्थिति में मटियाबुर्ज के आदर्श हिन्दू संघ ने तथा दमदम की शाखा के सभापति पण्डित कामतानाथ जी

तिवारी तथा मंत्री पण्डित दीनानाथ जी ने कलकत्ता की जनता को एक कड़ी विज्ञप्ति द्वारा चेतावनी दी थी।

मुजफ्फरपुर में बहन कमलादेवी ने वीर जी की दीर्घायु के लिये इसबार भी उपवास कई दिन तक किया। सागर से लक्ष्मणप्रसाद जी स्वर्णकार वीर जी की सेवा के लिये कलकत्ता आगये। डॉ० कीर्तिदेव जी शर्मा तथा व्रजमोहन जी शर्मा 'वीर' जी की प्राण रक्षा के लिये प्रति दिन प्रातःकाल जल चिकित्सा किया करते थे। जिससे उन्हें कुछ देर शान्ति मिल जाती थी। एक यूरोपियन महिला जो उच्च श्रेणी की महिला डॉक्टर थी, सम्भवतः वह महिला आयरिश थी 'वीर' जी को देखने के लिये प्रतिदिन आती थी और कभी कभी कालीघाट में जाकर पण्डों से शास्त्रार्थ भी करती थीं। कलकत्ता के अंग्रेजी पत्र 'स्टेटस मैन' में श्री पन्नालाल पेन नामक क्रिश्चियन सज्जन के 'वीर' जी की प्राणरक्षा के लिये जोशीले लेख प्रकाशित होते थे। कलकत्ता की साधारण जनता भी बीस हजार की संख्या में 'वीर' जी के दर्शनार्थ प्रति दिन आ जाया करती थी। 'अरुण' जी के उत्साह से और पंडित भालचन्द्र जी शर्मा, माता इकबाल देवी, श्री मिहिरचन्द्र धीमान 'कुसुमाकर' आदि के प्रयत्नों से प्रति दिन कलकत्ता में २-३ सभाएं हो जाती थीं। इस प्रकार अनशन के २० दिन समाप्त हो गये। ऐसी स्थिति में मध्य प्रांतीय आदर्श हिन्दू संघ सागर के संरक्षक श्री नारायण प्रसाद जी रायजादा ने महात्मा गांधी जी की सेवा में एक अत्यन्त करुणापूर्ण पत्र प्रेषित किया था। उन दिनों श्री नारायण प्रसाद जी ने अनेक नेताओं को पत्र लिखे थे, किन्तु नेताओं को अवकाश ही नहीं था।
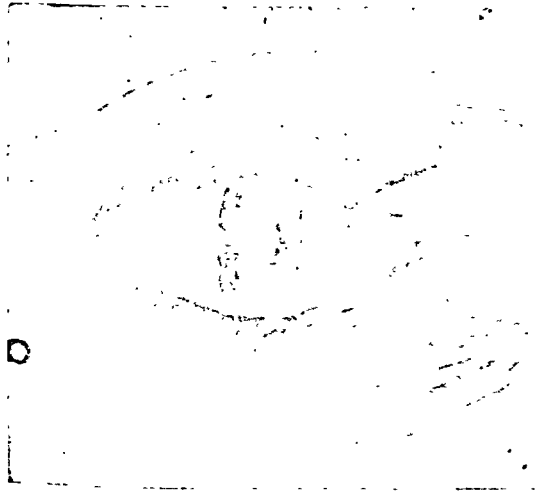
धर्मप्राण श्री पं० रामचन्द्र शर्मा "वीर
कलकत्ता के दूसरे उपवास के पूर्व

धर्मप्राण 'वीर' जी चिन्तामग्न बैठे हैं।

श्री नारायण प्रसाद जी रायजादा ने कालीघाट के पंडों के नाम भी निम्नाशय का तार भेजा था—

"राक्षस गण पशुवलि करते थे। सात्विक भक्तों अगस्त्य मुनि, विश्वमित्र ऋषी आदि ने पशुवलि कभी नहीं की थी। आप को सात्विक भक्तों का ही अनुकरण करना चाहिये। पशुवलि वैदिक यज्ञ नहीं है।

इससे आधुनिक पशुवलि १ पाप है और मातृ भूमि पर कलंक है। कृपा कर पशुवलि आज ही त्यागिये सात्विक पूजा का प्रचार कीजिये और भारतवर्ष की कीर्ति के लिये पण्डित रामचन्द्र शर्मा "वीर" की रक्षा कीजिये

कलकत्ते की अग्नि परीक्षा

(विश्वमित्र का अग्रलेख २३ सितम्बर १९३६)

पण्डित रामचन्द्र शर्मा 'वीर' के अनशन का आज २५ वां दिन है मुंह से खून के टुकड़े गिरने लगे हैं और अवस्था दिन पर दिन चिन्ताजनक होती चली जा रही है। शरीर में केवल हड्डियां बाकी हैं और मुख पर वही चमत्कारी तेज है साहसी युवक अपने निश्चय पर चट्टान की तरह दृढ़ है। वह संसार की माया-ममता त्याग कर अपने सुखदायक शान्तिदायक अन्त समय की बाट जोह रहा है। बूढ़ा पिता एकलौते पुत्र के लिये तड़प रहा है और मातृ तुल्य महिलाएं अपनी लाचारी में सिर धुनती हुई युवक के प्राणों की भीख द्वार द्वार मांगती फिर रही हैं, परन्तु व्यवसाय लीन कलकत्ता जरा भी ध्यान नहीं दे रहा है।

नाना प्रकार के तर्क वितर्क सुनाई दे रहे हैं। गतवर्ष भी उनकी कमी न थी और बहुतोंने उनपर विश्वास भी कर लिया था। परन्तु आज कड़ी से कड़ी परीक्षा और जाँच के बाद हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि वीर युवक इसबार प्राणों की आहुति देने पर तुल गया है और उसका उद्देश्य महान तथा पवित्र है। क्या कलकत्ता इस अग्नि परीक्षा में सफल न होगा।

नेहरू जी की सहानुभूति

चौबीस सितम्बर गुरुवार को पं० रामचन्द्र शर्मा "वीर" के अनशन का २६वाँ दिन था। नाड़ी की गति ७० थी। मुँह में थूक के साथ रक्त अधिक मात्रा में आता था। देह में दर्द और बुखार भी रहा और उनका वजन १०० पौंड ही रह गया। अनशन के प्रथम दिवस १२९ पौंड था। पूज्य "वीर" जी जब मृत्यु से खेल रहे थे तब भी कालीघाट के नरपिशाच पण्डों के हृदय में "वीर" जी के प्रति द्वेष की अग्नि जल रही थी और उनका वश चलता तो वे मरते हुये उस महापुरुष के रक्त ही को पी डालते।

कालीघाट के प्रसिद्ध पण्डे फणिलाल मुखोपाध्याय ने मृत्यु मुख में पड़े महाप्राण "वीर" जी को शांति से न मरने देने का निश्चय कर लिया और मरते हुये "वीर" जी की मृत्यु शय्या कहीं उड़ कर कालीघाट न आजाय इस भय से "वीर" जी पर उन्होंने षड्यंत्र रचकर १४४ धारा का एक और प्रहार कर दिया।

ता: २५ सितम्बर को अलीपुर कोर्ट से पुलिस मजिस्ट्रेट द्वारा "वीर" जी को १४४ धारा का नोटिस दिया गया जिसमें शांति भंग होने के भय से उत्तर हाजारा रोड, पूर्व रसारोड, दक्षिण मे नेपाल भट्टाचार्य स्ट्रीट और सदानन्द रोड तथा रास बिहारी एवेन्यू इत्यादि स्थानों में जाने की निषेधाज्ञा की गई।

पं. रामचन्द्र शर्मा "वीर" के अनशन के सम्बन्ध में तात्कालिक राष्ट्रपति पण्डित जवाहरलाल जी नेहरू ने श्री प्रेमभक्त सुमन १ आर मिनियन स्ट्रीट कलकत्ता के पास, निम्न आशय का पत्र भेजा था—

प्रिय महाशय !

आपका पत्र प्राप्त हुआ। पशुबलि से मुझे बड़ा डर लगता है। अस्तु। पं० रामचन्द्र शर्मा "वीर" के इसका विरोध करने के प्रति मेरी सहानुभूति है किन्तु वह अनशन क्यों कर रहे हैं, यह मेरी समझ में नहीं आता। यह भी निश्चय नहीं कर सका हूँ कि उन्हें इस आन्दोलन में कैसे मदद दूं। यदि उनकी कुछ मदद कर सकता तो जरूर वैसा करता।

गवर्नमेन्ट से प्रश्न

आनरेबुल सर राजा रघुनन्दन प्रसाद सिंह जी M.C.S. K.T. तथा देशभक्त सेठ गोविन्द दास जी M.L.A. ने दिल्ली में भारतीय व्यवस्थापिका सभा (Legislative Assembly) में भारत सरकार से "वीर" जी के अनशन के सम्बन्ध में मार्मिक प्रश्न किये थे। अमेठी राज्य के राजा साहब श्रीमान्

भगवान वत्त सिंह जी महोदय युवराज श्री जंग बहादुर सिंह जी तथा राजकुमार रणञ्जय सिंह जी ने स्वयं कालीघाट में जाकर पण्डों को बहुत समय तक समझाया किन्तु कालीघाट के पण्डे पशुहत्या को बन्द करने को उद्यत नहीं हुए।

लोकमान्य का सहयोग

कलकत्ता के सुप्रसिद्ध राष्ट्रवादी पत्र "लोकमान्य" ने धर्मप्राण "वीर" जी के आन्दोलन की अधिक सहायता करने के उद्देश्य से कविताओं, लेखों तथा "वीर" जी के चित्रों को बार बार प्रकाशित कर के जो जागृति की थी उसका वर्णन करने में हम असमर्थ हैं। "लोकमान्य" के सम्पादक पूज्य पण्डित रामशंकर जी त्रिपाठी ने अपनी सम्पादकीय टिप्पणी तथा अग्रलेखों द्वारा "वीर" जी के विराट आन्दोलन में प्रभाव पूर्ण सहयोग प्रदान किया था पूज्य त्रिपाठी जी ने वीर जी के एक एक घन्टे के कार्य-क्रम को जानने के लिये अपने प्रतिनिधि नियुक्त किये थे। श्रीयुत मदनमनोहरजी मिश्र ने बार बार जाकर वीर जी के समाचारों की रिपोर्ट "लोकमान्य" को पहुंचाने का भार लिया था। लोकमान्य जैसे हिन्दू हितैषी पत्र भारत में हमें दिखाई नहीं देते।

बम्बई की ह्यूमेनिटेरियन लीग ने भी "वीर" जी को मृत्युमुख से बचाने के लिये बंगाल गवर्नर तथा वायस राय लॉर्ड विलिंगडन को १०० शब्दों के लम्बे तार दिये थे। इसके अतिरिक्त ह्यूमेनिटेरियन लीग ने बंगाल गवर्नर के नाम एक महत्वपूर्ण पत्र भेजा था। जो स्थानाभाव से यहां नहीं दिया जा सका।

माननीय राजा सर रघुनन्दन प्रसाद सिंह K. T. सभापति अखिल भारतीय आदर्श हिन्दू संघ ने शिमला से "वीर" जी को लिखा कि—"आप जल एवं दुग्धपान कर अपने जीवन की रक्षा करें और निरन्तर प्रचार कर हिन्दुओं की क्रूर प्रवृत्तियों को परिवर्त्तित कर धर्म की सेवा करें। आपकी मृत्यु से हिन्दू जाति की महान् क्षति और जीवित रहने से अपार लाभ है।

जहानाबाद में 'वीर' जी द्वारा संस्थापित शाखा ने भी अनशन छोड़ने का प्रवल अनुरोध किया। मुकामा जिला पटना के धर्म प्रेमी सेठ मुरलीधर जी ने इस वर्ष भी मालवीय जी को वार वार तार भेज कर 'वीर' जी की प्राण रक्षा के लिये प्रयत्न करने का अनुरोध किया शरीर से अस्वस्थ होते हुए भी सेठ मुरलीधर जी मुकामा से कलकत्ता गये। सेठ जी का स्नेह देख कर 'वीर' जी पुलकित हो जाते थे। लोकमान्य में प्रति दिवस ही श्री रामाशंकर जी दीक्षित "रमेश" की रची हुई 'वीर' जी के प्रति कवितायें निकलती थीं। उनमें से हम एक ही कविता स्थानाभाव के कारण यहां दे रहे हैं।

प्राण की बाजी लगा कर के वह, खेल अलौकिक खेल रहे हैं।
कोमल पंकज से तन ऊपर, कष्ट घने वहु झेल रहे हैं॥
चाहता है रुकना रथ जीवन, जो किसी भाँति ढकेल रहे हैं।
'वीर' के प्राण यही समझो तुम, हा! घड़ी और पल ठेल रहे हैं॥
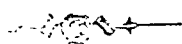
नैपाल के राजकुमार

धर्म प्राण "वीर" जी के अनशन की भीषण अवस्था हो चुकी थी गत वर्ष की भाँति ही "वीर" के दर्शनों के लिये कलकत्ता महानगर इस बार भी समुद्र की भांति उमड़ने लगा था अनशन गृह में अगणित नर नारियों की भीड़ दिन रात रहती थी। बाहर सड़क पर भी भीतर जाने के लिये कोलाहल होता रहता था। एक दिन की बात है रात के ८ बजे अनशन गृह के सामने ३ मोटरें आकर ठहर गईं। इनमोटरों से निकलने वाले दस सज्जन सभी नेपाली थे जो बड़ी गम्भीरता पूर्वक चुपचाप भीतर चले गये। उनको देख कर जनता ने भी शान्त भाव से मार्ग दे दिया नेपाली सज्जन बिना किसी से कुछ कहे ही "वीर" जी के निकट की कुर्सियों पर बैठ गये। श्रीयुत् वीरेन्द्रनाथ जी "अरुण" के पूछने पर ज्ञात हुआ कि नैपाल के राजकुमार श्रीमान् ध्रुव शमशेर जंगबहादुर राणा महोदय वीर जी के दर्शन करने पधारे हैं। ये शब्द वीर जी ने जब सुने तब उनके मुख पर प्रसन्नता की रेखा दौड़ गई। "वीर" जी को तीन व्यक्तियों ने उठा कर तकिये के सहारे बैठाया। कृष्ण भगवान् के चित्र पर एक पुष्प माला लटक रही थी उसे उतरवा कर धर्मप्राण वीर जी ने वेद मंत्र पढ़ते हुए राजकुमार को वह माला पहना दी-नैपाल के राजकुमार ने 'वीर' जी को एक घंटा तक अनशन तोड़ने का अनुरोध किया और अन्त में पशुबलि के विरुद्ध अपना मत प्रदर्शित करते हुए एक पत्र पर हस्ताक्षर कर के नैपाल के राजकुमार के जयनाद से भवन को गुंजा दिया रात के ९ बजे राजकुमार लौट गये।

मृत्यु की गोद में

चार अक्टूबर रविवार को कालीघाट के मन्दिर की पशुहत्या के विरोध में अनशन करते हुए पण्डित रामचन्द्र शर्मा "वीर" को ३६ दिन व्यतीत हो गये। उस दिन मध्याह्न में भारत के सुप्रसिद्ध राष्ट्र कवि श्री पण्डित माधव जी शुक्ल 'वीर' जी के निकट बहुत देर तक बैठे रहे। उन्होंने वीर जी से वार्तालाप कर के कष्ट देना उचित नहीं समझा क्योंकि उनका शरीर अत्यन्त क्षीण हो चुका था। इसलिये शुक्ल जी ने बैठे बैठे एक पत्र लिखा और वीर जी के हाथ में देकर पढ़ने का अनुरोध किया। उक्त पत्र में लिखा था—

वर्त्तमान युग के भीष्म,

श्रीयुत रामचन्द्र जी शर्मा "वीर"

सादर वन्दे !

आपकी ममतामयी आत्मा की भीषण प्रतिज्ञा ने इस हिंसक युग को हिला तो अवश्य दिया है। आपकी तपस्या से मूक पशुओं की हत्या करने वाले हत्यारों के हृदय पर निस्सन्देह प्रभाव पड़ेगा और एक दिन आयेगा कि वे ही आपके अनुयायी बनेंगे। परन्तु पैंतीस कोटि वाचाल पशुओं का कल्याण करने वाली आत्मा को इतने सस्ते दर पर आपने जो लगा दिया है इसके लिये मेरी एकान्त प्रार्थना है कि एक बार आप फिर विचार कीजिये। अभी अवसर है। आप देश का बहुत कुछ हित साधन करेंगे। भारतमाता की गोद आप जैसे वीर के बिना

सूनी हो जायेगी। आशा है मेरी प्रार्थना पर एक बार ध्यान देने का कष्ट करेंगे।

—आपका चिरपरिचित

४-१०-३६. माधव शुक्ल

पिछले निराशाजनक लक्षणों के अतिरिक्त वीर जी की रीढ़ की हड्डी में भी दर्द होने लगा। डाक्टरों की सम्मति थी कि यह लक्षण एक सप्ताह में मृत्यु हो जाने के हैं। प्रातःकाल श्री पुनीत लाल सिंह जी के नायकत्व में जुलूस निकल कर शहर के मुख्य स्थानों से होकर गुजरा। डाक्टर कीनिदेव जी शर्मा के तत्वाधान में सभा की कार्यवाही प्रारम्भ की गई। श्री मिहिरचन्द्र जी धीमान 'कुसुमाकर' आदि के जोरदार भाषण हुये। सभा समाप्त होकर जुलूस के रूप में परिवर्त्तित हो गई और यह जुलूस कलकत्ता के अनेक बाजारों में घूमता हुआ। अनशन गृह में पहुँचा।

"वीर" जी के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में सांगली (महाराष्ट्र) सागर (सी. पी.) मिर्जापुर और बिहार के अनेक नगरों नवादा, गोविन्दपुर, गया, हँसवा, रायपुर (सी. पी.) किशनगंज, पूर्णिया टेहटा बेगूसराय, गिरीडिह, पचंबा, भागलपुर, मुंगेर, मुजफ्फरपुर मोतीहारी, वैद्यनाथधाम, खगड़िया, सोगछिया, हरनौत टिकारी स्टेट, मुकामा, जमालपुर, सुलतानगंज, कसवा आदि में विराट सभायें कर के "वीर" जी की दीर्घायु के लिये प्रार्थना की गई।

आर्य-समाज वरगनिया (जिला मुजफ्फरपुर) ने एक विराट सभा कर के "वीर" जी से अनशन छोड़ने का अनुरोध किया

डा० कुमुद नाथ मैत्र के सभापतित्व में किशनगंज जिला पूर्णिया में एक विराट सभा हुई। जिसमें "वीर" जी को अनशन छोड़ देने का तथा कालीघाट के पण्डों के प्रति घृणा का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। बम्बई की ह्यूमेनिटेरियन लीग ने तीसरी बार जो पत्र भेजा था उसे यहां अक्षरशः दिया जा रहा है।

श्री पं० रामचन्द्र शर्मा 'वीर'
कलकत्ता।

१४७ बम्बई २
सराफ बाजार।

आपने आमरणान्त अनशन प्रारम्भ कर दिया। इससे हमको दुःख होता है। आपका मूक प्राणियों को बचाने का शुभ आदेश की कदर करते हुये हम समझते हैं कि आपका महान उद्देश की सिद्धि आपका दीर्घायुष्य में है। नहीं के आपका बलिदान में।

पं० मालवीय जी और हमलोग की प्रार्थना सुनके गत साल आपने एक वर्ष तक आमरणान्त अनशन तहकूब किया इसका कितना उम्दा परिणाम हुआ। कमसे कम एक सौ जगह में संस्थाएँ बन गई और वो आपका शुभ आशय के लिये कोशिस अपने अपने प्रान्तों में करती हैं और करेंगी और कमसे कम आपका ही प्रचार से ३०, ४० जगह पर पशु-बलिदान की रूढ़ियां नाबूद हो गई।

अब आपने ख्याल करना चाहिये कि एक साल में जब इतना परिवर्तन हो चुका तब यदि आप पाँच साल तक वैसे ही प्रचार और आन्दोलन करो तब तो हिन्द भर में से इस रूढ़ी का देशनिकाल भी हो जा सकती है।

हमेरी आपसे यही प्रार्थना है कि आप पाँच साल तक आमरणान्त अनशनव्रत को स्थगित करें और हिन्द भर में प्रचार कार्य शुरू करें इससे आपका हेतु की सिद्धी आप देख सकोगे। प्रचार कार्य में अपनी मण्डली जो आज वर्षों से इसी प्रकार से कार्य करती है वो भी शामिल रहेगी। मुझे उम्मीद है आप बम्बई वाले की इतनी प्रार्थना को जरूर मंजूर करेंगे।

निवेदक—

लल्लुभाई डी. झवेरी

प्रमुख जीव दया मंडली।

धर्मप्राण पं० रामचन्द्र शर्मा "वीर" को जब अनशन करते ३८ दिन होगये तब डाक्टरों ने रिपोर्ट दी की "वीर" जी की अवस्था इस समय बड़ी सोचनीय है। नाड़ी निर्बल हो गई है कफ का प्रकोप बढ़ गया है और साँस लेने में कष्ट होता है, शरीर की शक्ति क्षीण होगई है। छाती में जलन रहती है, हालत चिन्ता जनक है। इस समय उनका तौल घटते घटते ९४ पौंड रह गया है। अब वे अधिक दिन नहीं जी सकते कलकत्ता के पण्डित सम्मेलन के एक डेप्युटेशन ने जिसमें लगभग ५० पचास पंडित थे, "वीर" जी के समक्ष जाकर अनुरोध किया कि वे अनशन भंग कर के पशुबलि के विरुद्ध जोरों का प्रचार करें। पण्डित सम्मेलन उन्हें पूरी सहायता देने को तैयार है। इस पर "वीर" जी ने कहा कि कलकत्ता के सभी पण्डित कालीघाट मन्दिर का पहले बहिष्कार कर दें फिर मुझ से अनशन छोड़ने की चर्चा करें। रोसड़ाघाट जिला दरभंगा की विराट सभा में भी "वीर" जी को अनशन छोड़ देने का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

७ अक्टूबर को रात्रि में पुलिस के अधिकारियों ने अनशनगृह में शर्मा जी के स्वास्थ्य के विषय में छानबीन की। यह छानबीन उस अर्जी के सिलसिले में हुई जिसे रूपचंद राय स्ट्रीट के माताधार राय ने दी थी और जिसमें शर्मा जी के उपवास को आत्म हत्या का प्रयत्न बताला कर कार्यवाही करने का अनुरोध किया था। पुलिस अधिकारियों ने श्री "वीर" जी के सेक्रेटरी श्री वीरेन्द्रनाथ जी 'अरुण' सम्पादक "युवक" से देर तक पूछ ताछ की और लौट गये। अनशन के ३९ वें दिन नाडी की गति ८६ और शरीर की गर्मी साधारण से कुछ कम ९६ डिगरी थी। उस दिन खून नहीं गिरा। डॉक्टरों ने कहा कि जब तक इनके शरीर में रक्त था तब तक निकलता था अब चाकू से चीरने पर भी खून नहीं निकलेगा। अब रक्त के स्थान पर कफ अधिक आने लगा है। जी अधिक मिचलाता है और २ बार वमन भी हुये हैं। श्वांस का वेग अधिक है। मुख के भीतर छाले कंठ में दर्द और शिथिलता अधिक है। अवस्था बहुत ही चिन्ताजनक हो गई है। कभी कभी पेट में इतने जोर का दर्द उठता है कि अवस्था बहुत बुरी हो जाती है श्री शर्मा जी के दर्शनों के लिये रात के ११ बजे तक दर्शनार्थी पहुंचते रहते थे। तार और चिट्ठियों का तांता बंध गया। जैन समाज के सुप्रसिद्ध सुधारक नेता ब्रह्मचारी श्री शीतल प्रसाद जी ने श्री शर्मा जी की तपस्या को अत्यधिक बतलाई और प्रार्थना की कि पशुबलि की कुप्रथा को उठाने के लिये आपको जीवित रह कर उसके विरुद्ध प्रचार कार्य करना और इसी कार्य में जीवन लगा देना चाहिये। पूर्णिया सिटी

में श्री हरिप्रसाद जी चौधरी तथा श्री ब्रजमोहन जी मारवाड़ी के प्रयत्न से एक सभा हुई। जिसमें "वीर" जी को अनशन छोड़ देने का अनुरोध किया गया। कलकत्ता में पशुबलि के विरुद्ध घूम घूम कर प्रचार करने वाले श्रीयुत पण्डित बच्चू लाल जी पाठक वीर जी की सेवा में निरन्तर संलग्न रहते थे।

अनशन की ३९ वीं रात्रि में उनकी दशा अत्यन्त शोचनीय हो गई और वे मृत्यु की गोद में अन्तिम श्वांस लेने लगे। माता इकबाल देवी और सेठ गजानंद जी गोयनका उनकी प्राण रक्षा के लिये पागल से हो गये। श्री गंगाराम जी चूड़ीवाला तथा पण्डित रामेश्वर प्रसाद जी शर्मा और श्री वीरेन्द्रनाथ जी 'अरुण' एवं सागर के उत्साही युवक श्री लक्ष्मण प्रसाद जी वर्मा 'वीर' जी के जीवन से निराश हो गये और उन्हें विश्वास हो गया कि अब "वीर" जी मृत्यु की गोद में ही हैं। "वीर" जी की भीषण स्थिति से द्रविभूत होकर भारत लक्ष्मी सिनेमा के डाइरेक्टर कविवर "आज़ाद" जी ने जो वीरता पूर्ण उर्दू कविता प्रकाशित कराई थी वह निम्नांकित है।

हमारा काम वीरों का

(उर्दू काव्य)

सफ़ह हस्ती पे रहता है, हमेशा नाम वीरों का।
क़ज़ा का नाम होता है, खयाले ख़ाम वीरों का॥
फ़तह की मुहर होती है, सदा अंजाम वीरों का।
नहीं मुमकिन कि काम आये, कभी न काम वीरों का।

कि बन कर वीर लाया वीर है पैग़ाम वीरों का।
हमारा नाम वीरों का, हमारा काम वीरों का॥

(२)

रहूँ भूखा मरूं प्यासा, मैं मर जाऊं यह दम टूटे।
बली मेरी बलासे हो, बलि की पर रसम टूटे॥
तेरे हाथों में ऐ क़ातिल, यह खंजर दम बदम छूटे।
मगर इक सत्याग्रही की हश्र तक न कसम टूटे॥
　　यही कहना यही करना सुबह और शाम वीरों का।
　　हमारा नाम वीरों का हमारा काम वीरों का॥

(३)

ज़रा सा खार चुभने से यह इन्सां किस तरह तड़पे।
छुरी गर्दन पै चलती हो रगेजां किस तरह तड़पे॥
जो कुरबानी पे कुरबां हो वो कुरबां किस तरह तड़पे।
कोई इस दिलसे आ पूछे मेरी जां किस तरह तड़पे॥
　　मगर डरना कज़ा से है बुरा अंजाम वीरों का।
　　हमारा नाम वीरों का हमारा काम वीरों का॥

(४)

किसी की जान लेकर हो जो कुर्बानी तो क्या कहिये।
समझना गैर का जब खून हो पानी तो क्या कहिये॥
किसी का खून जम २ कर हो बर्फानी तो क्या कहिये।
अरे पत्थर दिलों ने बात ना मानी तो क्या कहिये॥
　　जहां में जन्म लेना फिर हुआ बेकार वीरों का।
　　हमारा नाम वीरों का हमारा काम वीरों का॥

(५)

लिबासे धर्म में क्या पाप की तस्वीर फिरती है ?
वलि है ये जुबानों की ये क्यों शमशीर फिरती है ?
किसी पर जुल्म करने से कभी तकदीर फिरती है ?
खबर चारों तरफ अब यह तुम्हारी बीर फिरती है ॥
वलि को बंद कर देना यही है काम वीरों का।
हमारा नाम वीरों का हमारा काम वीरों का ॥

(६)

तुम्हारे नाम पर भगवन् लगादी जान की बाजी।
ये मेरी आन की बाजी तुम्हारी शान की बाजी ॥
उधर हठ धर्म की बाजी इधर ईमान की बाजी।
मैं खेलूं जान की बाजी नहीं नुकसान की बाजी ॥
कि रुतबा जीत लेगा 'वीर' का शुभ नाम वीरों का।
हमारा नाम वीरों का हमारा काम वीरों का ॥

(७)

खुलेंगे तेरे बन्दों की यह आँखों के नहीं परदे।
पड़े हैं अक्ल पर परदे उठा परदानशीं ! परदे ॥
यह सर वे बे जुबाने का पटकते हैं जमीं पर दे।
यह खुद आजाद हो जायें जरा शिक्षा यहीं पर दे ॥
वलि पशुओं की हरगिज है न मुक्ति धाम वीरों का।
हमारा नाम वीरों का हमारा काम वीरों का ॥

अनशन की समाप्ति

कलकत्ता के विशाल जन समुदाय में सौ पचास व्यक्ति ऐसे थे जो दिन रात "वीर" जी की प्राणरक्षा और उनके उद्देश पूर्ति के लिये तनमन से प्रयत्नशील रहते थे। उन महानुभावों ने अखिल भारतीय आदर्श हिन्दू संघ द्वारा प्रकाशित कालीघाट के वहिष्कार सम्बन्धी प्रतिज्ञा पत्र पर दिन रात घूम घूम कर हिन्दू नर नारियों के हस्ताक्षर करा कर आन्दोलन की शक्ति को वढ़ाया था। उक्त प्रतिज्ञा पत्र में लिखा था—

प्रतिज्ञा

मैं धर्म से शपथ पूर्वक प्रतिज्ञा करता हूँ कि कालीघाट के काली मन्दिर में जब तक पशुवलि की घृणित वलि प्रथा प्रचलित रहेगी तव तक स्वयं मैं वहां दर्शन करने न जाऊंगा, न मन्दिर को किसी प्रकार की सहायता पहुँचाऊंगा और यथा शक्ति दूसरों को इस महापाप से बचाने का प्रयत्न करूंगा।

हस्ताक्षर... ... ...।

उपरोक्त प्रतिज्ञा पत्र पर पचास हजार स्त्री पुरुषों ने हस्ताक्षर कर के कालीघाट मन्दिर का वहिष्कार कर दिया। यह 'वीर' जी की अभूत पूर्व नैतिक विजय हुई।

महामना मालवीय जी का मर्मस्पर्शी अनुरोध पत्र

(विश्वमित्र ता: ९ अक्टूबर के अंक से प्राप्त)

आठ अक्टूबर रात्रि के ८ । बजे श्री पं. रामचन्द्र शर्मा 'वीर' ने ४० दिन के लगातार अनशन को जन प्रतिनिधियों के सम्मुख उनके प्रबल आग्रह और प्रार्थना को स्वीकार करते हुए भंग कर दिया। इस अवसर पर विभिन्न सिक्ख गुरुद्वारों के माननीय प्रतिनिधियों का एक जबरदस्त डेप्युटेशन उपस्थित हुआ था। साथ ही महामना मालवीय जी ने रोग शय्या से एक अत्यन्त मार्मिक पत्र लिख कर अपने प्रतिनिधि पण्डित हीरा वल्लभ जी शास्त्री को इस आग्रह के साथ कलकत्ता भेजा था कि वे "वीर" जी का अनशन त्याग करा कर ही वापिस लौटे। सुप्रसिद्ध दानवीर सेठ युगलकिशोर जी बिड़ला इस सम्बन्ध में बराबर सचेष्ट थे और उस रात्रि को वे उसी समय वापिस गये जबकि "वीर" जी ने सब का आग्रह स्वीकार करते हुये अपना अनशन स्थगित किया। श्रीयुक्त नारायणदास जी बाजोरिया, पण्डित सम्मेलन के प्रतिनिधि श्रीमान् नन्दलाल जी हकीम, "विश्वमित्र" संचालक श्रीमान् मूलचन्द्र जी अग्रवाल भी इसी प्रकार का आग्रह लेकर "वीर" जी के पास पहुंचे थे। विन्ध्याचल के कल्याण आश्रम के विद्वान संचालक और वान-प्रस्थी श्री स्वामी सत्यव्रत जी दो तीन दिन से खासी दौड़ धूप

तीस करोड़ हिन्दुओं के वन्दनीय
महामना महर्षि
मदनमोहन मालवीय महाराज ।

आनरेबुल सर राजा रघुनन्दन प्रसाद सिंह जी
K.T. मुंगेर ।
अध्यक्ष—अ. भा. आदर्श हिन्दू संघ ।

कर रहे थे। हिन्दू मिशन श्रीमान् स्वामी सत्यानन्द जी महाराज भी इस अभिप्राय से "वीर" जी के सम्मुख उपस्थित थे। सभी सम्प्रदायों के प्रतिनिधि उपस्थित होकर बता रहे थे कि "वीर" जी के इस दीर्घकालीन अनशन से कहां तक पशुबलि बंद हुई। श्री गजानन जी गोयनका हरिद्वार के पण्डे रामचन्द्र जी शर्मा, बालकृष्ण जी चतुर्वेदी उपस्थित थे। पण्डित भालचन्द्र जी शर्मा, श्री वीरेन्द्रनाथ "अरुण" तथा श्री रामेश्वर प्रसाद जी शर्मा और माता इकबाल देवी तो एक प्रकार से पागल ही होकर काम कर रहे थे। हवड़ा आर्यसमाज के प्रधान श्री मिहिरचन्द्र जी धीमान् तथा प्रसिद्ध अहिंसा प्रचारक श्री वनमाली राव जी पारेख पूर्ण सहयोग दे रहे थे। "वीर" जी चुपचाप पड़े हुये सब की बातें ध्यान पूर्वक सुनते रहे। इसके बाद उपस्थित सज्जनों ने एक लिखित वक्तव्य तैयार कर "वीर" जी को पढ़कर सुनाया कि किस प्रकार आपके अनशन से देश व्यापी प्रचार हुआ और असंख्य देव स्थानों में पशुबलि बन्द हो गई। स्वयं कालीघाट में ही पण्डों और प्रमाणित पुरुषों के कथनानुसार आधे से भी कम पशुओं का बलिदान होने लगा और असंख्य नर नारियों का ध्यान सदा के लिये परिवर्तित हो गया। इतनी बड़ी सफलता इस अनशन का प्रत्यक्ष फल है। लगभग पचास हजार नर-नारी हस्ताक्षर कर कालीघाट के बहिष्कार में प्रतिज्ञाबद्ध हो चुके और मुंगेर के प्रभावशाली राजा श्रीमान् सर रघुनन्दन प्रसाद सिंह जी K. T. ने भी "वीर" जी से सानुरोध किया कि, वे प्राण धारण करते हुये इस कुप्रथा की जड़ सदा के लिये काट दें

महामना मालवीय जी ने जो मर्मस्पर्शी पत्र लिखा है वह नीचे दिया जा रहा है--उन्होंने भी गुरु के नाते प्रिय शिष्य को आदेश दिया कि अनशन भंग कर इस देह को बलिप्रथा के नाश में ही लगा दें और अपनी साधना बराबर प्रचलित रखें। इन सब अनुरोधों को ध्यान पूर्वक सुनकर "वीर" जी ने एक ठंढी श्वांस ली और उन्होंने धीरे धीरे बोलते हुये सब से यह प्रतिज्ञा कराई कि जब तक कालीघाट में पशुबलि होती रहेगी तब तक वहां दर्शन करने नहीं जायँगे और न किसी प्रकार का आर्थिक सहयोग ही दिया जायगा। साथ ही पशुबलि के विरोध में यथेष्ट प्रचार किया जायगा और "वीर" जी के कार्य में पूर्ण सहयोग देते हुये उनके कार्य्य की उपेक्षा न की जायगी। इस पवित्र कार्य में विरोधियों की ओर से जो बाधाएँ उपस्थित की जायेंगी या कानूनी अड़चनें सामने लायी जायेंगी उनके प्रतिकार की चेष्टा की जायगी। इस प्रकार की प्रतिज्ञा जब प्रतिनिधियों ने स्वीकार कर हस्ताक्षर करा दिये। तब तब महामना महर्षि मदनमोहन जी मालवीय महाराजका महत्वपूर्ण पत्र श्रीमान् पं० हीरावल्लभ जी शास्त्री ने "वीर" जी को पढ़कर सुनाया।

प्रिय रामचन्द्र शर्मा 'वीर'

आशीष!

परमात्मा आपको तपस्या को सफल करें और आपका मनोरथ पूर्ण करें। मुझे खेद है कि पिछली बार जब मैं कलकत्ते गया था तब आप से मिल नहीं सका और इतने दिनों तक आपके पत्र का उत्तर न दे सका। आप तो यह जानते हैं कि

मेरा यह सिद्धान्त है कि किसी अहिंसक जीव की हिंसा नहीं होनी चाहिये और मैं भगवान से बार बार प्रार्थना करता हूँ कि सारे जगत में जीव दया के पवित्र धर्म का प्रचार हो। इसलिये आपका मन्दिरों में पशुबलि बंद कराने का प्रयत्न मुझे अत्यन्त प्रिय है। आपने पिछले वर्ष जो अनशनव्रत किया था उसका फल अच्छा हुआ था। उससे यद्यपि काली मन्दिर में पशुहत्या होना बंद नहीं हुआ था तथापि जीव बलिदान की संख्या कम हो गई थी और मेरा विश्वास है कि बहुत से लोगों के हृदय में पशुबलि को त्यागने या रोकने की दृढ़ भावना हुई थी, जो समाचार मिले हैं उनसे जाना जाता है कि आपने जो देश में घूम घूम कर पशुबलि को रुक जाने का उपदेश किया उससे भी पशुबलि बहुत स्थानों में कम हुई। ऐसी अवस्था में आपने जो कालीघाट मन्दिर की भूमि में पशुबलि बंद कराने के संकल्प से फिर से अनशनव्रत प्रारम्भ किया वह अच्छा किया। आपकी इस तपस्या से सर्वसाधारण का ध्यान पशुबलि बंद कराने की ओर खिंच रहा है। मैं आशा करता हूँ कि पिछले वर्षों की अपेक्षा इस वर्ष कालीघाट की भूमि में बहुत कम जीवों का बलिदान होगा।

आजकल मेरा स्वास्थ्य बहुत दुर्बल है इसलिये मैं इस समय कलकत्ते नहीं आऊंगा। इसी कारण मैं कई दिनों से सोच रहा था कि मैं आपको क्या संदेशा लिखूं। आज प्रातःकाल मुझको

यह प्रेरणा हुई है कि मैं आपको लिखूं कि अब, आप अनशन व्रत को समाप्त कर दें। आपके महीने या दो महीने अनशन व्रत करने से कालीघाट के मन्दिर में पशुबलि पूर्णतया बंद नहीं होगी और आपको इस शुभ काम की अभिलाषा से भी प्राण त्याग कर देना धर्म नहीं होगा। प्रत्युत पाप होगा। मैं आपको यह उपदेश करता हूँ आप दूध और फलमूल खाते हुये तब तक मन्दिरों में पशुबलि को बंद करने का अटूट प्रयत्न रखते जाइये, जब तक इस पुण्य कार्य में पूरी सफलता न प्राप्त हो, करुणामय परमात्मा का ध्यान करते हुये उनकी दया-दृष्टि की प्रार्थना करते हुये प्रयत्न करते जाइये। देश देश में नगर नगर में गांव गांव में घूम घूम कर 'संघ' स्थापित करते जाइये मुझे विश्वास है कि ऐसा करने से आपको आशातीत सिद्धि प्राप्त होगी।

इस प्रसंग में मेरी सम्मति है कि आप श्री मद्भागवत के चतुर्थ स्कंध के आठवें और नवें अध्याय का नित्य पाठ किया करें उससे आपका तपोबल बढ़ेगा। उस पुण्य कथा से यह भी उपदेश प्राप्त होगा कि ध्रुव ने किस प्रकार अपने मनोरथ सिद्धि के लिये एक साथ अनशन व्रत नहीं किया था किन्तु क्रम क्रम से हलके से हलका भोजन करते हुये परम पुरुष की उपासना की थी। "कलौ अन्न गतः प्राणः" कलियुग में प्राण अन्न के आश्रित है इसलिये बहुत वर्षों तक अनशन व्रत किसी भी विचार से उचित नहीं है।

जब मैं पिछले वर्ष आप से मिला था तब आपने मुझको गुरुभाव से सम्मानित किया था। उस बात को स्मरण करके

हां मैं अत्यन्त प्रेम से आपको उपदेश करता हूँ कि आप अनशन व्रत को समाप्त कर दें। उसके स्थान में गो-दुग्ध और फलमूल के आहार का व्रत नियमित समय के लिये ग्रहण करें और जब जहां जहां आवश्यकता हो वहां वहां पशुवलि निषेध के पवित्र सिद्धान्त का प्रचार करें जगत्पिता के वचन विहीन असहाय पशु सन्तान की रक्षा की प्रणाली को पुष्ट करें। मैं आशा करता हूं कि मेरे ये वचन आपके मुख्य कार्य में सहायक होंगे।

आपके व्याख्यान और आन्दोलन को रोकने के लिये जो १४४ धारा की आज्ञा निकली है वह मेरी सम्मत्ति में उचित नहीं है मुझे आशा है कि उसे हटाने के लिये उचित रीति से आन्दोलन करने में सफलता प्राप्त होगी। इस पत्र को मैं अपने प्रिय मित्र श्री पण्डित हीरावल्लभ जी शास्त्री द्वारा भेजता हूं। वे आपको मेरा पत्र भी सुनायेंगे और ध्रुव की कथा भी सुनाएंगे। मैं आशा करता हूँ कि सर्वान्तरयामी भगवान के अनुग्रह से इस पत्र और कथा से आपको समय और धर्म के अनुकूल उपदेश प्राप्त होगा।

जितने आपके प्रेमी हैं उन सब को उपदेश कीजिये कि वे स्थान २ में जीव दया विस्तारक संघ या जीव वलि निरोधक संस्थाएं स्थापित कर जनता में उत्साह के साथ पशुवलि निरोध का प्रबल प्रचार करें।

आश्विन कृष्ण ७	आपका हितचिन्तक
सम्वत् १९९३ विक्रमी	मदनमोहन मालवीय, काशी।

पूज्य मालवीय जी महाराज के पत्र को सुन कर वीर जी शान्त होकर कुछ सोचने लगे इतने में सिक्ख सरदारों के डेपुटेशन में से एक सज्जन ने खड़े होकर वीर जी को निम्नलिखित पत्र पढ़ कर सुनाया।

सिक्खों के शिष्टमंडल का अनुरोध पत्र

ॐ श्री वाहि गुरु जी की फतह

श्री गुरु सिंह सभा
नं० २१ राम विहारी एवेन्यू
कलकत्ता ता: ८-९-३६

प्यारे वीर जी!

सत श्री अकाल, प्रार्थना है कि जिस प्रकार इस भारतवर्ष में धर्म के विरुद्ध कई प्रकार की कुप्रथाएं प्राचीन काल से चली आ रही हैं और उनके बन्द करने के लिये समय समय पर शूर वीर पुरुष कई प्रकार के कष्ट उठाते आ रहे हैं उसी प्रकार आपने भी कालीघाट मन्दिर की पशुहत्या को दूर करने के लिये अपने अमूल्य शरीर की आहुति देने का निश्चय किया है। आपकी इस कठिन तपस्या से जहाँ प्रत्येक व्यक्ति का हृदय आपकी ओर आकर्षित हो गया है वहां हमलोग समस्त सिक्खों की ओर से आपके इस आत्म बलिदान की हृदय से प्रशंसा करते हैं।

ये भयंकर कुप्रथा जिसके विरुद्ध आपने अपना अमूल्य जीवन भी त्याग देना आवश्यक समझा है; सहसा बन्द हो जाना कठिन है क्योंकि ऐसी प्रथाएं पुरातन समय से चली आ रही

है इसलिये हमलोग विनती करते हैं कि आप इस कुप्रथा को बन्द करने के लिये प्रयत्न तो अवश्य करें किन्तु अपने शरीर को त्याग देने की तपस्या को बन्द कर के प्रचार द्वारा कार्य करें जिससे प्राण देने की अपेक्षा आप जीवित रह कर जनता के लिये लाभदायक सिद्ध हों।

इसलिये श्री गुरु सिंह सभा कलकत्ता आपसे विनती करती है कि आप हमारी इस विनय को स्वीकार कर के और हमारे डेपुटेशन के सामने अमृत पान कर के अपने द्वार पर आये हुये सेवकों के उत्साह को बढ़ाइये, आवश्यकतानुसार कार्य-क्रम बना कर आन्दोलन को संचालित करें जिससे सफलता प्राप्त हो।

हम आशा करते हैं कि आप श्री गुरु सिंह सभा कलकत्ता के इस शुभ-प्रयत्न को सफल बनाते हुये अपने द्वार पर आये हुए सेवकों के उत्साह को बढ़ाएंगे जिससे हमलोग आपके अत्यन्त कृतज्ञ होंगे।

भगत सिंह

Secretary Guru Singh Sabha Calcutta.

तदनन्तर वीर जी को कलकत्ता के प्रतिष्ठित पुरुषों ने आश्वासन दिया कि काशीपुर (कलकत्ता) की माता चित्तेश्वरी देवी तथा उन देवस्थानों में ही दर्शन करने जायेंगे जहाँ पशुबलि बन्द कर दी गई है। इसी समय सेठ युगल किशोर जी बिड़ला आदि कलकत्ता के पचासों श्रेष्ठ पुरुषों ने प्रतिज्ञा की कि हमलोग कालीघाट मन्दिर का पशुबलि बन्द न होने तक बहिष्कार रक्खेंगे

माननीय सेठ युगलकिशोर जी बिड़ला ने बहुत समय तक वीर जी को अनशन छोड़ने का अनुरोध किया।

तब वीर जी ने श्री स्वामी सत्यानन्द जी विन्ध्याचल के स्वामी सत्यव्रत जी तथा सेठ युगल किशोर जी बिड़ला द्वारा दिया हुआ चार बून्द निम्बू का रस वेद ध्वनि और जय घोष के बीच पिया। इसी समय सिक्खों के समूह ने सत्त श्री अकाल की ध्वनि से वातावरण को आनन्दमय बना दिया।

चारो ओर हर्ष प्रगट हो रहा था और ईश्वर को धन्यवाद दिया जा रहा था तथा पं० बालकृष्ण चतुर्वेदी का बधाई गान सुनकर सब आनन्द मग्न हो रहे थे। लगभग ९ बजे सब कार्य समाप्त हुआ।

मृत्यु का विकराल रूप

अनशन समाप्त होने के थोड़े ही समय के बाद लगभग ९। सवा नौ बजे 'वीर' जी मूर्छित हो गये। मटियाबुर्ज के केशोराम कॉटन मिल के प्रमुख कार्यकर्त्ता श्रीमान् पं० रामकृष्ण जी शर्मा तथा आदर्श हिन्दू संघ के कई कार्यकर्त्ता इधर उधर डॉक्टरों के पास दौड़े। "वीर" जी के मुख में अनार का रस चमची से डाला गया। रस के पेट में जाते ही उन्हें बड़े जोर से वमन होने लगी। दिन के १० बजने के उपरान्त उन्हें बार बार वमन होने लगी, हाथ पैर ठंढे होने लगे और उनकी स्मृति नष्ट होने लगी। दिन रात समीप रहने वालों को वे भूल गये। उनकी स्थिति भीषण होती चल गई। रात के समय वीर जी की भीषण
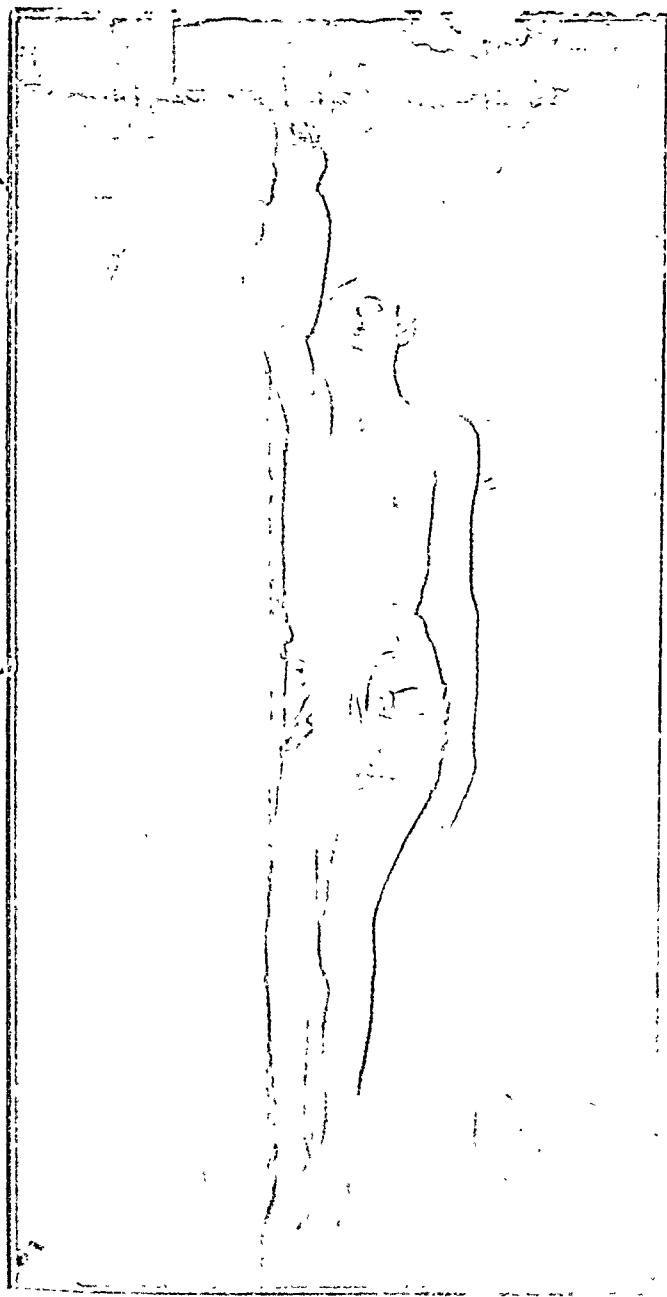
स्थिति देख कर "अरुण" जी तथा सागर के लक्ष्मण प्रसाद जी पं० रामेश्वर प्रसाद शर्मा तथा सेठ गजानन जी गोयनका डाक्टरों और वैद्यों को बुलाकर लाये। रात के बारह बजे तक वैद्यों और डाक्टरों में चिकित्सा प्रणाली पर विवाद होता रहा। अन्त में "वीर" जी को विशुद्धानन्द मारवाड़ी अस्पताल में भर्ती करने का निश्चय हुआ। ता: १५ अक्टूबर को "वीर" जी विकृत मस्तिष्क (पागल) हो जाने पर कालीघाट के मन्दिर को तोड़ देने और पशुबलि प्रथा के प्रवर्तकों को देश निर्वासित कर देने की अनियमित बातें करने लगे। ऐसी स्थिति में उन्हें प्रातःकाल के ९ बजे विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल में प्रविष्ट किया गया। अस्पताल में प्रवेश करने के समय पूज्य "वीर" जी का तौल ८४ पौंड ही रह गया था। जीवरक्षा के सुयोग्य प्रचारक पं० बच्चूलाल जी पाठक लंगड़े होते हुये भी वीर जी की सेवा का कार्य दिन रात कर रहे थे। आदरणीया माता इकबाल देवी चिन्ता मग्न थी।

ता: १७ अक्टूबर की रात में पं० रामेश्वर प्रसाद शर्मा का तार पाकर "वीर" जी के पूज्य पिता महन्त महाराज श्रीमान् भूर जी स्वामी कलकत्ता आ गये। पिता जी के आगमन का दृश्य अत्यन्त करुणा जनक था।

एक सप्ताह के उपचार एवं वैद्यों की चिकित्सा के फलस्वरूप "वीर" जी स्वस्थ होने लगे।

आश्विन की पूर्णिमा को "वीर" जी ने अस्पताल का त्याग कर दिया और वे सेठ गजानन्द जी गोयनका के श्रद्धा-भाव के वशीभूत होकर उनकी कोठी पर आ गये जहां पर उनकी सेवा

का समुचित प्रबन्ध और चिकित्सा की व्यवस्था की गई। सेठ गजानन्द जी गोयनका ने सुयोग्य वैद्यों के निरीक्षण में वीर जी की श्रद्धा भक्ति पूर्वक सेवा की थी।

भीषण संघर्ष और वार वार अनशन

शरीर के स्वस्थ होते ही पूज्य पण्डित जी पशुवलि के विरुद्ध देश भर में दौरा करने के लिये तत्पर हो गये। ता० १ नवम्बर को दिन के २ वजे मटियाबुर्ज के केशोराम कॉटन मिल्स के विद्यालय में स्काउटों द्वारा उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर देने के उपरान्त विराट सभा में अभिनन्दन किया गया और वीर 'जी' को विश्वास दिलाया गया कि मटियाबुर्ज के हजारों मजदूर आपके अनशन के समय कालीघाट मन्दिर नहीं गये थे। उसी दिन सायंकाल के ५ वजे काशीपुर में कई हजार हिन्दुओं की विराट सभा में "वीर" जी का स्वागत किया गया। रात में श्री चित्तेश्वरी देवी के मन्दिर में (जहां "वीर" जी के हाथों से वद्ध स्तम्भ जलाया गया था) "वीर" जी का मन्दिर के संचालक श्री भूपेश्वर जी घोष, श्रीमती विल्लो रानी देवी तथा श्री पञ्चानन वावा ने, हार्दिक स्वागत किया। तदन्तर एक वहुत बड़े जुलूस द्वारा "वीर" जी को एक सुसज्जित मोटर में वैठा कर काशीपुर के वाजारों में घुमाया गया। जुलूस में कई हजार हिन्दू सम्मिलित थे। कलकत्ता से विदा होकर धर्मप्राण "वीर" जी ता० २ नवम्बर को वैद्यनाथधाम पधारे। उनके आगमन की सूचना पहले ही दिन तार द्वारा पहुंच गई थी इसलिये प्रातःकाल ३ वजे ही सर्दी और अंधेरा होते हुए भी

सेठ ठाकुरमल जी नेवर, सेठ जोहारमल जालान सरीखे सम्मान-नीय वयोवृद्ध भद्र पुरुष एवं अनेक युवक जसीडीह जक्शन पर पहुंच गये थे। पण्डित जी के पूज्य पिता इसी ट्रेन से अपने निवास स्थान बैराठ को लौट गये। "वीर" जी को सेठ जुहार मल जी जालान के आनन्द भवन में ठहरा कर श्री मदनलाल जी सराइया, मंत्री आदर्श हिन्दू संघ ने, वैद्यानाथधाम के सुप्रसिद्ध महानुभावों का डेप्युटेशन ले जाकर "वीर" जी को १ सप्ताह तक वैद्यनाथधाम रह कर स्वास्थ्य सुधारने का प्रबल अनुरोध किया। १ सप्ताह तक स्वास्थ्य सुधार के अनन्तर 'वीर' जी कार्य क्षेत्र में कूद पड़े। उन्होने वैद्यनाथधाम की बड़ी चार सभाओं में भाषण देकर गिरिडीह पचम्बा को प्रस्थान किया। पचम्बा गोशाला के गोपाष्टमी महोत्सव को सफल कर के आप भागलपुर, मुंगेर, जमालपुर, सुलतानगंज, लक्खीसराय, मुकामा, मोर, मथुरापुर, तेघड़ा, खगड़िया, नौगछिया किशनगंज, कटिहार आदि नगरो में १ मास तक प्रबल प्रचार कर के मिर्जापुर पधारे। पौष शुक्ला ८ को मिर्जापुर से २० कोस दूर ड्रामंडगंज के निकट गड़बड़ा नामक शीतला देवी के मेले में, पधारे। उक्त मेले में प्रति वर्ष आठ सौ नौ सौ बकरे कटते थे। "वीर" जी महाराज के उपदेशों को सुन कर तथा उनके सत्याग्रह को देख कर लगभग पांच सौ बकरे जीवित ही लौटा दिये गये और हत्या न करने को जनता ने प्रण कर लिया किन्तु नरपिशाच पंडों ने "वीर" जी की दृष्टि बचा कर वधस्थल को छोड़ कर दूसरे स्थान पर बकरा काटने का प्रबन्ध किया। बकरा कटने के ठीक समय "वीर" जी वहां पहुंच गये और उन्होंने हत्यारे की तलवार के नीचे अपना

सिर झुका दिया। छीना झपटी में तलवार के प्रहार से "वीर" जी का झण्डा कट गया और बकरे की गर्दन में भी चोट आ गई।

घायल हुये बकरे को "वीर" जी बचाना चाहते थे और हत्यारा उसे काटना चाहता था। "वीर" जी भी पागलों की तरह हत्यारे से चिपट गये और उसकी गर्दन पकड़ कर एक हलवाई की दूकान के निकट पछाड़ दिया। बकरी का बच्चा खड़ा खड़ा चिल्ला रहा था और उसके कंठ से रक्त की धारा बह रही थी।

मेले में आई हुई जनता खड़ी खड़ी देख रही थी और हत्यारे के साथ "वीर" जी का युद्ध हो रहा था। यह संघर्ष किसी भीषण रूप को धारण करने ही वाला था, सहसा पुलिस के १ मुसलमान इन्स्पेक्टर ने पण्डों से पचास रुपये लेकर 'वीर' जी को गिरफ्तार कर लिया और २ घण्टा के उपरान्त उन्हें आदर्श हिन्दू संघ के तम्बू में पहुँचा आये। "वीर" जी ने हत्यारे के शरीर से स्पर्श होने के प्रायश्चित स्वरूप मिर्जापुर के प्रसिद्ध स्थान लोहन्दी महावीर जी के मन्दिर में ५ दिन तक निर्जल अनशन किया।

ता: २५ दिसम्बर शुक्रवार को दिन के ४ बजे मिर्जापुर के घंटाघर के पार्क में कई हजार हिन्दुओं की सभा में "वीर" जी का स्वागत किया गया और युक्तप्रांतीय पशुवलि निरोध समिति को तोड़ कर युक्तप्रान्तीय आदर्श हिन्दू संघ की शाखा स्थापित की गई। मिर्जापुर में विन्ध्याचल की पशुवलि के विरुद्ध चैत्र के नवरात्र पर भीषण सत्याग्रह की प्रतिज्ञा करके

श्री धर्मप्राण पण्डित रामचन्द्र शर्मा "वीर" ने अपने पूज्य पिता जी के स्थान पर २ वर्ष के उपरान्त वैराठ प्रस्थान किया। वैराठ में मुसलमानों ने "वीर" जी के निवास स्थान 'भारती भवन के निकट देव मूर्तियों पर मांस के टुकड़े और हड्डियां फेंक कर "वीर" जी को उत्तेजित कर दिया। मुसलमानों के इस नीचतापूर्ण मनोवृत्ति के विरुद्ध उन्होंने ४ दिन तक निर्जल उपवास किया। फलस्वरूप वैराठ में "भीम दल" की स्थापना हुई। हिन्दू संगठित हो गये और मुसलमानों को परास्त होना पड़ा। वैराठ में १ मास रह कर पण्डित रामचन्द्र शर्मा "वीर" नसीराबाद, रतलाम, मंदसौर, सोतामउ इन्दौर, प्रतापगढ़, महेश्वर, खरगोन आदि नगरों में देव मन्दिरों में होने वाली पशुहत्या के विरुद्ध आदर्श हिन्दू संघ की शाखाएं स्थापित करते हुए पुनः मिर्जापुर लौटे और उन्होंने विन्ध्याचल के मेले में विन्ध्यवासिनी देवी के मन्दिर में प्रति वर्ष होने वाली पांच हजार बकरों की हत्या के विरुद्ध चैत्र के नवरात्र में ताः ८ अप्रैल को निर्जल अनशन प्रारम्भ कर दिया। आपके अनशन से पण्डों में दो दल हो गये। एक दल ने पशुबलि करने को अपना सनातनधर्म ही मान लिया किन्तु दूसरा दल कहने लगा कि यदि बलि प्रथा बंद हो जाय तो अच्छा है। 'वीर" जी ने नवरात्र के अवसर पर ९ दिन तक उपवास करने का संकल्प किया था। उनके ९ दिन के उपवास से विन्ध्याचल में मेले के अवसर पर आने वाले हजारों पण्डितों ने 'वीर' जी के समक्ष प्रतिज्ञा की थी कि भविष्य में हमलोग विन्ध्याचल नहीं आवेंगे। अनशन के प्रभाव से जहां नवरात्र में पांच हजार

बकरे कट जाया करते थे, वहां केवल तीन सौ ही बकरे काटे गये। अनशन की निर्बलता के दूर होते ही "वीर" जी कालीघाट के मन्दिर पर सत्याग्रह करने के लिये सत्याग्रही युवकों को एकत्रित करने के हित बिहार प्रान्त लौटे। बिहार प्रान्त के कई नगरों से आपने लगभग दो सौ सत्याग्रही युवक कालीघाट पर सत्याग्रह करने के लिये एकत्रित कर लिये किन्तु ठीक समय पर "वीर" जी के साथ जेल में जाने के लिये २० युवक ही निकले।

ता० ५ अक्टूबर १९३७ को "वीर" जी ने कालीघाट मंदिर पर सत्याग्रह ठान दिया। ७ अक्टूबर को कालीघाट मन्दिर के द्वार पर दिन के १० बजे धर्मप्राण "वीर" जी कालीघाट के पचासों पण्डों द्वारा बुरी तरह से पीटे गये और मूर्च्छितावस्था में पुलिस-द्वारा गिरफ्तार करवा कर अलीपुर सेन्ट्रल जेल में भेजे गये। अनुयायी ५० युवकों को भी कालीघाट के पण्डों ने लाठी और डंडों से पीटपीट कर जेल में भिजवाया था। सभी युवकों को एक एक सप्ताह की जेल हुई था। इन युवकों म १८ सेवक जेल से छूट कर दूसरी बार कालीघाट मन्दिर पर फिर सत्याग्रह करने लगे और बुरी तरह पिटे जाकर दूसरी बार फिर अलीपुर सेन्ट्रल जेल में भेजे गये। इस प्रकार यह सत्याग्रह दीपावली तक होता रहा। "वीर" जी के अनन्य अनुरागी बिहार के ५० युवकों ने बार बार सत्याग्रह करके मुकदमे बाजी में पण्डों के हजारों रुपये स्वाहा करवाडाले और पशुबलि की संख्या इस बार के नवरात्र में अत्यन्त कम हो गई। "वीर" जी के अनशन के पूर्व आश्विन के नवरात्र के अवसर पर आठ

नौ हजार बकरे कट जाया करते थे। किन्तु दो बार के अनशन तथा तीसरी बार के सत्याग्रह के फलस्वरूप सन् १९३७ के नवरात्र में केवल एक सौ सैंतीस ही बकरे कालीघाट में काटे गये। इस सत्याग्रह का विस्तृत वर्णन वीर जी ने विकट यात्रा के द्वितीय खंड में स्वयं किया है जो भयानक है।

धर्मप्राण पं० रामचन्द्र जी शर्मा "वीर" को अलीपुर सेन्ट्रल जेल में भी १३ दिन तक अनशन करना पड़ा। अनशन का कारण कलकत्ता के प्रतिष्ठित पुरुषों और नेताओं का विश्वासघात था, जिन्होंने धर्मप्राण "वीर" जी के दो बार के भीषण अनशन भंग कराये थे। अलीपुर सेन्ट्रल जेल से हथकड़ियां पहिनाकर हुगली जेल को आप भेजे गये। जेल में तीन महीने और एक सप्ताह तक अनेक आपत्तियों और अगणित बाधाओं का सामना करते हुये धर्मप्राण "वीर" जी ता: १३ जनवरी १९३८ को बन्दी गृह से मुक्त हो गये।

वीर की विजय

धर्मप्राण "वीर" जी के विराट आन्दोलन से हजारों मन्दिरों की पशुबलि सदा के लिये बन्द हो चुकी है। लाखों स्त्री-पुरुष मांसाहार का त्याग कर चुके हैं। पूज्य "वीर" जी का एक एक क्षण पशुओं की रक्षा में व्यतीत हो रहा है। कालीघाट के आन्दोलन में "वीर" जी की विजय हुई है। जो लोग शताब्दियों से बलिप्रथा के कट्टर पक्षपाती थे वे आज विरोधी बन गये हैं। लाखों मनुष्य कालीघाट मन्दिर का बहिष्कार कर चुके हैं। "वीर" जी के विराट आन्दोलन के

पूर्व कालीघाट मन्दिर में प्रति दिन सौ पचास बकरे कट जाते थे किन्तु अब प्रतिदिन चार पांच ही कटते हैं। यह विजय नहीं है तो क्या है? इस ग्रंथ के आगामी अध्याय अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं जिसे पढ़ने से इस महान् आन्दोलन की सफलता एवं पूज्य वीर जी की वीरतापूर्ण विजय का परिचय प्राप्त होगा।

पिशाचों की लीला

कभी कभी यह सुना जाता है कि "वीर" जी जैसे महापुरुष एक तुच्छ बात के लिये अपने अमूल्य जीवन को क्यों नष्ट कर रहे हैं? यदि 'वीर' जी पशु पक्षियों के पचड़े को छोड़कर मानव-हित साधन का आन्दोलन करते तो उनकी तपस्याओं और सेवाओं का अधिक मूल्य होता। इस अध्याय में अब यही दिखलाने का प्रयत्न किया जायेगा कि पशुबलि की राक्षसी प्रथा के प्रताप से ही भारतवर्ष में नर-बलि प्रथा का प्रचार हुआ और दुर्गा, काली, भैरव आदि देवताओं के समक्ष प्रति वर्ष पवित्र भारतभूमि में सौ दो सौ मनुष्यों की हत्याएं की जाती है। जिस समय धर्मप्राण "वीर" जी का आन्दोलन सफल हो जायगा। उस दिन पशुबलि के साथ ही साथ नर-बलि प्रथा भी उठ जायगी। हम यहां पर धर्मान्धता के कुछ पैशाचिकता पूर्ण उदाहरण देते हैं—

लड़की का बलिदान

टुनी (मद्रास) १९ अक्टूबर सन् १९३५,

अन्नावरम् नामक स्थान में एक पुजारी ने स्थानीय स्कूल के हेडमास्टर की एक ९ वर्षीया लड़की का गला काट कर महाकाली

को चढ़ा दिया। यह दुर्घटना दुर्गापूजा के अवसर पर विजया दशमी को हुई।

लड़की की लाश उसी गांव में एक ताड़ के पेड़ के नीचे गाड़ दी गई थी। बाद में खोज करते हुये पुलिस ने उस स्थान को खुदवाया और लाश निकाली। पुलिस ने महाकाली के पुजारी, उसके भाई और कई व्यक्तियों को गिरफ्तार कर लिया। "विश्वमित्र" दैनिक, कलकत्ता।

× × × ×

जबलपुर २५. मार्च १९३६

ग्वालियर से एक भयंकर समाचार आया है कि खरका गांव के पास के एक देवी के मन्दिर में डाकुओं के दल ने लल्लू प्रसाद नामक व्यक्ति को पकड़ लिया और बलपूर्वक देवी जी के सामने जानवर की तरह बांध दिया तथा गोली से मार कर उसका बलिदान कर दिया। 'अखण्ड भारत' बम्बई।

२७ ३ ३६

× × × ×

लड़के के खून से स्नान, बच्चे की मां बनने के लिये

पटियाला ५ जून—

मुहल्ला चौड़ा करवल से एक सनसनी पूर्ण खबर मिली। वहां एक कलीलपरिवार की स्त्री संतान से वंचित थी। उसे एक साधू ने कहा कि अगर तू किसी के बच्चे के खून से स्नान करे तो संतान होगी।

एक लड़का स्कूल से वापिस आ रहा था कि उस स्त्री ने उसे मकान में दाखिल कर लिया और तेज चाकू से उसके

शरीर से खून निकालना शुरू कर दिया। साधू का आदेश पूरा कर उस राक्षसी ने बच्चे को छोड़ दिया वह चिल्लाता हुआ अपने घर गया। लड़के के पिता ने उस स्त्री पर मुकदमा दायर कर दिया।

"विश्वमित्र" ताः ६ जून १९३६।

× × × ×

देवी के सामने नर बलि

दिल्ली १८ जून,

उज्जैन में क्षिप्रानदी के रेलवे पुल के पास भूखीमाता के नाम से एक देवी के प्रगट होने का अंधविश्वास तीन चार वर्षों से चल रहा है और अक्सर लोग वहां दर्शन करने जाते हैं। गत १० जून की रात को कुछ गुंडे एक नवयुवक को बहका कर वहां ले गये और भूखीमाता की पूजा करके उन लोगों ने उस युवक का सिर काट कर माता को भेंट चढ़ा दिया। रात को उधर से आने वाले राहगीरों से इसकी खबर पाकर पुलिस घटना स्थल पर पहुँची और उसने लड़के की लाश को देख कर आस-पास जब खोज की तो एक बाबा जी, दूसरा नैपाली तथा अन्यान्य आदमी वहां मिले। पुलिस ने उन चारों को गिरफ्तार कर लिया। ज्ञात हुआ है कि इन गुंडों ने धन प्राप्ति के लिये भूखी माता के सामने मनुष्य की वलि चढ़ाने और बाद में आस पास की जमीन खोद कर गड़ाधन निकालने का निश्चय किया।

"विश्वमित्र" आषाढ़ कृष्ण अमावस्या
सम्वत् १९९४ विक्रम्

× × × ×

भयंकर नर बलि

सिरसा (इलाहाबाद) १० जुलाई,

यहां के एक प्रतिष्ठित वैश्य श्री कल्लू लोहिया के बेटे की हत्या स्थानीय एक नाई ने कर डाली। उक्त लड़के को जिसकी आयु १० वर्ष की थी, नाई ने दिन दोपहर को दाव से गले पर वार कर गले को काट डाला। उसके गले में फूल माला पहिना कर उसे एक स्थान पर रख दिया था। पता लगाने पर पुलिस ने लड़के की लाश बरामद की और डाक्टरी परीक्षा के लिये इलाहाबाद भेज दी। हत्यारा गिरफ्तार कर के जेल में भेजा दिया गया।

"विश्वमित्र" श्रावण कृष्ण ११
सम्वत् १९९३ विक्रम

× × × ×

नर बलि का दण्ड

अभियुक्त को कालापानी

बोलनगिरी (उड़ीसा) ४ अगस्त,

पटना स्टेट के सेशन्सजज्ज मि० एम. जी. चन्द्र ने पीला मागर नामक व्यक्ति को एक देवता को प्रसन्न करने के लिये एक लड़के की हत्या के अपराध में आजीवन कालेपानी की सजा दे दी। उक्त बालक का नाम बलभद्र मेहर था और वह ११ वर्ष का था।

"लोकमान्य" दैनिक कलकत्ता।
भाद्रपद कृष्ण २ सं० १९९३ वि०

× × × ×

अन्धविश्वास की हद

अभियुक्त को फांसी की सजा

सलेम (मद्रास)

स्थानीय दौरा जज ने होसुक तालुक के वेन नगर के मुनि अप्पा नामक व्यक्ति को इसलिये फांसी की सजा दे दी कि उसने अपनी झोंपड़ी में गड़ा खजाना पाने के लिये और देवता को प्रसन्न करने के लिये ६ महीने के निरीह बच्चे की बलि चढ़ा दी।

"विश्वमित्र" २५ अगस्त १९३६ ई.

× × × ×

देवघर ९ सितम्बर,

यहां के श्री यतीन्द्र मोहनदास की एक आठ वर्ष की लड़की मरी हुई इन्द्रासन नदी में पाई गई। इस सम्बन्ध में वैद्यनाथ धाम का १ पण्डा गिरफ्तार किया गया।

"लोकमान्य"
भाद्रपद कृष्ण ११ सं० १९९३ वि०

× × × ×

नीचता का नंगा नाच

धर्मप्राण पं० रामचन्द्र जी शर्मा 'वीर' पर लाठियों की वर्षा

तारीख ९ अगस्त १९३८ मंगलवार की सन्ध्या में ५ बजे गया के श्री वागेश्वरी मन्दिर से पशुबलि के विरुद्ध सत्याग्रह कर के श्री 'वीर' जी अपने अनुयायियों के साथ बगलामुखी देवी के मन्दिर पर पशु-हत्या के विरुद्ध सत्याग्रह

करने गये। उनके पहुंचते ही बगुलामुखी देवी के पुजारी ने अपने आदमियों को आज्ञा दी कि इनलोगों को मारपीट कर भगा दो और यदि ये न जाना चाहें तो इनके मुंह में मांस ठूँस दो।

देखते देखते पण्डित जी पर लाठी और ईंटों की वर्षा होने लगी। उनके बेहोश होकर गिर जाने पर भी उन पर लाठियां पड़ती रहीं। कुछ देर मे लाठियों के बन्द होने पर पण्डित जी उठ कर मन्दिर से गया शहर की ओर आने को तत्पर हुये। उनके सभी साथी लाठियों के सामने न ठहर कर पृथक हो गये थे। मन्दिर के पुजारी ने फिर आज्ञा दी "इसे जीवित न जाने दो।" मारो मारो, धर्मप्राण "वीर" जी वहीं पर खड़े रह गये और वे दस मिनिट तक पच्चीसों लाटियों के प्रहार अपनी हथेलियों तथा पीठ पर सहते रहे। इतने ही में उनके मस्तक पर एक लाठी का जोरदार प्रहार हुआ जिससे उनका सिर फट गया और वे चक्कर खाकर पृथ्वी पर गिर पड़े। उनके गिर जाने पर भी उनके माथे के केस नोच नोच कर उखाड़े गये और लातों के प्रहार किये गये। बगुलामुखी देवी का पुजारी खड़ा खड़ा हंस रहा था। पण्डित जी को मूर्छितावस्था में रिक्से पर डाल कर पहले कोतवाली फिर गया के बड़े अस्पताल में पहुंचाया गया। दो घन्टे बाद उन्हें होश आया।

सहयोग न देंगे। "वीर" जी ने हंसते हुये कहा मेरे ऊपर आक्रमण करने वाले मेरे शत्रु नहीं हैं, मेरा तो विरोध निरपराध पशुओं की हत्या से ही है यदि मुझे मारपीट कर कोई भाई मांस भक्षण तथा मन्दिरों की पशुवलि का त्याग कर दें तो मैं प्रति दिन मार खाने और मूर्छित होने में अपना धन्य भाग्य समझूंगा।

उक्त अत्याचार के विरोध में सनातनधर्म सभा गया के मन्त्री जयराम सहाय जी मुख्तार, आदर्श हिन्दू सङ्घ गया शाखा के मन्त्री श्री गोविन्द प्रसाद जी अम्बष्ट, सेठ विहारीलाल जी अग्रवाल, मानपुर के पण्डित श्यामदत्त जी मिश्र हिन्दू सभा के प्रधान तथा अखिल भारतीय आदर्श हिन्दू सङ्घ के प्रधान मंत्री डा० केदारनाथ जी पालित, रिलीफ सोसायटी के सेक्रेटरी लाल लक्ष्मीनारायण जी खण्डेवाल तथा गया के प्रतिष्ठित पुरुषों की एक सम्मिलित विज्ञप्ति प्रकाशित हुई जो हजारों की संख्या में बांटी गई थी। गुलराज वालमुकुन्द फर्म के मालिक श्रीमान् सेठ विहारीलाल जी ने वीर जी की सेवा का समयोचित प्रबन्ध किया था सेठ जी ने कई हजार विज्ञापन भी पशुवलि के विरुद्ध बंटवाये थे।

गया के हैलेट टाउन हॉल में तारीख १६ अगस्त मंगलवार को दिन के चार बजे लगभग पांच हजार हिन्दुओं की एक महती सभा हुई। सभापति का आसन देशभक्त डाक्टर केदारनाथ पालित, एम.बी.एच.ए. (लन्दन) एम.आई.एच.एल. ने ग्रहण किया था। उक्त सभा में "वीर" जी भी अस्पताल से आ गये थे। सभा के प्रारम्भ में ही गया के चार-पाँच मांसभक्षी वकील, बैरिस्टरों

ने बड़ा हल्ला मचाया था; किन्तु "वीर जी के मधुर भाषण से उनके हृदय द्रवीभूत हो गये और उन्होंने पश्चाताप करते हुये पशुबलि विरोधी प्रस्ताव पास होते समय पशुबलि विरोध में अपना मत दिया।

इसी सभा में गया के दुःखहरिणी देवी के पुजारी ने "वीर" जी को अपने मंदिर में सदा के लिये पशुबलि बन्द करने का विश्वास दिलाया।

हजारों कण्ठों से निकली हुई तुमुल जयध्वनि "टाउन हाल" के वायु मण्डल में गूंज उठी।

प्राण-रक्षा

तरुण तपस्वी धर्मप्राण पण्डित रामचन्द्र जी शर्मा "वीर" के विराट आन्दोलन के फलस्वरूप जिन धर्म स्थानों में जीव बलि (जीव हत्या) बन्द हुई है उनकी संक्षिप्त सूची को पढ़ने से ज्ञात होगा कि "वीर" जी की कठोर तपस्या के फलस्वरूप किस उग्र गति से भारत के हजारों मन्दिरों की भीषण पशुबलि का मूलोच्छेद हो गया है। यथा—

(१) श्री श्री चित्तेश्वरी माता (काशीपुर) कलकत्ता के मन्दिर का वधस्तम्भ (खूंटा) "वीर" जी के हाथ से दीपावली सं० १९९२ विक्रमी में उखाड़ा गया। मन्दिर के ट्रष्टी श्री पञ्चानन बाबा, श्रीमती बिल्वरानी देवी तथा श्री भूपेश्वर जी घोष ने उक्त मन्दिर की पशुबलि सर्वदा के लिये बन्द कर दी।

(२) "वीर" जी के प्रथम अनशन के समय कलकत्ता के राजाकटरे में नृसिंह मन्दिर के समीपस्थ काली मन्दिर का खूंटा उखाड़ कर फेंक दिया गया।

का वृक्ष लगा दिया, उक्त मन्दिर में प्रति वर्ष तीन सौ बकरे
कट जाया करते थे।

(१०) नौगछिया (भागलपुर) के जमींन्दारों ने 'आदर्श हिन्दू
संघ', नौगछिया को सभी काली स्थान दे दिये। 'संघ' के अधिकार
में आ जाने से सभी मन्दिरों की बलि बन्द कर दी गई। संघ
के सदस्य श्री बैजनाथ जी शर्राफ, श्री महावीर जी रूंगटा
आदि ने प्रशंसनीय प्रयत्न किये हैं।

(११) आरा की अरुण देवी के मन्दिर में सैकड़ों बकरों की
बलि "वीर" जी के प्रचार से एवं स्थानीय विद्यार्थियों के सत्याग्रह
के फलस्वरूप बन्द हो गई।

(१२) नवादा (गया) के देवी स्थान के पुजारी जी ने
पण्डित रामचन्द्र जी शर्मा "वीर" का भाषण सुन कर पशुबलि
न करने की प्रतिज्ञा कर ली। नवादा के 'आदर्श हिन्दू संघ'
ने कई स्थानों की पशुबलि का मूलोच्छेद कर दिया।

(१३) पचम्बा (हजारीबाग) में "वीर" जी के उपदेश तथा
जगदीशनारायण जी केशरवानी के प्रयत्न से केशरवानी वैश्यों
ने अपनी जातीय प्रथा के अनुसार होने वाली पशुबलि को बन्द
करने की प्रतिज्ञा की।

१६—अहिरपुरवा तथा घरहरवा (आरा) में रामनरेश जी द्विवेदी तथा माहेश्वरी उपाध्याय के प्रयत्न से पशुबलि बन्द हो गई।

(१७) पं. रामचन्द्र शर्मा 'वीर' के उपदेश से कादिरगञ्ज (गया) के निकट पशुओं की बलि वागेश्वरी स्थान से सर्वथा बन्द हो गई। सैकड़ों पशु बच गये।

(१८) पं. रामचन्द्र शर्मा 'वीर'के दश दिन निर्जल तथा इक्कीस दिन अनशन के फलस्वरूप सांगली राज्य (महाराष्ट्र) में होने वाले पशुमेध यज्ञ में आठ बकरों को जलाये जाने से बचाया गया।

(१९) 'वीर' जी द्वारा संस्थापित आ. हि. संघ ने कोल्हापुर राज्य की जयसिंगपुर शाखा ने ऊदगांव की दुर्गा के मंदिर में वैशाखी अमावस्या को प्रति वर्ष होने वाली १५० बकरों की बलि सर्वथा बन्द करा दी।

(२०) नेपाणी (बेलगांव) के समीप दस्तगीर साहब की उर्स पर वार्षिक मेले में होने वाली ८०० बकरों की हत्या 'वीर' जी की संस्था के संचालकों ने बन्द करा दी।

(२१) सदर बाजार जबलपुर की कालीमाता के मंदिर में बकरों के कान काट कर घर पर ले जा कर दुष्ट लोग मार कर खा जाते थे, किन्तु 'वीर' जी के दो दिन के उपवास से यह प्रथा बंद हो गई।

(२२) सागर (सी. पी.) सं. १९९३ के ज्येष्ठ मास में पूज्य 'वीर' जी के उपदेश से तथा उनके अनुयायियों के दस दिन तक सत्याग्रह करने के फलस्वरूप काकागंज (सागर) में भेड़ों की बलि बंद हो गई। उक्त भेड़े श्री नारायण प्रसाद जी रायजादा

ने सुरक्षित स्थान पर पालने को दे दिये। श्री लक्ष्मण प्रसाद जी स्वर्णकार जगन्नाथ जी स्वर्णकार गया प्रसाद जी कबीरपन्थी ने इस कार्य में अधिक कष्ट उठाया था।

(२३) सागर की केथवारी देवी की वलि आदर्श हिन्दू संघ सागर ने सर्वथा बंद करा दी। सभी बकरे संघ के द्वारा सुरक्षित स्थान पर भेज दिये गये। श्री गोविन्द प्रसाद जी जड़िया हरिश्चन्द्र जी जैन तथा गदाधर सिंह जी वर्मा जो वीर जी के शिष्य हैं इन तीनों धर्म सैनिकों के द्वारा अनेक पशुओं के प्राण बचे हैं।

(२४) मुकामा (पटना) आदर्श हिन्दू संघ के सभापति पं० केशव सिंह जी शर्मा ने प्रसिद्ध भगवती स्थान की वलि बंद करवा दी। उक्त मन्दिर में सैंकड़ों बकरे कटते थे।

(२५) श्रीमान केशव सिंह जी के प्रयत्न से पुरानी ततवा टोली (मुकामा) में काली स्थान की पशुवलि २३ मई को सन् १९३६ में बंद हो गई।

(२६) पं० रामचन्द्र जी शर्मा "वीर" जी के कलकत्ता के प्रथम अनशन के समय महाशय कृष्णराय जी के प्रबल प्रयत्न से चम्बास्टेट (काश्मीर) के राजा साहब ने रावी नदी के तट पर होने वाली २१ भैंसों की वलि सर्वथा बंद कर दी।

(२७) जमालपुर (मुंगेर) में "वीर" जी के द्वितीय अनशन के अवसर पर संघ की शाखा के संचालकों (श्री नन्दकिशोर "धवल" आदि) ने स्थानीय देव स्थानों की पशुवलि सर्वथा बंद कर दी।

(३३) मुजफ्फरपुर (बिहार) के समस्त दुर्गास्थानों की पशु-बलि 'वीर' जी के प्रथम अनशन के समय ही बंद हो चुकी थी। नवनिर्मित 'बगलामुखी' मंदिर (भ्रष्टाचार के केन्द्र) में होने वाली पशुबलि के विरुद्ध स्थानीय आदर्श हिन्दू संघ ने सं. १९९५ वि. के नवरात्र में अत्यन्त उग्र आन्दोलन किया। जिससे मन्दिर का संस्थापक वाममार्गी भवानी मिश्र भाग गया। इस मन्दिर पर "वीर" जी के भाषण से प्रभावित होकर ५०० युवकों ने सत्याग्रह किया था।

(३४) बरगनिया (मुजफ्फरपुर) में भी "वीर" के विराट आन्दोलन के समय पशुबलि बन्द हो गई।

(३५) गयाधाम के सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक मन्दिर भगवती वागेश्वरी के पवित्र प्रांगण में प्रति वर्ष श्रावण के प्रति मंगलवार को सैकड़ों बकरे कटते थे। इस मन्दिर में धर्मप्राण "वीर" जी ने २ वर्षों के आठ मंगलवारों पर स्वयं सत्याग्रह कर के लगभग आठ सौ बकरों के प्राण बचा लिये। "वीर" जी की उपस्थिति में एक भी बकरा नहीं काटा जा सका।

(३६) गया के सुप्रसिद्ध विष्णुपद मन्दिर के निकट गयेश्वरी देवी के समक्ष होनेवाली पशुबलि "वीर" जी के उपदेश से पुजारियों ने सर्वथा बन्द कर दी और वधस्तम्भ को उखाड़ कर जला दिया गया।

(३७) गया नगरी की सुप्रसिद्ध दुखहरिणी देवी के समक्ष होने वाली सैकड़ों बकरों की हत्या "वीर" जी की आज्ञा से बन्द हो गई और पुजारी "आदर्श हिन्दू संघ" के सदस्य बन गये।

(३८) गया शहर के पुरानी गोदाम के निकटस्थ माली भक्तों के दुर्गास्थान की पशुबलि "वीर" जी की प्रथम गया यात्रा में ही बन्द कर दी गई।

(३९) गयाधाम में पहनी महल्ला के दुर्गा स्थान की पशुबलि "वीर" जी की प्रथम गया यात्रा के अवसर पर बन्द कर दी गई।

(४०) मानपुर (गया) में पण्डित श्यामदत्त जी मिश्र एवं "आदर्श हिन्दू संघ" के दो वर्ष के आन्दोलन के फलस्वरूप सभी दुर्गास्थानों की पशुबलि बन्द हो गई। यहाँ लगभग ३०० बकरे काटे जाते थे।

(४१) औरंगाबाद (गया) के बाबू तेजनारायण सिंह जी ओवरसियर श्री रामदत्त राम जी मन्त्री "आदर्श हिन्दू संघ" के प्रबल प्रयत्नों से स्थानीय सभी दुर्गा स्थानों की पशुबलि सर्वथा बन्द की गई।

(४२) मकदुमपुर (गया) के सभी देव स्थानों की पशुबलि आदर्श हिन्दू संघ ने बन्द करा दी। जिससे सैंकड़ों बकरों के प्राण बच गये। श्रीयुत् पुनाई रामजी का प्रयत्न प्रशंसनीय है।

(४३) बेलागञ्ज (गया) के सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक काली मन्दिर में प्रतिवर्ष सैंकड़ों बकरे कटते थे। किन्तु "वीर" जी के एक ही व्याख्यान से उक्त मन्दिर का हत्याकांड सदा के लिये बंद हो गया और आदर्श हिन्दू संघ की भी स्थापना हो गई।

(४४) टेहटा (गया) में आदर्श हिन्दू संघ द्वारा १० मन्दिरों की पशुबलि सर्वथा बंद हो गई। उक्त थाने में प्रति वर्ष पांच सौ बकरे कट जाते थे।

(४५) टिकारी (गया) के सभी देव स्थानों की पशुबलि आदर्श हिन्दू संघ द्वारा बंद कर दी गई।

(४६) केशपा (टिकारी) में सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक श्री तारा देवी के मन्दिर में प्रतिवर्ष एक हजार बकरे और पचासों भैंसें कट जाते थे जो आदर्श हिन्दू संघ के द्वारा बंद कर दिये गये। इस मन्दिर के सभी पण्डे "वीर" जी के भक्त बन कर आदर्श हिन्दू संघ के प्रचारक बन गये।

(४७) रेवई (टिकारी) बाबू अवधशरण सिंह मंत्री आदर्श हिन्दू संघ शाखा रेवई ने अपनी समस्त शक्ति लगा कर लोहानीपुर नामक ग्राम में १० बकरों की बलि को बंद करा दी।

(४८) छप्पन बिगहा तथा एमाव नामक ग्रामों में श्रीमान् अवधशरण सिंह जी मन्त्री तथा आ. हि. संघ के सदस्य रामबालक सिंह जी सूबेदार सिंह जी के प्रबल प्रयत्न से पचास बकरों की हत्या सर्वथा बंद हो गई। बकरे जीवित ही लौटाये गये।

(४९) लश्कर गांव मौजे में सात शूकर दो कबूतर और दो मुर्गों की हत्या यहां के ब्राह्मणों राजपूतों द्वारा होती थी जिसे बाबू अवधशरण सिंह जी तथा रामबालक सिंह जी ने अपने बल-बुद्धि से सदा के लिये बन्द करा दी।

(५०) नेमदारगंज (गया) में सन् १९३६ की ग्रीष्म ऋतु में आदर्श हिन्दू संघ के आन्दोलन से पशुबलि सर्वथा बंद हो गई।

(५१) खिदिरसराय (गया) में आ. हि. संघ के मन्त्री रामदास जी ने दो मन्दिरों की पशु हत्या बन्द करा दी।

(५२) रजौली (गया) में सन् १९३८ में आदर्श हिन्दू संघ के द्वारा सैकड़ों बकरों के प्राण बचे और बलि प्रथा सर्वदा के लिये वंद हो गई।

(५३) फतहपुर (गया) के निकट मयापुर नामक ग्राम के एक पीपल के नीचे लखन देवा नामक प्रेत की पूजा में सात सौ बकरे शूकर और कबूतर कट जाते थे। ताः ७-७-३८ को धर्मप्राण "वीर" जी ने वहां श्रावण संवत् १९९५ में एक दिन अनशन कर के तथा सैकड़ों युवकों को साथ लेकर प्रबल आन्दोलन किया जिसके फल स्वरूप सैकड़ों जीवों के प्राण बच गये और बलि प्रथा बन्द हो गई।

(५४) अकबरपुर (गया) आदर्श हिन्दू संघ की स्थानीय शाखा ने यहां भः सैकड़ों बकरों की बलि को वंद करा दिया।

(५५) गोविन्दपुर (गया) से आदर्श हिन्दू संघ के मंत्री श्रीमान् पं० रामशरण जी मिश्र सूचित करते हैं कि वहां के सभी देवस्थानों की पशुबलि सर्वथा बंद हो गई और सैकड़ों बकरों की प्रति वर्ष होनेवालो 'बलिप्रथा' का मूलोच्छेद हो गया।

(५६) सीढ़ (खिदिरसराय) जिला गया में 'बीर' जी के एकही भाषण को सुनकर शिवनन्दन प्रसाद सिंह जी और अलख सिंह जी ने बलिप्रथा के विरुद्ध प्रबल आन्दोलन किया और उक्त ग्राम से पचासों बकरों की बलि बन्द करा दी।

(५७) जम्होर गया में सैकड़ों बकरे बचाये गये।

(५८) रफीगञ्ज (गया) में दुर्गास्थान के पुजारी ने "वीर" जी महाराज के चरण छू कर प्रतिज्ञा की है कि मैं पशुबलि का संकल्प नहीं कराऊँगा।

(५९) नरहट (गया) में महन्त महाराज रामेश्वरदास जी के द्वारा पशुबलि बन्द करा दी गई। पचासों जीवों के प्राण बचे।

(६०) कनारचट्टी (वजीरगञ्ज) जि० गया में जेष्ठ सम्वत् १९९४ में धर्मप्राण प० रामचन्द्र शर्मा "वीर" ने आठ दिनों के अनशन की स्थिति में अपनी समस्त शक्ति लगा कर दिन भर दौड़ दौड़ कर चार दुर्गा स्थानों की पशुहत्या बन्द करा दी। लगभग सत्तर बकरे और भेड़े बचाये गये। इस कार्य में शाम लाल, श्री शिक्षक परमेश्वरराम जी कसेरा और वजीरगंज के बाबू रामअनुग्रहनारायण सिंह जी तथा केनारचट्टी के सभी युवकों ने "वीर" जी महाराज को सहायता दी थी।

(६१) हजारीबाग में श्री युगलकिशोर जी बक्शी बाबू बसंत लाल जी जैन, बाबू बोदूराम जी जैन आदि भा. दि. संघ के सदस्यों ने प्रबल सत्याग्रह करके पशुबलि बंद करा दी। त्रिवेणी दास शर्मा ने भी जीवरक्षा के लिये असह्य कष्टों का सामना किया था।

(६२) चतरा (हजारीबाग) में 'वीर' जी के सत्याग्रह से चार मंदिरों की पशुबलि बंद हो गई। लगभग तीन सौ बकरों और बीस शूकरों के प्राण बचाये गये और पशुबलि सर्वदा के लिये बंद हो गई।

(६३) मालटा पो० गाभा जिला हजारीबाग में "वीर" जी के भाषण द्वारा प्रभावित होकर स्थानीय जनता ने दुर्गा जी के मन्दिर का वधस्तम्भ उखाड़ कर जला दिया और कई देव स्थानों की भी पशुबलि बंद कर दी। इस प्रकार लगभग एक सौ बकरों के प्राण बचे।

(६४) पंडुई (जहानाबाद) में वीर जी के उपदेश के फलस्वरूप एक दो दुराग्रही जमीन्दारों के अतिरिक्त समस्त ग्राम के जमीन्दारों ने अपने यहां की पशुबलि बन्द कर दी, इस कार्य में श्री धर्मेश्वर सिंह सदृश धर्म वीरों ने विशेष प्रयत्न किया था। शोक है धर्मेश्वर सिंह का देहान्त हो गया।

(६५) झुमरीतिलैया कोडरमा का आदर्श हिन्दू संघ विशेष महत्वशाली है। इस शाखा की ओर से कालीघाट जाने वाले सभी सत्याग्रहियों को रेल का टिकट दिया गया था। उक्त शाखा के मंत्री पण्डित लक्ष्मीनारायण जी शर्मा तथा सेठ जगन्नाथ जी के प्रबल प्रयत्न से कई मन्दिरों की पशुबलि सर्वथा बंद हो गई जिसमें वांटी गांव मुख्य है।

(६६) कादिरगंज (गया) के निकट आती नामक ग्राम की भीषण पशुबलि सर्वथा बंद हो गई। इसमें आदर्श हिन्दू संघ के सभापति श्री वासुदेव पुरी सरपंच तथा कई सज्जनों को अथक परिश्रम करना पड़ा था। पीताम्बर पुरी का प्रयत्न भी प्रशंसनीय है।

(६७) कूमा पो० हसवा (गया) में आदर्श हिन्दू संघ की स्थापना हुई। बाबू रघुवीर सिंह जी ने ग्राम देवता के समक्ष पशुबलि न होने देने का अटल निश्चय कर लिया।

(६८) हसवा (गया) में बाबू मिश्रीलाल जी आर्य बाबू घनेन्द्रकुमार जी जैन आदि 'आदर्श हिन्दू संघ' के कर्णधारों के प्रयत्न से सभी देवस्थानों की पशुबलि बन्द हो गई वहाँ के मन्दिरों के नाम यह हैं—कालीस्थान, वागेश्वरीस्थान, देवीस्थान (पारडिह), पटना देवी स्थान, हसवा पाचू का काली स्थान तथा

भगवती स्थान। उक्त समस्त मन्दिरों में प्रति वर्ष ८०० बकरे २० मुर्ग कटते थे।

(६९) मखदुमपुर के "आदर्श हिन्दू संघ" ने डीह, सामूचा, मकरपुर, बंसारा, धनकोल, फतहपुर, खेदुआना, वाजितपुर, नारायणपुर, खज्जोचक, कायमगञ्ज आदि ग्यारह ग्रामों में पशु-बलि-प्रथा का मूलोच्छेद कर दिया जिसके फलस्वरूप ४०० से भी अधिक बकरों भेड़ों के प्राण बच गये।

(७०) हजारीबाग जिला में बगोदर थाना के अटकाबकी नामक ग्राम में "वीर" जी के परम भक्त सीताराम जी गुप्त के प्रबल प्रयत्न से डेढ़ सौ बकरे और दो सौ भैंसों की हत्या सदा के लिये बन्द हो गई।

(७१) "युवक संघ" के मंत्री लहौरा से ६-६-३८ को लिखते हैं—पूज्य "वीर" जी महाराज गत वर्ष आपके उपदेशों को सुन कर हमारे गाँव के सभी व्यक्तियों ने पशुबलि बन्द कर दी।

(७२) "आदर्श हिन्दू संघ" के प्रचारकों ने पो० रजा थाना नवादा के अन्तर्गत पचलाखी, दामोदरपुर, माखर, सुन्दरबारी, शेखपुरा नामक ग्रामों से सैकड़ों पशुओं की हत्या बन्द करा दी।

(७३) हसवा (गया) के निकट पारडिह नामक ग्राम में "आदर्श हिन्दू संघ" ने अस्सी बकरे बचाये और सदा के लिये पशुबलि बन्द करा दी।

बकरों और अनेक भैंसों की हत्या सम्वत् १९९५ में ही बन्द हो गई।

(७५) डालटेनगंज (पलामू) मे आ. हिं. संघ के मन्त्री श्रीमान् कालीचरण जी विशारद सूचित करते हैं कि 'वीर' जी महाराज के उपदेश से प्रभावित होकर हमलोगों ने यहां के दो मन्दिरों की पशुबलि सदा के लिये बन्द कर दी है। श्रीयुत कालीचरण जी का देहान्त हो गया। जिससे वीर जी को महान् दुःख हुआ है।

(७६) हुसेनाबाद (जपला) में आ. हि. संघ के सभापति पं० भागवत जी पाण्डे तथा मन्त्री केशर राम जी एवं 'संघ' के सभी सदस्यों ने भीषण आन्दोलन कर के श्रावण सम्वत् १९९५ में सैकड़ों बकरों के प्राण बचा लिये। बलिप्रथा का मूलोच्छेद कर दिया।

(७७) हैदरनगर में 'वीर' जी के अनुयायियों पर बलि देने वालों ने भालों और कुल्हाड़ों का लेकर आक्रमण करने का निश्चय कर लिया किन्तु सत्य की विजय हुई और पशुबलि बन्द करनी पड़ी। पचासों बकरे बचाये गये।

(७८) माफी नामक ग्राम से रामदेवजी शर्मा ने 'वीर' जी को सूचित किया कि हमारे गांव में पशुबलि बन्द हो गई है।

(७९) हरनौत (पटना) में आ. हि. संघ द्वारा बलि के विरुद्ध प्रबल आन्दोलन हुआ और पचासों बकरों के प्राण बचाये गये।

(८०) जुआफर और जगदीशपुर (नालन्दा) जि० पटना में नारायण जी आर्य आदि उत्साही पुरुषों तथा आदर्श हिन्दू संघ के सभापति पं० ननकू जी पाण्डे के प्रयत्न से सैकड़ों पशुओं

के प्राण बच गये और पशुबलि बंद कर दी गई।

(८१) भागलपुर के मकरन्दा गांव में हरनारायण जी, ठाकुर भागवत सिंह जी तथा आ० हि० संघ के प्रधान मंत्री श्रीमान् खेमचंद जी चौधरी के प्रयत्न से पशु बलि प्रथा का मूलोच्छेद हो गया।

(८२) वैद्यनाथधाम में १९-८-३६ रविवार की रात्रि को भगवती मनसा मां की पूजा के अवसर पर केसरवानी आश्रम में श्रीमान् गिरीश जी साह के प्रयत्न से मंदिरों में प्रचलित बलिप्रथा केशरवानी भाइयों ने जाति की ओर से बंद कर दी।

(८३) वैद्यनाथधाम के निकट बलमरा गांव में पशुबलि बंद की गई।

(८४) आ० हि० संघ कादिरगंज (गया) ने गोपालगंज थाने के दृट्टा, भटापस, शिकन्दरा, गाना, अमाढ़ा कारीन नामक ग्रामों में जाकर कई मन्दिरों की पशुबलि सर्वथा बंद करा दी है। 'संघ' के मंत्री महावीर लाल जी आर्य और बाबूलाल वर्मा ने प्रभाव पूर्ण प्रचार किया। बाबू मुरारी लाल जी भी धन्यवाद के पात्र हैं।

(८५) नंदनामा (सिकन्दरा) जिला मुंगेर में, जनता ने 'वीर' जी के द्वितीय अनशन पर पशुबलि बंद कर दी।

(८६) विरैयाटांड़ (पटना) से डा० मथुरा प्रसाद जी लिखते हैं कि पूज्य शर्मा जी के आत्म बलिदान से प्रभावित होकर नारतनपुर, हिम्मतपुर, बगाली टोला, झरपोल आदि गांवों में मंदिरों की पशुबलि सर्वथा बंद हो गई है।

(८७) महाप्राण 'वीर' जी के द्वितीय अनशन की समाप्ति

से उत्तेजित होकर ८ अक्टूबर १९३६ को शिवसागर (आसाम)
में शिवमन्दिर के पुजारी तथा नवयुवकों ने बलि के विरुद्ध घोर
आन्दोलन किया। महाष्टमी के दिन देवी मंदिर के पुजारी
ने घोषणा की, कि मंदिर के हाते के भीतर पशुबलि नहीं
होने दूंगा। बलि देने के लिये पुलिस की मदद मांगी गई।
दोनों दलों में भीषण संघर्ष हुआ। लाठियों और पत्थरों से
खुल कर लड़ाई हुई जिससे दो व्यक्ति घायल हो गये और चार
व्यक्ति गिरफ्तार किये गये।

(८८) नालन्दा सब-डिविजन (गया) के पारोलिया नामक
ग्राम में दशहरे के अवसर पर दुर्गा पूजा प्रबन्ध कारिणी कमिटी
की ओर से खूब धूमधाम से माता की पूजा का उत्सव मनाया
गया और पशुबलि बंद कर दी गई।

(८९) कालीघाट के प्रसिद्ध वधस्तम्भ में "वीर" जी के
किसी अज्ञात भक्त सिक्ख साधू सुन्दर सिंह ने ५ अक्टूबर को
अपनी गर्दन ठूंस दी और एक घंटा तक पशुबलि नहीं होने
दी। इस दृश्य को देख कर कई बंगाली सज्जन अपने बकरे
लौटा ले गये। पुलिस ने आकर उक्त साधू को पकड़ लिया।
उसकी गिरफ्तारी के समय हरेन्द्रनाथ जी चटर्जी नामक पण्डा ने
साधू बाबा को गंदी गालियां दी इस पर साधू "वीर" जी की
जय बोलते हुये पण्डे पर टूट पड़ा और अपने शंख से पण्डे का
सिर फोड़ दिया। पशुबलि देने वाले बकरों को लेकर भाग
गये थे।

(९०) मिर्जापुर (युक्तप्रान्त) जिला में गड़बड़ा गांव की
शीतला माता के मंदिर में प्रति वर्ष होने वाली आठ सौ बकरों

की हत्या 'वीर' जी के सत्याग्रह और अनशन से सदा के लिये बंद हो गई।

(९१) सागर जिला के राणगिर तीर्थ में "वीर" जी के पांच दिन के सत्याग्रह तथा भा. हि. संघ सागर के दो सौ सदस्यों तथा पच्चीस सत्याग्रहियों के प्रबल आन्दोलन से सात सौ से अधिक बकरों के प्राण बचाये गये और उक्त तीर्थ में एक भी जीव की हत्या नहीं हो सकी। चैत्र शुक्ला १० मी संवत् १९९५ वि० को उक्त तीर्थ के हरसिद्धि माता के पुजारी मुरलीधर पण्डा राजाराम पण्डा, गयाप्रसाद पण्डा और नन्हा पण्डा ने प्रतिज्ञा की, कि हम हमारे तीर्थ में कभी भी पशुबलि नहीं होने देंगे।

(९२) बाढ़ (पटना) में "वीर" जी के प्रबल आन्दोलन से पशुबलि बंद हो गई।

(९३) शेखपुरा (मुंगेर) में भा. हि. संघ द्वारा पशुबलि के विरुद्ध श्रावण १९९५ में भीषण आन्दोलन हुआ। सैकड़ों बकरे बचाये गये।

मालती नामक ग्रामों में प्रबल प्रयत्न करके पशुबलि सर्वथा बंद करा दी उक्त ग्राम गया जिला के जमुवांवा स्टेशन के निकट हैं।

(९८) कन्हैयाचक पा० परवत्ता जि० मुंगेर में श्री यदुनन्दन जी चौधरी द्वारा सूचना मिली है कि कन्हैयाचक में प्रतिवर्ष होने वाली १०० पशुओं की बलि सर्वथा बन्द हो गई।

(९९) आदर्श हिन्दूसंघ नरहट जिला गया के सभापति श्रीमद् महन्त रामेश्वरदास जी महाराज की आज्ञा से कई मंदिरों की पशुबलि सन् १९३७ में बन्द की गई।

(१००) आदर्श हिन्दूसंघ रजौली (गया) के मन्त्री डाक्टर जगन्नाथ जी सूचित करते हैं कि वहां पर सैकड़ों पशुओं की बलि सर्वथा बन्द कर दी गई।

(१०१) आदर्श हिन्दू संघ गया शाखा के मन्त्री श्री गोविन्द प्रसाद जी अम्बष्ट ने अपने जन्म स्थान में जाकर पशुबलि की राक्षसी प्रथा का अन्त कर दिया।

(१०२) लाला शंकरलाल जी सेठ, श्री पं० शुकदेव जी तथा श्रीमान् मूलनारायण जी खन्ना बी. ए. के प्रयत्न से आदर्श हिन्दू संघ कानपुर (युक्त प्रान्तीय कार्यालय) के उत्साही सैनिकों एवं पदाधिकारियों के प्रचण्ड सत्याग्रह के फलस्वरूप कानपुर के सुप्रसिद्ध काली मंदिर की भीषण पशुबलि सर्वथा बंद हो गई उक्त मंदिर बंगाली हिन्दुओं का है। दुर्गा पूजा में वहां प्रति वर्ष एक हजार के लगभग बकरे कट जाते थे।

(१०३) हवेली खड़गपुर जिला मुंगेर के पांच देवी मंदिरों की पशुबलि वहां के आदर्श हिन्दू संघ द्वारा सर्वथा बंद करा दी गई।

(१०४) चरियापुर जिला मुंगेर की पशुबलि वहां के आदर्श हिन्दू संघ ने बन्द करा दी।

(१०५) घारघट जि० मुंगेर के देवी स्थान की पशुबलि वीर जी के कारण से बन्द हो गई।

(१०६) कठिहार में आदर्श हिन्दू संघ द्वारा पशुबलि सर्वथा बन्द हो गई। श्री मोहन लाल जी झूंझनू वाला तथा मास्टर युगेश्वर सिंह जी बी. ए. को धन्यवाद है।

(१०७) मलख्वा जि० छपरा के कई देवी स्थानों की पशु हत्या वहां के आदर्श हिन्दू सङ्घ द्वारा बन्द करा दी गई।

(१०८) लछवार जि० छपरा के सुप्रसिद्ध दुर्गा मन्दिर की भीषण पशुहत्या वीर जी के अनशन तथा सिवान के आदर्श हिन्दू सङ्घ के युवकों के प्रबल प्रयत्न से बन्द हो गई।

(१०९) घृडलक नामक ग्राम में समस्तीपुर के सत्याग्रह के समय नव-जीवन क्लब के सदस्यों तथा रतनचन्द जी जैन ने पशुबलि का मूलोच्छेद कर दिया।

(११०) मालनी और विदोलिया में भी वीर जी के समस्ती-पुर के सत्याग्रह के उपरान्त पशुबलि का अन्त हो गया।

(१११) माधनपुर नामक ग्राम (समस्तीपुर) में बलि बन्द है।

(११२) रोसड़ाघाट में पहले प्रति वर्ष पांच सौ से अधिक पशुओं की धर्म के नाम पर हत्या की जाती थी। किन्तु वीर जी के तीन बार पधार कर प्रबल प्रचार करने तथा आदर्श हिन्दू संघ के संघठन से बलि प्रथा का मूलोच्छेद हो गया। इस कार्य में कन्हैयालाल जी मोटिया सुखदेवनारायण जी पोद्दार तथा संघ के सदस्य धन्यवाद के पात्र हैं।

व स्थान की भयानक पशुवलि सर्वथा बंद हो गई। उक्त स्थान की पशुवलि के बंद होते ही समीपवर्ती छोटे छोटे अनेक देव-स्थानों की वलि प्रथा का मूलोच्छेद हो गया।

(११७) नालन्द (पटना) के निकट जगदीशपुर जुआफर आदि पांच ग्रामों के देवस्थानों की पशुवलि सर्वथा बंद हो गई है। इस कार्य में जुआफर के आदर्श हिन्दू सङ्घ के मन्त्री श्रीयुत नारायण जी आर्य एवं पं० ननकू पाण्डे जी ने विशेष प्रचार किया था।

(११८) सलखवा (छपरा) के देव स्थानों की वलि स्थानीय आदर्श हिन्दू संघ के प्रयत्न से बंद हो गई। भरतरा में भी पशुवलि बंद है।

(११९) बेलागंज के आदर्श हिन्दू संघ के सदस्यों के प्रचार के फलस्वरूप समीपस्थ काली मन्दिर देवी स्थान, नाशिनपुर के प्राणपुर के दुर्गा स्थान, बेलाडीह के दुर्गास्थान हरगांव के देवीस्थान की पशुवलि बंद हो गई।

जी स्वर्णकार, गोपी श्याम जी ताम्रकार, गया प्रसाद जी कवार-पंथी तथा गोकुल प्रसाद जी कोष्टा को सागर की जेल के दर्शन तथा २०—२० रुपये दण्ड देने पड़े थे. इस वर्ष सं० १९९७ वि० में आदर्श हिन्दू संघ ने पुनः सत्याग्रह ठान दिया। फलस्वरूप लश्करिया समाज के भक्तों ने बकरों के जातने तथा काटने की कुप्रथा का मूलोच्छेद कर दिया। आदर्शहिन्दू संघ के सदस्यों तथा प्रचार मंत्री श्री गोविन्द प्रसाद जी जड़िया के विशेष प्रयत्न से सागर जिला में पशुबलि बन्द होती जा रही है।

(१२१) आदर्श हिन्दू संघ भुसावल (पूर्व खान देश) के संरक्षक श्रीमान् नारायण लाल जी वैद्य इन्दारकर के प्रभाव से तथा उनके प्रबल प्रयत्न से भुसावल के अनेक देवस्थानों की पशुबलि बन्द हुई है। इस आन्दोलन के प्रारम्भ से ही वैद्य जी बाबाजी ने विशेष सहयोग प्रदर्शित किया है, वीर जी आपको पिता के तुल्य मानते हैं। आप वीर जी को अनेक महत्वपूर्ण परामर्श देते हुए अनेक भयंकर आपदाओं से बचाने का आग्रह करते रहे हैं। वैद्य जी बाबा जी का पशुबलि विरोधी आन्दोलन में तथा आदर्श हिन्दू संघ के प्रत्यक्ष कार्यों में सहयोग देने वाले सज्जन श्री पं. ब्रह्मदत्त जी शर्मा आयुर्वेदाचार्य, श्री लक्ष्मीनारायण जी गुप्त (नारनौली), श्री ताराचन्द जी अग्रवाल, श्री मन्नुनलाल, श्री श्रावण जी, श्री चन्दूलाल जी गुजराती तथा अन्य उत्साही सदस्य धन्यवाद के पात्र हैं।

(१२२) बेहावार ग्राम जिला हजारीबाग में आदर्श हिन्दू संघ झूमरी तिलैया कोडरमा के मंत्री श्रीयुत् पण्डित लक्ष्मीनारायण शर्मा तथा सेठ जगन्नाथ जी एवं संघ के सदस्यों के प्रबल-

प्रयत्न से ५०० बकरों की बलि सर्वथा बन्द हो गई है। पंडित लक्ष्मीनारायण जी शर्मा के प्रयत्न से कतिपय मंदिरों से इस पाप का अन्त हुआ।

(१२३) आदर्श हिन्दू संघ सिवान के मंत्री, श्रीयुत जगन्नाथ जी शास्त्री ने सिवान कोर्ट के समीपस्थ मंदिर की बलि बंद कर दी।

(१२४) सलखवा पो० मढोरा जि० छपरा आदर्श हिन्दू संघ के सदस्य श्रीमान् सच्चिदानन्द जी पाण्डेय, हरिहर जी तिवारी भागवत जी तिवारी तथा किशन प्रसाद जी के प्रचार से पकरी और रसूलपुर के मन्दिरों से पशु हत्या बंद हो गई।

(१२५) तेतरी ग्राम पो० नोगछिया जिला भागलपुर में स्थानीय आदर्श हिन्दू संघ के सदस्य श्री यमुना प्रसाद राय तथा श्रीयुत नवलकिशोर झा के प्रचण्ड प्रचार से गत पांच वर्षों में हजारों पशुओं के प्राण बचे हैं।

(१२६) गोरखपुर जिला में नरायणपुर का देवी स्थान हरिपुर के मठाधीश महन्त महेन्द्रानन्द जी गोस्वामी के आधीन है उस स्थान में सैकड़ों बकरे कटते थे किन्तु पूज्य पं० रामचन्द्र जी शर्मा वीर के आग्रह से महन्त महाराज ने पशुबलि का सर्वथा अन्त कर दिया। इस कार्य में घुघली सुगर मिल के संचालक श्रीमान् केशरराम जी, नारंग साहब तथा श्री महादेव जी मारवाड़ी ने भी वीर जी की सेवा की है।

(१२७) वीर जी महाराज के प्रधान शिष्य पं० नरेश्वरदत्त जी शर्मा गृहस्थाश्रम के सुखों की उपेक्षा करके गत दो वर्षों से गया जिला के ग्राम ग्राम में आदर्श हिन्दू संघ का संगठन कर

रहे हैं आप वीर जी की प्रत्येक दिनचर्या का अनुकरण करते हुये अन्न और नमक को त्याग कर विरोधियों द्वारा लाठी पत्थरों की मार सह कर विराट आन्दोलन में निस्वार्थ भाव से कूद पड़े हैं। गया जिला में कुवड़ी, कसोटी, उसरी, महेशी बिगहा, गोपालपुर मझिगावां, कुरमावां, भगतिनबिगहा, इन्द्रार, गोडीहा, मई, औरवां, रूपसपुर, दौलतपुर, सलेमपुर आदि ग्रामों में प्रति वर्ष ५०० सौ बकरे देवताओं की पूजा में कटते थे। पं तपेश्वरदत्त जी शर्मा की तपस्या से उन अनाथ पशुओं की उक्त स्थानों से बलि बंद हो गई है। यदि तपेश्वर जी अपनी तपस्या में अटल भाव से अग्रसर होते रहेंगे और जिस स्वार्थ त्याग के आदर्श का वे पालन कर रहे हैं उस पर डटे रहेंगे तो कुछ ही वर्षों में उनके द्वारा कई महत्वपूर्ण कार्य होने की आशा है।

(१२८) गोरखनाथ मन्दिर (गोरखपुर) भारत का प्रसिद्ध तीर्थ है यहाँ के भैरव जी के समक्ष सैकड़ों बकरे पहले कटते थे किन्तु जब से महन्त महाराज दिग्विजयनाथ जी गद्दी पर विराजमान हुये हैं तब से आपकी आज्ञा होते ही वह हत्याकांड बन्द हो गया। यह महान् कार्य पूज्य महन्त जी महाराज की महानता का द्योतक है।

(१२९) आदर्श हिन्दू संघ अकबरपुर के कार्यकर्त्ता श्री हरि लाल शाह, भागीरथ शर्मा, सन्तशरण गुप्त, नन्दकिशोर जी अम्बष्ट, लखनलाल जी आदि ने प्रबल आन्दोलन कर के सुलना फरुखी, रतनपुर, खजंदवा, सिरामपुर, बलिया, फतहपुर आदि ८ ग्रामों के समस्त देवी मन्दिरों से प्रति वर्ष लगभग ६०० पशुओं की बलि बन्द करा दी है।

(१३०) अकबरपुर (जिला गया) के निकट सुघड़ी ग्राम के प्रसिद्ध देवी स्थान में प्रति वर्ष १०० बकरे कटते थे वीर-जी के नवादा जाने के समय उक्त ग्राम में पण्डित बाबूलाल जी शर्मा के प्रबल आन्दोलन एवं बाबू कान्ताकुमार जी अम्बष्ट तथा प्रभुचन्द जी वर्णवाल के सहयोग से विरोधियों के भीषण संघर्ष के उपरान्त पशुबलि सर्वथा बन्द हो गई।

(१३१) गया जिला के गोविन्दपुर थाना में थाली गुराण्डी, मकुगाई, बुधवार, सरवा नपुर आदि ग्रामों में प्रतिवर्ष ३०० बकरे कटते थे जो बचा लिये गये।

(१३२) आदर्श हिन्दू संघ रानीगंज (इमामगंज) जिला गया के सभापति वैद्यवर पं० रामलोचन जी शर्मा की प्रेरणा से कुन्दाराज्य के राजा साहब ने अपने राज्य के अन्तर्गत समस्त देव स्थानों की पशुबलि बन्द कर दी राजा साहब ने मांस भक्षण पशुहिंसा का सर्वथा त्याग कर के प्रतिवर्ष हजारों अनाथ पशुओं की प्राण रक्षा की है। भगवान राजा साहब को दीर्घायु प्रदान करें।

(१३३) रानीगंज तथा इमामगंज के समस्त देवमन्दिरों की पशुबलि वीर जी के बार बार प्रचार करने से बन्द हो गई इस प्रकार १३३ केन्द्रों द्वारा १ हजार से अधिक स्थानों से पशुबलि बन्द हो गई। करोड़ों पशुओं की प्राण रक्षा हो गई।

नमो नमो हे 'वीर' !

[रच०—श्री रामअवतार जी दिवान साहबगंज (संथाल परगना)]

नमो नमो हे "वीर" !

निरपराध निर्बल पशुओं का करते हो नित त्राण ।
सत्य धर्म की बलि वेदी पर अपने रख कर प्राण ॥
पापी पण्डे बने दैत्य जब, फैला पापाचार ।
पावन पुन्य धाम मन्दिर भी, बने पाप आगार ॥
दुर्गा माता के सम्मुख ही होता था संहार ।
धर्म ओट में ही करते थे, पापी पाप प्रसार ॥
वह टूट गई प्राचीर, नमोः नमोः हे "वीर" !

परशु राम के वंशज हो तुम, शर्मा अति बलवान ।
पाखण्डी पापी पन्डों के, कंपा रहे हो प्राण ॥
कभी जेल में, कभी रेल में छः ऋतु बारह मास ।
वाममार्ग के उच्छेदन को, करते सदा प्रवास ॥
हो धीर वीर गम्भीर । नमोः नमोः हे 'वीर' ।

नगर नगर में, ग्राम ग्राम में, किया प्रचड प्रचार ।
मांस मीन मदिरा छुड़वा कर, किया अतुल उपकार ॥
पत्थर डंडों से पन्डों ने तुम पर किये प्रहार ।
किन्तु न विचलित हुए कभी भी धन्य तपस्वि उदार ॥
हे धर्म धुरन्धर धीर । नमोः नमोः हे "वीर" !

पाप पुञ्ज को भस्म कराने, देते हो उपदेश ।
गर्जन से अथवा अनशन से, दिया दिव्य सन्देश ॥
हे जगदीश ! यही है मेरी, एक याचना आज ।
रामचन्द्र शर्मा सुवीर के प्रण की रखिये लाज ॥
वह जावे सत्य समीर । नमोः नमोः हे "वीर"

पच्चीसवां अनशन

गोरखपुर जिला में बाँसगांव प्रसिद्ध तहसील है। यहाँ आठ हजार वीर राजपूत रहते हैं। बांसगांव के मध्य में एक दुर्गा जी का मनोहर मंदिर है। इस मंदिर के समक्ष दुर्गा पूजा में प्रति वर्ष चार सौ बकरे, एक भैंसा तथा चार शूकर काटे जाते थे। आश्विन के नवरात्र की नवमी को मंदिर के निकट रक्त की कीच मच जाती थी। मनोहर मंदिर भीषण हत्यागृह के रूप में परिवर्तित हो जाता था। इस महा भयानक हत्याकांड को बंद कराने के लिये छपरा के प्रसिद्ध अभियोग के होते हुये भी धर्मप्राण वीर जी महाराज ने पुनः प्राणाहुति देने का निश्चय करके बाँसगांव के उक्त मंदिर के समक्ष इस वर्ष के नवरात्र में निर्जल अनशन व्रत ठान दिया। वीर जी ने अपने जीवन में चौबीस बार अनशन किये थे। किन्तु यह पच्चीसवां अनशन सब से भयंकर तथा भीषण था।

सुशिक्षित क्षत्रियों का था जिसमें श्रीयुत सत्यदेव सिंह जी वकील बाबू बमबहादुर सिंह, श्रीमान् यागेन्द्रपाल सिंह, ठाकुर नरेन्द्रनाथ सिंह, ठाकुर साहिबजादा सिंह, ठाकुर रामबली सिंह, ठाकुर राजेन्द्र सिंह लालबहादुर सिंह जी आदि थे यह दल 'वीर' जी का पक्षपाती था। इस दल का प्रत्येक सदस्य पशुबलि को मिटाने के लिये प्रबल प्रचार कर रहा था। बड़हलगंज के राष्ट्रीय नेता पं० सत्यदेव जी शास्त्री भी अपनी समस्त शक्ति लगा कर वीर जी की प्राणरक्षा में डट गये थे। पं० रामनरेश जी तिवारी जो दुर्गा जी के मंदिर के प्रधान पुरोहित हैं उन्होंने भी पशुबलि का संकल्प न कराने की प्रतिज्ञा कर ली। दूसरी ओर के राजपूत पशुबलि करने को डटे हुये थे। भीषण संघर्ष की आशंका से गोरखपुर की पुलिस का एक दल बाँसगांव में अकस्मात ही आ गया, पुलिस के समस्त सिपाही शस्त्रों से सुसज्जित थे। पुलिस के अधिकारियों ने बांसगांव की जनता को तलवार निकालने पर गिरफ्तार कर लेने का नोटिस दे दिया। इस आज्ञा के विरुद्ध किसी ने कुछ विरोध न किया। बिना तलवार के न तो पशुबलि ही हो सकती थी न उपद्रव ही हो सकता था। इस प्रकार पशुबलि बन्द हो जाने की पूर्ण संभावना हो गई जहां प्रतिवर्ष सूर्योदय होते ही रक्त बहने लग जाता था वहां दस बजे तक एक भी पशु नहीं मारा जा सका। वीर जी के चारों ओर हजारों मनुष्यों की भीड़ उत्सुकता पूर्ण दृष्टि से देख रही थी सहसा एक राजपूत युवक ने एक बकरे को लाकर खड़ा कर दिया और उसे गँडासे से काटने को तत्पर हो गया। उसे अनेक सज्जन समझा कर थक गये किन्तु वह अपने दुराग्रह

पर दृढ़ रहा। यह देख कर वीर जी महाराज ने उसे संकेत से
अपने समीप बुलाया। उसके आते ही वीर जी उसके पावों
से लिपट गये। इस घटना से उसके सभी समर्थक वीर जी
के पक्षपाती बन गये। ह युवक भी लज्जित होकर लौट गया।
फिर किसी ने भी पशुबलि देने का दुराग्रह नहीं किया हत्या
के बदले में एक यज्ञ किया गया। हजारों मनुष्यों को प्रसाद
वितीर्ण किया गया। रात्रि में अगणित जन समुदाय के आग्रह
से धर्मप्राण पण्डित श्री रामचन्द्र जी शर्मा 'वीर' ने स्नान सन्ध्या
कर के ३ दिवस के उपरान्त अपने महानव्रत को समाप्त करते
हुए गो-माता का दुग्ध पान किया। सहस्रों मनुष्यों ने जिनमें
राजपूत अधिक थे वीर जी के आगे गो की शपथ लेकर मांस
भक्षण का आजीवन त्याग कर दिया। दो दिवस [illegible]
विराट सभाएं होती रहीं। वीर जी को राजपूतों की ओर [illegible]
तथा स्थानीय सर्वपारीण ब्राह्मणों की ओर से पृथक [illegible]
दिये गये। इस प्रकार सत्य की जय हुई भगवान [illegible]
क्षत्रियों का कल्याण करें।

बलिदान दीजिये !

मातृ के सामने धर्म रक्षार्थ अत्र।
तुच्छ प्राणों की चिन्ता न कुछ कीजिये ॥
पृष्ठ उलटें ज़रा अपने इतिहास के।
उनसे ही आप अपना सबक लीजिये ॥
'तेग गुरु' पुत्र की आर्यवर वीर की—
ओर ही देखिये धर्म हित ही जिये ॥
किन्तु भेड़ों की गर्दन न बकरों का सर।
पेट भरने को बलि नाम मत लीजिये ॥

वीर रामचन्द्र की कहानी उपवास वाली—
इतिहास बीच निज नाम छोड़ जायगी।
मूक पशुओं की बलि रोकने को निज बलि।
देने को तयार ये क्या बात भूली जायगी ॥
मरें या जीवित रहें, आज नहीं कल सही—
यह बलिदान की बुराई मिट जायगी ॥
भारत विमल चन्द्र की ये कालिमा महान—
मेरे मन आता नहीं नेक रह जायगी ॥

युरोप में आंदोलन

वीर जी के बार बार किये गये भीषण उपवासों तथा उनके अथक आन्दोलन का प्रभाव वायु के प्रबल वेग की भांति समुद्रों को पार करता हुआ युरोप के अनेक देशों में फैलता जा रहा है और अनेक युरोपियन स्त्री-पुरुषों ने वीर जी के कठोर तप से प्रभावित होकर मांसाहार का त्याग किया है और युरोप के पशु हितैषी, दयालु हृदय पुरुषों ने वीर जी के

दिव्य संदेश को युरोप के देशों में जिस उत्साह से प्रचारित किया है उसकी कुछ झांकी इस अध्याय में देखने को मिलेगी, इस अध्याय को पढ़कर पाठकों को अंतर्राष्ट्रीय ज्ञान के साथ २ भारत की महानता तथा युरोपियनों के हिन्दूधर्म के प्रति अटूट भक्तिभाव का भी परिचय मिलेगा।

साथ ही भारतवर्ष की प्राचीन सभ्यता और प्राचीन आदर्शों के प्रति उदार हृदय युरोपियन स्त्री-पुरुषों के हृदय में कितनी श्रद्धा भरी हुई है और कितने ही युरोपियन हिन्दूधर्म का पालन कर रहे हैं इसका भी हमारे पाठकों को ज्ञान होगा।

धर्मप्राण पं० रामचन्द्र शर्मा 'वीर' को युरोप के विद्वान किस स्नेह भाव से देखते हैं और उनके उपदेशों का युरोप पर कितना गहरा प्रभाव पड़ा है और 'वीर' जी के कलकत्ता में दो बार के किये अनशन से युरोप के निरामिषभोजी आन्दोलन को कितनी शक्ति मिल गयी है यह आगे के पृष्ठों को पढ़ने से ज्ञात होगा। आगे के पृष्ठों की एक एक पंक्ति गम्भीरता पूर्वक मनन करने योग्य है।

(लेटिन भाषा का सुप्रसिद्ध जर्मन मासिक पत्र) वर्ष १९वां ७वां भाग १५ जुलाई १९३६।

रक्षा है। पशु हमारे मित्र हैं, और वे हमारे आत्मा को कृत्न होने से बचाते हैं।

मंगनस् स्थान्टीज

× × × ×

भारतवर्ष में धार्मिक अत्याचार
युरोप में वैज्ञानिक अत्याचार

भारतवर्ष से एक अत्यन्त आश्चर्यजनक समाचार आया है। २६ वर्ष के युवक पं० रामचन्द्र शर्मा 'वीर' ने पशुबलि बन्द कराने के लिये जीवन-मरण का संग्राम छेड़ा है, आमरण उपवास आरम्भ किया है भारतवर्ष के कई प्रान्तों मे खास कर बंगाल प्रान्त में देवमन्दिरों में पशुबलि होती है।

वॉल्टीयर कहता है—'बाघ हर जमाने में होता है" हर समय कोई ना कोई अत्याचारी रहता ही है और हम इस कथन में यह जोड़ सकते हैं कि हर राष्ट्र में कोई न कोई निर्दयता होती ही है और यह निर्दयता उन्हीं के द्वारा की जाती है जो सब से बलवान और श्रेष्ठ श्रेणी के अनुयायी होते हैं।

भारतीय मनुष्य समाज पर युरोप की अपेक्षा कहीं अधिक धार्मिक प्रभाव है, भारतवासी युरोपियनों से कहीं अधिक धर्मप्रेमी हैं। धार्मिकों का आदर वहां अधिक है, यही कारण है कि वहां धर्म के नाम पर भी निर्दयता (पशुहत्या) होती है, यूरोप में विज्ञान का प्रभाव अधिक है वैज्ञानिकों का आदर अधिक है, लोगों की वैज्ञानिकों में बहुत श्रद्धा और विश्वास है और वैज्ञानिक ही असंख्य पशुओं के साथ अमानुषिक घोर अत्याचार बिना किसी संकोच के करते हैं।

यहां चिकित्सा विज्ञान की उन्नति के लिये कितने ही प्राणियों को जीवित अवस्था में ही काटा जाता है, उनके अंगों को जीवितावस्था में ही काट काट कर देखते हैं और औषधियों का प्रयोग करते हैं।

किन्तु, भारतवर्ष में पशुवलि के विरोध में जो आन्दोलन होता है और यूरोपमें इन वैज्ञानिकों की निर्दयताके विरुद्ध जो आन्दोलन किया जाता है उसमें बड़ा अन्तर है। भारतवासियों की अपेक्षा हम दूसरे उपायों से काम लेते हैं, इसका कारण यही है कि उनकी प्रकृति दूसरी है वे दूसरे जलवायु में रहते हैं उनका चरित्र दूसरा है, उनके विचार दूसरे हैं, उनकी रीतियां दूसरी हैं।

वैज्ञानिक निर्दयता के विरोध में भारतवासियों के अनशन आदि से कहीं कम कठिन उपायों की आवश्यकता है, किन्तु यह वैज्ञानिक निर्दयताएं पशुबलि की निर्दयता से कहीं अधिक हैं। भारतवर्ष में होने वाली पशुवलि के विरोध के लिये रामचन्द्र शर्मा भूखों प्राण देने को तय्यार हो गये। वैज्ञानिक अत्याचार पशुबलि के अत्याचार की ही भांति भीषण है, पशुबलि में जिस प्रकार प्राणियों को मारा जाता है वैसे ही निर्दय होकर वैज्ञानिक भी प्राण लेते हैं।

"देर तीर फ्रोइंद" (पशुओं का वंधु)
जर्मनी का एक मासिक पत्र ।
संख्या १०, वर्ष ६३ अक्टूबर १९३६ ।

यदि वहुत से लोग इसे करें तो क्या अन्याय हमेशा ही होता रहेगा ?

--मैगनस् स्त्रान्टिज्।

पृष्ठ १४६ "भारतवर्ष में धार्मिक पशुहत्या।"

[लेखक—मैगनस् स्वान्टिज्]

वहुत यूरोपियन समझते हैं कि सभी भारतवासी निरामिष-भोजी हैं, किन्तु यह विचार तो मिथ्या है यह सत्य है कि वहुत से भारतवासी मांस नहीं खाते वे नैतिक तथा धार्मिक कारणों से मांसाहार से घृणा करते हैं, किन्तु सव ऐसा नहीं करते भारतवर्ष के मंदिरों में विशेषकर वंगाल के मंदिरों में पशुओं का हत्याकाण्ड होता है, यह तो प्रकट ही है ।

फिर भी वहुत लोग ऐसे हैं जो देवमंदिरों में होने वाली पशु हत्या को पाप समझते हैं ।

बौद्धधर्म पशुवलि के एकदम विरुद्ध है किंतु यह धर्म भारतवर्ष में बहुत नहीं फैला है, इसके अनुयायी अधिकतर चीन और जापान में ही हैं फिर भी यह अत्यंत आश्चर्य का विषय है कि ऐसे देश में जहां हजारों वर्षों से एक छोटे से जीव की हिंसा भी अन्याय समझी जाती हो वहां प्रति वर्ष अगणित गौएं तथा अन्य पशु सहस्रों मनुष्यों की उपस्थिति में धर्म के नाम पर निर्दयता पूर्वक धार्मिक उत्सवों पर क्यों मारे जाते हैं। किन्तु जहां एक ओर ऐसे धार्मिक अत्याचार होते हैं वहीं बहुत भारतीय ऐसे

यूरोप में पशु रक्षा का आन्दोलन करने वाले
धर्मप्राण 'वीर' जी के परम स्नेही

महामान्य मैगनस् श्मिट्ज, स्विट्जरलैण्ड।
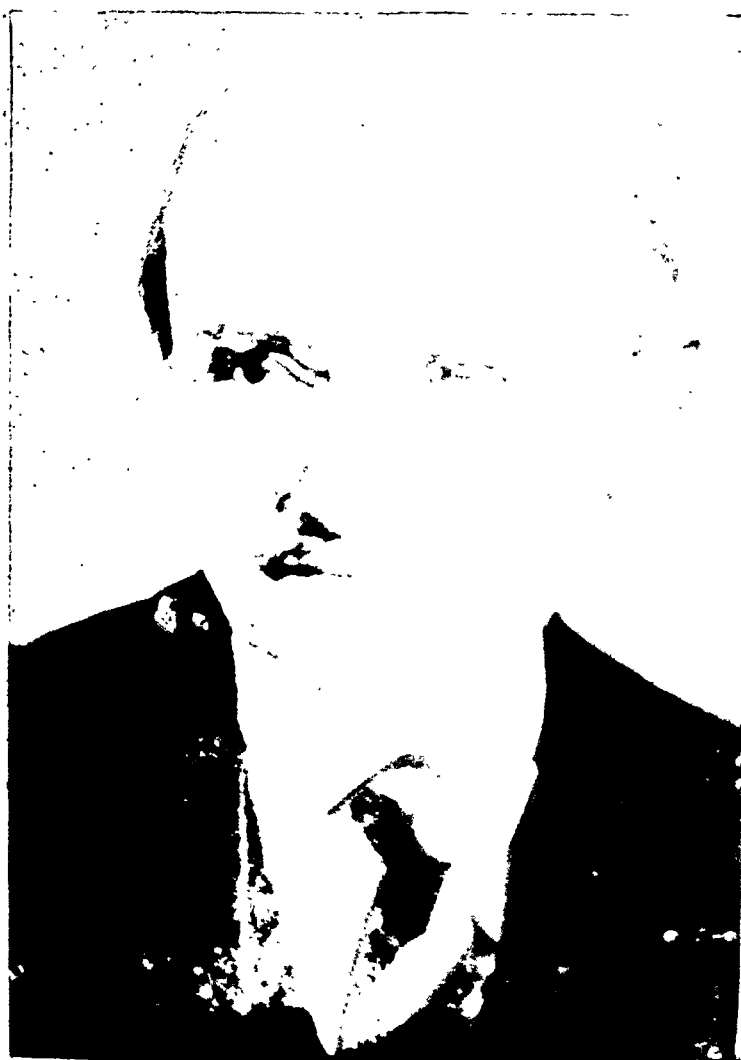
भी हैं जो धार्मिक पशुबलि का तीव्र विरोध करते हैं, कुछ वर्षों से इन अत्याचारों के प्रतिकार तथा विरोध के लिये एक बड़ी संस्था भारतवर्ष में स्थापित है इस संस्था का संगठन २६ वर्षीय युवक पं. रामचन्द्र शर्मा 'वीर' ने किया है, जिन्होंने कलकत्ते में अक्टूबर १९३६ में कालीघाट मंदिर में होने वाली भयंकर पशुबलि के विरोध में जीवन मरण का संग्राम किया था यानी अनशन किया था, इनका प्रण था कि जब तक यह हत्या बन्द न होगी मैं अपना अनशन करता रहूंगा।

के लिये प्रभावशाली आन्दोलन किया जायगा। कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपने सेक्रेटरी द्वारा स्विटजरलैन्ड की एक पशुहितैषिणी महिला को पण्डित रामचन्द्र शर्मा के आन्दोलन का पूर्ण परिचय दिया है।

यूरोप में पशुहत्या के विरोध में यदि ऐसा उपवास किया जाय तो उसका कोई विशेष प्रभाव न होगा संभव है कि कुछ लोग इसे पवित्र आदर्श समझें किन्तु अधिक लोग इस प्रकार के उपवास करने वाले को निरा पागलपन ही समझेंगे और इस प्रकार के उपवास करनेवालों को पागलखाने में भरती किये जाने के योग्य समझेंगे।

किन्तु, भारतवर्ष की बात कुछ और है वहां ऐसे उपवासों द्वारा बड़े बड़े कार्य हो सकते हैं, कितने ही नैतिक तथा धार्मिक उद्देश सिद्ध हो सकते हैं, यह तो भली भांति विदित ही है कि मि० गाँधी ने दमन तथा जबर्दस्ती के विरोध में कितनी ही बार सफलता पूर्वक उपवास किया है।

यूरोपवालों को तो यह जानकर बड़ा आश्चर्य होगा कि रामचन्द्र शर्मा जीवन उत्सर्ग के लिये तैयार हो गये। हमारे हृदयों पर इसका जो प्रभाव पड़ा है उसी से हम इस बात का अनुमान लगा सकते हैं कि भारतवर्ष में जहां जीवन पवित्र माना जाता है उसका कितना अधिक प्रभाव हुआ होगा किन्तु यूरोप में उपर्युक्त धार्मिक पशुबलि की ही भांति अन्याय पूर्वक पशुपक्षी वैज्ञानिकों की निर्दयता के शिकार होते हैं। किन्तु यूरोप वाले इसके लिये क्या करते हैं। यदि वे पशुक्लेश निवारिणी संस्था के सदस्य बन गये और अपना

चंदा दे दिया तो समझ लेते हैं कि उस निर्दयता के विरोध में उनका जो कर्त्तव्य था वह समाप्त हो गया और वह चंदा इतना अधिक नहीं होता कि उससे उनके भोग-विलास में किसी प्रकार की त्रुटि हो सके और वे लोग जो मूक पशुओं के क्लेश निवारण के लिये तन, मन से परिश्रम और आन्दोलन करते हैं वे मूर्ख समझे जाते हैं। हमें आशा और विश्वास है कि भारतवर्ष में रामचन्द्र शर्मा 'वीर' ने पशुहत्या के विरोध में जिस साहसपूर्ण वृत्ति का परिचय दिया है उससे हमें भी दीक्षा मिलेगी। यहां भी पशु रक्षकों की संख्या वृद्धि होगी। यूरोप के पशु रक्षकों के लिये आवश्यक नहीं है कि वे भारतीय 'वीर' रामचन्द्र शर्मा की भांति उपवास कर अपने जीवन को संकट में डालें। वहां साहित्यिक प्रचार तथा व्याख्यानादि से काम हो सकता है।

इटली, युगास्लोविया, बल्गेरिया, हालैण्ड और बहुत से दूसरे देशों के समाचार पत्रों में प्रकाशित करूं और आपके चित्र के साथ छोटी पुस्तकें छपवा कर वितीर्ण करूं।

क्या आप यह लिखने की कृपा करेंगे कि 'आदर्श हिन्दू संघ' का क्या अर्थ होता है। मैंने इंगलिश शब्द कोष में बहुत खोज करने पर आदर्श और संघ शब्द नहीं पाया। मैं एक जर्मन लेखक तथा वक्ता हूं जो चालीस वर्षों से मांस भक्षण तथा पशुओं पर होनेवाले अत्याचारों के विरुद्ध संग्राम कर रहा हूँ।

का उल्लेख था जिन्होंने भारतीय मंदिरों में होने वाली भयंकर पशुहत्या के विरुद्ध संग्राम किया है और उन्होंने अपनी आत्मिक शक्ति से भारत के कई मन्दिरों की पशुहत्या बंद करा दी है। यहां पश्चिम में पशुओं के त्राता गण कई पीढ़ियों से पशुरक्षा के प्रबल प्रयत्न कर रहे हैं इसमें संदेह नहीं कि इस आन्दोलन में सफलता भी मिली है किन्तु सूक्ष्म तथा विचार करने पर यह ज्ञात होता है कि पशुरक्षा आन्दोलन को उदासनता, विरोध और ईर्षा से निरन्तर घोर संघर्ष करना पड़ रहा है। धर्म मन्दिरों, स्कूलों अथवा समाचार पत्रों में इस आन्दोलन का कदाचित ही कोई सहायता मिलती हो बल्कि इनके अनेक प्रतिनिधि तो पशुरक्षा आन्दोलन के कट्टर शत्रु हैं। अधिकांश लोगों में तो इसके प्रति उन्नत भावनाओं का अभाव है इस आन्दोलन के महत्व को समझने वाले व्यक्ति थोड़े हैं।

पशु रक्षकों का जीवन वास्तव में हुतात्माओं का जीवन है और जो पुरुष सर्वसाधारण जनता के विरोधों की कुछ परवा नहीं करता तथा अपना काम किये जाता है, निसन्देह उसके स्नायु और हृदय अतीव शक्तिशाली है। पण्डित रामचन्द्र शर्मा सरीखे वीरों को आजकल की सभ्यता से कोई सहानुभूति प्राप्त नहीं हो सकेगी, उनका बलिदान भी यूरोप में सनसनीदार फिल्मों के दृश्यों से अधिक उत्तेजना नहीं पैदा कर सकेगा, तथापि भारत में भारतीय जनता के मध्य जिन पर यूरोपीय शासकों की वक्र दृष्टि रहती है। पशुओं का एक त्राता अवतरित हुआ है, ऐसा त्राता जिसने असीम दया से परिपूर्ण अपने [illegible]य में मूक प्राणियों को आश्रय दिया है तथा जो मूक

प्राणियों के लिये केवल संघर्ष ही नहीं किन्तु अपने प्राणों की बलि दे देने को प्रस्तुत है और इसका बलिदान अवश्य ही सफल होगा। क्या हमलोग समझ सकते हैं कि इसका क्या अर्थ है?

आत्मिक जगत में इसका कितना गम्भीर तथा सुदूर व्यापी महत्व है?

का उल्लेख था जिन्होंने भारतीय मंदिरों में होने वाली भयंकर पशुहत्या के विरुद्ध संग्राम किया है और उन्होंने अपनी आत्मिक शक्ति से भारत के कई मन्दिरों की पशुहत्या बंद करा दी है। यहां पश्चिम में पशुओं के त्राता गण कई पीढ़ियों से पशुरक्षा के प्रबल प्रयत्न कर रहे हैं इसमें संदेह नहीं कि इस आन्दोलन में सफलता भी मिली है किन्तु सूक्ष्म तथा विचार करने पर यह ज्ञात होता है कि पशुरक्षा आन्दोलन को उदासीनता, विरोध और ईर्षा से निरन्तर घोर संघर्ष करना पड़ रहा है। धर्म मन्दिरों, स्कूलों अथवा समाचार पत्रों में इस आन्दोलन का कदाचित ही कोई सहायता मिलती हो बल्कि इनके अनेक प्रतिनिधि तो पशुरक्षा आन्दोलन के कट्टर शत्रु हैं। अधिकांश लोगों में तो इसके प्रति उन्नत भावनाओं का अभाव है इस आन्दोलन के महत्व को समझने वाले व्यक्ति थोड़े हैं।

पशु रक्षकों का जीवन वास्तव में हुतात्माओं का जीवन है और जो पुरुष सर्वसाधारण जनता के विरोधों की कुछ परवा नहीं करता तथा अपना काम किये जाता है, निसन्देह उसके स्नायु और हृदय अतीव शक्तिशाली है। पण्डित रामचन्द्र शर्मा सरीखे वीरों को आजकल की सभ्यता से कोई सहानुभूति प्राप्त नहीं हो सकेगी, उनका बलिदान भी यूरोप में सनसनीदार फिल्मों के दृश्यों से अधिक उत्तेजना नहीं पैदा कर सकेगा, तथापि भारत में भारतीय जनता के मध्य जिन पर यूरोपीय शासकों की वक्र दृष्टि रहती है। पशुओं का एक त्राता अवतरित हुआ है, ऐसा त्राता जिसने असीम दया से परिपूर्ण अपने हृदय में मूक प्राणियों को आश्रय दिया है तथा जो मूक

प्राणियों के लिये केवल संघर्ष ही नहीं किन्तु अपने प्राणों की वलि दे देने को प्रस्तुत है और उसका वलिदान अवश्य ही सफल होगा। क्या हमलोग समझ सकते हैं कि इसका क्या अर्थ है?

आत्मिक जगत में इसका कितना गम्भीर तथा सुदूर व्यापी महत्व है?

क्या यह एक जादू सा नहीं ज्ञात होता कि जडवाद के इस युग में रहते हुए भी हमलोग एक आश्चर्यजनक और अलौकिक पुरुष के दर्शक हैं? यह अलौकिक महापुरुष भारतवर्ष में जन्मा है।

क्या हमलोगों को उन मूक प्राणियों हमें सब से अधिक असहाय पशुओं की ओर से उन्हें धन्यवाद नहीं देना चाहिये जिन्होंने अनशन द्वारा हमलोगों को एक पथ प्रदर्शित किया है औरवह ऐसा पथ है जिस पर उनसे पूर्व कोई भी चलने का साहस न कर सका था।

इस आत्मवलिदान के साथ साथ हमें अंतर्जगत में एक भीषण उथल पुथल का आभास मिलता है। इस हिन्दू में प्रेम और दया के भाव इतने विशुद्ध इतने विश्वव्यापी और इतने महान् ज्ञात होते हैं कि क्रिस्तानों को तो इससे अत्यन्त लज्जित होना चाहिये, पुनः पुनः पूर्व से ही प्रकाश प्राप्त होता है, क्या हमलोग (यूरोप वाले) वास्तव में सूर्यास्त के देश हैं।

रामचन्द्र शर्मा के विषय में मुझे विश्वस्त सम्वाद मिला है कि वे अभी जीवित हैं और वे चालीस दिन का अनशन करने के उपरान्त भी अपनी समस्त शक्ति लगा कर पशुरक्षा का आन्दोलन कर रहे हैं।

ज्युरिच ११
शेफ्रोम्ट्रार २१५
स्विटजर लैंड.

ज्युरिच
२१ जून १९३७

पंडित जी !

मेगनस् स्वान्टिज की ही भांति मैं भी आपके कृपापत्र का आनन्द लेने का सौभाग्य प्राप्त कर सकी हूं।

इसे हमलोगों ने कैसा समझा यह मैं शब्दों में नहीं बता सकती और यह भी नहीं बतला सकती कि यह जानकर हमलोगों को कितना आनन्द हुआ कि आप मृत्यु से बचा लिये गये और चालीस दिन के भयंकर उपवास का धक्का सहने पर भी आपका स्वास्थ्य नहीं गिरा है। मैं अपने कई लेख आपके पास भेजूंगी जिससे आपको ज्ञात होगा कि यूरोप में आपकी वीरता कितने उत्साह से अपनायी जा रही है।

मैं स्वयं कई वर्षों से हिन्दूधर्मानुयायी हूँ और मेरा प्रेम हिन्दुओं के उच्च धर्म, आध्यात्मिक विज्ञान तथा बुद्ध की शिक्षाओं के प्रति लालायित रहता है, मेरा धर्म वेदांत के आधार पर है।

मुझे यह पूर्णतया विश्वास हो गया है कि मैंने भारतवर्ष में कई बार जन्म लिया है, नहीं तो फिर, ऐसा क्योंकर हो सकता था कि मैं, आपके देशवासियों की आत्मा से कोई आत्मीयता का अनुभव करूं, मेरी यह प्रबलतम इच्छा है कि मैं अगले जन्म में भारतवर्ष की जो सारे संसार को एक पवित्र सभ्यता सिखाने वाला है, उसके कार्य में सहयोग देने योग्य बनूं, तदनन्तर भारतवर्ष में हमलोगों के सामान्य धर्म के प्रति जो कुछ हो रहा है उसका शेष ध्यान सहित अनुसरण कर रही हूं प्रगाढ़ कृतज्ञता से

मै आपका और आपके पवित्र कार्यों का स्वागत करती हूँ।

पण्डित जी।

आपकी विशेषानुरागिणी।

रियाशेव.

ज्युरिच

२८ सेप्टेम्बर १९३७.

मैगनस् स्वान्टिज्

ज्युरिच १७ Vipkingen. Geibeistr 8III.

स्वीटजरलैंड.

श्री पण्डित रामचन्द्र शर्मा 'वीर' C/o ठाकुर मल जी नेवर प्रेसीडेण्ट आदर्श हिन्दू संघ, देवघर (S. P.) विहार (India)

महान आदरणीय तथा प्रिय बन्धु,

मैं तथा रियाशेव अब जितने दिन और जीवित रहेंगे ११ सितम्बर को प्रति वर्ष उत्सव मनायेंगे क्योंकि १२ अगस्त १९३७ का भेजा हुआ आपका पत्र हमको उसी दिन प्राप्त हुआ था।

आपके जीवन चरित्र की ३००० प्रतियां मैं इस सप्ताह जर्मन भाषा में छपवा कर बाँट रहा हूँ, यह जानकर मुझे बहुत दुःख होता है कि आप इतने लम्बे लम्बे उपवास कर जाते हैं और ऐसे आपत्तिजनक साधन से अपने कार्य की सिद्धि की आशा रखते हैं।

मेरे प्रिय बन्धु, अपने स्वास्थ्य का भी आप कुछ ध्यान रखिये, हमारा जीवन अमूल्य है क्योंकि हमें इसी जीवन में महान् कार्य करने हैं। हमको तब तक इस संसार को छोड़ने

की आज्ञा नहीं है, जब तक कि हमलोग अपने महान् उद्देश में सफल न हो जाएं।

हमलोग बड़े प्रेम के साथ आपको स्मरण किया करते हैं, हमारा हार्दिक प्रणाम।

आपका प्रिय बन्धु--
मैगनस् स्वान्टिज

महामति मिस रियाशैव का गद्य-काव्य

प्रोत्साहन

(अत्यन्त आदर और कृतज्ञता के सहित श्री रामचन्द्र शर्मा 'वीर' के प्रति रचित अंग्रेजी गद्य-काव्य का हिन्दी अनुवाद)

एक ही पुरुष बहुत कार्य कर सकता है।

× × × ×

एक ही पुरुष बहुत कुछ कर सकता है
यदि शक्ति का उसमें समावेश है।
जिसकी धारा उसके हृदय से बह रही है॥
एक ही पुरुष बहुत कुछ कर सकता है।
यदि उसके हृदय में एक पवित्र ज्योति जगमगा रही है।
यदि ज्योतिर्मय की खोज
उसकी इच्छा शक्ति को बल दे रही है॥
यदि एक उच्च विश्वास उसके कृत्यों को
प्रकाशित कर रहा है।
एक ही पुरुष बहुत कुछ कर सकता है
यदि कोई भय, कोई भ्रांति,

यूरोप में लाखों पशुओं की रक्षा करने वाली देवी
धर्मप्राण 'वीर' जी की अनन्य उपासिका

महामती मिस रिया शैव, स्वीट्जरलैण्ड।

उसे अपने पथ से नहीं विचलित करते,
यदि उसके मन और आत्मा
समस्त में प्रवाहित हो रही है?
क्योंकि ऐसे व्यक्ति से, हजारों की संपदा का
प्रवाह हो सकता है
और उसकी खोज निर्माण करेगी,
एक नवीन विश्व ॥

—रियाशेव।

स्विट्जरलैंड से श्रद्धा के पुष्प

विंटर्थर वेल्थीम ओवीर लूर्गेस १९
स्विट्ज़रलैंड, दिसम्बर १९३५
ज्यूरिच (स्विटजरलैंडल्फॉस्सरगेस)

पंडित रामचन्द्र शर्मा के प्रति--

अंतरतम श्रद्धा कृतज्ञता और प्रसन्नता के साथ, हे दया-वीरों के नृपति, प्रभु ! रामचन्द्र शर्मा ! मैं आपका स्वागत करती हूँ।

अखिल हुतात्माओं में सब से निरपराध हुतात्माओं के रक्षक भूले हुये प्राणियों में भी सब से अधिक त्यागे हुए प्राणियों के रक्षक हे रामचन्द्र शर्मा "वीर" तू कोमलतम हृदयवान, गम्भीरतम दया से परिपूर्ण महानतम श्रेष्ठ आत्मा वाला संत है।

हे महात्मा रामचन्द्र शर्मा !

तू यशस्वी और देदीप्यमान सकल प्रेमी हृदयों का राजा है। तेरी महान् (विशाल) आत्मा नित्यता के सागर के समान अथाह आश्चर्य जनक और दिव्य है महात्मा शर्मा! तू योशुख्रीष्ट के विश्व प्रेमी लोचनों के समान है। तेरा विश्व प्रेमी हृदय उत्साह की ज्वाला से जगमगाती हुई, एक दिव्य अग्नि और अविनाशी प्रकाश की (अवतार) मूर्त्ति है।

कितना अद्भुत है तेरा हृदय, रामचन्द्र शर्मा!

विश्व के अखिल प्राणी जो आज जीवित हैं अवश्य ही तेरे हृदय की भक्ति और श्रद्धा से विनम्र वन्दना करेंगे! क्योंकि तेरा हृदय सर्व व्यापी प्रेम के विशाल सादृश्य में स्पंदित हो रहा है। ... ... तेरे अस्तित्व को ध्वनि नित्यता के छोर से वसंत के ज्वार भाटा की भांति अखिल विश्व में फैल रही है, और तेरा हृदय पवित्र प्रकाश है।

रामचन्द्र शर्मा, तू विशाल आत्मा है! तेरे भोले से भोले, अति दीन विवश बन्धु पशु, तुझे किस भांति धन्यवाद दें?

तेरे वे मानव, बन्धु, किस भांति तुझे धन्यवाद दें, जो तेरे पशु बन्धुओं को प्यार करते हैं, जैसे तू करता है। वे सब तुझे किस प्रकार धन्यवाद दें, जो संतप्त, पशुओं के कष्ट के कारण नैराश्य-पूर्ण क्रंदन कर रहे हैं,

तुझे किस भांति धन्यवाद देवें, जिनके हृदय अपने पशु बन्धुओं की सेवा के उत्साह से धधक रहे हैं, किन्तु

फिर भी जिनमें इतनी सामर्थ्य वा संभावना की भावना नहीं है वे उस वीरता के मार्ग का अनुसरण कर सकें जिसका तू दर्शक है।

पाश्चात्य देशों की उन समस्त दयावान आत्माओं (व्यक्तियों) के जीवन के वीरतापूर्ण त्याग मानव हृदयों में प्रतिध्वनित नहीं हो सकते, जो अपने जीवन को वीरतापूर्ण त्याग में—

ऐसा त्याग जिसे एक भी व्यक्ति न समझ सके न जिसका एक व्यक्ति भी आभास पा सके—दिता देंगे, वे मूर्ख मान कर हंसे जाएंगे।

केवल समस्त धर्मों की जन्मदात्री पवित्र भारत भूमि में ही वह महान त्याग समझा जा सकता है केवल वहां ही तेरे समान आत्मावाला तुझसा वीर प्रकट होना सम्भव है।

किन्तु तेरे पावन देश में भी तू ही मनुष्यों में प्रथम है जो आभामय युवा जीवन को अपने मूक भाइयों के हित प्रदान कर रहा है और यही कारण है कि तेरी वीरता, उन समस्त तपोमय कृतियों से जो कि पहले कभी की गई है, अत्यन्त उत्कृष्ट है।

महात्मा रामचन्द्र शर्मा!

मेरा आत्मा तुझ में आनन्दित होता है मेरा हृदय तेरे लिये प्रकाशित है और मेरा उत्साह तेरे लिये एक कृतज्ञता का गान अलापता है। निर्बल शब्द नहीं व्यक्त कर सकते कि मैं तुझे कितनी गहराई तक धन्यवाद देती हूँ। दूरवर्ती आत्माओं की गूढ़ प्रकट सादृश्यता ही तुझे बता सकेगी कि किस स्वर्गीय प्रकाश की किरणें तूने मेरी आत्मा में जगायी हैं।

क्योंकि आध्यात्मिक जगत में एक कार्य हुआ है वह कार्य अपने

स्वर्गीय सौंदर्य में इतना महान, जगत के दूरवर्ती, प्रदेशों पर भी
अपना असर पैदा करने में इतना आश्चर्यमय कि मैं स्पष्ट
अनुभव करती हूँ कि तेरी तपस्या के साथ ही विश्व के लिये एक
कल्याणतर भविष्य का अरुणोदय हो रहा है।

धन्य है वह घटिका जिसने तुझे व्रत दिया है, इस त्याग के
लिये धन्य है तेरा पथ, हे सन्त ! तेरे कारण धन्य है, वह कष्टमय
मार्ग जिस पर कि तेरे भोले से भोले बन्धु आरूढ़ हैं।

अब मनुष्य जाति के लिये सरल होगा कि वे ऐसा मार्ग पा
सकें जिस पर वे पाप रहित हृदयों और हलके कदमों
से आ जा सकें। क्योंकि उनके पहिले तू प्रकाश में आ
चुका है।

अब पशु निर्मम क्रूरताओं से भरी हुई यातनाओं से मुक्त
होंगे और समय की गति के साथ ही अनुभव कर सकेंगे कि
मनुष्य उनके लिये केवल दानव ही नहीं हो सकते हैं प्रत्युत
दयालुता और सहृदयता से पूर्ण। और यह सब तेरा कार्य है,
हे प्यारे वीर, और उन सबका कार्य जो मानवी वीरता के सर्व-
श्रेष्ठ पथ पर तेरा अनुसरण करेंगे।

रामचन्द्र शर्मा, दिव्य प्रकाश के नेता !

तू और तेरे शिष्य अभी न मरें, तू अपने इसी अवतार में
निर्दिष्ट मार्ग से कार्य करता चल, क्योंकि आधुनिक समय की
हमारी भयानक दुनिया को संतों की अन्य समस्त प्राचीन समयों
से अधिक आवश्यकता है।

तू उत्पन्न और शिक्षित करेगा एक परिपूर्ण युग उन रत्नों
का जो अपने आपको उन जीवों के लिये बलिदान कर देंगे,

जिनके लिये अन्य किसी भी रक्षक ने अब तक अपनी बलि नहीं की।

कितनी ही बार हम पश्चिमीय पशुरक्षकों ने अपने सुख स्वप्नों में पशुओं के बोधि सत्व की कामना की है। आज हम प्रतीत करते हैं कि यह संत और रक्षक हमारे अत्यन्त समीप हैं।

लेकिन हमें यह भी निश्चय है तेरे ही प्रकार के अनेक वीरों को तेरे ही मार्ग से लेकर जाना होगा इसके पहिले कि मानव की पावनता के फलस्वरूप पशुओं की रक्षा हो सके और हम यह भी जानते हैं कि महान आत्मायें केवल तभी आविर्भूत होती हैं, जब महान् विश्वव्यापी परिवर्त्तन होते हैं और आपको देख कर, अहो रामचन्द्र शर्मा 'वीर'! हम बोध करते हैं कि मध्य रात्रि की इति हुई और अरुणोदय हुआ और इस हेतु तुझे धन्यवाद और तुझे आशीर्वाद।

हे महात्मा रामचन्द्र शर्मा।

मिस रियाशैव।

कितने अनशन हुये ?

धर्मप्राण श्री पंडित रामचन्द्र जी शर्मा 'वीर' के भीषण उपवासों की सूची—

(१) स्वाधीनता संग्राम में अजमेर सेन्ट्रल जेल में ३ तीन दिवस अनशन (मार्च १९३२ ई०)।

(२) मट्ट (मध्य भारत) में शिखासूत्र के रक्षार्थ ३ तीन दिवस अनशन (अक्टूबर १९३२ ई०)।

(३) खरगोन (मध्य भारत) में रामायण के अपमान के विरुद्ध ४ चार दिवस (नवम्बर १९३२ ई० में)।

(४) खँडवा में धूनी वाला के विरुद्ध सत्याग्रह में ३ तीन दिवस अनशन (जनवरी १९३३ ई०)।

(५) सागर (मध्य प्रान्त) में महात्मा गांधी की दीर्घायु के लिये ५ पांच दिवस तक निर्जल अनशन किया गया, महात्मा जी पर वैद्यनाथधाम के पण्डों द्वारा किये गये आक्रमण के विरोध में यह अनशन किया गया था।

(६) मांगरोल मुस्लिम राज्य (काठियावाड़) की गो हत्या के विरुद्ध बम्बई में २३ दिवस तक भीषण अनशन किया गया। जिसके फलस्वरूप गोहत्या बन्द हो गई सन् १९३४ ई०।

(७) बम्बई के निकट कल्याण नगर के समीप तीस ग्राम की दुर्गा के सम्मुख चैत्र की पूर्णिमा को पच्चीस हजार पशुओं की रक्षा के लिये ८ आठ दिवस का प्रचण्ड उपवास।

(८) जब्बलपुर के काली मंदिर की पशुबलि के विरुद्ध अनशन एक ही दिवस में विजय सन् १९३५ ई०।

(९) कालीघाट का प्रसिद्ध अनशन ३२ बत्तीस दिवस देशव्यापी आन्दोलन।

(१०) सांगली राज्य में २१ दिवस पशुयज्ञ विरोधी अनशन सन् १९३६ ई०।

(११) कालीघाट की पशुहत्या के विरुद्ध दूसरा अनशन ४० दिवस विश्वव्यापी आन्दोलन सन्, १९३६ ई०।

(१२) मिर्जापुर (युक्तप्रान्त) की गड़बड़ा देवी की हत्या के विरुद्ध ५ दिवस अनशन दिसम्बर १९३६ ई०।

(१३) अपने जन्म स्थान विराटनगर (वैराठ) जयपुर राज्य में मुसलमानों के दुराचार के विरुद्ध ४ दिवस अनशन तथा हिन्दुओं का प्रचण्ड प्रदर्शन करते हुये विजय, जनवरी १९३७ ई० ।

(१४) विन्ध्याचल (मिर्जापुर) की पशुवलि के विरुद्ध ७ दिवस अनशन, अप्रेल १९३७ ई० ।

(१५) गया जिला के मदनपुर थाने में गोरक्षा के हित प्रचण्ड प्रदर्शन तथा गया में ९ दिवस अनशन सन् १९३७ ई० ।

(१६) कलकत्ता कालीघाट की पशुहत्या के विरुद्ध अलीपुर सेन्ट्रल जेल में १३ दिवस अनशन, सन् १९३७ ई० ।

(१७) विराटनगर (वैराठ) के मुसलमानों के अत्याचार के विरुद्ध प्रचण्ड प्रदर्शन करते हुये जयपुर सेन्ट्रल जेल की यात्रा । जेल में ८ दिवस का निर्जल अनशन करते हुये विजय, सन् १९३८ ई० ।

(१८) समस्तीपुर (विहार) में पशुवलि के विरुद्ध अनशन प्रथम ही दिवस में विजय हजारों पशुओं की रक्षा, सन् १९३८ ई० ।

(१९) विराटनगर में यवनों द्वारा मार्ग निरोध करने पर पुनः अनशन प्रथम ही दिवस में विजय सन् १९३९ ई० ।

(२०) नरसिंहपुर (मध्य प्रान्त) में तेन्दू खेड़ा की गोहत्या के विरुद्ध ११ दिवस उपवास तथा विजय सन १९३९ ई० ।

(२१) सादड़ी राज्य मेवाड़ में भैंसों की हत्या के विरुद्ध ९ दिवस निर्जल उपवास, सन १९३८ ई० ।

(२२) आत्मशान्ति के हित काठियावाड़ की यात्रा में ३ दिवस उपवास ।

(२३) आत्मकल्याण के हित एकान्त अनशन ५ दिवस ।

(२४) हथवा राज्य की थावेश्वरी देवी के समक्ष होने वाली हजारों पशुओं की हत्या के विरुद्ध छपरा जेल में २१ दिवस का भयङ्कर अनशन, चैत्र सम्वत् १९९७ विक्रम ।

(२५) गोरखपुर जिला बांसगांव की दुर्गा के समक्ष ५०० बकरों तथा शूकर आदि पशुओं की हत्या के विरुद्ध धूप में बैठ कर आश्विन के नवरात्र के समय ४ दिवस का निर्जल अनशन तथा व्याख्यान एवं सत्याग्रह कर के विजय प्राप्त पशुबलि का मूलोच्छेद हो गया तथा सैकड़ों राजपूतों ने मांसाहार का त्याग कर दिया।

इस प्रकार कुछ स्थानों की गोहत्या तथा हजार से अधिक मन्दिरों की पशुहत्या बन्द करा के धर्मप्राण "वीर" जी ने विश्व-व्यापी क्रान्ति की भूमिका रच डाली है। भगवान की कृपा से गोहत्या विरोधी आन्दोलन का वे भविष्य में नेतृत्व करेंगे।

सुमन-संचय

१--ये मदार्चन मित्युक्त्वा प्राणि हिंस न तत्पराः ।
तत्पूजनं ममामेध्यं यद्योपातदधोगतिः ॥

२--मदर्थे शिव ! कुर्वन्ति तामसा जीवघातनम् ।
आकल्प कोटि निरये तेषां वासो न संशयः ॥

३--यूपे बध्वा पशून् हत्वा यः कुर्याद्रक्त कर्दमम् ।
तेन चेत्प्राप्यते स्वर्गो नरकं केन गम्यते ॥

४--पशून् हत्वा तथा त्वां, माँ, योऽर्चयेद् मांस शोणितः ।
तावत्तन्नरके वासो, यावच्चन्द्र दिवाकरौ ॥

पार्वती माता कहती हैं जो लोग मेरी (देवी की) पूजा के नाम से प्राणी की हिंसा में तत्पर रहते हैं उनका यह मेरा पूजन अमेध्य अर्थात् अपवित्र और अशुद्ध है। उसके दोष से मनुष्य को अधोगति होती है।

हे शिव जी! तामस प्रकृति के लोग मेरे लिये पशु वध किया करते हैं निश्चय उन्हें कोटि कल्प तक नरकवास मिलता है। एवं यूप में पशु को बांध कर हत्या करके रुधिर की कीचड़ करने वाला मनुष्य स्वर्ग को चला जाय तो फिर नरक को कौन जायगा। जो मनुष्य मेरे व्याज से पशु हिंसा करके अपने भाई-बंधुओं के साथ उस पशु को खाता है वह उतने वर्षों तक असिपत्र नाम के नरक में जाता है कि जितने उस पशु के शरीर में रोम होते हैं। हे शंकर जी! जो मनुष्य पशु वध करके रुधिर और मांस से तुम्हारी और मेरी पूजा करता है वह तब तक नर्क में रहता है जब तक सूर्य और चन्द्र स्थिर हैं।

जो मनुष्य स्वर्गकामोऽश्वमेधेन यजेत इत्यादि वाक्यों के अनुसार यज्ञ करता है वह उसका स्वर्ग रूप फल भोग कर फिर दुःख मय भवसागर में आकर गिरता है। (पद्मपुराण पद्मोत्तर खंड)

❀ ❀ ❀ ❀

रूप मव्यं गतां मायुर्बुद्धि सत्त्वं बलं स्मृतिम्।
प्राप्तुकामैर्नरैर्हिंसा वर्जिता वै महात्मभिः॥

भीष्म जी ने कहा, हे युधिष्टिर मांसत्याग और अहिंसा का बड़ा महत्व है। रूप, कांति, बल, आयु, ओज, स्मृति और बुद्धि का चाहने वाले महात्मा पुरुषों ने हिंसा को वर्जित किया है।

(महाभारत अनुशासन पर्व— ११५वां अध्याय)

❀ ❀ ❀ ❀

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकारः पुण्याय पापाय पर पीड़नम्॥

अर्थात—अठारह पुराणों में व्यास जी के दो वचन मुख्य हैं। परोपकार से पुण्य होता है और दूसरे को दुःख देने से पाप होता है।

❀ ❀ ❀ ❀

सर्वे तनुभृतस्तुल्या यदि बुद्धया विचार्यते।
इदं तनुनिश्चित्य केनापि न हिंस्यः कोऽपि कुत्रचित्॥

(रुद्र पुराण)

अर्थात्—यदि बुद्धि से विचारा जाय तो समस्त जीव परमात्मा के पुत्र होने के कारण भाई भाई के समान हैं। ऐसा विचार कर कहीं पर भी किसी जीव को न मारना चाहिये।

❀ ❀ ❀ ❀

निहतस्य पशोर्यज्ञे स्वर्ग प्राप्तियं दीप्यते।
स्वपुत्र यजमानेन किंवा तत्र न हन्यते॥

अर्थात—यदि यज्ञ कर्म की हिंसा से पशु स्वर्ग में जाते हैं तो यजमान अपने पुत्र को क्यों नहीं काट कर स्वर्ग में भेजते हैं। (पद्म पुराण सृष्टि कांड अध्याय)

❀ ❀ ❀ ❀

ये भक्षयंति मांसानी सत्वानां जीवितैषिणाम्।
तेद्येयो भक्षितैः सर्वै रिति ब्रह्मा ब्रवी द्विज॥

जो किसी पशुका मांस खायगा वह पशु दूसरे जन्मों में अवश्य ही बदला लेगा यह ब्रह्म वाक्य है।

(महाभारत)

❀ ❀ ❀ ❀

हन्ता चैवानुमन्ता च, विशस्ता क्रय-विक्रयी।
संस्कर्त्ता चोप हर्ता च, खादक श्चाष्ट घातकः॥

अर्थ—मारने वाला, मारने का विचार करने वाला, मारने की सम्मति देने वाला, मांस का बेचने वाला, मांस का मोल लेने वाला, मांस का पकाने वाला, पके मांस को परोसने वाला और मांस को खाने वाला, ये आठ पातकी घातक हैं। मनुस्मृति।

❁ ❁ ❁ ❁

दयादान परो नित्यं जीवमेव प्ररक्षयेत्।
चाण्डालो ऽप्यथ शूद्रोवा, सवै ब्राह्मण उच्यते॥
ब्राह्मणः निर्दयो वै, पशुघात परायणाः।
स वै तु निर्दयः पापी कठिनः क्रूर चेतनः॥

भूमि खण्ड अध्याय ३७।

अर्थ—जो जीवों पर दया करता है और उनकी रक्षा करता है। वह चाण्डाल और शूद्र भी ब्राह्मण है और जो ब्राह्मण निर्दयी है। पशुघातक हैं वह पापी और क्रूर है।

❁ ❁ ❁ ❁

तिल भर मछली खाय के, कोटि गऊ दे दान।
काशी करवट ले मरे तो भी नरक निदान॥
मांस मछलियां खात हैं सुरापान जे हेत।
ते नर नरक हि जायेंगे माता पिता समेत॥

(श्री कबीरदास जी।)

❁ ❁ ❁ ❁

बरणि न जाय अनीति घोर निशाचर जे करहिं।
हिंसा पर अति प्रीति तिनके पापन कवन मिति॥

(श्री तुलसीकृत रामायण।

हे हिन्दू धर्म के परम उपासक! पशुबलि निषेध के भीषण संग्राम में इस प्रकार कटिबद्ध होते हुए भी हिन्दू समाज के निर्बोध अनाथ बाल बालिकाओं तथा ललनाओं का हरण करने वाली पिशाचिनी मुसलिमलीग रूपी भयंकर राक्षसी के कराल गाल से रक्षा करने के लिये समरक्षेत्र में प्राणों की बाजी लगा कर कूदना कम प्रशंसा की बात नहीं।

आपकी इस कठिन तपस्या को देख कर हम मुग्ध हैं।

हे प्रभो! मूक जीवों के नाथ! आपने मांगरोल जैसे मुसलिम राज्य में एवं बिहार मध्यप्रान्त आदि कई स्थानों में गो-माताओं की रक्षा की है। इसके लिये आपका अभिवादन करने के लिये हमें शब्द नहीं मिलते किन्तु जब आपका जीवन ही प्राणियों की रक्षा के लिये समर्पित है तो हम अधिक क्या निवेदन कर सकते हैं।

आपके इस बलिदान पर मुग्ध होकर केवल भारतवर्ष में ही नहीं बल्कि इङ्गलैण्ड, फ्रांस, जर्मनी आदि विदेशों के अनेकानेक दयालु पुरुषों ने वहां के समाचार पत्रों में आपकी सचित्र जीवनी प्रकाशित कर अपनी सहृदयता का परिचय दिया है। धर्मप्राण तपस्वी! आपके द्वारा स्थापित भारतीय आदर्श हिन्दू संघ भारत के भिन्न २ स्थानों में सैकड़ों विद्यमान हैं जिनके द्वारा दीन, हीन, अनाथ पशुओं और अबोध बालक बालिकाओं की तथा हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति की रक्षा होती है, वह वर्णनातीत है। भगवान आपको आयुष्मान करें, यही उनसे हमलोगों की करजोर कर बारम्बार प्रार्थना है।

आरा (शाहाबाद) बिहार. } भवदीय कृपाकांक्षी: — आरा हिन्दू सभा के सदस्यगण।

विमल कथा

नमग्ण तपस्वी धर्मप्राण पंडित श्री रामचन्द्र जी शर्मा 'वीर' का वंश परिचय—उनके जन्म, बाल्यकाल, माता की मृत्यु, भगिनी, भ्राता का वियोग, स्कूली शिक्षा, गांधी युग, विद्याध्ययन के समय की दुर्घटनाएं क़ाज़ी साहब की संगति और विरक्ति, स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान का प्रभाव, राजस्थान में शुद्धि-संगठन का प्रचार, कलकत्ता कांग्रेस, बिहार प्रांत में प्रचार, अन्न नमक का त्याग लाहौर कांग्रेस राजस्थान, मध्य भारत, गुजरात, काठियावाड़, मध्य प्रदेश, युक्त प्रान्त के अनेक नगरों में विदेशो वस्त्र बहिष्कार तथा हिन्दू संगठन का निरन्तर प्रचार, हठयोग का अभ्यास, सत्याग्रह संग्राम में जेल यात्रा, दलितोद्धार, पाखण्ड विनाशक मण्डल की स्थापना, रतलाम का रामायण सत्याग्रह, महात्मा जी की दीर्घायु के लिये उपवास, माँगरोल की गोहत्या के विरुद्ध प्राणान्त उपवास तथा विजय की मनोहर वीरता पूर्ण जगमगाती ज्योति का निज लिखित आत्म चरित्र १८० पृष्ठ अनेक चित्र मूल्य केवल ॥) मात्र ।

छपने की प्रतिज्ञा कीजिये ।

'वीर वाणी' और 'वीर गर्जना'

रचयिता—

धर्मप्राण पण्डित श्री रामचन्द्र जी शर्मा "वीर"

'वीर' जी की युगान्तरकारी विचार धारा के निर्मल नीर का पान कराने वाली साहस शौर्य संयम सदाचार का पाठ पढ़ाने वाली भारतीय युवकों की नस नस में स्वदेश स्वधर्म स्वजाति और स्वाभिमान की उच्च भावनाओं को जागृत करने वाली हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्थान की रणभेरी बजाने वाली वीर रसपूर्ण पचास भजनों और कविताओं की अद्वितीय पुस्तक **वीरवाणी और वीर गर्जना** संशोधित और परिवर्द्धित सचित्र पञ्चम संस्करण पृष्ठ संख्या ४४ मूल्य चार आना मात्र।

बंगाल के वयोवृद्ध नेता विज्ञानाचार्य

सर प्रफुल्लचन्द्र राय महोदय

की

अमूल्य सम्मति

... ... 'वीर वाणी' बड़ी अच्छी है, इसमें प्यारा भारत और रत्नों का भंडार है। इसका बंगला भाषा में अनुवाद होना चाहिये।

[१५-८-३६] साइंस कॉलेज, कलकत्ता।